प्रेमचंद

अनुदित नाटक

शबेतार, चाँदी की डिबिया, न्याय, हड़ताल, सृष्टि का आरम्भ

[हिन्दीकोश]

Tittle– Anudit Natak

Author– Maurice Maeterlinck, John Galsworthy, George Bernard Shaw

Trasnlator– Premchand

Release Date– 7 Dec 2020

Edition– 1.0

Language– Hindi

While every precaution has been taken in the preparation of this book, the publisher assumes no responsibility for errors or omissions, or for damages resulting from the use of the information contained herein.

Suggestions and corrections are welcome.

Visit https://www.hindikosh.in for more...

सूची

[शबेतार]

[चाँदी की डिबिया]

[न्याय]

[हड़ताल]

[सृष्टि का आरंभ]

प्रेमचंद

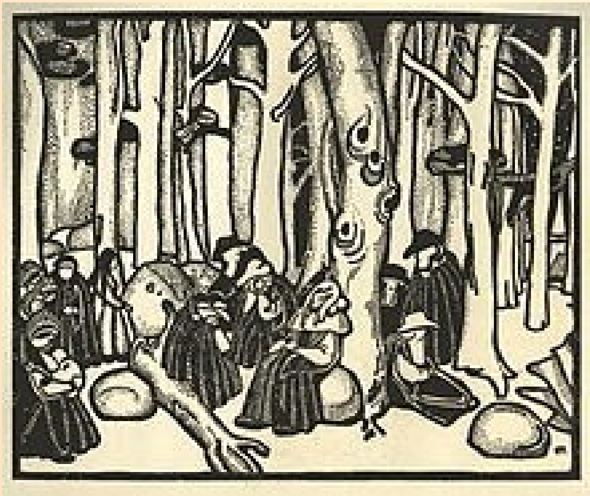

शबेतार

[हिन्दीकोश]

शबेतार

बेल्जियन नाटककार मौरिस माटरलिंक (Maurice Maeterlinck) के नाटक 'दी' ब्लाइंड (The Blind, French: Les aveugles) का अनुवाद

मंजर (दृश्य)

[एक बहुत पुराना खित्तए-शमाली (उत्तरी प्रदेश) का जंगल जिससे किदम (प्राचीनता) के लासार (लक्षण) नुमायाँ (सुस्पष्ट) है। आसमान तारों से पुर (भरा हुआ)। जगल के वस्त (मध्य) में, आधी रात के करीब, एक बुड्ढा दरवेश (संन्यासी) स्याह लबादा ओढ़े बैठा हुआ है। उसका सर और जिस्म का बालाई (ऊपरी) हिस्सा जो किसी कदर पीछे को झुका हुआ और बिल्कुल बेहिस-ओ-हरकत (निश्चल निस्पद) है, एक शाहबलूत के दरख्त से टिका हुआ है। यह दरख्त बड़ा झंखाड़ और छतनार है। उसका चेहरा बिल्कुल जर्द है। उस पर खाक की-सी बेरंगी छायी हुई है और उसके नीले होंठ खुले हुए हैं। उसकी जामिद (स्थिर) और पथरायी हुई

चाखे अबद (सनातन काल) के वुजूदे-जाहिर (प्रत्यक्ष अस्तित्व) की तरफ नहीं देखती और गमहाए-दगीनो (पुराने गमों) से खूफिशाँ (खून बरसाती हुई) मालूम हो रही है। उसके नूरानी (दीप्तिमान) और सफेद बाल उसके चेहरे पर बिखरे हुए है जो इस सहराए-तारीक (अंधेरे जंगल) की तमाम चीजों से ज्यादा मुजमहिल (थका हुआ) और रोशन है। उसके निहायत लागर हाथ उसके सीने पर अकड़े हुए पड़े हैं। उसके दाहिने जानिब छः बुड्ढे और अंधे आदमी चट्टानों, सूखी पत्तियों और दरख्तों के ठूँठों पर बैठे हुए है। बायी तरफ, उनके मुकाबिल छः बूढी अंधी औरतें बैठी हुई हैं। दर्मियान में एक गिरा हुआ दरख्त और पत्थर के टुकड़े हायल है। तीन अंधी औरतें एक गैर-मुअस्सिर (प्रभावशून्य) अंदाज से दुआ कर रही है और रो रही है। एक औरत निहायत किब्र-सिन (बुड्ढी) है। पाँचवीं औरत गूँगी और पगली है। उसकी गोद में एक छोटा-सा लडका सो रहा है। छठवीं औरत अभी नौजवान है और उसके लंबे-लंबे बालों से उसका सारा जिस्म ढँका हुआ है। मर्द और औरतें सब के सव एक ही किस्म के स्याह और ढीले ढाले कपड़े पहने हुए हैं। उनमें से अक्सर कुहनियाँ घुटनों पर रक्खे हुए और पहरों को हाथों से छिपाये हुए सूरते इंतजार बैठे हैं। ऐसा मालूम होता है कि वह इशारे और अंदाज की आदत को भूल गये हैं। वह इस जज़ीरे के पैहम (तमाम) शोरो-गुल पर

जरा भी सर नहीं हिलाते। बड़े-बड़े मातमी दरख्त अज़-किस्म (जैसे) देवदार व बलूत व सनोवर उन्हें अपने तारीक (अंधकारपूर्ण) और वफादार साये में छिपाये हुए हैं। साधु से थोड़ी दूर पर लंबे-लंबे जर्द नर्गिसों के फूल खिले हुए हैं। बावजूदे कि कहीं चाँद की किरनें पत्तियों से छन-छनकर जमीन पर आती हैं और तारीकी (अंधकार) को हटाने की कोशिश करती हैं, फिर भी जंगल मे अमीक (गहरा) तारीकी छायी हुई है।)

पहला नाबीना (अंधा आदमी) – क्या वह अभी नहीं आ रहे हैं?

दूसरा नाबीना — तुमने मुझे जगा दिया।

पहला नाबीना — मैं भी सो गया था।

तीसरा नाबीना — मैं भी सोता ही था।

पहला नाबीना — क्या वह अभी नहीं आ रहे हैं?

दूसरा नाबीना — मुझे किसी के आने की आहट नहीं मिलती।

तीसरा नाबीना — अब ख़ानक़ाह (मठ या आश्रम) में लौट जाने का वक्त करीब होगा।

पहला नाबीना — हम यह जानना चाहते हैं कि हम कहाँ हैं?

सबसे बुड्ढा नाबीना — कोई जानता है कि हम कहाँ हैं?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — हम बहुत देर तक चलते रहे थे। हम जरूर ख़ानक़ाह से बहुत फासले पर हैं।

पहला अंधा आदमी — ओ हो, क्या औरतें हमारे मुकाबिल हैं?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — हाँ, हम तुम्हारे सामने बैठी हुई हैं।

पहला अंधा आदमी — ठहरो, मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ। (वह उठकर इधर-उधर टटोलता है।) तुम कहाँ हो? बोलो, ताकि मुझे आवाज से कुछ पता चले।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — हम यहाँ पत्थरों पर बैठी हुई हैं।

पहला नाबीना — (वह आगे बढ़ता है और गिरे हुए दरख्तों और चट्टानों से ठोकर खाता है। हमारे दर्मियान कुछ हायल (मध्यवर्ती बाघ) है।

दूसरा नाबीना — जहाँ बैठे हो वहीं बैठे रहो। यह बेहतर है।

तीसरा नाबीना — तुम कहाँ बैठे हो? क्या हमारे पास आना चाहते हो?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — हम खड़ी नहीं हो सकतीं।

तीसरा नाबीना — इन्होंने हम लोगों को अलग-अलग क्यों कर दिया?

पहला नाबीना — मुझे औरतों की तरफ़ से दुआ करने की आवाज़ आ रही है।

दूसरा नाबीना — हाँ, तीनों बुड्ढी अंधी औरतें दुआ कर रही हैं।

पहला नाबीना — लेकिन यह तो दुआ करने का वक्त नहीं है।

दूसरा नाबीना — तुम लोग बावर्चीखाने में जाकर नमाज पढना।

(तीनों औरतें बदस्तूर दुआ करती रहती हैं।)

तीसरा नाबीना — मैं यह मालूम करना चाहता हूँ कि मैं किसके क़रीबतर बैठा हुआ हूँ।

दूसरा नाबीना — शायद मैं तुमसे क़रीब हूँ।

तीसरा नाबीना — हम एक दूसरे से मिल नहीं सकते।

पहला नाबीना — लेकिन हमारे दर्मियान ज्यादा फासला नहीं है (वह इधर-उधर हाथों से टटोलता है। उसकी छड़ी से पाँचवें अंधे को चोट लग जाती है और वह कराह उठता है। बहरा हमारे करीब बैठा हुआ है।

दूसरा नाबीना — मुझे सब आदमियों की आवाजें नहीं सुनायी देतीं। हम कुल छः आदमी थे।

पहला नाबीना — मुझे अब कुछ-कुछ हकीकत खुलने लगी है। औरतों से भी पूछ लेना 'चाहिए। यह जरूरी है कि हम सूरते-हाल (परिस्थिति) से वाकिफ (परिचित) हो जायें। अभी तक तीनों औरतों की दुआख्वानी (प्रार्थना करने) की आवाज मेरे कान में आ रही है। क्या वह एक ही साथ बैठी हुई हैं?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — वह मेरी बगल में एक चट्टान पर बैठी हुई हैं।

पहला नाबीना — मैं मुर्दा पत्तियों पर बैठा हुआ हूँ।

तीसरा नाबीना — और वह हसीना कहाँ है?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — वह उन दुआ करने वाली औरतों के करीब बैठी हुई है।

दूसरा नाबीना — वह पगली और उसका बच्चा कहाँ है?

नौजवान अंधी औरत — वह सो रहा है, उसे न जगाओ।

पहला नाबीना — उफ! तुम हम लोगों से कितनी दूर हो? मैंने समझा था कि तुम मेरे ऐन मुकाबिल हो।

तीसरा अंधा — अब हमें बेशतर जरूरी बातें मालूम हो गयी हैं। अब आओ, कुछ बातचीत करें। उस वक्त तक साधूजी भी लौट आयेंगे।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — उन्होंने हमसे कहा था कि खामोशी के साथ मेरा इंतजार करना।

तीसरा नाबीना — हम इबादतखाने (उपासना-गृह) में नहीं हैं कि खामोश बैठें।

बुड्ढी अंधी औरत — तुम क्या जानते हो कि हम कहाँ हैं?

तीसरा नाबीना — मुझे बिना बात किये खौफ़ मालूम होता है।

दूसरा नाबीना — तुम्हें मालूम है कि साधूजी कहाँ गये हैं?

तीसरा नाबीना — मुझे ऐसा मालूम होता है कि उन्हें जरूरत से ज्यादा देर हो रही है।

पहला नाबीना — अब वह ज़ईफ हो गये हैं। मुझे मालूम होता है कि कुछ दिनों से उन्हें खुद भी कुछ नहीं सूझता। वह इसका इजहार नहीं करते, इस खौफ से कि उनकी जगह पर हमारा कोई दूसरा निगरांकार (निगरानी करने वाला) आ जायेगा। लेकिन मुझे शुबहा होता है कि अब उनकी आँखें बेकार हो गयी हैं। अब हमें किसी दूसरे रहनुमा की ज़रूरत है। वह अब हमारी बातों की परवाह नहीं करते। हमारी तादाद भी अब ज्यादा हो गयी है। यहाँ उनके और जतियों-बैरागियों के सिवा और कोई बीना (आँख वाला) नहीं। और वह लोग हमसे भी ज्यादा ज़ईफ हैं। मुझे

यकीन है कि महात्माजी हमें लेकर कहीं भूल आये हैं और अब रास्ता ढूँढ रहे हैं। वह कहाँ गये? उन्हें कोई मजाज नहीं है कि हमको तनहा छोड़ जायें।

सबसे बुड्ढा अंधा आदमी — वह बहुत दूर गये हैं, शायद औरतों से इसका जिक्र किया था।

पहला नाबीना — तो अब वह औरतों ही से बोलते हैं? गोया हम सबके सब मर गये। बिल आखिर हमें उनकी शिकायत करनी पड़ेगी।

सबसे बुड्ढा अंधा आदमी — किससे शिकायत करोगे?

पहला नाबीना — अभी यह नहीं मालूम है। खैर, देखा जायगा। लेकिन वह गये कहाँ? मैं औरतों से पूछ रहा हूँ।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — वह इतनी दूर आते-आते थक गये थे। मुझे खयाल आता है कि वह ज़रा देर तक हमारे दर्मियान बैठे थे। कई दिनों से वह बहुत दिलगिरफ्ता (उद्विग्न) और अलील (अस्वस्थ) हैं। जब से डाक्टर का इंतकाल हुआ उनकी तबीयत परेशान है। वह उदास रहते हैं। शाज (बिरले) ही किसी से बोलते हैं। कुछ ख़बर नहीं कि क्या सानिहा (दुर्घटना) हो गया है। आज वह सैर करने पर मुसिर (आग्रहशील) हुए। वह कहते थे कि मैं सरमा (जाड़ा) शुरू होने के पहले आखिरी बार धूप में

जज़ीरे (टापू) को देखना चाहता हूँ। ऐसा मालूम होता कि सरमा बहुत सर्द और तूलानी होगा। अभी से शुमाल (उत्तर) की जानिब से बर्फ आने लगी है। वह कुछ मुतरद्दिद (परीशान) भी थे। लोग कहते हैं कि पिछले दिनों के तूफानों से नदियों में सैलाब (बाढ) आ गया है और पुश्ते (कगार) मुनहादिम (टूटते) होते जाते हैं। वह यह भी कहते थे कि मुझे समुंदर से खौफ़ मालूम होता है। वह बिला वजह मुतहातिम (उद्विग्न) हो रहा है और जज़ीरे की पहाड़ियाँ काफी तौर पर ऊँची नहीं हैं। वह खुद अपनी आँखों से देखना चाहते थे लेकिन उन्होंने हमसे कुछ नहीं बतलाया कि क्या देखा। मुझे खयाल आता है कि वह पगली औरत के लिए रोटी और पानी लाने गये हैं। वह कहते थे कि शायद मुझे दूर जाना पड़े। हमको मजबूरन इंतजार करना पड़ेगा।

नौजवान अंधी औरत — जाते वक्त उन्होंने मेरे हाथ पकड़े थे। उनके हाथ काँप रहे थे। गोया वह डर रहे हों। तब उन्होंने मेरा बोसा लिया।

पहला नाबीना — अच्छा!

नौजवान अंधी औरत — मैंने उनसे पूछा कि क्या बात हो गयी है। उन्होंने कहा, मुझे नहीं मालूम कि क्या होने वाला है। वह

कहते थे कि बुड्ढों की हुकूमत अब खत्म होने वाली है। गालिबन....

पहला नाबीना — इससे उनकी क्या मंशा थी?

नौजवान अंधी औरत — मैंने भी उनका मतलब न समझा। उन्होंने मुझसे यही बताया कि मैं उस बडे रौशनी के मीनार की तरफ़ जा रहा हूँ।

पहला नाबीना — क्या यहाँ कोई रौशनी का मीनार भी है?

नौजवान अंधी औरत — हाँ, जज़ीरे के शुमाल में है। मेरा खयाल है कि हम उससे बहुत दूर नहीं हैं। वह मुझसे कहते थे कि मीनार की रौशनी यहाँ की पत्तियों पर पड़ती हुई नज़र आती है। मुझे आज के से अफसुर्दा-खातिर (उदास) वह कभी न मालूम हुए थे और मेरा खयाल है कि वह कई दिन से रायी करते थे। मालूम नहीं क्यों! मैं खुद भी रोया। मैंने उन्हें जाते हुए नहीं सुना। इससे ज्यादा मैं उनसे और कुछ न पूछ सकी। मैं सुन रही थी कि वह बहुत संजीदगी से मुस्करा रहे थे। मैंने यह भी सुना कि वह आँखें बन्द कर रहे थे और सुकून चाहते थे।

पहला नाबीना — उन्होंने यह सब बातें हमसे नहीं कहीं।

नौजवान अंधी औरत — तुम उनकी बातें कब सुनते थे।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — जब वह बोलते हैं तो तुम सबके सब कानाफुसकी करने लगती हो।

दूसरा नाबीना — चलते वक्त उन्होंने सिर्फ "वस्सलाम" कहा।

तीसरा नाबीना — रात ज्यादा आ गयी।

पहला नाबीना — चलते वक्त उन्होंने दो-तीन बार "वस्सलाम" कहा, गोया सोने जा रहे हों। जब वह सलाम कर रहे थे तो मुझे ऐसा मालूम होता था कि वह मेरी तरफ ताक रहे हैं। जब कोई किसी चीज की तरफ गौर से देखता है तो उसकी आवाज तबदील हो जाती है।

पाँचवाँ नाबीना — उन लोगों पर रहम करो जिनके आँखें नहीं हैं।

पहला नाबीना — यह कौन वाहियात बातें कर रहा है।

दूसरा नाबीना — शायद यह वो है जो सुन नहीं सकता।

पहला नाबीना — चुप रहो, यह रोने का वक्त नहीं है।

तीसरा नाबीना — महात्मा जी रोटी और पानी लेने कहाँ चले गये?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — वह समुंदर की तरफ़ गये।

तीसरा नाबीना — इस सिन-ओ-साल (उम्र) पर कोई इस तरह समुंदर की तरफ नहीं जाता।

दूसरा नाबीना — क्या हम समुंदर के करीब हैं?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — हाँ, एक लमहा खामोश हो जाओ, तुम्हें उसकी आवाज सुनायी देगी।

(करीब से समुंदर की धीमी-धीमी सदा)

दूसरा नाबीना — मुझे तो सिर्फ तीनों औरतों के दुआ करने की आवाज आ रही है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — गौर से सुनो। उनकी दुआओं के बीच-बीच में तुम्हें उसकी आवाज सुनायी देगी।

दूसरा नाबीना — हाँ, मुझे कोई ऐसी आवाज सुनायी देती है जो हमसे दूर नहीं है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — वह सोयी हुई थी, ऐसा मालूम होता है कि अब जाग रही है।

पहला नाबीना — महात्मा जी को हमें यहाँ न लाना चाहिए था। मुझे इस शोर से अंदेशा होता है।

सबसे बुड्ढा आदमी — तुम खूब जानते हो कि जज़ीरा बहुत बड़ा नहीं है और ज्योंही ख़ानक़ाह से बाहर निकले, यह सदा (आवाज) आने लगती है।

दूसरा नाबीना — मैंने कभी इसकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया।

तीसरा नाबीना — मुझे ऐसा मालूम होता है कि आज यह बहुत करीब हो गयी है। मैं इसे इतने पास से नहीं सुनना चाहता।

दूसरा नाबीना — मुझे भी यह पसंद नहीं। फिर हमने ख़ानक़ाह से बाहर आने के लिए कभी नहीं कहा।

तीसरा नाबीना — हम इतनी दूर कभी यहाँ नहीं आये। हमें इतनी दूर लाने से क्या फायदा?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — आज सुबह मौसम बहुत सुहाना था। वह चाहते थे कि हम गर्मी के आखिरी दिनों का लुत्फ़ उठायें, क़ब्ल इसके कि जाड़े भर के लिए ख़ानक़ाह में मुकैयद (कैद) हो जाय।

पहला नाबीना — लेकिन मुझे ख़ानक़ाह में पड़े रहना ज्यादा पसंद है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — वह कहते थे कि हम जिस जज़ीरे में रहते हैं उसका कुछ हाल जरूर जानना चाहिए। उन्होंने खुद भी

पूरा जज़ीरा नहीं देखा है। यहाँ एक ऐसा पहाड़ है जिस पर कोई नहीं चढ़ सका, ऐसी वादियाँ हैं जहाँ कोई नहीं जाना पसंद करता, और ऐसे गार हैं जिनमें आज तक कोई दाखिल नहीं हो सका। अलगरज़ उनका मंशा था कि हम लोगों को आफ़ताब (सूरज) के इंतजार में हमेशा ख़ानक़ाह के ज़ेरे-साया (छाया में) बैठे रहना मुनासिब नहीं। इसलिए वह हमको साहिल तक लाना चाहते थे। वह वहाँ तनहा गये हैं।

सबसे बुड्ढा अंधा आदमी — उनका कहना सही है। हमको जिंदगी का ख़याल रखना चाहिए।

पहला नाबीना — लेकिन यहाँ मैदान में देखने के काबिल कोई चीज नहीं है।

दूसरा नाबीना — क्या हम इस वक्त धूप में हैं?

तीसरा नाबीना — क्या आफ़ताब अभी तक निकला हुआ है?

छठवाँ नाबीना — मेरा ख़याल है कि अब नहीं है। मालूम होता है कि रात ज्यादा गयी।

दूसरा नाबीना — क्या बजे हैं?

और सबके सब — कोई नहीं जानता।

दूसरा अंधा — क्या अभी तक रोशनी है? (छठवें नाबीना से) तुम कहाँ हो? हमें तो कुछ-कुछ सुझायी देता है। यहाँ आओ।

छठवाँ नाबीना — मेरे खयाल में इस वक्त खूब अंधेरा है। जब धूप होती है तो मुझे 'पलकों के नीचे एक नीली लकीर-सी नज़र आती है बहुत अर्सा गुजरा मैंने ऐसी लकीर देखी थी लेकिन अब मुझे मुतलक दिखायी नहीं देता।

पहला नाबीना — और मुझे तो देर होने की ख़बर उस वक्त होती है, जब मुझे भूख लगती है, और इस वक्त मैं भूखा हूँ।

तीसरा नाबीना — लेकिन आसमान की तरफ तो देखो, शायद कुछ नज़र आये।

(सबके सब आसमान की तरफ़ सर उठाते हैं, उन तीनों को छोड़कर जो मादरजाद (जनम से) अंधे थे, जो ज़मीन की तरफ़ ताकते रहते हैं।)

छठवाँ नाबीना — मुझे नहीं मालूम होता कि हम लोग बिल्कुल आसमान के नीचे हैं।

पहला नाबीना — हमारी आवाजें इस तरह गूंज रही हैं गोया वह किसी गार (गहरे खड्ड) में हों।

सबसे बुड्ढा नाबीना — मेरा तो खयाल है कि उनके गूँजने का सबब शाम का वक्त है।

नौजवान अंधी औरत — मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि मेरे हाथों पर चांदनी फैली हुई है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — मेरा खयाल है कि सितारे निकल हैं। मैं उन्हें सुन रही हूँ।

नौजवान अंधी औरत — मैं भी सुन रही हूँ।

पहला नाबीना — मुझे तो कोई आवाज नहीं सुनायी देती।

दूसरा नाबीना — मुझे तो अपने सांस लेने की आवाज सुनायी दे रही है।

सबसे बुड्ढा नाबीना — मेरा खयाल है कि औरतें सही कहती हैं।

पहला नाबीना — मैंने कभी सितारों की आवाज नहीं सुनी।

दूसरे और तीसरे अंधे आदमी — हमने भी नहीं सुनी।

(तायराने-शब (रात की चिड़िया) का एक गोल दफ़अतन् (अचानक) पत्तियों पर उतरता है।)

दूसरा नाबीना — सुनो! सुनो! यह ऊपर क्या है? सुन रहे हो?

सबसे बुड्ढा नाबीना — हमारे और आसमान के बीच से कोई चीज गुजर गयी।

छठवाँ नाबीना — हमारे बालाए-सर (सर के ऊपर) कोई चीज हरकत कर रही है लेकिन हम उसे पा नहीं सकते।

पहला नाबीना — इस आवाज की हकीक़त मेरी समझ में नहीं आती। मैं ख़ानक़ाह की तरफ़. लौटना चाहता हूँ।

दूसरा नाबीना — हम यह जानना चाहते हैं कि हम कहाँ हैं?

छठवाँ नाबीना — मैंने खड़े होने की कोशिश की। हमारे चारों तरफ कांटे ही कांटे हैं, और कुछ नहीं। अब मैं अपने हाथ भी फैलाने की जुरअत नहीं कर सकता।

तीसरा नाबीना — मालूम नहीं हम कहाँ हैं?

सबसे बुड्ढा नाबीना — हम इसे नहीं जान सकते।

छठवाँ नाबीना — हम ख़ानक़ाह से बहुत दूर हैं। मुझे वहाँ की कोई आवाज नहीं सुनायी देती।

तीसरा नाबीना — बहुत अर्से से मुझे सूखी पत्तियों की बू आ रही है।

छठवाँ नाबीना — हममें से किसी ने इस जज़ीरे को जमानए-गुजिश्ता (गुजरे जमाने) में देखा है और वह बतला सकता है कि हम कहाँ हैं?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — जब यहाँ आये तो हम सबके सब अंधे थे।

पहला नाबीना — हमें कभी कुछ दिखायी ही नहीं दिया।

दूसरा नाबीना — हमें खामखाह परेशान होने की क्या जरूरत है। वह जल्द वापस आयेंगे। जरा देर और उनका इंतजार करो, लेकिन आइंदा से हम फिर उनके साथ न आयेंगे।

सबसे बुड्ढा नाबीना — हम अकेले घूमने नहीं निकल सकते।

पहला नाबीना — हम निकलेंगे ही न। मुझे घूमना पसंद नही।

दूसरा नाबीना — हमारी बाहर आने की ख्वाहिश नहीं थी, किसी ने उनसे यह दरख्वास्त नहीं की।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — जज़ीरे में यह तातील का दिन है। तातीलों में हम सब सैर करने निकलते हैं।

तीसरी अंधी औरत — मैं सो ही रही थी कि उन्होंने आकर मेरे कंधे को हिलाया और हम निकलेंगे ही न। मुझे घूमना पसंद नहीं। कहा, उठो-उठो, वक्त आ गया, धूप निकली हुई है। क्या

धूप निकली हुई थी? मुझे इसकी खबर नहीं। मैंने कभी धूप नहीं देखी।

सबसे बुड्ढा नाबीना — मैं बहुत छोटा था तब मैंने धूप देखी थी।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — मैंने भी, बहुत दिन हुए जब मैं बहुत छोटी थी लेकिन अब बिल्कुल-याद नहीं।

तीसरा नाबीना — हर बार जब धूप निकलती है तो वह क्यों हमें बाहर लाते हैं? क्या हम इससे कुछ ज्यादा अक्लमंद हो जाते हैं? मुझे तो बिल्कुल मालूम नहीं होता कि रात है या दिन?

छठवाँ नाबीना — मुझे दोपहर के वक्त घूमना अच्छा मालूम होता है। मुझे उस वक्त बहुत चमक महसूस होती है और मेरी आँखें खुलने की कोशिश करती हैं।

तीसरा नाबीना — मुझे तो अपनी ख़्वाबगाह (शयनगृह) में कोयले के सामने बैठना ज्यादा पसंद है। आज सुबह खूब आग रौशन थी।

दूसरा नाबीना — वह हमें धूप खिलाने के लिए सहन में ला सकते थे। वहाँ दीवारों की हिफाजत में तो रहते। जब दरवाजा बंद रहता है तो कोई खौफ़ नहीं मालूम होता। मैं हमेशा दरवाजा बंद कर दिया करता हूँ। तुमने मेरी कुहनी क्यों छुई?

पहला नाबीना — मैंने नहीं छुई। मैं तुमसे बहुत दूर हूँ।

दूसरा नाबीना — मैं सच कहता हूँ कि किसी ने मेरी कुहनी छुई है।

पहला नाबीना — हममें से किसी ने नहीं छुई।

दूसरा नाबीना — मैं यहाँ से जाना चाहता हूँ।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — या खुदा! खुदा! हम कहाँ हैं?

पहला नाबीना — हम यहाँ हमेशा नहीं बैठे रह सकते।

(किसी दूर की घड़ी में आहिस्ता-आहिस्ता बारह बजते हैं।)

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — उफ़! हम लोग ख़ानक़ाह से कितनी दूर निकल आये हैं।

सबसे बुड्ढा नाबीना — आधी रात हो गयी।

दूसरा नाबीना — दोपहर है। कोई जानता है? बोलो।

छठवाँ नाबीना — मुझे मालूम नहीं लेकिन मैं खयाल करता हूँ कि हम लोग साये में हैं।

पहला नाबीना — मुझे कुछ नहीं मालूम होता। मैं बहुत देर तक सो गया।

दूसरा नाबीना — मुझे भूख लगी हुई है।

और सबके सब — हम भी भूखे और प्यासे हैं।

दूसरा नाबीना — क्या हमें यहाँ आये हुए देर हुई?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि मैं यहाँ सदियों से हूँ।

छठवाँ नाबीना — मुझे कुछ-कुछ मालूम हो रहा है कि हम कहाँ हैं।

तीसरा नाबीना — हमें उस तरफ जाना चाहिए जिधर से बारह, बजने की आवाज आयी है।

(तायराने शब यकायक तारीकी (अंधेरे) में शोर करने लगते हैं।)

पहला नाबीना — तुम लोग सुनते हो? सुनते हो?

दूसरा नाबीना — यहाँ हमारे सिवाय कोई और भी है?

तीसरा नाबीना — मुझे बहुत देर से इसका शुबहा है। कोई हमारी बातें सुन रहा है। क्या वह लौट आये?

पहला नाबीना — मालूम नहीं क्या है। यह हमारे ऊपर है।

दूसरा नाबीना — क्या दूसरों ने कुछ नहीं सुना? तुम लोग हमेशा खामोश रहते हो।

सबसे बुड्ढा नाबीना — हम तो अभी तक सुन रहे हैं।

नौजवान अंधी औरत — मुझे अपने ईद-गिर्द हर दिन की आवाज आ रही है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — ऐ खुदा! ऐ खुदा! हम कहाँ हैं?

छठवाँ नाबीना — मुझे कुछ-कुछ मालूम हो रहा है कि हम कहाँ हैं। ख़ानक़ाह इस बड़ी नदी के उस पार है। हम पुराने पुल से होकर आये हैं। महात्मा जी हमको जज़ीरे के शुमाल में लाये हैं। हम नदी से दूर नहीं हैं। अगर हम एक लमहा गौर से सुनें तो उसकी आवाज भी शायद सुनायी दे। अगर महात्मा जी न लौटेंगे तो हमको पानी के किनारे तक जाना पड़ेगा। वहाँ शबोरोज (दिन-रात) बड़े-बड़े जहाज आते-जाते रहते हैं। जहाजों के मल्लाह हमें किनारे पर खड़े देख लेंगे। यह भी मुमकिन है कि हम उस जंगल में हों जो रोशनी के मीनार को घेरे हुए है। लेकिन मुझे बाहर निकलने का रास्ता नहीं मालूम है। कोई मेरे साथ चलने पर तैयार है?

पहला नाबीना — चुपचाप बैठे रहो। उनका इंतजार किये जाओ। हमें बड़ी नदी का रास्ता नहीं मालूम है, और ख़ानक़ाह के चारों तरफ़ दलदल है। बस उनका इंतजार करना चाहिए। वह आयेंगे, ज़रूर आयेंगे।

छठवाँ नाबीना — कोई जानता है कि हम किस रास्ते से आये हैं? जब हम आ रहे थे तो उन्होंने हमें समझाया था।

पहला नाबीना — मैंने बिल्कुल ध्यान नहीं दिया।

छठवाँ नाबीना — क्या और किसी ने ध्यान से सुना था?

तीसरा नाबीना — आइंदा हमको उनकी बातों को गौर से सुनना चाहिए।

छठवाँ नाबीना — क्या हममें से किसी की पैदाइश इस जज़ीरे में हुई है?

सबसे बुड्ढा आदमी — तुम्हें खूब मालूम है कि हम सब यहाँ दूसरी जगह से आये हैं।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — हम समुंदर के उस पार से आये हैं।

पहला नाबीना — मुझे अंदेशा होता था कि समुंदर तै करते-करते मर न जाऊँ।

दूसरा नाबीना— मुझे भी। हम साथ-साथ आये थे।

तीसरा नाबीना— हम तीनों एक ही महाल से आये।

पहला नाबीना — लोग कहते हैं कि हमारा गाँव शुमाल की तरफ़ यहाँ से नज़र आता है, बशर्ते कि आसमान साफ़ हो। उसमें कोई मीनार नहीं है।

तीसरा नाबीना— हम इत्तफाक से यहाँ उतर पड़े।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — मैं दूसरी तरफ से आयी हूँ।

दूसरा नाबीना — तुम कहाँ से आयी हो?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — मुझे अब इसका खयाल करते हुए खौफ़ मालूम होता है। मुझे अब उसकी याद नहीं रही। बहुत दिन गुज़र गये। वहाँ यहाँ से ज्यादा सर्दी पड़ती थी।

नौजवान अंधी औरत — मैं भी बहुत दूर से आयी हूँ।

पहला नाबीना — आखिर तुम कहाँ से आयी हो?

नौजवान अंधी औरत — यह बतलाना बहुत मुश्किल है। में उसे क्योंकर बयान कर सकती हूँ। वह यहाँ से निहायत दूर है, समुंदरों के उस पार। वह बहुत बड़ा मुल्क है। मैं सिर्फ इशारों से उसका हाल बता सकती हूँ लेकिन आँखें तो हैं ही नहीं। मैं बहुत दिनों तक भटकती फिरो हूँ लेकिन मैंने सूरज और आग और पानी और पहाड़ और लोगों के चेहरे और अजीब किस्म के फूल, सब देखे हैं। वैसे फूल इस जज़ीरे में नहीं हैं। यह तो

बिल्कुल वीरान, सुनसान और ठंडा है। जब से मेरी निगाह जाती रही है, मुझे फिर बू का एहसास नहीं हुआ। लेकिन मैंने अपने वाल्दैन (माँ-बाप) और बहनों को देखा है। मैं उस वक्त बहुत छोटी थी और बिल्कुल न जानती थी कि कहाँ हूँ। मैं उस वक्त तक समुंदर के किनारे खेला करती थी....ताहम आँखों से देखने की याद अब भी खूब है....एक दिन मैंने पहाड़ की चोटी पर से बर्फ की तरफ़ देखा....उन्हीं दिनों मुझे उन लोगों की पहचान होने लगी थी जो ग़मनसीब होने वाले हैं।

पहला नाबीना — तुम्हारा मतलब क्या है?

नौजवान अंधी औरत — मैं अब भी कभी-कभी ऐसे आदमियों को उनकी आवाज से पहचान सकती हूँ... मेरे दिल में ऐसी यादें हैं जो ज्यादा रौशन हो जाती हैं अगर मुझे उनका ध्यान न हो।

पहला नाबीना — मुझे कुछ याद नहीं....मैं....

(बड़ी-बड़ी चिड़ियों का एक गोल शोर मचाता हुआ पत्तियों के ऊपर से गुज़रता है।)

सबसे बुड्ढा नाबीना — फिर आसमान के नीचे कोई चीज गुजर रही है।

दूसरा नाबीना — तुम यहाँ क्यों आयीं?

सबसे बुड्ढा नाबीना — किससे पूछ रहे हो?

दूसरा नाबीना — अपनी नौजवान साधिन से।

नौजवान अंधी औरत — लोगों ने मुझसे कहा कि महात्मा जी मुझे अच्छा कर सकते हैं। वह कहते हैं कि एक दिन मेरी आँखें ज़रूर खुलेंगी। तब मैं इस जज़ीरे से चली जाऊँगी।

पहला नाबीना — इस जज़ीरे को तो सब तर्क (छोड़ना) करना चाहते हैं।

दूसरा नाबीना — क्या हम यहाँ हमेशा पड़े रहेंगे?

तीसरा नाबीना — महात्मा जी बहुत बुड्ढे हो गये हैं। उन्हें हम लोगों को अच्छा करने के लिए अब वक्त नहीं है।

नौजवान अंधी औरत — मेरी पलकें बंद हैं लेकिन मुझे मालूम होता है कि मेरी आँखों में बीनाई है।

पहला नाबीना — मेरी आँखें तो खुलीं हुई हैं

दूसरा नाबीना — मैं सोता हूँ तब भी आँखें खुली रहती हैं।

तीसरा नाबीना — आँखों का जिक्र छोड़ो।

सबसे बुड्ढा नाबीना— एक रोज शाम को दुआ करते वक्त मुझे औरतों की तरफ से एक ऐसी आवाज सुनायी दी कि जिसे मैं

पहचान न सका। तुम्हारी आवाज से मालूम हो जाता है कि तुम नौजवान हो...मैं तुम्हारी आवाज सुनकर मैं तुम्हें देखना चाहता था...

पहला नाबीना — मुझे कभी इसका इल्म नहीं हुआ।

दूसरा नाबीना — वह हमें कुछ बतलाते ही नहीं।

छठवाँ नाबीना — लोग कहते हैं कि तुम खूबसूरत हो, जैसे कोई औरत जो बहुत दूर से आयी हो।

नौजवान अंधी औरत — मैंने अपने तईं खुद कभी नहीं देखा।

सबसे बुड्ढा अंधा आदमी — हमने कभी एक दूसरे को नहीं देखा। हम तो आपस में सवाल करते हैं, जवाब देते हैं, साथ रहते हैं, साथ चलते-फिरते हैं, लेकिन बिल्कुल नहीं जानते कि हम क्या हैं। एक दूसरे को दोनों हाथों से छू लेने से क्या होता है। आँखें हाथों से ज्यादा बाखबर होती हैं...

छठवाँ नाबीना — जब तुम लोग धूप में निकलते हो तो कभी-कभी मुझे तुम्हारा साया दिखायी देता है।

सबसे बुड्ढा नाबीना — हमने उस घर को नहीं देखा जिसमें रहते हैं। दीवारों और खिड़कियों को हाथ से छूने से क्या होता है। हम बिल्कुल नहीं जानते कि हम कहाँ रहते हैं।....

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — लोग कहते हैं कि यह एक बिल्कुल तारीक, शिकस्ता, पुराना किला है। इस बुर्ज के सिवा जिसमें साधू जी रहते हैं वहाँ कभी रौशनी नज़र नहीं आती।

पहला नाबीना — जिनके आँखें नहीं हैं उन्हें रौशनी की क्या जरूरत है?

छठवाँ नाबीना — जब मैं ख़ानक़ाह के आसपास भेड़ें चराता हूँ तो शाम के वक्त वह बुर्ज की रौशनी देखकर आप ही आप घर पहुँच जाती हैं। उन्होंने मुझे कभी नहीं भटकाया।

सबसे बुड्ढा नाबीना — हमें साथ रहते मुद्दतें गुजर गईं, लेकिन हमने एक दूसरे को कभी नहीं देखा, गोया हम हमेशा तनहा रहते हैं। बिला देखे मुहब्बत नहीं पैदा होती...

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — मुझे कभी-कभी ख़्वाब में मालूम होता है कि मैं देख सकती हूँ।

सबसे बुड्ढा अंधा — मुझे सिर्फ सपने ही में दिखायी देता है।

पहला नाबीना — मैं अक्सर आधी रात को ख्वाब देखता हूँ।

दूसरा नाबीना — जब हाथों में हरकत ही नहीं होती तो इंसान किस चीज का ख्वाब देख सकता है?

(एक तूफान जंगल को हिला देता है और पत्तियाँ झड़ने लगती हैं।)

पाँचवाँ नाबीना — किसने मेरे हाथ छुए?

पहला नाबीना — हमारे चारों तरफ़ कोई चीज गिर रही है।

सबसे बुड्ढा नाबीना — ऊपर से आ रही है। मालूम नहीं क्या है....

पाँचवाँ नाबीना — किसने मेरे हाथ छुए। मैं सो रहा था। मुझे खूब सोने दो।

सबसे बुड्ढा नाबीना — किसी ने तुम्हारे हाथ नहीं छुए।

पाँचवाँ नाबीना — किसने मेरे हाथ पकड़े थे? जोर से बोलो। मैं जरा ऊँचा सुनता हूँ।

सबसे बुड्ढा नाबीना — हमको खुद नहीं मालूम।

पाँचवाँ नाबीना — क्या कोई हमें खबरदार करने आया है?

पहला नाबीना --इसको जवाब देना फिजूल है। उसे कुछ सुनायी नहीं देता।

तीसरा नाबीना — यह मानना पड़ेगा कि बहरे बड़े बदनसीब होते हैं।

सबसे बुड्ढा नाबीना — मैं बैठे-बैठे थक गया।

छठवाँ नाबीना — मैं यहाँ रहते-रहते थक गया।

दूसरा नाबीना — मुझे ऐसा मालूम होता है कि हम लोग बहुत दूर बैठे हुए हैं। आओ जरा और करीब आ जायें....ठंड पड़ने लगी।

तीसरा नाबीना — मुझे खड़े होते डर मालूम होता है। जहाँ बैठे हो वहीं बैठे रहो।

सबसे बुड्ढा नाबीना — मालूम नहीं हम लोगों के बीच में क्या हो।

छठवाँ नाबीना — मेरे दोनों हाथों से खून निकलता हुआ मालूम होता है। मैं खड़ा होना चाहता था।

तीसरा नाबीना — आवाज़ से ऐसा मालूम होता है कि तुम मेरी तरफ झुके हुए हो।

(अंधी पगली औरत जोर से अपनी आँखें मलती है और कराहते हुए बार-बार बेजान साधू की तरफ़ सर फेरती है।)

पाँचवाँ नाबीना — मुझे अब दूसरा शोर सुनायी देता है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — मेरे खयाल में हमारी पगली बहन आँखें मल रही है।

दूसरा नाबीना — बस, वह भी क्या करती है, मैं रोज रात को सुना करता हूँ।

तीसरा नाबीना — वह पगली से कुछ नहीं बोलती।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — जब से बच्चा पैदा हुआ वह एक बार भी नहीं बोली। मालूम होता है वह डरती है

सबसे बुड्ढा नाबीना — तो क्या तुम लोगों को यहाँ डर नहीं लगता?

पहला नाबीना — किसको?

सबसे बुड्ढा नाबीना — बाकी बाहम सब लोगों को।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — हाँ, हम सब यहाँ डरते हैं।

नौजवान अंधी औरत — हम बहुत दिनों से डर रहे हैं।

पहला नाबीना — तुम यह क्यों पूछते हो?

सबसे बुड्ढा नाबीना — मैं खुद नहीं जानता कि क्यों पूछता हूँ...कोई बात ऐसी है जो मेरे जेहन में नहीं आती....ऐसा मालूम होता है कि मेरे कानों में यकायक किसी के रोने की आवाज आयी....

पहला नाबीना — डरने से क्या होता है। शायद पगली औरत रोती है।

सबसे बुड्ढा नाबीना — नहीं, इसके अलावा कुछ और है....यकीनन कुछ और है.... सिर्फ उसके रोने से मुझे खौफ़ नहीं मालूम होता।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — वह जब अपने बच्चे को दूध पिलाने लगती है तो हमेशा रोती है।

पहला नाबीना — सिर्फ वही इस तरह रोती है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — लोग कहते हैं कि अब भी कभी-कभी उसे दिखायी देता है।

पहला नाबीना — हम किसी का रोना नहीं सुनते।

सबसे बुड्ढा नाबीना — रोने के लिए देखना जरूरी है।

नौजवान अंधी औरत — मुझे यहाँ कहीं से फूलों की महक आयी है।

पहला नाबीना — मुझे तो सिर्फ मिट्टी की बू आती है।

नौजवान अंधी औरत — हमारे करीब फूल हैं, फूल हैं।

दूसरा नाबीना — मुझे तो सिर्फ मिट्टी की बू आती है।

नौजवान अंधी औरत — मुझे अभी हवा में फूलों की खुशबू आयी।

तीसरा नाबीना — मुझे तो सिर्फ मिट्टी की बू आ रही है।

सबसे बुड्ढा नाबीना — मेरा खयाल है कि औरतें सही कहती हैं।

छठवाँ नाबीना — फूल कहाँ हैं. मैं जाकर चुनूँगा।

नौजवान अंधी औरत — खड़े हो जाओ, तुम्हारे दायीं तरफ़ हैं।

(छठवाँ अंधा आहिस्ता-आहिस्ता खड़ा होता है और दरख्तों और झाड़ियों में उलझता हुआ नर्गिसों की तरफ जाता है जिन्हें वह पैरों से कुचल डालता है।)

नौजवान अंधी औरत — मुझे सुनायी देता है कि तुम हरी डालियों को तोड़ डालते हो। ठहरो, ठहरो।

पहला नाबीना — फूलो की फिक्र मत करो, सोचो कि क्योंकर लौटोगे।

छठवाँ नाबीना — अब मैं अपने क़दमों को फेरने कीं जुरअत नहीं कर सकता।

नौजवान अंधी औरत — हरगिज मत आना। ठहरो (वह उठती है) आह! जमीन कितनी सर्द है! शायद बर्फ गिरेगी। वह बेधड़क ज़र्द नर्गिसों की तरफ़ जाती है लेकिन गिरे हुए दरख्त और चट्टान

रास्ते में हायल हो जाते हैं।) वह यहाँ हैं, लेकिन मैं उन्हें नहीं पा सकती। वह तुम्हारी तरफ़ हैं।

छठवाँ नाबीना — मैं समझता हूँ कि फूलों को चुन रहा हूँ।

(इधर-उधर टटोलकर वह बचे हुए फूलों को तोड़ लेता है और नौजवान अंधी औरत को दे देता है। तायराने शब उड़ जाते हैं।)

नौजवान अंधी औरत — मुझे ऐसा मालूम होता है कि मैंने कभी इन फूलों को देखा है....मैं इनका नाम भूल गयी हूँ....लेकिन यह कितने बदनुमा हैं और उनकी डंठल कितनी कमजोर! मैं उन्हें बमुशकिल पहचान सकती हूँ।....मेरा खयाल है कि यह मजार के फूल हैं....(वह नर्गिसों को अपने बालों में गूँध लेती है।)

सबसे बुड्ढा नाबीना — मुझे तुम्हारे बालों की आवाज सुनायी देती है।

नौजवान अंधी औरत — यह फूलों की आवाज है।

सबसे बुड्ढा नाबीना — हम तुम्हें न देखेंगे!

नौजवान अंधी औरत — मैं खुद अपने तईं न देखूँगी....मुझे सर्दी लग रही है!

(उसी वक्त हवा जंगल में जोर से चलने लगती है और समुंदर यकायक मुत्तसिल (पास के) पहाडों से टकराकर मुहीब (भयानक) आवाज से गरजता है)

पहला नाबीना — बादल गरज रहा है!

दूसरा नाबीना — मेरा खयाल है कि तूफान आ रहा है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — शायद समुंदर की आवाज है।

तीसरा नाबीना — क्या समुंदर? यह समुंदर की आवाज है? लेकिन यह तो हमसे दो ही क़दम के फासले पर मालूम होती है! बिल्कुल हमारे पास! चारों तरफ़ यही आवाज आ रही है! यह कुछ और होगा!

नौजवान अंधी औरत — मैं लहरों की आवाज अपने पैरों के पास सुन रही हूँ।

पहला नाबीना — मेरे खयाल में हवा सूखी पत्तियों का खड़खड़ा रही है।

सबसे बुड्ढा नाबीना — मैं समझता हूँ कि औरतें सही कहती हैं।

तीसरा नाबीना — तब तो वह यहाँ आता होगा।

पहला नाबीना — हवा कहाँ से आती है?

दूसरा नाबीना — समुंदर से।

सबसे बुड्ढा नाबीना — हवा हमेशा समुंदर की तरफ से आती है। समुंदर हमें चारों तरफ से घेरे हुए है। वह किसी दूसरी तरफ से नहीं आ सकती।

पहला नाबीना — भई, समुंदर का खयाल मत करो।

दूसरा नाबीना — यह क्योंकर मुमकिन है। वह तो जरा देर में हमारे पास आ जायेगा!

पहला नाबीना — तुम्हें क्या मालूम कि यह समुंदर की ही आवाज है।

दूसरा नाबीना — मुझे उसकी लहरें ऐसी क़रीब मालूम होती हैं कि मैं उसमें अपने हाथ डुबा सकता हूँ। हम यहाँ नहीं ठहर सकते। कहीं वह हमें चारों तरफ से घेर न ले।

सबसे बुड्ढा नाबीना — तुम्हें कहाँ जाना चाहते हो?

दूसरा नाबीना — इसकी कुछ परवाह नहीं, इसकी कुछ परवाह नहीं। अब पानी की यह गरज नहीं सुन सकता। यहाँ से भाग चलो, चलो!

तीसरा नाबीना — मुझे ऐसा मालूम होता है कि कोई और आवाज भी है। कान लगाओ। (तेज और दूर के क़दमों की आवाज सूखी पत्तियों में सुनायी देती है।)

पहला नाबीना — कोई चीज हमारी तरफ़ आ रही है!

दूसरा नाबीना — साधू जी हैं। साधू जी हैं! वह वापस आ रहे हैं।

तीसरा नाबीना — वह छोटे-छोटे क़दम रख रहे हैं, बिल्कुल एक छोटे बच्चे की तरह....

दूसरा नाबीना — आज उन्हें कुछ बुरा-भला मत कहना!

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — मेरे खयाल में यह आदमी के क़दम नहीं है।

(एक बड़ा कुत्ता जंगल में आता है और उनके सामने से गुज़रता है। सन्नाटा है।)

पहला नाबीना — यह कौन है? अरे तुम कौन हो? हमारे ऊपर रहम करो, हम बहुत देर से बैठे हुए हैं....(कुत्ता रुक जाता है और लौटकर अपने अगले पंजे को पहले नाबीना की घुटनियों पर रख देता है। अरे! आह! तुमने मेरी घुटनियों पर क्या रख - दिया? यह क्या है? अरे, यह तो कोई जानवर है! कुत्ता मालूम होता है....हाँ, हाँ

कुत्ता ही है। यह हमारी ख़ानक़ाह का कुत्ता है। इधर आओ, इधर आओ। हमें रास्ता दिखाने आया है। इधर आ, इधर आ!

पहला नाबीना — यह हमें रास्ता दिखाने आया है। हमारे पैरों के निशान देखता चला आया है। यह मेरे हाथ चाट रहा है, गोया मुझे सदियों के बाद देखा है। खुशी के मारे गुर्रा रहा है, खुशी के मारे मर न जाये! सुनो, कान लगाओ!

और सबके सब — इधर आ! इधर आ!

सबसे बुड्ढा नाबीना — शायद वह किसी आदमी के आगे-आगे आया है....

पहला नाबीना— नहीं, नहीं बिल्कुल अकेला आया है। मुझे और किसी के आने की आहट नहीं मिलती। अब हमें किसी दूसरे मालिक की ज़रूरत नहीं। इससे अच्छा और कौन होगा। हम जहाँ जायेंगे वहीं ले जायगा, हमारा हुक्म मानेगा...

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — मैं इसके साथ नहीं जा सकती।

नौजवान अंधी औरत — मैं भी नहीं जा सकती।

पहला नाबीना — क्यों? हमारी निगाह से इसकी निगाह बेहतर है।

दूसरा नाबीना — इन औरतों को बकने दो।

तीसरा नाबीना — मेरा ख़याल है कि आसमान में कुछ तगैयुर (परिवर्तन) हो गया है। हवा अब साफ़ है....मैं खूब सांस ले सकता हूँ।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — समुंदरी हवा हमारे चारों तरफ़ चल रही है।

छठवाँ नाबीना — मुझे ऐसा मालूम होता है कि रौशनी आ रही है। शायद आफताब निकल रहा है।

सबसे बुड्ढा नाबीना — मेरा खयाल है कि सर्दी पड़ने वाली है।

पहला नाबीना — अब हमें रास्ता मिल जायेगा। कुत्ता मुझे खींच रहा है। वह खुशी से फूला नहीं समाता। मैं अब उसे रोक नहीं सकता। चलो, हमारे साथ चलो। हम लोग घर जा रहे हैं....(कुत्ता उसे खींचकर बेजान साधू के पास ले जाता है और वहाँ रुक जाता है।)

और सबके सब — तुम कहाँ हो?....कहाँ जा रहे हो?....होशियार रहना।

पहला नाबीना — ठहरो-ठहरो, अभी मेरे साथ मत आओ। मैं लौटा जाता हूँ....साधू जी खामोश खड़े हैं....अरे यह क्या है....मुझे कोई बहुत ठंडी चीज महसूस हुई....

दूसरा नाबीना — तुम क्या कह रहे हो? मुझे अब तुम्हारी आवाज नहीं सुनायी देती।

पहला नाबीना — मैंने....शायद मेरा हाथ किसी के चेहरे पर पड़ा है....

तीसरा नाबीना — तुम क्या कह रहे हो! तुम्हारी बातें अब मुश्किल से समझ में आती हैं। तुम्हें क्या हो गया है? तुम कहाँ हो? क्या इतनी जल्द तुम हमसे इतनी दूर निकल गये?

पहला नाबीना — अरे अरे....कुछ समझ में नहीं आता कि यह क्या है...हमारे पास एक मुर्दा आदमी पड़ा हुआ है।

और सबके सब — क्या मुर्दा आदमी? तुम कहाँ हो? तुम कहाँ हो?

पहला नाबीना — मैं तुमसे सच कहता हूँ। हमारे बीच में एक मुर्दा आदमी है....अरे....मैंने एक मुर्दा चेहरा छू लिया....तुम सब एक मुर्दे के पास बैठे हो....हममें से कोई यकायक मर गया....लेकिन बोलो....सबके सब बोलो ताकि मालूम हो कि हममें कोन-कौन से आदमी जिन्दा हैं!

(पगली औरत और बहरे मर्द के सिवा और सब बारी-बारी से जवाब देते हैं। तीनों बुड्ढी औरतों ने दुआ करना बंद कर दिया है।)

पहला नाबीना — मैं अब तुम्हारी आवाजों को नहीं पहचान सकता....तुम्हारी आवाज एक ही सी है....सबके सब काँप रहे हो।

तीसरा नाबीना — दो आदमियों ने जवाब नहीं दिया। वह कहाँ गये?

(वह अपनी छड़ी से पाँचवें अंधे को छूता है।)

पाँचवाँ नाबीना — अरे अरे! मैं सो रहा था, मुझे सोने दो।

छठवाँ नाबीना — बहरा तो नहीं मरा। क्या पगली तो नहीं मर गयी?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — वह मेरे क़रीब बैठी हुई है। मैं उसका सांस लेना सुन रही हूँ।

पहला नाबीना — मेरा खयाल. है....मेरा खयाल है कि यह साधू जी हैं। वह खड़े हैं। आओ आओ।

दूसरा नाबीना — क्या वह खड़े हैं?

तीसरा नाबीना — तब वह मरे नहीं हैं।

सबसे बुड्ढा नाबीना — कहाँ हैं?

छठवाँ — नाबीना आकर देखो।

(पगली औरत और बहरे अंधे के सिवा सब उठते हैं और टटोलते हुए मुर्दे की तरफ़ जाते हैं।)

दूसरा नाबीना — क्या यही है? यही?

तीसरा नाबीना — हाँ, हाँ, मैं उन्हें पहचानता हूँ।

पहला नाबीना — या खुदा, या खुदा, हमारा क्या हाल होगा!

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — स्वामी जी! क्या यह तुम्हीं हो? तुम्हें क्या हो गया है? हमारी बातों का कुछ जवाब दो। हम सब तुम्हारे पास जमा हैं। हाय! हाय!

सबसे बुड्ढा नाबीना — थोड़ा-सा पानी लाओ। शायद अभी कुछ जान है।

छठवाँ नाबीना — हाँ, उन्हें बचाना चाहिए....गालिबन् वह हमें ख़ानक़ाह तक पहुँचाने के काबिल हो जायेंगे।

तीसरा नाबीना — बिल्कुल बेकार....मुझे उनके दिल की आवाज नहीं सुनायी देती....बिल्कुल ठंडे हो गये।

पहला नाबीना — एक लफ्ज भी न बोले....

तीसरा नाबीना — उन्हें लाजिम था कि हमें जता देते।

दूसरा नाबीना — हाय, वह कितने बुड्ढे हो गये थे। मैंने अबकी पहली बार उनका चेहरा छुआ है....

तीसरा नाबीना — (लाश को टटोलकर) हम लोगों से लंबे हैं!

दूसरा नाबीना — इनकी आँखें खुली हुई हैं। हाथ बांधे हुए मरे हैं।

पहला नाबीना — उनके इस तरह मरने की कोई वजह नहीं थी....

दूसरा नाबीना — वह खड़े नहीं हैं। एक पत्थर पर बैठे हैं...

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — या खुदा!.... मुझे यह सब न मालूम था... न मालूम था.... वह इतने दिनों से बीमार थे.... आज उन्हें बहुत तकलीफ़ हुई होगी... .हाय-हाय! वह कभी शिकायत का एक हर्फ जबान पर नहीं लाये.... सिर्फ हमारे हाथों को दबाकर अपना दर्देदिल जाहिर किया.... इंसान हमेशा इन बातों को नहीं समझता.... कभी नहीं समझता.... आओ मिलकर उनके लिए दुआए खैर (मंगलकामना की प्रार्थना) करें।

(औरतें घुटनों के बल बैठकर कराहती हैं।)

पहला नाबीना — मुझे झुकते हुए डर मालूम होता है....

दूसरा नाबीना — क्या मालूम किस चीज पर घुटने पड़ें....

तीसरा नाबीना — क्या वह बीमार थे। हमसे कभी नहीं बतलाया!

दूसरा नाबीना — जाते वक्त वह कुछ आहिस्ता-आहिस्ता कह रहे थे। शायद हमारी नौजवान बहन से कुछ कह रहे थे। क्या, उन्होंने क्या कहा?

पहला नाबीना — वह जवाब न देंगी।

दूसरा नाबीना — क्या अब तुम हमारी बातों का जवाब न दोगी? तुम कहाँ हो, बोलो!

सबसे बुड्ढी औरत — तुम लोगों ने उन्हें बहुत परीशान किया। तुम्हीं ने उन्हें मारा है। तुम आगे नहीं बढते थे। तुम सडक के किनारे पत्थरों पर बैठकर खाना चाहते थे। तुम सारे दिन भुनभुनाया करते थे। मैंने उन्हें आहें खींचते हुए सुना है....आखिर वह मायूस हो गये....

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — हमें कुछ नहीं मालूम था। हमने उनकी सूरत कभी नहीं देखी....हम इन फूटी आँखों वे क्या देख सकते हैं! उन्होंने कभी किसी का गिला नहीं किया....अब मौका निकल गया....मैंने तीन आदमियों को मरते देखा....लेकिन इस तरह कोई नहीं मरा....अब हमारी बारी है....

पहला नाबीना — मैंने उन्हें हरगिज नहीं परीशान किया....मैंने कभी कुछ नहीं कहा।

दूसरा नाबीना — न मैंने ही। हम बेउज्र उनका हुक्म मानते थे।

तीसरा नाबीना — वह पगली के वास्ते पानी लाने जा रहे थे, वहीं मर गये।

पहला नाबीना — अब हम क्या करें। कहाँ जायें!

तीसरा नाबीना — कुत्ता कहाँ गया?

पहला नाबीना — यह बैठा है। वह लाश के पास से हटता ही नहीं।

तीसरा नाबीना — उसे हटा दो, भगा दो, भगा दो!

पहला नाबीना — वह इस लाश को नहीं छोड़ता।

दूसरा नाबीना — हम एक मुर्दा आदमी के पास नहीं बैठ सकते.... हम इस तरह तारीकी में नहीं मरना चाहते!

तीसरा नाबीना — आओ हम लोग मिलकर बैठें, इधर-उधर न खिसकें, एक दूसरे के हाथ पकड़ लें। सब इसी पत्थर पर बैठें। और लोग कहाँ हैं? यहाँ आ जाओ, सब यहाँ आ जाओ।

सबसे बुड्ढा नाबीना — तुम कहाँ हो?

तीसरा नाबीना — मैं यहाँ हूँ! हम सब एक साथ हैं न? जरा और मेरे करीब आ जाओ। तुम लोगों के हाथ कहाँ हैं? सख्त सर्दी है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — ओफ़! तुम लोगों के हाथ कितने सर्द हैं!

तीसरा नाबीना — तुम क्या कर रही हो?

नौजवान अंधी औरत — मैं आँखों पर हाथ फेर रही थी। मुझे ऐसा मालूम होता था कि मेरी आँखें खुला ही चाहती हैं!

पहला नाबीना — यह रो कौन रहा है?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — वही पगली सिसक रही है।

पहला नाबीना — और अभी तक उसे हकीक़त मालूम ही नहीं।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — गालिबन् कोई आयेगा....

सबसे बुड्ढा नाबीना — और कौन आने वाला है?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — यह नहीं मालूम।

पहला नाबीना — मैं समझता हूँ कि बैरागिनें ख़ानक़ाह से आयेंगी....

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — वह शाम को बाहर नहीं निकलतीं।

नौजवान अंधी औरत — वह कभी बाहर नहीं निकलतीं।

दूसरा नाबीना — मेरा ख़याल है कि बड़ी रौशनी के मीनार से लोग हमें देख लेंगे।

सबसे बुड्ढा नाबीना — वह अपने मीनार से नीचे नहीं आते।

तीसरा नाबीना — मुमकिन है हमें देख लें।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — उनकी निगाह हमेशा समुंदर की तरफ रहती है।

तीसरा नाबीना — बड़ी सर्दी है।

सबसे बुड्ढा नाबीना — सूखी पत्तियों की तरफ लगाओ। मेरा ख्याल है कि बर्फ गिर रही है।

नौजवान अंधी औरत — उफ़, जमीन कितनी सख्त है।

तीसरा नाबीना — मैं अपने बायीं तरफ़ एक ऐसा शोर सुन रहा हूँ जो मेरी समझ में नहीं आता....

सबसे बुड्ढा नाबीना — समुंदर लहरों से टकरा रहा है।

तीसरा नाबीना — मेरा खयाल था कि औरतें रो रही होंगी।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — मुझे बर्फ में लहरों से टूटने की आवाज सुनायी दे रही है।

पहला नाबीना — यह कौन इतनी जोर से काँप रहा है। उसके मारे हम सब हिल रहे हैं।

दूसरा नाबीना — अब मैं अपने हाथों को नहीं खोल सकता।

सबसे बुड्ढा नाबीना — मुझे एक और गैर-मानूस (अपरिचित) आवाज सुनायी दे रही है...

पहला नाबीना — यह हममें से कौन इस तरह काँप रहा है।

सबसे बुड्ढा नाबीना — शायद कोई औरत है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — वही पगली सबसे ज्यादा थरथरा रही है।

तीसरा नाबीना — मुझे लड़के की आवाज नहीं सुनायी थी।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — शायद वह अभी तक दूध पी रहा है।

सबसे बुड्ढा नाबीना — एक वही है जो देख सकता है कि हम कहाँ हैं।

पहला नाबीना — मुझे शुमाली हवा की आवाज आ रही है।

छठवाँ नाबीना — मेरा खयाल है कि सितारे छिप गये। अब बर्फ गिरेगी।

दूसरा नाबीना — तब तो हमारा काम ही तमाम हुआ।

तीसरा नाबीना — अगर हममें से कोई सो जाये तो उसे फौरन जगा देना चाहिए

सबसे बुड्ढा नाबीना — मुझे जोर से नींद आ रही है।

(एक आंधी पत्तियों को उड़ा देती है।)

नौजवान अंधी औरत — तुम लोग सूखी पत्तियों की आवाज सुन रहे हो? मेरा खयाल है कोई हमारी तरफ़ आ रहा है।

दूसरा नाबीना — हवा है, कान लगाकर सुनो!

तीसरा नाबीना — अब कोई न आयेगा!

सबसे बुड्ढा नाबीना — शायद काली सर्दी आ रही है।

नौजवान अंधी औरत — मुझे किसी आदमी के दूरी पर चलने की आवाज सुनायी देती है।

पहला नाबीना — मुझे सिर्फ सूखी पत्तियों की आवाज सुनायी देती है!

नौजवान अंधी औरत — मुझे किसी के क़दमों की आहट मिल रही है।

दूसरा नाबीना — मुझे सिर्फ शुमाली हवा की आवाज सुनायी देती है।

नौजवान अंधी औरत — मैं तुमसे सच कहती हूँ कोई हमारी तरफ़ आ रहा है!

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — मुझे भी किसी की बहुत धीमी चाल की आवाज सुनायी देती है।

सबसे बुड्ढा नाबीना — मेरा ख़याल है कि औरतें ठीक कहती हैं।

(बर्फ के टुकड़े गिरने लगते हैं।)

पहला नाबीना — उफ्-उफ्! यह मेरे हाथों पर इतनी ठंडी कौन-सी चीज गिर रही है!

छठवाँ नाबीना — बर्फ है।

पहला नाबीना — आओ और सिमटकर बैठें।

नौजवान अंधी औरत — लेकिन क़दमों की आवाज की तरफ कान लगाओ।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — खुदा के लिए एक लमहा चुप हो जाओ।

नौजवान अंधी औरत — करीब होती जाती है। हाँ, क़रीब होती जाती है। सुनो!

(दफ़अतन् पगली औरत का बच्चा अंधेरे में जोर से रोने लगता है।)

सबसे बुड्ढा नाबीना — बच्चा रो रहा है!

नौजवान अंधी औरत — वह देख रहा है, देख रहा है! तब ही इतनी जोर से रोता है।

(वह बच्चे को अपनी गोद में ले लेती है और उस तरफ़ चलती है जिधर से क़दमों की आवाज आती हुई मालूम होती है! दूसरी औरतें मुतफ़क्किर (चिन्तित) अंदाज से उसके साथ चलती हैं और उसे घेर लेती हैं।)

मैं इस आवाज की तरफ़ जाती हूँ।

सबसे बुड्ढा नाबीना — होशियार रहना।

नौजवान अंधी औरत — उफ्! कितनी जोर से रोता है, क्या है! मत रो बेटे! डरो मत! डरने की कोई बात नहीं है, हम सब तुम्हारे पास हैं। तुम क्या रेख रहे हो? डरो मत! इस तरह मत रोओ! तुम क्या देखते हो? हमसे बतलाओ, आखिर यह क्या चीज है?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — क़दमों की आवाज क़रीब आती जाती है, सुनो, गौर से सुनो!

सबसे बुड्ढा नाबीना — मुझे सूखी पत्तियों में किसी के कपड़ों की सरसराहट सुनायी देती है।

छठवाँ नाबीना — क्या कोई औरत है!

सबसे बुड्ढा नाबीना — सिर्फ आदमियों की आवाज है।

पहला नाबीना — शायद समुंदर सूखी पत्तियों पर बह रहा है?

नौजवान अंधी औरत — नहीं, नहीं, क़दमों की आवाज है, क़दमों की आवाज है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — हमें अभी मालूम हुआ जाता है, सूखी पत्तियों की तरफ़ कान लगाये रहो।

नौजवान अंधी औरत — सुन रही हूँ, सुन रही हूँ! बिल्कुल पास! सुनो, सुनो। बच्चे, तुम क्या देख रहे हो? तुम क्या देख रहे हो?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — वह किस तरह ताक रहा है?

नौजवान अंधी औरत — क़दमों की आवाज ही की तरफ़ मुँह किये हुए है। देखो, देखो, जब मैं उसका मुँह फेर देती हूँ वह फिर उसी तरफ़ ताकने लगता है। वह देख रहा है, हाँ देख रहा है! वह कोई अजीबो-गरीब चीज देख रहा है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — (आगे बढ़कर) उसे हमसे ऊपर उठा दो ताकि खूब देख सके।

नौजवान अंधी औरत — हट जाओ (वह बच्चे को अंधों , की जमात से ऊपर उठाती है) कदमों की आवाज बिल्कुल हमारे सामने आकर रुक गयी है....।

सबसे बुड्ढा नाबीना — हाँ, वह बिल्कुल हमारे सामने आ गयी, ठीक सामने।

नौजवान अंधी औरत — तुम कौन हो?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत — हमारे ऊपर रहम करो!

(खामोश)

(सन्नाटा है। बच्चा गला फाड़-फाड़कर रोने लगता है।)

***

प्रेमचंद

चाँदी की डिबिया

जॉन गॉल्सवर्दी (John Galsworthy) के नाटक The Silver Box का अनुवाद

[हिन्दीकोश]

चाँदी की डिबिया

पात्र-सूची

जान बार्थिविक — मेम्बर पार्लिमेंटा, धनी और लिबरल दल का

मिसेज़ बार्थिविक — उनकी स्त्री

जैक बार्थिविक — उनका बेटा

रोपर — उनका वकील

मिसेज़ जोन्स — उनकी नौकरानी

मारलो — उनका खिदमतगार

हीलर — उनकी खिदमतगारिन

जोन्स — मिसेज़ जोन्स का शौहर

मिसेज़ सैडन — घर की मालकिन

स्नो — जासूस

पुलिस मैजिस्ट्रेट

एक अपरिचित स्त्री

दो छोटी अनाथ लड़कियाँ

लिवेन्स — उन लड़कियाँ का बाप

दारोगा

मैजिस्ट्रेट का क्लार्क

अर्दली

पुलिस के सिपाही, क्लार्क और अन्य दर्शक

समय — वर्त्तमान। पहले दो अंकों की घटना ईस्टर-ट्युजडे को होती है। तीसरे अंक की घटना ईस्टर-वेंसडे (बुध) को।

अंक 1 –

पहला दृश्य — राकिंहम गेट, जान बार्थिविक का भोजनालय

दूसरा दृश्य — वही,

तीसरा दृश्य — वहीं

अंक 2 –

पहला दृश्य — जोन्स का घर, मरथर स्ट्रीट

दूसरा दृश्य — जान बार्थिविक का भोजनालय

अंक 3 –

पहला दृश्य — लंदन का पुलिस कोर्ट

अंक 1

पहला दृश्य

[परदा उठता है, और बार्थिविक का नए ढंग से सजा हुआ बड़ा खाने का कमरा दिखाई देता है। खिड़की के परदे खिंचे हुए हैं। बिजली की रोशनी हो रही है। एक बड़ी गोल खाने की मेज पर एक तश्तरी रक्खी हुई है, जिसमें व्हिस्की, एक नलकी और एक चाँदी की सिगरेट की डिबिया है। आधी रात गुजर चुकी है।

दरवाजे के बाहर हलचल सुनाई देती है। दरवाजा झोंके से खुलता है, जैक बार्थिविक कमरे में इस तरह आता है, मानो गिर पड़ा हो। वह दरवाजे का कुंडा पकड़कर खड़ा सामने देख रहा है और आनन्द से मुस्करा रहा है। वह शाम के कपड़े पहिने हुए है, और वह हैट लगाए हुए है जो तमाशा देखते वक्त लगाई जाती है। उसके हाथ में एक नीले रंग का मखमल का जनाना बटुआ है। उसके लडकौंधे चेहरे पर ताज़गी झलक रही है। डाढ़ी और मूँछ मुंड़ी हुई है। उसके बाज़ू पर एक ओवरकोट लटक रहा है।]

जैक — अहा! मैं मजे से घर पहुँच गया। (विवाद के भाव से) कौन कहता है कि मैं बिना मदद के दरवाजा नहीं खोल सकता

था? वह लड़खड़ाता है, बटुए को झुलाता हुआ अन्दर आता है। एक जनाना रूमाल और लाल रेशम की थैली गिर पड़ती है। खूब झाँसा दिया — सभी चीजें गिरी पड़ी हैं। कैसा चकमा दिया है चुड़ैल को, उसका बेग साफ़ उड़ा लाया। (बटुए को झुलाता है।) खूब झाँसा दिया।

(चाँदी की डिबिया से एक सिगरेट निकालकर मुँह में रख लेता है।)

उस गधे को कभी कुछ नहीं दिया।

(अपनी जेब टटोलता है और एक शिलिंग बाहर निकालता है। वह उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती है, और लुढ़क जाती है। वह उसे खोजता है।)

इस शिलिंग का बुरा हो। (फिर खोजता है) एहसान को भूलना नीचता है! मगर कुछ भी नहीं, (वह हँसता है) मैं उससे कह दूँगा कि मेरे पास कुछ भी नहीं है।

(वह दरवाजे से रगड़ता हुआ निकलता है, और दालान से होता हुआ, जरा देर में लौट आता है। उसके पीछे-पीछे जोन्स आता है, जो नशे में चूर है। जोन्स की उम्र लगभग तीस साल है। गाल पिचके हुए, आँखों के गिर्द गड्ढे पड़े हुए, कपड़े फटे हुए हैं, वह इस

तरह ताकता है जैसे बेकार हो और पिछलगुए की भांति कमरे में आता है।

जैक — शिः, और चाहे जो कुछ करो मगर शोर मत करना। दरवाजा बन्द कर दो और थोड़ी-सी पियो।

(बड़ी गंभीरता से)

तुमने मुझे दरवाजा खोलने में मदद दी — मगर मेरे पास कुछ है नहीं। यह मेरा घर है, मेरे बाप का नाम बार्शिविक है — वह पार्लियामेंट का मेम्बर है, उदार-मेम्बर है। यह मैं तुमसे पहिले ही बता चुका। थोड़ी-सी पियो।

(वह शराब ढालता है, और पी जाता है।)

मुझे नशा नहीं है, (सोफा पर लेटकर) कोई हर्ज नहीं। तुम्हारा क्या नाम है? मेरा नाम बार्थिविक है, मेरे बाप का भी यही नाम है; मैं भी लिबरल हूँ — तुम क्या हो?

जोन्स — (भारी तेज़ आवाज में) मैं तो पक्का 'अनुदार' हूँ। मेरा नाम है जोन्स। मेरी बीबी यहाँ काम करती है; वह मजदूरनी है, यहाँ काम करती है।

जैक — जोन्स? (हँसता है) एक दूसरा जोन्स मेरे कॉलिज में पढ़ता है। मैं खुद साम्यवादी नहीं हूँ। मैं लिबरल हूँ — दोनों में बहुत

कम अन्तर है। क्योंकि लिबरल दल के सिद्धान्त ही ये हैं। हम सब कानून के सामने बराबर हैं — बेहूदी बात है, बिलकुल वाहियात, (हँसता है) मैं क्या कहने जा रहा था। मुझे थोड़ी-सी व्हिस्की दो।

(जोन्स उसे व्हिस्की देता है, और नलकी से पानी का छीटा मारता है।)

मैं तुमसे यह कहने जा रहा था, कि मेरी उससे तकरार हो गई। (बटुए को झुलाता है) थोड़ी-सी पी लो जोन्स — तुम्हारे बगैर यह काम ही न हो सकता — इसी से मैं तुम्हें पिला रहा हूँ। अगर कोई जान भी जाय, कि मैंने उसके रुपये उड़ा दिए, तो क्या करा। चुड़ैल! (सोफा पर पैर रख लेता है।) शोर मत करो और जो चाहे सो करो। शराब उँड़ेलो और खूब डटकर पियो। सिगरेट लो, जो चाहे सो लो। तुम्हारे बगैर बह हरगिज न फँसती। (आँखें बन्द करके) तुम टोरी हो, मैं खुद लिबरल हूँ, थोड़ी-सी पियो — मैं बड़ा बाँका आदमी हूँ।

(उसका सिर पीछे की तरफ़ लटक जाता है, वह मुस्कराता हुआ सो जाता है, और जोन्स खड़ा होकर उसकी तरफ ताकता है; तब जैक के हाथ से गिलास छीनकर पी जाता है। वह बटुए को

जैक की कमीज के सामने से उठा लेता है। उसे रोशनी में देखता है और सूँघता है।)

जोन्स — आज किसी अच्छे आदमी का मुँह देखकर उठा था।

(जैक के सामने की जेब में उसे ठूँस देता है।)

जैक — (बड़बड़ाता हुआ) चुड़ैल! कैसा चकमा दिया।

(जैक चारों तरफ़ कनखियों से देखता है, वह व्हिस्की उँड़ेल कर पी जाता है, तब चाँदी की डिबिया से एक सिगरेट निकालकर दो-एक दम लगाता है, और व्हिस्की पीता है। फिर उसे बिल्कुल होश नहीं रहता।)

जोन्स — बड़ी अच्छी-अच्छी चीजें जमा की हैं।

(वह ज़मीन पर पड़ी हुई लाल थैली को देखता है।)

है माल बढ़िया।

(वह उसे उंगली से छूता है, किश्ती में रख देता है और जैक की तरफ ताकता है।)

है मोटा आसामी।

(वह आईने में अपनी सूरत देखता है। अपने हाथ उठाकर और उंगलियों को फैलाकर वह उसकी तरफ झुकता है; तब फिर मुट्ठी

बांधकर जैक की तरफ़ ताकता है, मानो नींद में उसके मुस्कराते हुए चेहरे पर घूँसा मारना चाहता है। एकाएक वह बाकी बची हुई व्हिस्की गिलास में उँडेलता है और पी जाता है। तब कपटमयी हर्ष के साथ वह चाँदी की डिबिया और थैली उठाकर जेब में रख लेता है।)

बचा, मैं तुम्हें चरका दूँगा। इस फेर में न रहना।

(गुरगुराती हुई हँसी के साथ वह दरवाजे की ओर लड़खड़ाना हुआ जाता है। उसका कंधा स्विच से टकरा जाता है,रोशनी बुझ जाती है। किसी बंद होते हुए दरवाजे की आवाज सुनाई देती है।)

(परदा गिरता है। फिर तुरन्त उठता है।)

दृश्य दूसरा

[बार्थिविक का खाने का कमरा। जैक अभी तक सोया हुआ है। सुबह की रोशनी परदों से होकर आ रही है। समय साढे आठ बजे का है। व्हीलर जो एक फुर्तीली औरत है, कूड़े की टोकरी लिये आती है। और मिसेज़ जोन्स आहिस्ता-आहिस्ता कोयले की टोकरी लिये दाखिल होती है।]

व्हीलर — (परदा उठाकर) जब तुम कल चली गई, तो वह तुम्हारा निखट्टू शौहर तुम्हारी टोह में चक्कर लगा रहा था। मैं समझती हूँ, शराब के लिए तुमसे रुपया माँग रहा था। वह आध घंटे तक यहाँ कोने में पड़ा रहा। जब मैं कल रात को डाक लेने गई तो मैंने उसे होटल के बाहर खड़े देखा। अगर तुम्हारी जगह मैं होती, तो कभी उसके साथ न रहती। मैं कभी ऐसे आदमी के साथ न रहती, जो मुझ पर हाथ साफ करता। मुझसे यह बरदाश्त ही न होता। तुम लड़कों को लेकर क्यों नहीं उसे छोड़ देती हो? अगर तुम यह बरदाश्त करती रहोगी, तो वह और भी सिर चढ़ जाएगा। मेरी समझ में नहीं आता, कि महज़ शादी कर लेने से कोई आदमी क्यों तुम्हें दिक करे।

मिसेज़ जोन्स — (काली आँखें और काले बाल, चेहरा अंडाकार, आवाज चिकनी,नर्म और मीठी। सूरत से सहनशील मालूम होती है। उदासी से बातें करती है। वह नीले रंग का कपड़ा पहिने हुए है और उसके जूते में सूराख है।) वह आधी रात को घर आया और अपने होश में न था। उसने मुझे जगाया और पीटने लगा। उसे सिर-पैर की कुछ खबर ही नहीं मालूम होती थी। मैं उसे छोड़ना तो चाहती हूँ, मगर डरती हूँ, न मालूम मेरे साथ क्या करे। जब वह नशे में होता है, तो उसके क्रोध का पारावार नहीं रहता।

व्हीलर — तुम उसे कैद क्यों नहीं करा देतीं? जब लक तुम उसे बड़े घर न पहुँचा दोगी, तुम्हें चैन न मिलेगा। अगर मैं तुम्हारी जगह होती, तो कल ही पुलिस में इत्तला दे देती। वह भी समझता कि किसी से पाला पड़ा था।

मिसेज़ जोन्स — हाँ, मुझे जाना तो चाहिए, क्योंकि जब वह नशे में होता है तो मेरे साथ बुरी तरह पेश आता है। लेकिन बहिन! बात यह है कि उन्हें आजकल बड़ा कष्ट है — दो महीने से घर बैठे हुए हैं। और यही फिक्र उसे सता रही है। जब कहीं मजूरी मिल जाती है, तब वह इतना उजड्डपन नहीं करते। जब ठाले बैठते हैं तभी उनके सिर भूत सवार होता है।

व्हीलर — अगर तुम हाथ-पैर न हिलाओगी, तो उससे गला न छूटेगा।

मिसेज़ जोन्स — अब यह दुर्गति नहीं सही जाती; मुझे रात-रात भर जागते गुजर जाती हैं और यह भी नहीं कि कुछ कमा कर लाता—हो, क्योंकि घर का सारा बोझ मेरे सिर है। ऐसी-ऐसी गालियाँ देता है, क्या कहूँ। कहता है कि तू शोहदों को साथ लिये फिरती है। बिलकुल झूठी बात है, मुझसे कोई आदमी नहीं बोलता। हाँ, वह खुद औरतों के पीछे पड़ा रहता है। उसकी इन्हीं सब बातों से मेरा जी जला करता है। मुझे घमकाता है, कि

अगर तुमने मुझे छोड़ा तो सिर काट लूँगा। यह सब शराब और चिन्ता का फल है। हाँ, यों आदमी वह बुरा नहीं है। कभी-कभी वह मुझसे मीठी-मीठी बातें करता है, लेकिन मैंने उसके हाथों इतने दुःख भोगे हैं कि उसकी मीठी बातें भी बुरी लगती हैं। मैं तो उसकी बातों का जवाब तक नहीं देती। जब नशे में नहीं होता, तो लड़कों मे भी प्रेम करता है।

व्हीलर — तुम्हारा मतलब है, जब वह नशे में होता है?

मिसेज़ जोन्स — हाँ। (उसी स्वर में) वह छोटे साहब सोफा पर सोए हुए हैं।

(दोनों चुपचाप जैक की तरफ ताकती हैं।)

मिसेज़ जोन्स — (नर्म आवाज में) मालूम होता है, नशे में हैं।

व्हीलर — शोहदा है, शोहदा, मुझे विश्वास है, कि तुम्हारे शौहर की तरह इसने भी रात को पी थी। इसकी बेकारी एक दूसरी तरह की है, जिसमें पीने ही की सूझती है। जाकर मारलो से कह आऊँ, यह उसका काम है।

(वह चली जाती है।)

मिसेज़ जोन्स झुककर धीरे-धीरे झाड़ू देने लगती है।

जैक — (जागकर) कौन है? क्या बात है?

मिसेज़ जोन्स — मैं हूँ सरकार, मिसेज़ जोन्स।

जैक — (उठ बैठता है, और चारों तरफ़ ताकता है।) मैं कहाँ हूँ? क्या वक्त है?

मिसेज़ जोन्स — नौ का अमल होगा हुजूर। नौ।

जैक — नौ? क्यों? क्या?

(उठकर ज़बान चलाता है और सिर पर हाथ फेरकर मिसेज़ जोन्स की तरफ़ घूरकर देखता है!)

देखो, तुम मिसेज़ जोन्स, यह न कहना कि तुमने मुझे यहाँ सोते पाया।

मिसेज़ जोन्स — न कहूँगी, न कहूँगी सरकार।

जैक — इत्तफाक की बात है! मुझे याद नहीं आता कि मैं यहाँ कैसे सो गया। शायद चारपाई पर जाना भूल गया! अजीब बात है। मारे दर्द के सिर फटा जाता है। देखो मिसेज़ जोन्स, किसी ने कुछ कहना मत।

(बाहर जाता है, डयोढी में मारलो से मुठभेड़ होती है। मारलो जवान और गम्भीर है। उसकी डाढ़ी-मूँछ साफ है, और बाल माथे की तरफ़ से कंघी करके मुरगे की कलगी की तरह ऊपर उठा दिए गए हैं। है तो वह खानसामा, लेकिन अच्छे चाल-चलन का

आदमी है। वह मिसेज़ जोन्स को देखता है,और ओंठ दबाकर मुस्कराता है।)

मारलो — पहिली बार नहीं पी है, और न अंतिम बार ही है। जरा कुछ बौखलाया हुआ मालूम होता था, क्यों मिसेज़ जोन्स?

मिसेज़ जोन्स — अपने होश में न थे, लेकिन मैंने ध्यान नहीं दिया।

मारलो — तुम्हारी तो आदत पड़ी हुई है। तुम्हारे शौहर का क्या हाल है?

मिसेज़ जोन्स — (नर्म आवाज़ से) कल रात को तो उनकी हालत अच्छी न थी। कुछ सिर पैर की ख़बर ही न थी। बहुत रात गए आए, और गालियाँ बकते रहे। लेकिन इस वक्त सो रहे हैं।

मारलो — इसी तरह मजदूरी ढूँढ़ी जाती है, क्यों?

मिसेज़ जोन्स — उनकी आदत तो यह है, कि रोज सबेरे काम की तलाश में निकल जाते हैं। और कभी-कभी इतने थक जाते हैं कि घर आते ही गिर पड़ते हैं। भला यह कैसे कहूँ कि वह काम नहीं खोजते। ज़रूर खोजते हैं। रोजगार मंदा है।

(वह टोकरी और झाड़ू सामने रक्खे चुपचाप खड़ी हो जाती है। जिन्दगी की अगली-पिछली बातें किसी वन्य दृश्य की भांति

उसकी आँखों के सामने आने लगती हैं, और वह उन्हें स्थिर, उदासीन नेत्रों से देखती है।)

लेकिन मेरे साथ वह बुरी तरह पेश आते हैं। कल रात उन्होंने मुझे पीटा और ऐसी-ऐसी गालियाँ दीं कि रोंगटे खड़े होते हैं।

मारलो — बैंक की छुट्टी थी, क्यों? उसे होटल का चस्का पड़ गया है। यही बात है। मैं उसे रोज बड़ी रात तक कोने में बैठे देखता हूँ। वहीं फिरा करता है।

मिसेज़ जोन्स — काम की खोज में दिन भर दौड़ते-दौड़ते बहुत थक जाते हैं। और कहीं कोई दूसरा रोजगार भी नहीं मिलता, इसलिए अगर एक घूँट भी पी लेते हैं, तो सीधे दिमाग पर चढ़ जाती है। लेकिन जिस तरह वह मेरे साथ पेश आते हैं, उस तरह अपनी बीवी के साथ न पेश आना चाहिए। कभी-कभी तो वह मुझे घर से निकाल देते हैं। और मैं सारी रात मारी-मारी फिरती हूँ। वह मुझे घर में घुसने भी नहीं देते। पीछे से पछताते हैं। और वह मेरे पीछे-पीछे लगे रहते हैं, गलियों में मुझ पर ताक लगाए रहते हैं। उन्हें ऐसा न चाहिए, क्योंकि मैंने कभी उनके साथ दगा नहीं की। और मैं उनसे कहती हूँ, कि मिसेज़ बार्थिविक को तुम्हारा आना अच्छा नहीं लगता। लेकिन इस पर उन्हें क्रोध आ जाता है, और वह अमीरों को गालियाँ देने लगते हैं। उनकी

नौकरी भी इसी वजह से छूटी, कि वह मुझे बुरी तरह सताते थे। तब से वह अमीरों के जानी दुश्मन हो गये हैं। उन्हें देहात में सईसी की अच्छी जगह मिल गई थी। लेकिन जब मुझे मारने-पीटने लगे, तो बदनाम हो गए।

मारलो — सजा हो गई?

मिसेज़ जोन्स — हाँ, मालिक ने कहा, मैं ऐसे आदमी को नहीं रक्खूँगा, जिसकी लोग इतनी निन्दा करते हैं। उसने यह भी कहा कि इसकी देखा-देखी और लोग भी ऐसे ही करेंगे। लेकिन यहाँ का काम छोड़ दूँ तो मेरा निबाह न हो। मेरे तीन बच्चे हैं। और मैं नहीं चाहती कि वह मेरे पीछे-पीछे गलियों में घूमें और शोर-गुल मचाएँ।

मारलो — (खाली बोतल को ऊपर उठाकर) एक बूँद भी नहीं। अगर अबकी तुम्हें मारे, तो एक गवाह लेकर सीधे कचहरी चली जाना।

मिसेज़ जोन्स — हाँ, मैंने ठान लिया है। जरूर जाऊँगी।

मोरलो — हूँ! सिगरेट की डिबिया कहाँ हैं?

(वह चाँदी की डिबिया ढूँढ़ता है। मिसेज़ जोन्स की तरफ देखता है, जो हाथों और घुटनों के बल झाड़ू दे रही है, वह रुक जाता है,

और खड़ा-खड़ा कुछ सोचने लगता है। वह तश्तरी में से दो अधजले सिगरेट उठा लेता है, और उनके नाम पढ़ता है।)

मारलो — डिबिया कहाँ चली गई?

(वह विचारपूर्ण भाव से फिर मिसेज़ जोन्स को देखता है, और जैक का ओवरकोट लेके जेबें टटोलता है। व्हीलर नाश्ते की तश्तरी लिये आती है।)

मारलो — (व्हीलर से अलग) तुमने सिगरेट की डिबिया देखी है?

व्हीलर — नहीं।

मारलो — तो वह गायब हो गई। मैंने रात उसे तश्तरी में रख दिया था, और उन्होंने सिगरेट पिया भी (सिगरेट के जले हुए टुकड़े दिखाकर)। इन जेबों में नहीं है। आज ऊपर कब ले गए? जब वह नीचे आयें तो उनके कमरे में खूब तलाश करना। यहाँ कौन-कौन आया था?

व्हीलर — अकेली मैं और मिसेज़ जोन्स।

मिसेज़ जोन्स — यह कमरा तो हो गया, क्या बैठक भी साफ कर दूँ?

व्हीलर — (उसे सन्देह से देखकर) तुमने देखा है? पहिले इस छोटी कोठरी को साफ़ कर दो।

(मिसेज़ जोन्स टोकरी और ब्रुश लिये बाहर चली जाती है, मारलो और व्हीलर एक दूसरे के मुँह की ओर ताकते हैं।)

मारलो — पता तो चल ही जायगा।

व्हीलर — (हिचकिचाकर) ऐसा तो नहीं हुआ कि उसने —

द्वार की ओर देखकर सिर हिलाती है।

मारलो — (दृढ़ता से) नहीं, मैं किसी पर सन्देह नहीं करता।

व्हीलर — लेकिन मालिक से तो कहना ही पड़ेगा।

मारलो — जरा ठहरो, शायद मिल ही जाय, हमें किसी पर सन्देह न करना चाहिए। यह बात मुझे पसन्द नहीं।

(परदा गिरता है। तुरन्त ही फिर परदा उठता है।)

तीसरा दृश्य

[बार्थिविक और मिसेज़ बार्थिविक मेज पर बैठे नाश्ता कर रहे हैं, पति की उम्र पचास और साठ के बीच में है। चेहरे से ऐसा मालूम होता है कि अपने को कुछ समझता है। सिर गंजा है, आँखों पर ऐनक है, और हाथ में टाइम्स पत्र है। स्त्री की उम्र

पचास के लगभग होगी। अच्छे कपड़े पहिने हुए हैं। बाल खिचड़ी हो गए हैं। चेहरा सुन्दर है, मुद्रा दृढ़ है। दोनों आमने-सामने बैठे हैं।]

बार्थिविक — (पत्र के पीछे से) बार्नसाइड के बाई इलेक्शन में मजूर दल का आदमी आ गया प्रिये।

मिसेज़ बार्थिविक — मजूर दल का दूसरा आदमी आ गया। समझ में नहीं आता लोग क्या करने पर तुले हुए हैं।

बार्थिविक — मैंने तो पहिले ही कहा था। मगर इससे होता क्या है।

मिसेज़ बार्थिविक — वाह! तुम इन बातों को इतनी तुच्छ क्यों समझते हो। मेरे लिए तो यह आफ़त से कम नहीं। और तुम औट तुम्हारे लिबरल भाई इन आदमियों को और शह देते हैं।

बार्थिविक — (भौंहें चढ़ाकर) सब दलों के प्रतिनिधियों का होना उचित सुधार के लिए ज़रूरी है।

मिसेज़ बार्थिविक — तुम्हारे सुधार की बात सुनकर मेरा जी जल उठता है। समाज सुधार की सारी बातें पागलों की-सी हैं। हम खूब जानते हैं कि उनकी क्या मंशा है। वे सब कुछ अपने लिए

चाहते हैं। ये साम्यवादी और मजूर दल के लोग परले सिरे के मतलबी हैं; न उनमें देश-भक्ति है। ये सब ऊँचे दरजे के लोग हैं। वे भी वही चाहते हैं, जो हमारे पास मौजूद है।

बार्थिविक — जो हमारे पास है वह चाहते हैं। (आकाश की ओर देखता है।) तुम क्या कहती हो प्रिये? (मुँह बनाकर) मैं कान के लिए कौवे के पीछे दौड़ने वालों में नहीं हूँ।

मिसेज़ बार्थिविक —मलाई दूँ? सबके सब बौखल हैं। देखते जाव, थोड़े दिनों में हमारी पूंजी पर टैक्स लगेगा। मुझे तो विश्वास है कि वह हर एक चीज पर कर लगा देंगे। उन्हें देश का तो कोई खयाल ही नहीं। तुम लिबरल और कंज़रवेटिव सब एक से हो। तुम्हें नाक के आगे तो कुछ दिखाई ही नहीं देता। तुममें जरा भी विचार नहीं है। तुम्हें चाहिए कि आपस में मिल जाव, और इस अंखुए को ही उखाड़ दो।

बार्थिविक — बिलकुल वाहियात बक रही हो। यह कैसे हो सकता है कि लिबरल और कंज़रवेटिव मिल जाय। इससे मालूम होता है कि औरतों के लिए यह कितनी — लिबरलों का सिद्धान्त ही यह है कि जनता पर विश्वास किया जाय।

मिसेज़ बार्थिविक — चुपके से नाश्ता करो, जान, मानो तुममें और कंज़रवेटिवों में बड़ा भारी फर्क है। सभी बड़े आदमियों के एक ही सिद्धान्त और एक ही स्वार्थ होते हैं।

(शान्त होकर)

उफ़! तुम ज्वालामुखी पर बैठे हो जान।

बार्थिविक — क्या?

मिसेज़ बार्थिविक — मैंने कल पत्र में एक चिट्ठी पढ़ी थी, उस आदमी का नाम भूलती हूँ, लेकिन उसने सारी बातें खोलकर रख दी थीं। तुम लोग किसी बात की असलियत नहीं समझते थे।

बार्थिविक — हूँ। ठीक है। (भारी स्वर से) मैं लिबरल हूँ, इस विषय को छोडो।

मिसेज़ बार्थिविक — टोस्ट दूँ? मैं इस आदमी के विचारों से सहमत हूँ। शिक्षा, नीची श्रेणी के आदमियों को चौपट कर रही है। इससे उनका सिर फिर जाता है, और यह सभी के लिए हानिकर है। मैं नौकरों के रंग-ढंग में अब वह बात ही नहीं पाती।

बार्थिविक — (कुछ सन्देह के साथ) अगर तबदीली से कोई अच्छी बात पैदा हो जाय, तो मैं उसका स्वागत करने को तैयार हूँ।

(एक ख़त खोलता है) अच्छा, मास्टर जैक का कोई नया मामला है, ‘हाई स्ट्रीट, आक्सफोर्ड’। महाशय, हमारे पास मि. जान बार्थिविक की चालीस पौण्ड की हुंण्डी आयी है। अच्छा यह खत उसके नाम है। ’हम अब इस चेक को भेजते हैं, जो आपने हमारे यहाँ भुनाया था, पर जैसा मैं अपने पहले पत्र में लिख चुका हूँ, जब वह आपके बैंक में भेजा गया तो उन लोगों ने उसे नहीं सकारा। भवदीय, मास एण्ड सन्स टेलर्स।’ खूब (चेक को ध्यान से देखकर) है मजेदार बात। इस लौंडे पर तो मुक़दमा चल सकता है।

मिसेज़ बार्थिविक — जाने भी दो जान, जैक की नीयत बुरी न थी। उसने यही समझा होगा कि मैं कुछ रुपये ऊपर ले रहा हूँ। मेरा अब भी यही खयाल है कि बैंक को यह चैक भुना देना चाहिए था। उन लोगों को मालूम होगा कि तुम्हारी कितनी साख है।

बार्थिविक — (पत्र और चेक को फिर लिफाफे में रखकर) अदालत में लाला की आँखें खुल जातीं।

(जैक आ जाता है। उसे देखते ही वह चुप हो जाता है, बास्केट के बटन बन्द कर लेता है। ठुड्डी पर अस्तुरा लग गया है। उसे दबा लेता है।)

जैक — (उन दोनों के बीच में बैठकर और प्रसन्न मुख बनने की इच्छा करके) खेद है मुझे देर हो गई। (प्यालों को अरुचि से देखकर) अम्मा, मुझे तो चाय दीजिए। मेरे नाम का कोई ख़त है?

(बार्थिविक इसे ख़त दे देता है।)

यह क्या बात है, इसे खोल किसने डाला? मैं आप से कह चुका मेरे ख़तों...

बार्थिविक — (लिफाफे को छूकर) मेरा खयाल है यह मेरा ही नाम है।

जैक — (खिन्न होकर) आप ही का नाम तो मेरा भी नाम है। इसे मैं क्या करूँ।

(खत पढ़ता है और बड़बड़ाता है।)

बदमाश!

बार्थिविक — (उसे देखकर) तुम इतने सस्ते टूटने के लायक़ नहीं हो।

जैक — क्या अभी आप मुझे काफी नहीं कोस चुके।

मिसेज़ बार्थिविक — क्यों उसे दिक करते हो जान! कुछ नाश्ता कर लेने दो।

बार्थिविक — अगर मैं न होता तो जानते हो तुम्हारी क्या दशा होती? यह संयोग

की बात है — मान लो तुम किसी गरीब आदमी या क्लार्क के बेटे होते। ऐसा चेक भुनाना जिसे तुम जानते हो कि चल न सकेगा, क्या कोई मामूली बात है! तुम्हारी सारी जिन्दगी बिगड़ जाती। अगर तुम्हारे यही ढंग हैं, तो ईश्वर ही मालिक है। मैं तो ऐसी बातों से हमेशा दूर रहा।

जैक — आपके हाथ में हमेशा रुपये रहते होंगे। अगर आपके पास रुपये का ढेर हो तो फिर इसकी जरूरत —

जॉन — मेरी हालत ठीक इसकी उलटी थी। मेरा बाप कभी मुझे काफी रुपये. न देता था।

जैक — आपको कितना मिलता था?

जॉन — इसमें कोई सार नहीं। सवाल है, क्या तुम अनुभव करते हो कि तुमने कितना बड़ा अपराध किया है।

जैक — यह सब मैं कुछ नहीं जानता। हाँ, अगर आपका खयाल है कि मैंने बेजा किया तो मुझे दुःख है। मैं तो यह पहले ही कह चुका। अगर मैं पैसे-पैसे को मुहताज न होता तो कभी ऐसा काम न करता।

बार्थिविक — चालीस पौण्ड में से अब कितने बचे रहे?

जैक — (हिचकता हुआ) ठीक याद नहीं, मगर ज्यादा नहीं हैं।

बार्थिविक — आखिर कितना?

जैक — (उद्दण्डता से) एक पैसा भी नहीं बचा।

बार्थिविक — क्या?

जैक — मारे दर्द के सिर फटा जाता है।

(अपने हाथ पर सिर झुका लेता है।)

मिसेज़ बार्थिविक — सिर में दर्द कब से होने लगा बेटा? कुछ नाश्ता तो कर लो।

जैक — (सांस खींचकर) बड़ा दर्द हो रहा है।

मिसेज़ बार्थिविक — क्या उपाय करूँ? मेरे साथ आओ बेटा! मैं तुम्हें ऐसी चीज खिला दूँगी कि सारा दर्द तुरन्त जाता रहेगा।

(दोनों कमरे से चले जाते हैं, और बार्थिविक खत को फाड़ कर अंगीठी में डाल देता है। इतने में मारलो आ जाता है और चारों ओर आँखें दौड़कर जाना चाहता है।)

बार्थिविक — क्या है मारलो? क्या खोज रहे हो?

मारलो — मि. जान को देख रहा था।

बार्थिविक — मि. जान से क्या काम है?

मारलो — मैंने समझा शायद यहाँ हों।

बार्थिविक — (सन्देह के भाव से) हाँ, लेकिन उनसे तुम्हें काम क्या है?

मारलो — (लापरवाही से) एक औरत आई है। कहती है उनसे कुछ कहना चाहती हूँ।

बार्थिविक — औरत! इतने सवेरे! कैसी औरत है?

मारलो — (स्वर से बिना कोई भाव किए हुए) कह नहीं सकता हुजूर। कोई खास बात नहीं। मुमकिन है कुछ मांगने आई हो। मेरा खयाल है कोई खैरात माँगने वाली है।

बार्थिविक — क्या उन औरतों के-से कपड़े पहने है?

मारलो — जी नहीं, मामूली कपड़े पहने है।

बार्थिविक — कुछ माँगना चाहती है।

मारलो — जी नहीं।

बार्थिविक — तुम उसे कहाँ छोड़ आए हो?

मारलो — बड़े कमरे में हुजूर।

बार्थिविक — बड़े कमरे में। तुम कैसे जानते हो कि वह चोरनी नहीं है? घर की कुछ टोह लेने आई हो?

मारलो — मुझे ऐसी तो नहीं मालूम होती।

बार्थिविक — खैर, यहाँ लाओ। मैं खुद उससे मिलूँगा।

(मारलो चुपके से सिर हिलाकर भय प्रकट करता चला जाता है। जरा देर में एक पीले मुख की युवती को साथ लिये लौटता है। उसकी आँखें काली हैं, चेहरा सुन्दर, कपड़े तरहदार हैं, और काले रंग के। लेकिन कुछ फूहड़ है। सिर पर एक काली टोपी है जिस पर सफेद किनारी है। उस पर परमा के बैंजनी फूलों का एक गुच्छा बेढंगेपन से लगा हुआ है। मि. बार्थिविक को देखकर वह हक्का-बक्का हो जाती है। मारलो चला जाता है।)

अपरिचित स्त्री — अरे! क्षमा कीजिएगा। कुछ भूल हो गई है।

(वह जाने के लिए घूमती है।)

बार्थिविक — आप किससे मिलना चाहती हैं श्रीमती जी?

अपरिचित — (रुककर और पीछे की ओर देखकर) मैं मि. जान बार्थिविक से मिलना चाहती थी।

बार्थिविक — जान बार्थिविक तो मेरा ही नाम है श्रीमती जी। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?

अपरिचित — जी — मैं यह नहीं....

(आँखें झुका लेती है। बार्थिविक उसे ध्यान से देखता है और ओठों को सिकोड़ता है।)

बार्थिविक — शायद आप मेरे बेटे से मिलना चाहती हैं?

अपरिचित — (जल्दी से) हाँ-हाँ, यही बात है।

बार्थिविक — पूछ सकता हूँ कि मुझे किससे बातें करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है?

अपरिचित — (उसके मुख पर विनय और आग्रह का भाव दिखाई देता है) मेरा नाम है — मगर जरूरत ही क्या है। मैं झमेला नहीं करना चाहती। मैं ज़रा एक मिनट के लिए आपके बेटे से मिलना चाहती हूँ।

(साहस से)

सच तो यह है कि मेरा उनसे मिलना बहुत जरूरी है।

बार्थिविक — (अपनी बेचैनी को दबाकर) मेरे बेटे की तो आज तबीयत कुछ ख़राब है। अगर जरूरत हो तो मैं आपका काम कर सकता हूँ। आप अपनी ज़रूरत बयान करें।

अपरिचित — जी — लेकिन मेरा उनसे मिलना जरूरी है। मैं इसी इरादे से आयी हूँ। मैं कोई झमेला नहीं करना चाहती,

लेकिन बात यह है — रात को-आपके बेटे ने उड़ा दी — उन्होंने मेरी...

(रुक जाती है)

बार्थिब्रिक — (कठोर स्वर से) हाँ, हाँ, कहिए, क्या?

अपरिचित — वह मेरा — बटुआ उठा ले गए

बार्थिविक — आपका बटु...

अपरिचित — मुझे बटुए की चिन्ता नहीं है। उसकी मुझे जरूरत नहीं। मैं सच कहती हूँ, मेरा इरादा बिलकुल नहीं है कि कोई झमेला हो।

(उसका चेहरा काँपने लगता है)

लेकिन — लेकिन — मेरे सब रुपये उसी बटुए में थे।

बार्थिविक — किस चीज में-किस चीज में?

अपरिचित — मेरे बटुए में एक छोटी सी थैली में रखे हुए थे। लाल रंग की रेशमी थैली थी। सच कहती हूँ, मैं न आती — मैं कोई झमेला नहीं करना चाहती। लेकिन मुझे रुपये मिलने चाहिए, कि नहीं?

बार्थिविक — क्या आपका यह मतलब है कि मेरे बेटे ने — ?

अपरिचित — जी, समझ लीजिए, वह अपने...मेरा यह मतलब कि वह —

बार्थिविक — मैं आपका मतलब नहीं समझा।

अपरिचित — (अपने पैर पटककर मोहक भाव से मुस्कराती है) ओह! आप समझते नहीं — वह पिए हुए थे। मुझसे तकरार हो गई।

बार्थिविक — (इसे बेशर्मी की बात समझकर) कैसे? कहाँ?

अपरिचित — (निःशंक भाव से) मेरे घर पर। वहाँ एक दावत थी, और आपके सुपुत्र...

बार्थिविक — (घंटी बजाकर) मैं पूछ सकता हूँ कि आपको यह घर कैसे मालूम हुआ? क्या उसने अपना नाम और पता बतला दिया था?

अपरिचित — (नज़र फेरकर) मैंने उनके ओवर कोट से निकाल लिया।

बार्थिविक — (ताने की मुस्कराहट के साथ) अच्छा! आपने उसके ओवर कोट से निकाल लिया। वह इस वक्त इस प्रकाश में आपको पहचान जायगा?

अपरिचित — पहचान जायगा? क्या इसमें भी कोई शक है।

(मारलो आता है।)

बार्थिविक — मि. जान से कहो नीचे आवें।

(मारलो चला जाता है और बार्थिविक बेचैन होकर कमरे में टहलने लगता है।)

आपकी और उसकी जान पहचान कितने।देन से है?

अपरिचित — केवल — केवल गुडफ्राइडे से।

बार्थिविक — मेरी समझ में नहीं आता, मैं फिर कहता हूँ, मेरी समझ में नहीं आता —

(वह अपरिचित स्त्री को कनखियों से देखता है, जो आँखें नीची किए खड़ी हाथ मल रही है। इतने में जैक आ जाता है। उसे देखकर वह ठिठक जाता है और अपरिचित स्त्री सनकियों की भाँति खिलखिला पड़ती है। सन्नाटा छा जाता है।)

बार्थिविक — (गंभीरता से) यह युवती – महिला कहती हैं कि गई रात को — क्यों श्रीमती जी, गई रात को ही न — तुमने इनकी कोई चीज उठा ली —

अपरिचित — (आतुरता से) मेरा बटुआ और मेरे सब रुपये उसी लाल रेशमी थैली में थे।

जैक — बटुआ? (इधर-उधर ताकता है कि निकल भागने का मौका कहीं है) मैं बटुआ क्या जानूँ।

बार्थिविक — (तेज आवाज में) घबराओ मत। तुम्हें गई रात को इन श्रीमती जी से मिलने से इनकार है?

जैक — इनकार! इनकार क्यों होने लगा? (स्त्री से धीमे स्वर में) तुमने मेरा नाम क्यों बतला दिया? तुम्हारे यहाँ आने की क्या जरूरत थी?

अपरिचित — (आँखों में आँसू भर लाकर) मैं सच कहती हूँ मैं नहीं चाहती थी — तुमने उसे मेरे हाथ से छीन लिया था। तुम्हें खूब याद होगा — और उस थैली में मेरे सब रुपये थे। मैं रात ही तुम्हारे पीछे आती, लेकिन मैं भम्भड़ नहीं मचाना चाहती थी, और देर भी बहुत हो गयी थी — फिर तुम बिलकुल ...

बार्थिविक — जाते कहाँ हो? बतलाओ क्या माजरा है?

जैक — (चिढ़कर) मुझे कुछ याद नहीं। (स्त्री से धीमी आवाज में) तुमने ख़त क्यों न लिख दिया?

अपरिचित — (नाराज होकर) मुझे रुपयों की अभी इस वक्त जरूरत है — मुझे आज मकान का किराया देना है।

(बार्थिविक की तरफ़ देखती है।)

ग़रीबों पर सभी दाँत लगाए रहते हैं।

जैक — सचमुच मुझे तो कुछ याद नहीं। रात की कोई बात मुझे याद नहीं है।

(सिर पर हाथ रखता है।)

बादल-सा छा गया है। और सिर में दर्द भी जोर का हो रहा है।

अपरिचित — लेकिन आपने रुपये तो लिये थे। यह आप नहीं भूल सकते। आपने कहा भी था कि कैसा चरका दिया।

जैक — खैर, तो यहाँ होगा। हाँ, अब मुझे कुछ-कुछ याद आ रहा है। मगर मैंने उसे लिया ही क्यों था?

बार्थिविक — हाँ, तुमने लिया ही क्यों, यही तो मैं पूछता हूँ?

(वह तेजी से खिड़की की तरफ़ घूम जाता है।)

अपरिचित — (मुस्कराकर) तुम अपने होश में न थे, ठीक है न?

जैक — (शर्म से मुस्कराकर) मुझे बहुत खेद है। लेकिन अब मैं क्या कर सकता हूँ?

बार्थिविक — हाँ, कर सकते हो, तुम उसका रुपया लौटा सकते हो।

जैक — मैं जाकर तलाश करता हूँ, लेकिन सचमुच मेरे पास रुपये हैं नहीं!

(वह जल्दी से चला जाता है, और बार्थिविक एक कुर्सी रखकर उस स्त्री को बैठने का इशारा करता है। तब होंठ सिकोड़े हुए वह खड़ा हो जाता है और उसे ध्यान से देखता है। वह बैठ जाती है और उसकी तरफ़ दबी हुई आँख से देखती है। तब वह घूम जाती है और नकाब खींचकर चोरी से अपनी आँखें पोंछती है। इतने में जैक आ जाता है।)

जैक — (खाली बटुए को दिखाता हुआ खिन्न भाव से) यही है न? मैंने चारों तरफ़ छान डाला थैली कहीं नहीं मिलती। तुम्हें ठीक याद है, वह इस बटुए में थी?

अपरिचित — (आँखों में आँसू भरकर) याद? हाँ, खूब याद है। लाल रंग की रेशमी थैली थी। मेरे पास जो कुछ था, सब उसी में था।

जैक — मुझे सचमुच बड़ा दुःख है। सिर में बड़ा दर्द हो रहा है। मैंने खिदमतगार से पूछा, लेकिन वह कहता है कि मैंने नहीं पाया।

अपरिचित — मेरे रुपये आपको देने पड़ेंगे।

जैक — ओह! सब तय हो जायगा, मैं सब ठीक कर दूँगा। कितने रुपये थे?

अपरिचित — (खिन्न होकर) सात पौण्ड थे और बारह शिलिंग थे। वही मेरी कुल संपत्ति थी।

जैक — सब ठीक हो जायगा। मैं तुम्हें एक चेक भेज दूँगा।

अपरिचित — (उत्सुकता से) नहीं साहब, मुझे अभी दे दीजिए, जो कुछ मेरी थैली में था, वह सब दे दीजिए। मुझे आज किराया देना है, वे सब एक दिन के लिए भी न मानेंगे। मैं पहिले ही पन्द्रह दिन पिछड़ गयी हूँ।

जैक — मुझे बहुत दुःख है, मैं सच कहता हूँ मेरे जेब में एक कौड़ी भी नहीं है।

(वह दबी आँखों से बार्थिविक को देखता है।)

अपरिचित — (उत्तेजित होकर) चलिए-चलिए, मैं न मानूँगी, ये मेरे रुपये हैं और आपने ले लिये हैं। मैं बगैर रुपया लिये घर न जाऊँगी। सब मुझे निकाल देंगे।

जैक — (सिर पकड़कर) लेकिन जब मेरे पास कुछ है ही नहीं तो दूँ क्या? मैं कह नहीं रहा हूँ कि मेरे पास एक कौड़ी भी नहीं है?

अपरिचित — (अपना रुमाल नोचकर) देखिए मुझे टालिए नहीं।

(विनय से दोनों हाथ जोड लेती है, तब एकाएक सरोष होकर कहती है।)

अगर तुम न दोगे, तो मैं दावा कर दूँगी, यह साफ चोरी है...चोरी।

बार्थिविक — (बेचैनी से) जरा ठहर जाइए। न्याय तो यही है कि आपके रुपये दिए जाएं और मैं इस मामले को तय किए देता हूँ।

(रुपये निकालकर।)

यह आठ पौण्ड हैं, फाजिल पैसे थैली की कीमत और गाड़ी का किराया समझ लीजिए। मुझे और कुछ कहने की जरूरत नहीं। धन्यवाद देने की भी कोई ज़रूरत नहीं।

(घंटी बजाकर वह चुपचाप दरवाजा खोल देता है, अपरिचित स्त्री रुपये को बटुए में रख लेती है और जैक की तरफ से बार्थिविक को देखती है। उसका मुख पुलकित हो उठता है, वह मुँह अपने हाथ से छिपा लेती है और चुपके से चली जाती है। बार्थिविक दरवाजा बन्द कर देती है।)

बार्थिविक — (गम्भीर भाव से) क्यों, कैसी दिल्लगी रही।

जैक — (विरक्त भाव से) संयोग की बात।

बार्थिविक — इस तरह वह चालीस पौण्ड उड़ गए। पहिले एक बात फिर दूसरी बात। मैं एक बार फिर पूछता हूँ कि अगर मैं

न होता, तो तुम्हारी क्या दशा होती? मालूम होता है, तुमने ईमान को ताक पर रख दिया। तुम उन लोगों में हो जो समाज के लिए कलंक हैं। तुम जो कुछ न कर गुजरो, वह थोड़ा है। नहीं मालूम तुम्हारी माँ क्या कहेंगी। जहाँ तक मैं समझता हूँ तुम्हारे इस चलन के लिए कोई उज्र नहीं हो सकता। यह चित्त की दुर्बलता है। अगर किसी ग़रीब आदमी ने यह काम किया होता तो क्या तुम समझते हो, उसके साथ लेशमात्र भी दया की जाती? तुम्हें इसका सबक़ मिलना चाहिए। तुम और तुम्हारी तरह के और आदमी समाज के लिए विष फैलाने वाले हैं। (क्रोध से) अब फिर कभी मेरे पास मदद के लिए मत आना। तुम इस योग्य — नहीं हो कि तुम्हारी मदद की जाय।

जैक — (अपने पिता की ओर क्रोध से देखता है, उसके मुँह पर लज्जा या पश्चाताप का कोई भाव नहीं है।) अच्छी बात है, न आऊँगा। देखूँ आप इसे कहाँ तक पसन्द करते हैं। इस वक्त भी आपने मेरी मदद न की होती, अगर आपके प्राण इस भय से न सूख जाते कि यह बात पत्रों में छप जाएगी। सिगरेट कहाँ है?

बार्थिविक — (बेचैनी से उसे देखकर) खैर, अब मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

(घंटी बजाता है)

इस बार मैं और छोड़ देता हूँ।

(मारलो आता है)

जाओ।

(टाइम्स के पीछे अपना मुँह छिपा लेता है)

जैक — (प्रसन्न होकर) सिगरेट कहाँ है, मारलो?

मारलो — मैंने रात व्हिस्की के साथ सिगरेट का बक्स भी रख दिया था। फिर इस वक्त उसका कहीं पता नहीं।

जैक — मेरे कमरे में देखा?

मारलो — जी हाँ, मैंने सारा घर छान डाला, मैंने नेस्टर सिगरेट के दो टुकड़े तश्तरी में पाए। इससे मालूम होता है, कि आपने रात को पिया होगा

(हिचकता हुआ।)

मेरा तो खयाल है कि कोई डिबिया को उड़ा ले गया।

जैक — (बेचैनी से) चुरा ले गया?

बार्थिविक — क्या चीज है। सिगरेट की डिबिया? और तो कोई चीज नहीं गायब हुई?

मारलो — जी नहीं, मैंने प्लेट देख लिया।

बार्थिविक — आज सवेरे घर में तो कुछ गड़बड़ न थी, कोई खिड़की खुली तो न थी?

मारलो — जी नहीं...

(जैक से आहिस्ता)

रात आप अपनी कुंजी दरवाजे में छोड़ गए थे।

(बार्थिविक की नज़र बचाकर कुंजी दे देता है।)

जैक — ठीक है।

बार्थिविक — आज सुबह कौन-कौन कमरे में आया था?

मारलो — मैं, ह्वीलर और मिसेज़ जोन्स, बस और तो कोई नहीं आया।

बार्थिविक — तुमने मिसेज़ बार्थिविक से पूछा? (जैक से) जाकर अपनी माँ से पूछो उनके पास तो नहीं है। यह भी कह दो कि खूब देख लें, कोई और चीज तो गुम नहीं हुई।

(जैक अपनी माँ के पास जाता है।)

ऐसी बातों से ख़ाहम-ख़ाह चिन्ता हो जाती है।

मारलो — जी हाँ हुजूर।

बार्थिविक — तुम्हारा किसी पर संदेह है?

मारलो — जी नहीं।

बार्थिविक — यह मिसेज़ जोन्स? वह यहाँ कितने दिनों से काम कर रही है?

मारलो — इसी महीने से तो आई है।

बार्थिविक — कैसी औरत है?

मारलो — मुझे उससे अधिक परिचय नहीं। देखने में तो सीधी-सादी शरीफ औरत मालूम होती है।

बार्थिविक — कमरे में आज झाड़ू किसने लगाई?

मारलो — व्हीलर और मिसेज़ जोन्स ने।

बार्थिविक — (अपनी पहली उंगली उठाकर) अच्छा मिसेज़ जोन्स किसी वक्त कमरे में अकेली भी आई थी?

मारलो — (उसका चेहरा मद्धिम पड़ जाता है) जी हाँ।

बार्थिविक — तुम्हें कैसे मालूम?

मारलो — (अनिच्छा के भाव से) मैंने उसे यहाँ देखा।

बार्थिविक — व्हीलर भी अकेली इस कमरे में आई थी?

मारलो — जी नहीं। लेकिन जहाँ तक मैं समझता हूँ मिसेज़ जोन्स बहुत ईमानदार...

बार्थिविक — (हाथ उठाकर) मैं यह जानना चाहता हूँ कि मिसेज़ जोन्स दोपहर तक यहाँ रही?

मारलो — जी हाँ — नहीं, नहीं, वह बावर्ची को तलाश करने तरकारी वाले की दुकान पर गई थी।

बार्थिविक — ठीक! वह इस समय घर में है?

मारलो — जी हाँ, है।

बार्थिविक — बहुत अच्छा। मैं इस मामले को साफ करके ही दम लूँगा। सिद्धान्त के विचार से यह जरूरी है कि असली चोर का पता लगाया जाय। यह तो समाज संगठन की जड़ को हिलाने वाली बात है?

मारलो — जी हाँ।

बार्थिविक — इस मिसेज़ जोन्स की दशा कैसी है? इसका शौहर कहीं काम करता है?

मारलो — काम तो शायद कहीं नहीं करता।

बार्थिविंक — बहुत अच्छी बात है। इस विषय में किसी से कुछ मत कहना, व्हीलर से कहो जबान न खोले और मिसेज़ जोन्स को यहाँ भेजो।

मारलो — बहुत अच्छा।

(मारलो चला जाता है। उसका चेहरा बहुत चिंतित है। बार्थिविक वहीं रहता है। उसका चेहरा न्यायगंभीर और कुछ प्रसन्न है, जैसा जांच करने वाले मनुष्यों का हो जाता है। मिसेज़ बार्थिविक और जैक आते हैं।)

बार्थिविक — क्यों प्रिये, तुमने तो डिबिया नहीं देखी?

मिसेज़ बार्थिविक — ना! लेकिन कैसी विचित्र बात है जान। मारलो की तो कोई बात ही नहीं। खिदमतगारिनों में भी मुझे विश्वास है कोई नहीं — हाँ बावर्ची।

बार्थिविक — अच्छा बावर्ची?

मिसेज़ बार्थिविक — हाँ। मुझे किसी पर संदेह करने से घृणा है।

बार्थिब्रिक — इस समय मनोभावों का प्रश्न नहीं, न्याय का प्रश्न है। नीति की रक्षा...।

मिसेज़ बार्थिविक— अगर मजदूरिनी इसके विषय में कुछ जानती हो, तो मुझे आश्चर्य न होगा। लोरा ने उसकी सिफारिश की थी।

बार्थिविक — (न्याय के भाव से) मैंने मिसेज़ जोन्स को बुलाया है। यह मुझ पर छोड़ दो और याद रक्खो जब तक अपराध साबित न हो जाय, कोई अपराधी नहीं है। इसका ख़याल रक्खूँगा। मैं उसे डराना नहीं चाहता, मैं उसके साथ हर तरह की रिआयत

करूँगा। मैंने सुना है बहुत फटेहालों रहती है। अगर हम गरीबों के साथ और कुछ न कर सकें तो उनके साथ जहाँ तक हो सके हमदर्दी तो करनी ही चाहिए।

(मिसेज़ जोन्स आती है। प्रसन्न मुख होकर।)

ओ, गुडमार्निंग मिसेज़ जोन्स।

मिसेज़ जोन्स — (धीमी और रूखी आवाज़ में) गुडमार्निंग सर, गुडमार्निंग मैडेम।

बार्थिविक — मैंने सुना है तुम्हारे पति आजकल खाली बैठे हुए हैं?

मिसेज़ जोन्स — हाँ हुजूर, आजकल उनके पास कोई काम नहीं है।

बार्थिविक — तब तो मेरे ख़याल में वह कुछ कमाते ही न होंगे?

मिसेज़ जोन्स — हाँ हुजूर, आजकल वह कुछ नहीं कमाते।

बार्थिविक — और तुम्हारे कितने बच्चे हैं?

मिसेज़ जोन्स — तीन बच्चे हैं हुजूर, लेकिन बच्चे बहुत नहीं खाते।

बार्थिविक — सबसे बड़े की क्या उम्र है?

मिसेज़ ज्ञोन्स — नौ साल की हुजूर।

बार्थिविक — स्कूल जाते हैं?

मिसेज़ जोन्स — हाँ हुजूर, तीनों बिना नागा मदरसे जाते हैं।

बार्थिविक — (कठोरता से) तो जब तुम दोनों मियाँ-बीवी काम पर चले जाते हो तो बच्चे खाते क्या हैं?

मिसेज़ जोन्स — हुजूर, मैं उन्हें खाना देकर भेजती हूँ। लेकिन रोज कहाँ खाना मयस्सर होता है हुजूर, कभी-कभी बेचारों को बिना कुछ भोजन दिए ही भेज देती हूँ। हाँ, जब मेरा मियां कहीं काम से लगा रहता है, तो बच्चों पर बड़ा प्रेम करता है। लेकिन जब खाली हाता है तो उसकी मति ही बदल जाती है।

बार्थिविक — शायद पीता भी है?

मिसेज़ जोन्स — जी हाँ हुजूर। जब पीता है तो कैसे कह दूँ कि नहीं पीता।

बार्थिविक — तब तो शायद तुम्हारे सब रुपये पीने ही में उड़ा देता होगा?

मिसेज़ जोन्स — जी नहीं, वह मेरे रुपये-पैसे नहीं छूते। हाँ जब अपने होश में नहीं रहते, तब उनका मन बदल जाता है। तब वह मुझे बुरी तरह पीटते हैं।

बार्थिविक — वह है क्या? कौन पेशा करता है?

मिसेज़ जोन्स — पेशा! साईस है हुजूर।

बार्थिविक — साईस! उनकी नौकरी छूट कब से गई?

मिसेज़ जोन्स — उसकी नौकरी छूटे कई महीने हो गए हुजूर। तब से कोई टिकाऊ काम नहीं मिला हुजूर, अब तो मोटरों का ज़माना है। उन्हें कौन पूछता है।

बार्थिविक — तुम्हारी शादी उनसे कब हुई थी मिसेज़ जोन्स?

मिसेज़ जोन्स — आठ साल हुए हुजूर — वही साल...।

मिसेज़ बार्थिविक — (तीव्र स्वर से) आठ! तुमने तो बड़े लड़के की उम्र नौ साल बतलाई थी?।

मिसेज़ जोन्स — हाँ, हुजूर, इसीलिए तो उनकी नौकरी छूटी। मेरे साथ हरमजदगी की और मालिक ने कहा-ऐसे आदमी को रखने से दूसरे आदमी भी बिगड़ेंगे। निकाल दिया।

बार्थिविक — तुम्हारा मतलब...कुछ ठीक...।

मिसेज़ जोन्स — हाँ हुजूर, जब नौकरी छूट गई तो मुझसे शादी कर ली।

मिसेज़ बार्थिविक — तो शादी के पहिले ही तुम...।

बार्थिविक — जाने भी दो प्रिये।

मिसेज़ बार्थिविक — (क्रोध से) कितनी बेहयाई की बात है।

बार्थिविक — (जल्दी से) तुम आजकल कहाँ रहती हो मिसेज़ जोन्स?

मिसेज़ जोन्स — हमारे घर नहीं है हुजूर। हमें अपनी बहुत-सी चीज अलग कर देनी पी हुजूर।

बार्थिविक — अलग कर देनी पड़ीं। क्या मतलब? क्या गिरवी रख दीं?

मिसेज़ जोन्स — हाँ हुजूर, अलग कर दीं। आजकल मरथर स्ट्रीट में रहते हैं हुजूर, यहाँ से बिलकुल पास है। नं. 34, बस एक कोठरी है।

बार्थिविक — किराया क्या है?

मिसेज़ जोन्स — सजे हुए कमरे के छः शिलिंग हफ्ते के पड़ते हैं हुजूर।

बार्थिविक — तो तुम्हारे जिम्मे किराया बाकी भी पड़ा होगा है?

मिसेज़ जोन्स — जी हाँ, कुछ बाकी है। हुजूर।

बार्थिविक — लेकिन तुम्हें अच्छी मजदूरी मिलती है। क्यों?

मिसेज़ जोन्स — बीफे को एक दिन स्टैमफोर्ड प्लेस में काम करती हूँ। सोम, बुद्ध, और सुक्कर को यहाँ आती हूँ। आज तो आधी छुट्टी है हुजूर, कल बैंक बन्द न था।

बार्थिविक — समझ गया। हफ्ते में चार दिन। आधा क्राउन रोज पाती हो न क्यों?

मिसेज़ जोन्स — हाँ हुजूर और मेरा खाना भी मिलता है। लेकिन जिस दिन आधी छुट्टी होती है उस दिन उठारह पेंस ही मिलते हैं।

बार्थिविक — और तुम्हारा शौहर जो कुछ पाता होगा, पीने में उड़ा देता होगा?

मिसेज़ जोन्स — हाँ साहब, कभी-कभी उड़ा देते हैं, कभी-कभी मुझे दे देते हैं। अगर उन्हें काम मिले तो करने को तैयार हैं हुजूर, लेकिन मालूम होता है, बहुत से आदमी खाली बैठे हुए हैं।

बार्थिविक — उँह! इन बातों में पड़ने से क्या फायदा। (सहानुभूति दिखाकर) यहाँ तुम्हारा काम बहुत कड़ा तो नहीं है? क्यों?

मिसेज़ जोन्स — नहीं हुजूर, ऐसा कुछ कड़ा तो नहीं है, हाँ जब रात को सोने नहीं पाती तब कुछ अखरता है।

बार्थिविक — हूँ! और तुम सब कमरों में झाड़ू लगवाती हो। कभी-कभी बावर्ची को बुलाने भी जाना पड़ता है? क्यों न?

मिसेज़ जोन्स — हाँ हुजूर।

बार्थिविक — आज भी तुम्हें जाना पड़ा था?

मिसेज़ जोन्स — हाँ हुजूर,..भाजी वाले की दुकान तक गई थी।

बार्थिविक — ठीक। तो तुम्हारा शौहर कुछ कमाता नहीं और बदमाश है?

मिसेज़ जोन्स — जी नहीं, बदमाश नहीं है। मैं समझती हूँ वह बहुत अच्छा आदमी है। हाँ, कभी-कभी मुझे पीटता है। मैं उसे छोड़ना नहीं चाहती, हालांकि मेरे मन में आता है कि उसके पास से चली जाऊँ क्योंकि मेरी समझ में ही नहीं आता उसके साथ रहूँ कैसे। वह आए दिन मुझे मारा करता है। थोड़े दिन हुए, उसने मुझे यहाँ एक घूँसा मारा था। अपनी छाती को छूती है। अभी तक दर्द हो रहा है। मैं तो समझती हूँ उसे छोड़ दूँ, आप क्या कहते हैं हुजूर?

बार्थिविक — वाह! मैं इस बारे में क्या कह सकता हूँ? अपने शौहर को छोड़ देना बुरी बात है, बहुत बुरी बात।

मिसेज़ जोन्स — जी हाँ, मुझे यही डर लगता है कि उसे छोड़ दूँ तो न जाने मेरी क्या गति करे। बड़ा गुस्सैल है, हुजूर।

बार्थिविक — इसमें मामले में मैं कुछ नहीं कह सकता। मैं तो नीति की बात कहता ।

मिसेज़ जोन्स — हाँ, हुजूर; मैं जानती हूँ इन मामलों में कोई मेरी मदद न करेगा। मुझे आप ही कोई राह निकालनी पड़ेगी। उन्हें भी तो ठोकरें खानी पड़ती हैं। लड़कों को बहुत चाहते हैं हुजूर, और उन्हें भूखे मदरसे जाते देखकर उनके दिल पर चोट लगती है।

बार्थिविक — (जल्दी से) खैर-धन्यवाद। मेरे जी में आया कुछ तुम्हारा हालचाल पूछूँ। अब मैं तुम्हें और न रोकूँगा।

मिसेज़ जोन्स — आपको धन्यवाद देती हूँ, हुजूर।

बार्थिविक — अच्छा, गुडमार्निंग।

मिसेज़ जोन्स — गुडमार्निंग हुजूर, गुडमार्निंग बीवी।

बार्थिविक — (अपनी पत्नी से आँखें मिलाकर) जरा सुन तो मिसेज़ जोन्स, मैं समझता हूँ तुमको बतला देना उचित है, एक चाँदी की सिगरेट की डिबिया गायब हो गयी है।

मिसेज़ जोन्स — (कभी इसका मुँह देखती है, कभी उसका) मुझे यह सुनकर बहुत दुःख हुआ, हुजूर।

बार्थिविक — तुमने तो शायद उसे नहीं देखा। क्यों?

(समझ जाती है कि मेरे ऊपर सन्देह किया जा रहा है, घबड़ा जाती है।)

मिसेज़ जोन्स — कहाँ थी हुजूर? बतला दीजिए।

बार्थिविक — (बात बनाकर) मारलो कहाँ कहता था? इस कमरे में? हाँ इसी कमरे में?

मिसेज़ जोन्स — जी नहीं, मैंने नहीं देखी। अगर मैं देखतीं तो कह देती।

बार्थिविक — (उसे उड़ती हुई निगाह से देखकर) भूल तो नहीं रही हो? खूब याद कर लो।

मिसेज़ जोन्स — (अविचलित होकर) खूब याद कर लिया।

(धीरे से सिर हिलाकर चुपचाप चली जाती है।)

मैंने नहीं देखा और न जानती हूँ कि कहाँ है।

(बार्थिविक, उसका बेटा, और पत्नी एक दूसरे की ओर कनखियों से देखते हैं।)

(परदा गिरता है।)

अंक 2

पहला दृश्य

(जोन्स का घर)

[मरथर स्ट्रीट। समय ढाई बजे। कमरे में कोई सामान नहीं है, फटे हुए चिकट कपड़े हैं और रंगी हुई दीवारें। साफ़-सुथरी दरिद्रता झलक रही है। जोन्स आधे कपड़े पहिने चारपाई पर लेटा हुआ है। उसका कोट उसके पैरों पर पड़ा हुआ है और कीचड़ से भरे हुए बूट पास ही जमीन पर रक्खे हैं। वह सो रहा है। दरवाजा खुलता है, और मिसेज़ जोन्स आती है। वह फटा हुआ काला जाकिट पहने हुए है। सिर पर काली मल्लाहों की-सी टोपी है। वह टाइम्स पत्र मे लिपटा हुआ एक पारसल लिये हुए है। पारसल नीचे रख देती है और उसमें से एक एपरन (वह कपड़ा जो काम करने वाली स्त्रियाँ गाउन के ऊपर लपेट लेती

हैं), आधी रोटी, दो प्याज़, तीन आलू, और मांस का एक छोटा-सा टुकड़ा निकालती है। ताक पर से एक चायदान उतारकर उसको धोती है, और एक चाय की पुड़िया में से थोड़ी-सी बारीक चाय डालती है। उसे अंगीठी पर रखती है, और पास ही एक लकडी की कुर्सी पर बैठकर रोने लगती है।]

जोन्स — (जागकर जमुहाई लेता हुआ) ओह तुम हो। क्या वक्त है?

मिसेज़ जोन्स — (आँखें पोंछकर और मामूली आवाज में) ढाई बजे हैं।

जोन्स — तुम इतनी जल्दी क्यों लौट आई?

मिसेज़ जोन्स — आज आधे दिन काम था, जेम।

जोन्स — (चित्त लेटा हुआ और नींद भरी आवाज में) कुछ खाने के लिये है?

मिसेज़ जोन्स — मिसेज़ बार्थिविक के बावर्ची ने मुझे थोड़ा-सा मांस दिया है। मैं उसको उबालने जा रही हूँ।

(पकाने की तैयारी करती है)

किराये के 4 शिलिंग बाकी हैं जेम, और मेरे पास कुल 2 शिलिंग और चार पेन्स रह गए हैं। आज ही माँगने आते होंगे।

जोन्स — (उसकी तरफ़ फिरकर, कुहनियों के बल लेटा हुआ) आएँ और थैली उठा ले जायँ। काम खोजते-खोजते तो मैं तंग आ गया हूँ। मैं क्यों काम के लिए चक्कर लगाता हूँ? जैसे गिलहरी पिंजरे में नाचती 'है। 'हुजूर मुझे काम दीजिए' – 'हुजूर एक आदमी रख लें' – मेरी बीवी और तीन बच्चे हैं', इन बातों से मेरा जी ऊब गया। इससे तो अच्छा यही है, कि यहीं पड़े-पड़े भर जाऊँ। लोग मुझसे कहते हैं — 'जोन्स, कल जुलूस में शरीक हो जाव, एक झंडा उठा लो, और लाल मुँह वाले नेताओं की बातें सुनो। फिर अपना-सा मुँह लिये घर लौट आओ।' कुछ लोगों को यह पसंद होगा। जब मैं काम की टोह में जाता हूँ और उन बदमाशों को अपनी ओर सिर से पैर तक ताकते देखता हूँ, तो जान पड़ता है, मेरे हजारों साँप काट रहे हैं। मैं किसी से कोई रियायत नहीं चाहता। एक आदमी पसीने की कमाई खाना चाहता है, पर उसे काम नहीं मिलता। कैसी दिल्लगी है। एक आदमी छाती फाड़कर काम करना चाहता है, कि किसी तरह प्राण बचें और उसे कोई नहीं पूछता। यह न्याय है! – यह स्वाधीनता है! और न जाने क्या-क्या है।

(दीवार की तरफ मुँह फेर लेता है ।)

तुम इतनी सीधी-सादी हो, तुम नहीं जानतीं कि मेरे भीतर कितनी हलचल मची हुई है। मैं इन बच्चों के खेल से तंग आ गया हूँ। अगर कोई उन्हें चाहता है, तो मेरे पास आए।

(मिसेज़ जोन्स पकाना बन्द कर देती है, और मेज के पास चुपचाप खड़ी हो जाती है।)

मैं सब कुछ करके हार गया। जो कुछ होने वाला है, उससे नहीं डरता। मेरी बातों की गिरह बाँध लो। अगर तुम समझती हो, कि मैं उनके पैरों पर गिरूँगा, तो तुम्हारी भूल है। मैं किसी से काम न माँगूँगा चाहे जान ही क्यों न जाती रहे। तुम इस तरह क्यों खड़ी हो, जैसे कोई दुखियारी असहाय मूरत हो? इसी से मैं तुम्हें छोड़ता नहीं। अब तुम्हें काम करने का ढंग आ गया। लेकिन इतना सीधापन भी किस काम का। तुम्हारे मुँह में तो जैसे जीभ ही नहीं है।

मिसेज़ जोन्स — (धीरे से) जब तुम अपने होश में रहते हो, तो ऐसी ऊटपटांग बातें करते हो, जैसे नशे में भी नहीं करते। अगर तुम्हें काम न मिला तो हमारी गुजर कैसे होगी? मालिक मकान हमें यहाँ रहने न देगा। वह तो आज अपने रुपए के लिए आता होगा।

जोन्स — तुम्हारे इस बार्थिविक को देखता हूँ, रोज चैन की बंसी बजाता हुआ पार्लियामेंट में जाता है और वहाँ गला फाड़-फाड़कर चिल्लाता है। और उसके छोकरे को भी देखता हूँ, जो शान से इधर-उधर ऐंठता फिरता है। उन्होंने ऐसा कौन सा काम किया कि वे यों गुलछर्रे उड़ायें। अपनी जिंदगी में कभी एक दिन भी उन्होंने काम नहीं किया। मैं उन्हें हर रोज देखता हूँ...।

मिसेज़ जोन्स — मैं यह चाहती हूँ, कि तुम इस तरह मेरे पीछे-पीछे न लगे रहा करो। न जाने तुम क्यों मेरे पीछे लगे रहते हो। तुम्हारा वहाँ घूमना उन्हें अच्छा नहीं लगता। उन लोगों को भी शक होता है।

जोन्स — मेरा जहाँ जी चाहेगा, वहाँ जाऊँगा। आखिर कहाँ जाऊँ। उस दिन एजुवेयर रोड पर एक जगह गया। मैनेजर से बोला — 'हुजूर मुझे रख लीजिये; मुझे दो महीने से कोई काम नहीं मिला; बिना काम किए अब रहा नहीं जाता। मैं काम करने वाला आदमी हूँ। आप जो काम चाहें मुझे दें। मैं किसी काम से नहीं डरता।' उसने कहा, 'भले आदमी, सुबह से इस वक्त तक तीस आदमी आ चुके हैं। मैंने पहले दो आदमी ले लिये। इससे ज्यादा की मुझे जरूरत नहीं।' मैं बोला — 'आपको धन्यवाद देता हूँ साहब, संसार में आग ही लग जाय तो अच्छा।' उसने कहा — 'यों गाली बकने से काम नहीं मिलेगा, अब चल दो।' (हँसता है)

चाहे तुम भूखों मर रहे हो, पर तुम्हें मुँह खोलने का हुक्म नहीं। इसका खयाल भी मत करो। चुपचाप सहते जाओ। यही समझदार आदमियों का दस्तूर है। जरा दूर और आगे चला, तो एक लेडी ने मुझसे कहा —

(आवाज नीची करके।)

'क्यों जी कुछ काम करके दो-चार पैसे कमाना चाहते हो?' और मुझे कुत्ता दिया कि उसे दुकान के बाहर पकड़े खड़ा रहूँ। खानसामे की तरह मोटा था। — मनों मांस खा गया होगा। उसको पालने में ढेरों मांस लग गया होगा। वह यह समझ कर दिल में खुश हो रही थी, कि मैंने एक गरीब आदमी का उपकार किया, लेकिन मैं देख रहा था कि वह तांबे के जीने पर खड़ी मुझे ताक रही थी, कि मैं उसका मोटा-ताजा कुत्ता लेकर कहीं रफूचक्कर न हो जाऊँ।

(वह चारपाई की पट्टी पर बैठ जाता है, और बूट पहिनता है।

तब ऊपर ताककर।)

तुम सोच क्या रही हो?

(मिन्नत करके)

क्या तुम्हारे मुँह में जबान नहीं है?

(कुंडी खटकती हे, और घर की मालकिन मिसेज़ सेडन आती है। वह एक चिंतित, फूहड़ और जल्दबाज औरत है। मजदूरों के से कपड़े पहिने हुए है।)

मिसेज़ सेडन — मिसेज़ जोन्स! जब तुम आई तब हमें तुम्हारी आहट मिल गई थी। मैंने अपने शौहर से कहा, लेकिन वह कहते हैं कि मैं एक दिन के लिए भी नहीं मान सकता।

जोन्स — (त्योरियाँ चढ़ाकर मसख़रेपन से) शौहर को बकने दो, तुम स्वाधीन स्त्रियों की तरह अपनी मरजी पर चलो। यह लो जैनी, यह उन्हें दे दो।

(अपने पाजामे की जेब से एक सावरेन निकालकर वह अपनी स्त्री की ओर फेंकता है। स्त्री हाँफकर उसे अपने एपरन में ले लेती है। जोन्स फिर जूते का फीता बांधने लगता है।)

मिसेज़ जोन्स — (सावरेन को छिपाकर मलती हुई) मुझे खेद है कि अबकी इतनी देर हो गई। तुम्हारे चौदह शिलिंग आते हैं। यह सावरेन लो। मुझे 6 शिलिंग लौटा दो। (मिसेज़ सेडन सावरेन ले लेती है और इधर-उधर घुमाती है।)

जोन्स — (जूते की तरफ आँखें किये हुए) तुम्हें अचरज हो रहा होगा, क्यों—

मिसेज़ सेडन — तुमको बहुत-बहुत धन्यवाद। तुमने मेरे ऊपर बड़ी कृपा की। (वह सचमुच विस्मित हो जाती है।) मैं रेजगी लाए देती हूँ।

जोन्स — (मुँह बनाकर) इसकी क्या जरूरत है?

मिसेज़ सेडन — तुमको बहुत-बहुत धन्यवाद। तुमने मेरे ऊपर बड़ी कृपा की।

(चली जाती है।)

मिसेज़ जोन्स जोन्स की ओर ताकती है जो अभी तक फीते बांध रहा है।

जोन्स — आज जरा तक़दीर खुल गई। (लाल थैली और कुछ फुटकल रेजगियाँ निकालकर) एक थैली पड़ी मिल गई। सात पौण्ड से कुछ ज्यादा हैं।

मिसेज़ जोन्स — यह क्या किया, जेम्स?

जोन्स — यह क्या किया, जेम्स? किया क्या। पड़ी मिली, उठा ली। खोई हुई चीज है। और क्या!

मिसेज़ जोन्स — लेकिन उस पर किसी का नाम तो होगा। या कुछ और!

जोन्स — नाम? नहीं, किसी का नाम नहीं है। यह उन लोगों की नहीं है जो मुलाकाती कार्ड लेकर चलते हैं। यह किसी पक्की लेडी की है। जरा सूँघो तो!

(वह थैली को उसकी तरफ़ फेंकता है। वह उसे धीरे से नाक के पास ले जाती है।)

अब तुम्हीं बताओ मुझे क्या करना चाहिए था। तुम्हीं बताओ।

मिसेज़ जोन्स — (थैली को रखकर) यह तो मैं नहीं बता सकती, जेम्स, कि तुम्हें क्या करना चाहिए था। लेकिन रुपये तुम्हारे न थे। तुमने किसी दूसरे के रुपये ले लिये।

जोन्स — जिसने पाया उसका हो गया। मैं इसे उन दिनों की मजूरी समझूँगा जब मैं गलियों में उस चीज के लिए ठोकर खाता फिरा जो मेरा हक है। मैं इसे पिछली मजूरी समझकर ले रहा हूँ। (विचित्र गर्व से) रुपये मेरी जेब में हैं, जानी।

(मिसेज़ जोन्स फिर भोजन बनाने की तैयारी करने लगती हैं। जोन्स उसकी ओर कनखियों से देख रहा है।)

हाँ, मेरी जेब में रुपये हैं। और अबकी मैं इसे उड़ाऊँगा नहीं, इसी से केनाडा चला जाऊँगा। तुम्हें भी एक पौण्ड दे दूँगा। (चुप) तुम मुझे छोडने की कई बार धमकी दे चुकी हो, तुमने बारहा मुझसे

कहा है कि मैं तुम्हारे ऊपर बड़ी सख्ती करता हूँ। मैं यहाँ से चला जाऊँगा तब तो तुम चैन से रहोगी।

मिसेज़ जोन्स — (शिथिलिता से) सख्ती तो तुमने मेरे साथ की है, जोन्स, और मैं तुम्हें जाने से रोक भी नहीं सकती। लेकिन तुम्हारे जाने की मुझे खुशी होगी या नहीं, यह मैं नहीं जानती।

जोन्स — इसमे मेरी तकदीर पलट जायगी। जब से तुम्हारे साथ बयाह हुआ तब से कभी भले दिन न देखे। (कुछ नर्मी से) और न तुम्हें कभी पिकनिक ही मिला।

मिसेज़ जोन्स — अगर हमारी-तुम्हारी मुलाकात न हुई होती तो बहुत अच्छा होता। हम लोग एक दूसरे के लिए बनाये ही नहीं गए। लेकिन तुम हाथ धोकर मेरे पीछे पड गए, और अब तक पड़े हुए हो। और तुम मेरे साथ कितनी बुरी तरह पेश आते हो। जेम्स — उस छोकरी रायस के फेर में पड़े रहते हो? तुम्हें शायद इन लड़कों का कभी खयाल भी नहीं आता जिन्हें हमने पैदा किया है। तुम नहीं समझते कि उनके पालने में मुझे कितनी कठिनाई पड़ती है, और तुम्हारे चले जाने पर उन पर क्या पड़ेगी।

जोन्स — (खिन्न मन से कमरे में टहलता हुआ) अगर तुम समझ रही हो कि मैं लड़कों को छोड़ दूँगा तो तुम भूल कर रही हो।

मिसेज़ जोन्स — यह तो मैं जानती हूँ कि तुम उन्हें प्यार करते हो।

जोन्स — (थैली को उंगलियों पर फिराता हुआ, कुछ क्रोध से) अभी तो यों ही चलने दो। मैं न रहूँगा तो छोकरे तुम्हारे साथ मज में रहेंगे। अगर मैं जानता कि यह हाल होगा तो मैं एक को भी न पैदा करता। क्या फायदा है इससे कि लड़कों को पैदा करके इस विपत्ति में डाल दिया जाय? यह पाप है, और कुछ नहीं। लेकिन हमारी आँखें बहुत देर में खुलती हैं। संसार का यही ढंग है।

(थैली को फिर जेब में रख लेता है।)

मिसेज़ जोन्स — हाँ, यह इन बेचारों के हक में बहुत अच्छा होता। लेकिन हैं तो यह तुम्हारे ही लड़के, और मुझे तुम्हारे मुँह से ऐसी बातें सुनकर अचरज होता है। अगर मेरे पास यह न रहें तो मेरा तो जरा भी जी न लगे।

जोन्स — (धुन्नाया हुआ) यही सबका हाल है। अगर मैं वहाँ कुछ कमा सका —

(उसे अपना कोट हिलाते देखकर, कठोर स्वर में)

कोट मत छुओ।

(चाँदी की डिबिया जेब से गिर पड़ती है और सिगरेट चारपाई पर बिखर जाते हैं। डिबिया को वह उठा लेती है और उसे ध्यान से देखती है। वह झपटकर उसके हाथ से डिबिया छीन लेता है।)

मिसेज़ जोन्स — (चारपाई को टेककर झुकी हुई) ओ जेम! ओ जेम!

जोन्स — (डिबिया को मेज़ पर पटककर) फजूल बक-बक मत करो। जब मैं यहाँ से चलूँगा तो इस डिबिया को उसी थैली के साथ पानी में डाल दूँगा। मैंने उसे उस वक्त उठा लिया जब मैं नशे में था; और नशे में जो काम किये जाते हैं, उसका जिम्मेदार कोई नहीं होता, यह ब्रह्मवाक्य है। मुझे इसकी क्या जरूरत है, मैं इसे लेकर करूँगा क्या? मैंने जलकर दम्भ से इसे निकाल लिया था। मैं तुमसे कह चुका मैं चोर नहीं हूँ, और अगर तुमने मुझे चोर कहा तो बुरा होगा।

मिसेज़ जोन्स — (एपरन की डोरी को ऐंठती हुई) यह मिसेज़ बार्थिविक की है। तुमने मेरे नाम में बट्टा लगा दिया। अरे जेम, तुम्हें यह सूझी क्या?

जोन्स — क्या मतलब?

मिसेज़ जोन्स — वहाँ इसकी तलाश हो रही है। लोगों का मुझ पर शुभा है। तुम्हें यह सूझी क्या, जेम?

जोन्स — मैं तुमसे कह चुका मैं नशे में था। मुझे इसकी चाह नहीं है। यह मेरे किस काम की है। अगर मैं इसे गिरो रखने जाऊँ तो पकड जाऊँ। मैं चोर नहीं हूँ। अगर मैं चोर हूँ तो लौंडा बार्थिविक मुझसे कहीं बड़ा चोर है। यह थैली जो मैंने पड़ी पाई वही एक लेडी के घर से उठा लाया था। लेडी से कुछ झगडा हो गया, बस उसने उस बेचारी की थैली उड़ा ली। बराबर कहता रहा, कैसा चरका दिया। उसने लेडी को चरका दिया। मैंने लौंडे को चरका दिया। पल्ले सिरे का मक्खीचूस है। और देख लेना उसका बाल भी बाँका न होगा।

मिसेज़ जोन्स — (मानो आप ही आप बातें कर रही हो) ओ जेम! हमारी लगी लगाई रोज चली जायगी?

जोन्स — अगर ऐसा हुआ तो मैं भी उनकी खबर लूँगा। न थैली कहीं गई है, न लौंडा बार्थिविक कहीं गया है।

(मिसेज़ जोन्स मेज के पास आती है और डिबिया को उठा लेना चाहती है, जोन्स उसका हाथ पकड़ लेता है।)

तुम्हें उससे क्या मतलब है? मैं कहता हूँ सीधे से रख दो।

मिसेज़ जोन्स — मैं इसे लौटा दूँगी और जो-जो हुआ है सब साफ़-साफ़ कह दूँगी।

(वह उसके हाथ से डिबिया छीन लेना चाहती है।)

जोन्स — न मानोगी तुम?

(वह डिबिया को छोड़ देता है और गुर्राकर उस पर झपटता है। वह चारपाई के उस पार चली जाती है। वह उसके पीछे लपकता है। एक कुरसी उलट जाती है। दरवाजा खुलता है और स्नो अन्दर आता है। वह खुफिया पुलिस का आदमी है। इस वक्त सादे कपड़े पहने हुए है। उसकी मूँछे कतरी हुई हैं। जोन्स हाथ गिरा देता है। मिसेज़ जोन्स हाँफती हुई खिड़की के पास खड़ी हो जाती है। स्नो तेजी से मेज की तरफ जाता है और डिबिया उठा लेता हैं।)

स्नो — — अच्छा यहाँ तो चुहल हो रही है। जिस चीज की तलाश में था वही मिल गई। जे. बी. ठीक वही है।

(वह दरवाजे के पास जाता है और डिबिया के अक्षरों को गौर से देखता है। मिसेज़ जोन्स से कहता है —)

मैं पुलिस का अफसर हूँ। तुम्हीं मिसेज़ जोन्स हो?

मिसेज़ जोन्स — जी हाँ।

स्नो — मुझे हुक्म है कि तुम्हें जे. बार्थिविक, मेम्बर पार्लिमेंट, नं. 6 राकिंघम गेट की यह डिबिया चुरा लेने के अपराध में पकड़ लूं।

तुम्हारा बयान ठीक न हुआ तो तुम फँस जाओगी। क्या कहती हो?

मिसेज़ जोन्स — (धीमे स्वर में। वह अभी तक हाँफ रही है और छाती पर हाथ रखे हुए है) मैं सच कहती हूँ, साहब, मैंने इसे नहीं लिया। मैं पराई चीज कभी छूती ही नहीं, मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानती।

स्नो — तब वह डिबिया यहाँ कैसे आ गई?

मिसेज़ जोन्स — — तुम आज सवेरे वहाँ गई थीं, जिस कमरे में यह डिबिया थी उसमें तुमने झाड़ू लगाई, तुम कमरे में अकेली थीं। डिबिया यहाँ तुम्हारे घर में रखी हुई है। फिर भी तुम कहती हो मैंने नहीं लिया?

मिसेज़ जोन्स — जी हाँ, जो चीज नहीं ली, उसे कैसे कह दूँ कि ली है।

मिसेज़ जोन्स — मैं इस विषय में कुछ न कहना ही उचित समझती हूँ।

स्नो — यह तुम्हारे पति हैं?

मिसेज़ जोन्स — जी हाँ, यह मेरे पति हैं।

स्नो — मैं इन्हें गिरफ्तार करने जा रहा हूँ। तुम्हें कुछ कहना तो नहीं है?

(जोन्स सिर झुकाए मौन बैठा रहता है।)

तो ठीक है। चलो मिसेज़ जोन्स। मैं तुमको इतना ही कष्ट दूँगा कि चुपचाप मेरे साथ चली आओ।

मिसेज़ जोन्स — (हाथ मलते हुए) अगर मैंने लिया होता तो मैं यह कभी न कहती कि मैंने नहीं लिया — मैंने नहीं लिया, आपसे सच कहती हूँ। यह मैं जानती हूँ कि देखने में मैं ही अपराधिन हूँ, लेकिन असली बात मैं नहीं बता सकती। मेरे बच्चे मदरसे गए हैं, थोड़ी देर में आते होंगे। मुझे न पावेंगे तो उन बेचारों का न जाने क्या हाल होगा।

स्नो — तुम्हारा पति उनकी देखभाल कर लेगा, घबराने की कोई बात नहीं।

बढ उसका हाथ आहिस्ता से पकड़ता है।

जोन्स — तुम उसका हाथ छोड़ दो, वह ठीक कहती है। डिबिया मैंने ली।

स्नो — (उसकी तरफ आँखें उठाकर) शाबाश! शाबाश! बहादुर आदमी हो। चलो मिसेज़ जोन्स।

जोन्स — (क्रोध से) उसे छोड़ दे, सुअर। वह मेरी बीवी है। वह शरीफ़ औरत है। अगर उसे पकड़ा तो तुम जानोगे।

स्नो — जरा होश में आओ। इन बातों से क्या फायदा। जबान संभालकर बात करो — खैरियत इसी में है।

(वह मुँह में सीटी लगाता है और स्त्री को द्वार की ओर खींचता है।)

जोन्स — (झपटकर) उसे छोड़ दो और हाथ हटा लो, नहीं हड्डी तोड़ दूँगा। उसे क्यों नहीं छोड़ता। मैं तो कह रहा हूँ कि मैंने ली है।

स्नो — (सीटी बजाकर) हाथ हटा लो, नहीं मैं तुम्हें भी पकड लूँगा। अच्छा न मानोगे?

(जोन्स उससे लिपट जाता है और उसे एक घूँसा मारता है। एक पुलिसमैन वर्दी पहने हुए आता है। ज़रा देर हाथापाई होती है, और जोन्स पकड़ लिया जाता है। मिसेज़ जोन्स अपने हाथ उठाती है और उनके ऊपर सिर झुका देती है।)

(पर्दा गिरता है।)

दूसरा दृश्य

[बार्थिविक का भोजनालय, वही शाम है। बार्थिविक-परिवार फल और मिठाइयाँ खा रहा है]

मिसेज़ बार्थिविक — जान।

(अखरोटों के छिलकों के टूटने की आवाज आती है।)

बार्थिविक — तुम इन अखरोटों का हाल उनसे क्यों नहीं कहती, खाए नहीं जाते।

(एक गरी मुँह में रख लेता है।)

मिसेज़ बार्थिविक — यह इस चीज का मौसिम नहीं है। मैंने होलीरूड से कहा था।

(बार्थिविक अपना गिलास पोर्ट से भरता है।)

जैक — दादा, जरा सरौता बढ़ाइएगा।

(बार्थिविक सरौता बढ़ा देता है। वह किसी विचार में डूबा हुआ मालूम होता है।)

मिसेज़ बार्थिविक — लेडी होलीरूड बहुत मोटी हो गयी हैं। मैं यह बहुत दिनों से देख रही हू।

बार्थिविक— (अनमने भाव से) मोटी?

(वह सरौता उठा लेता है — चेहरे पर लापरवाही झलकने लगती है।)

होलीरूड परिवार का नौकरों से कुछ झगड़ा हो गया था, क्यों?

जैक — दादा, जरा सरौता।

बार्थिविक — (सरौता बढाते हुए) समाचार पत्रों में निकला था। रसोइयादारिन थी न?

मिसेज़ बार्थिविक — नहीं, खिदमतगारिन थी। मैंने लेडी होलीरूड से बातचीत की थी। वह लड़की अपने प्रेमी को मिलने के लिए बुलाया करती थी।

बार्थिविक — (बेचैनी से) मेरी समझ में उन्हें...।

मिसेज़ बार्थिविक — तुम क्या कहते हो जान, और दूसरा रास्ता ही क्या था? सोचो, दूसरे नौकरों पर क्या असर पड़ता।

बार्थिविक — हाँ, बात तो ठीक थी — लेकिन मैं यह नहीं सोच रहा था।

जैक — (छेड़ने के लिए) दादा, सरौता।

(बार्थिविक सरौता बढ़ा देता है।)

मिसेज़ बार्थिविक — लेडी होलीरूड ने मुझसे कहा, 'मैंने उसे बुलाया और उससे कहा, फौरन मेरे घर से निकल जा। मैं तुम्हारे चाल-चलन को निंदनीय समझती हूँ। मैं कह नहीं सकती। मैं नहीं जानती, और न मैं जानना चाहती हूँ कि तुम क्या कर रही थी। मैं सिद्धान्त की रक्षा के लिए तुम्हें अलग कर रही हूँ। मेरे पास सिफारिश के लिए मत आना।' इस पर उस लड़की ने कहा — 'अगर आप मुझे नोटिस नहीं देंगी तो मुझे एक महीने की तनख़्वाह दे दीजिए। मैंने अपनी इज्जत में दाग नहीं लगाया। मैंने कुछ नहीं किया।-कुछ नहीं किया।'

बार्थिविक — अच्छा!

मिसेज़ बार्थिविक — नौकर अब सिर बहुत चढ़ गए हैं, वह सब इस बुरी तरह मिले रहते हैं, कि कुछ मालूम ही नहीं होता कि उनके मन में क्या है। ऐसा जान पड़ता है कि तुम्हें न मालूम हो इसलिए सबों ने गुटकर लिया हो। यहाँ तक कि मारलो का भी यही हाल है। ऐसा मालूम होता है, कि वह अपने मन की असली बात किसी पर खुलने ही नहीं देता। मुझे इस छिपा-चोरी से चिढ़ है। इससे फिर किसी पर भरोसा नहीं रहता। कभी-कभी मेरा ऐसा जी चाहता है, कि उसका कान पकड़कर हिलाऊँ।

जैक — मारलो बहुत भलामानुस है। यह कोई अच्छी बात नहीं है, कि हमारी बातें हर एक आदमी जान ले।

बार्थिविक — इसकी तो चर्चा न करना ही अच्छा।

मिसेज़ बार्थिविक — सब नीच जातों का यही हाल है, तुम यह नहीं बतला सकते कि वह कब सच बोल रहे हैं। आज जब मैं होलीरूड के घर से चलने के बाद बाजार गई, तो इन बेकार आदमियों में से एक आकर मुझसे बातें करने लगा। मैं समझती हूँ मुझमें और गाडी में केवल बीस गज का अंतर था। लेकिन ऐसा मालूम हुआ कि वह सडक फाड़कर निकल आया।

बार्थिविक — अच्छा! आजकल किसी से बातचीत करने में बहुत होशियार रहना चाहिए। न जाने कैसा आदमी हो।

मिसेज़ बार्थिविक — मैंने उसे कुछ जवाब थोड़े ही दिया, लेकिन मुझे तुरंत मालूम हो गया, कि वह झूठ बोल रहा है।

बार्थिविक — (एक अख़रोट तोड़कर) यह बड़ा अच्छा नियम है। उनकी आँखों को देखना चाहिए।

जैक — दादा, जरा सरौता।

बार्थिविक — (सरौता बढ़ाकर) अगर उनकी निगाह सीधी होती है तो कभी-कभी मैं छः पेंस दे देता हूँ। यह मेरे नियम के विरुद्ध

है, लेकिन इनकार करते तो नहीं बनता। अगर तुम्हें यह दिखाई दे कि वे सुस्त, काहिल और कामचोर हैं, तो समझ लो कि शराबी या कुछ ऐसे ही हैं।

मिसेज़ बार्थिविक — इस आदमी की आँखें बड़ी डरावनी थीं, वह ऐसे ताकता था, मानो किसी का खून कर डालेगा। उसने कहा — मेरे पास आज खाने को कुछ नहीं है। ठीक इसी तरह।

बार्थिविक — विलियम क्या कर रहा था? उसे वहाँ खड़ा रहना चाहिए था।

जैक — (अपनी गिलास नाक के पास ले जाकर) क्यों दादा! क्या यही सन् 69 की है?

(बार्थिविक गिलास को आँखों के पास किए हुए है। वह उसे नीचे करके नाक के पास ले जाता है।)

मिसेज़ बार्थिविक — मुझे उन लोगों से घृणा है जो सच नहीं बोलते। बाप और बेटे गिलास के पीछे से आँखें मिलाते है। सच बोलने में लगता ही क्या है, मुझे तो यह बड़ा आसान मालूम पड़ता है। असली बात क्या है। इसका पता ही नहीं चलता। ऐसा मालूम होता है, जैसे कोई हमें बना रहा हो।

बार्थिविक्र — (मानो फैसला सुना रहा हो) नीची जातें अपने पैरों में आप कुल्हाड़ी मारती हैं, अगर हमारे ऊपर भरोसा रक्खें तो उनकी दशा इतनी बुरी न हो।

मिसेज़ बार्थिविक — लेकिन उस पर भी उन्हें संभालना मुश्किल है। आज मिसेज़ जोन्स ही को देखो।

बार्थिविक — इस विषय में मैं वही करूँगा जो न्यायसंगत है। अभी तीसरे पहर मैं रोपर से मिला था। मैंने यह माजरा उससे कहा, वह आ रहा होगा, यह सब खुफिया पुलिस के बयान पर है। मुझे तो बहुत संदेह है। मैंने इस पर बहुत विचार किया है।

मिसेज़ बार्थिविक — वह औरत मेरी आँखों में जरा भी नहीं जँची। उसे किसी बात की शर्म ही नहीं मालूम होती थी। देखो, वहीं मामला जिसकी वह चर्चा कर रही थी। जब वह और उसका मर्द जवान थे। कैसी बेहयाई की बात थी और वह भी तुम्हारे और जैक के सामने। मेरा जी चाहता था कि उसे कमरे से निकाल दूँ।

बार्थिविक — ओह! वह तो जैसे हैं...सब जानते हैं, पर ऐसी बातों पर गौर करते समय हमें तो सोच लेना चाहिये...।

मिसेज़ बार्थिविक — शायद तुम कहोगे कि उस आदमी के मालिक ने उसे निकाल देने में गलती की?

बार्थिविक — बिलकुल नहीं। इस विषय में मुझे कोई संदेह नहीं है। मैं अपने दिल से यह पूछता हूँ...।

जैक —दादा, थोड़ी सी पोर्ट!

बार्थिविक — (सूर्य के उदय और अस्त के ठीक-ठीक नकल में बोतल को घुमाते हुए) मैं अपने दिल से यह पूछता हूँ कि हम किसी को नौकर रखने के पहिले उसके बारे में काफी तौर से जाँच भी कर लिया करते हैं, या नहीं, खास कर उसके चाल-चलन के बारे में।

जैक — अम्मा, शराब को ज़रा इधर दे टो।

मिसेज़ बार्थिविक — (बोतल बढ़ाकर) क्यों बेटे, तुम बहुत ज्यादा तो नहीं पी रहे हो।

(जैक अपना गिलास भरता है।)

मारलो — (कमरे में आकर) जासूस स्नो आपसे मिलना चाहता है।

बार्थिविक — (बेचैनी से) अच्छा, कहो अभी एक मिनट में 'भाता हूँ।

मिसेज़ बार्थिविक — (बगैर सिर घुमाए हुए) उसे यहाँ बुला लो, मारलो।

(स्नो ओवरकोट पहिने अपनी बोलर हैट हाथ में लिये आता है।)

बार्थिविक — (कुछ उठकर) आइये, बन्दगी।

स्नो — बन्दगी साहब। बन्दगी मेम साहब। मैं यह बतलाने आया हूँ कि उस मामले में मैंने क्या किया। मुझे डर है, कि मुझे कुछ देर हो गयी है। मैं एक दूसरे मुक़दमें में चला गया था।

(चाँदी की डिबिया जेब से निकालता है। बार्थिविक परिवार में सनसनी फैल जाती है।)

मैं समझता हूँ यह ठीक वही चीज है।

बार्थिविक — ठीक वहीं, ठीक वही।

स्नो — निशान और अंक वैसे ही हैं, जैसे आपने बतलाए थे। मुझे तो इस मामले में, जरा भी हिचिक नहीं हुई।

बार्थिविक — शाबाश! आप भी एक गिलास पीजिये — (पोर्ट की बोतल को देख कर) शेरी की।

(शेरी उँड़ेलता है।)

जैक, यह मिस्टर स्नो को दे दो।

(जैक उठकर गिलास स्नो को दे देता है, तब अपनी कुर्सी पर पड़कर उसे आलस्य से देखता है।)

स्नो — (शराब पीकर और गिलास को नीचे रखकर) आपसे मिलने के बाद मैं उस औरत के डेरे पर गया। नीचों की बस्ती है। और मैंने सोचा कि ड्योढ़ी के नीचे ही कानिस्टेबुल खड़ा कर दूँ। शायद जरूरत पड़े और मेरा विचार बिल्कुल ठीक निकला।

बार्थिविक — सच।

स्नो —जी हाँ। कुछ झमेला करना पडा। मैंने उससे पूछा कि तुम्हारे घर में यह चीज कैसे आई। वह मुझे कुछ जवाब न दे सकी। हाँ, बराबर चोरी से इनकार करती रही। इसलिये मैंने उसे गिरफ्तार कर लिया। तब उसका शौहर मुझसे उलझ पडा। आखिर मैंने हमला करने के अपराध में उसे भी गिरफ्तार कर लिया। घर से पुलिस स्टेशन तक जाने में वह बहुत गर्म होता रहा — बिल्कुल जामे से बाहर — बार-बार आप को और आपके लड़के को धमकी देता था कि समझ लूँगा। सच पूछिए तो बड़ा फितना निकला।

मिसेज़ बार्थिविक — बड़ा भारी बदमाश है।

स्नो — हाँ, मेम साहब, बड़ा ही उजड्ड असामी।

जैक — (शराब की चुस्की लेता हुआ, मजे में आकर) पाजी का सिर तोड़ दे।

स्नो — मैंने पता लगाया, पक्का शराबी है।

मिसेज़ बार्थिविक — मैं तो चाहती हूँ, बच्चा को कड़ी सजा मिले।

स्नो — दिल्लगी तो यह है कि वह अभी तक यही कहे जाता है कि डिबिया मैंने खुद चुराई।

बार्थिविक — डिबिया उसने चुराई। (मुस्कराता है) इसमें उसने क्या फायदा सोचा है?

स्नो — वह कहता है कि छोटे साहब पिछली रात को नशे में थे।

(जैक अखरोट तोड़ना बन्द कर देता है और स्नो की ओर ताकने लगता है। बार्थिविक की मुस्कराहट ग़ायब हो जाती है, गिलास रख देता है। सन्नाटा छा जाता है — स्नो बारी-बारी से हरेक का चेहरा देखता है, और कहता है। वह मुझे अपने घर लाए और खूब व्हिस्की पिलाई, मैंने कुछ खाया न था, नशा जोर कर गया और उसी नशे में मैंने डिबिया उठा ली।)

मिसेज़ बार्थिविक — गुस्ताख, पाजी कहीं का।

बार्थिविक — आपका ख्याल है कि वह कल अपने बयान में भी यही कहेगा।

स्नो — यही उसकी सफाई होगी। कह नहीं सकता बीवी को बचाने के लिए ऐसा कह रहा है, या,

(जैक की तरफ़ देखकर)

इसमें कुछ तत्त्व भी है। इसका फैसला तो मैजिस्ट्रेट के हाथ में है।

मिसेज़ बार्थिविक — (गर्व से) तत्त्व भी है? किसमें क्या? आपका मतलब समझ में नहीं आता। आप समझते हैं, मेरा लडका ऐसे आदमी को कभी अपने घर नहीं लायेगा!

बार्थिविक — (अंगीठी के पास से, शान्त रहने की चेष्टा करके) मेरा लड़का अपनी सफाई कर लेगा। अच्छा, जैक, तुम क्या कहते हो?

मिसेज़ बार्थिविक — (तीव्र स्वर में) वह क्या कहेगा? यही और क्या है, कि सब मनगढंत है।

जैक — (दबसट में पड़कर) बात यह है, बात यह है, कि मुझे इसके बारे में कुछ भी मालूम नहीं।

मिसेज़ बार्थिविक — वह तो मैं पहिले ही कहती थी। (स्नो से) वह आदमी दीदा दिलेर बदमाश है।

बार्थिविक — (अपने मन को दबाते हुए) लेकिन जब मेरा लडका कह रहा है कि इस मामले में कोई तत्त्व नहीं है, तो क्या ऐसी दशा में उस आदमी पर मुकदमा चलाना जरूरी है।

स्नो — उस पर तो हमले का जुर्म लगाना होगा। मिस्टर जैक बार्थिविक भी पुलिस कचहरी चले आयें तो बड़ा अच्छा हो। बच्चा जेल जाएंगे, यह तो मानी हुई बात है। विचित्र बात यह है कि उसके पास कुछ रुपये भी निकले और एक लाल रेशमी थैली भी थी।

(बार्थिविक चौंक पड़ता है, जैक उठता है, फिर बैठ जाता है।)

मेम साहब की थैली तो नहीं गायब हो गई?

बार्थिविक — (जल्दी से) नहीं, नहीं, उनकी थैली नहीं खोई।

जैक — नहीं, थैली तो नहीं गई।

मिसेज़ बार्थिविक — (मानो स्वप्न देखते हुए) नहीं। (स्नो से) मैं नौकरों से पता लगा रही थी। यह आदमी घर के आस-पास चक्कर लगाया करता है। अगर लंबी सजा मिल जाय तो खटका निकल जाय। ऐसे बदमाशों से हमारी रक्षा तो होनी ही चाहिए।

बार्थिविक — हाँ, हाँ, जरूर। यह तो सिद्धान्त की बात है। लेकिन इस मामले में हमें कई बातों पर विचार करना है। (स्नो से) इस आदमी पर तो मुक़दमा चलाना ही चाहिए, क्यों, आप भी तो 'यही कहते हैं?

स्नो — अवश्य, इसमें क्या सोचना है।

बार्थिविक — (जैक की ओर उदास भाव से ताकते हुए) मेरी इच्छा नहीं होती कि यह मुक़दमा चलाया जाय। ग़रीबों पर मुझे बड़ी दया आती है। अपने पद का विचार करते हुए यह मानना मेरा कर्तव्य है कि गरीबों की हालत बहुत खराब है। इनकी दशा में बहुत कुछ सुधार की जरूरत है। आप मेरा मतलब समझ रहे होंगे। अगर कोई ऐसी राह निकल आती कि मुक़दमा न चलना पड़ता तो बड़ी अच्छी बात होती।

मिसेज़ बार्थिविक — (तीव्र स्वर में) यह क्या कहते हो जान? तुम दूसरों के साथ अन्याय कर रहे हो। इसका आशय तो यह है कि हम जायदाद को लोगों की दया पर छोड़ दें। जिसका जी चाहे ले ले।

बार्थिविक — (उसे इशारा करने की चेष्टा करके) मैं यह नहीं कहता कि उसने अपराध नहीं किया। मैं इसके सब पहलुओं पर सोच रहा हूँ।

मिसेज़ बार्थिविक — यह सब फजूल है, हर काम का वक्त होता है।

स्नो — (कुछ बनावटी आवाज में) मैं यह बता देना चाहता हूँ, कि चोरी का इलजाम उठा लेने से कोई फायदा नहीं होगा, क्योंकि हमले के मुक़दमे में सभी बातें खुल ही जायँगी।

(जैक की ओर मार्मिक दृष्टि से देखता है।)

और जैक, मैं पहले अर्ज कर चुका हूँ, वह मुक़दमा जरूर चलाया जायगा।

बार्थिविक — (जल्दी से) हाँ, हाँ, यह तो होगा ही। उस स्त्री के विचार से मैं कह रहा हूँ, यह तो मेरा अपना ख्याल है।

स्नो — अगर मैं आपकी जगह होता तो इस मामले में जरा भी दखल न देता। इसमें कोई बाधा पड़ने का भय नहीं है। ऐसे मामले चटपट तय हो जाते हैं।

बार्थिविक — (संदेह के भाव से) अच्छा, यह बात? अच्छा, यह बात?

जैक — (सचेत होकर) अच्छा। मुझे अपने बयान में क्या कहना पड़ेगा?

स्नो — यह तो आप खुद जान सकते हैं।

(दरवाजे तक जाकर)

शायद कोई नई बात खड़ी हो जाय। अच्छा यह है कि आप एक वकील कर लीजिए। हम खानसामा को यह साबित करने के लिए तलब करेंगे कि चीज वास्तव में चोरी गई। अब मुझे आज्ञा दीजिए, मुझे आज बहुत काम है। ग्यारह बजे के बाद किसी समय मुक़दमा पेश होगा। बन्दगी हुजूर, बन्दगी मेम साहब। मुझे कल यह डिबिया अदालत में पेश करनी पड़ेगी, इसलिए यदि आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं इसे अपने साथ लेता जाऊँ।

(वह डिबिया उठा लेता है और सलाम करके चला जाता है। बार्थिविक उसके साथ जाने के लिए उठता है, और अपने हाथों को कोट के पीछे रखकर निराश होकर बोलता है।)

बार्थिविक — मैं चाहता हूँ कि तुम इन बातों में दखल न दिया करो। मगर तुम्हारी ऐसी आदत है कि समझो या न समझो दखल हरेक बात में दोगी। मारा — सब मामला चौपट कर दिया।

मिसेज़ बार्थिविक — (रुखाई से) मेरी समझ में नहीं आता तुम्हारा मतलब क्या है? अगर तुम अपने हक के लिए नहीं खड़े हो सकते, तो मैं तो खड़ी हो सकती हूँ। मुझे तुम्हारे सिद्धान्त जरा भी नहीं भाते। उन्हें लेकर तुम चाटा करो।

बार्थिविक — सिद्धान्त। तुम हो किस फेर में। सिद्धान्तों की यहाँ चर्चा ही क्या? तुम्हें मालूम नहीं कि पिछली रात को जैक नशे में चूर था?

जैक — अब्बा जान।

मिसेज़ बार्थिविक — (भयभीत होकर खड़ी हो जाती है) जैक, यह क्या बात है?

जैक — कोई बात नहीं, अम्माँ। मैंने केवल भोजन किया था। सभी खाते हैं। मेरा मतलब है, यानी मेरा मतलब है — आप मेरा मतलब समझ गई होंगी। इसे नशे में चूर होना नहीं कहते। आक्सफोर्ड में तो सभी मुँह का मजा बदल लिया करते हैं।

मिसेज़ बार्थिविक — यह बड़ी बेहूदा बात है। अगर तुम लोग आक्सफोर्ड में यही सब किया करते हो...।

जैक — (क्रोध से) तो फिर आप लोगों ने मुझे वहाँ भेजा क्यों? जैसे और सब रहते हैं, वैसे ही तो मुझे भी रहना पड़ेगा। इतनी सी बात को नशे में चूर कहना हिमाकत है। हाँ, मुझे खेद अवश्य है। आज दिन भर सिर में बड़ा दर्द रहा।

बार्थिविक — छी! अगर तुम्हें मामूली-सी तमीज भी होती और तुम्हें इतना-सा भी याद होता कि जब तुम यहाँ आए तो क्या-क्या

बातें हुई तो हमें मालूम हो जाता कि इस बदमाश की बातों में कितना सच है। मगर अब तो कुछ समझ में ही नहीं आता। गोरख धन्धा सा होकर रह गया।

जैक — (घूरता हुआ मानो अधूरी बातें याद आ रही हैं) कुछ-कुछ याद आता है — फिर सब भूल जाता हूँ।

मिसेज़ बार्थिविक — क्या कहते हो जैक? क्या तुम्हें इतना नशा था कि तुम्हें इतना भी याद नहीं? –

जैक — यह बात नहीं है, अम्माँ। मुझे यहाँ आने की खूब याद है — मैं जरूर आया हूँगा —

बार्थिविक — (गुस्से से बेकाबू, इधर से उधर तक टहलता हुआ) खूब! और वह मनहूस थैली कहाँ से आ गई। खुदा खैर करे। जरा सोचो तो जैक! यह सारी बातें पत्रों में निकल जायँगी। किसको मालूम था कि मामला यहाँ तक पहुँचेगा। इससे तो यह कहीं अच्छा होता कि एक दर्जन डिबिये में खो जातीं और हम लोग जबान न खोलते। (पत्नी से) यह सब तुम्हारी करतूत है। मैंने तुमसे पहले ही कह दिया था कि अच्छा हो कहीं रोपर आ जाता।

मिसेज़ बार्थिविक — (तीव्र स्वर से) मेरी समझ में नहीं आता, तुम क्या बक रहे हो, जान।

बार्थिविक — (उसकी तरफ़ मुड़कर) नहीं तुम! अजी-तुम-तुम कुछ जानती नहीं। (तेज़ आवाज से) आखिर! वह रोपर कहाँ मर गया। अगर वह इस दलदल से निकलने की कोई राह निकाल दे, तो मैं जानूँ कि वह किसी काम का आदमी है। मैं बदकर कहता हूँ कि इससे निकलने का अब कोई रास्ता नहीं है। मुझे तो कुछ सूझता नहीं।

जैक — इधर सुनिए, अब्बाजान को क्यों दिल करती हो? मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि मैं थककर बेदम हो गया था, और मुझे इसके सिवा कुछ याद नहीं है कि मैं घर आया।

(बहुत मंद स्वर से)

और रोज की तरह पलंग पर जाकर सो रहा।

बार्थिविक — पलंग पर चले गये? कौन जानता है कि तुम कहाँ चले गये, मुझे तुम्हारे ऊपर अब विश्वास नहीं रहा। मुझे क्या पता कि तुम जमीन पर पड़ रहे होंगे।

जैक — (बिगड़कर) जमीन पर नहीं, मैं —

बार्थिविक — (सोफा पर बैठकर) इसकी किसे परवाह है क्कि तुम कहाँ सोये थे? उस वक्त क्या होगा जब वह कह देगा....डूब मरने की बात होगी।

मिसेज़ बार्थिविक — क्या (सन्नाटा) बात क्या हुई, बोलते क्यों नहीं?

जैक — कुछ नहीं...।

मिसेज़ बार्थिविक — कुछ नहीं। कुछ नहीं, इससे तुम्हारा क्या मतलब है, जैक? तुम्हारे दादा इसके लिए आसमान सिर पर उठा रहे हैं...।

जैक — वह थैली मेरी है।

मिसेज़ बार्थिविक —तुम्हारी थैली? तुम्हारे पास थैली कब थी? तुम खूब जानते हो तुम्हारे पास थैली न थी।

जैक — खैर, दूसरे ही की सही — मगर यह केवल दिल्लगी थी। मुझे उस सड़ी-सी थैली को लेकर क्या करना था?।

मिसेज़ बार्थिविक — .तुम्हारा मतलब है क्या किसी दूसरे की थैली थी और उसे इस बदमाश ने उड़ा ली?

बार्थिविक — जी हाँ, थैली उसने उड़ा ली। जोन्स वह आदमी नहीं है कि इस बात पर पर्दा डाल दे। वह इसे खूब नमक-मिर्च लगाकर बयान करेगा। समाचार-पत्रों में इसकी चर्चा होगी।

मिसेज़ बार्थिविक — मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है। किस बात का यह सब किस्सा है?

(जैक के ऊपर झुककर प्यार से)

जैक, बेटा, बताओ तो क्या बात है। डरो मत। साफ़-साफ़ बता दो, बात क्या है?

जैक — अम्माँ, ऐसी बातें न करो!

मिसेज़ बार्थिविक — कैसी बातें बेटा?

जैक — कुछ नहीं, यों ही। मुझे कुछ याद नहीं कि वह चीज मेरे पास कैसे आ गईं। मुझसे और उससे एक पकड़ हो गई — मुझे कुछ खबर न थी कि मैं क्या कर रहा हूँ — मैंने-मैंने शायद मैंने — तुम समझ गई होगी — शायद मैंने थैली उसके हाथ से छीन ली।

मिसेज़ बार्थिविक — उसके हाथ से? किसके हाथ से? कैसी थैली? किसकी थैली?

जैक — अजी, मुझे कुछ याद नहीं — (निराश और ऊँची आवाज में) किसी औरत की थैली थी।

मिसेज़ बार्थिविक — किसी औरत की? नहीं! नहीं! जैक! ऐसा न कहो।

जैक — (उछलकर) तुम मानती ही नहीं थीं तो मैं क्या करता। मैं तो नहीं बताना चाहता था। मेरा क्या कसूर है?

(द्वार खुलता है और मारलो एक आदमी को अंदर लाता है। अधेड़, कुछ मोटा आदमी है। शाम के कपड़े पहने हुए है। मूँछे लाल और पतली हैं। आँखें काली और तेज़। उसकी भवें चीनियों सी हैं।)

मारलो — रोपर साहब आये हैं हुजूर।

(वह कमरे से चला जाता है।)

रोपर — (तेज आँखों से चारों ओर देखकर) कैसे मिजाज हैं?

(जैक और मिसेज़ बार्थिविक दोनों चुप बैठे रहते हैं।)

बार्थिविक — (जल्दी से आकर) शुक्र है आप आ तो गए। आपको याद है मैंने आज शाम को आप से क्या कहा था? जासूस अभी यहाँ आया था।

रोपर — डिबिया मिल गई?

बार्थिविक — हाँ, डिबिया तो मिल गई, पर एक बात है। यह मज़दूरनी का काम न था। उसके शराबी और ठलुये शौहर ने वे चीजें चुराई थीं। वह कहता है कि यही रात को उसे घर में लाया था।

(वह जैक की तरफ़ हाथ उठाता है, जो ऐसा दबक जाता है मानो बार बचाता हो।)

आपको कभी इसका विश्वास होगा?

(रोपर हँसता है और वह उत्तेजित होकर शब्दों पर जोर देता

आ।)

यह हँसीं की बात नहीं है। मैंने जैक का किस्सा भी आपसे कहा था। आप समझ गए होंगे-बदमाश दोनों चीजें उठा ले गया — वह सत्यानाशी थैली भी ले गया। अखबारों में इसकी चर्चा होगी।

रोपर — (भवें चढ़ाकर) हूँ! थैली! बड़े लोगों की दशा? आपके साहबजादे क्या कहते हैं?

बार्थिविक — उसे कुछ याद नहीं। ऐसा अंधेर कभी देखा था? पत्रों तक यह बात पहुँचेगी।

मिसेज़ बार्थिविक — (हाथों से आँखों को छिपाकर) नहीं! नहीं!! यह बात तो नहीं है...।

(बार्थिविक और रोपर घूमकर उसकी ओर देखते हैं।)

बार्थिविक — उस औरत पर कह रही हैं। वह बात अभी-अभी इनके कानों में पड़ी है।

(रोपर सिर हिलाता है और मिसेज् बार्थिविक अपने होंठों को दबाकर मन्द दृष्टि से जैक को देखती है और मेज के सामने बैठ जाती है।)

आखिर, क्या करना चाहिए रोपर? वह लुच्चा जोन्स इस थैली वाले मामले को खूब बढावेगा, बात का बतंगड़ बना देगा।

मिसेज़ बार्थिविक — मुझे विश्वास नहीं आता कि जैक ने थैली ली।

बार्थिविक — क्या अब भी कोई संदेह है? वह औरत आज सवेरे अपनी थैली माँगने आई थी।

मिसेज़ बार्थिविक — यहाँ? इतनी बेहया है। मुझे क्यों नहीं बताया?

(वह एक दूसरे के चेहरे की तरफ़ ताकती है, कोई उसे जवाब नहीं देता। सन्नाटा हो जाता है।)

बार्थिविक — (चौंककर) क्या करना होगा, रोपर?

रोपर — (धीरे से जैक से) तुमने कुंजी तो दरवाजे में नहीं छोड़ दी थी?

जैक — (रुखाई से) हाँ, छोड़ तो दी थी।

बार्थिविक — या ईश्वर। अभी और आगे न जाने क्या-क्या होगा?

मिसेज़ बार्थिविक — मुझे विश्वास है कि तुम उसे घर में नहीं लाए थे। जैक! यह सरासर झूठी बात है। मैं जानती हूँ इसमें सचाई की गंध तक नहीं है। मिस्टर

रोपर — (यकायक) तुम रात कहाँ सोए थे?

जैक — (तुरन्त) सोफा पर...वहाँ —

(कुछ हिचककर)

यानी...मैं...

बार्थिविक — सोफा पर। क्या तुम्हारा मतलब यह है कि चारपाई पर गए ही नहीं।

जैक — (मुँह लटकाकर) नहीं।

बार्थिविक — अगर तुम्हें कुछ भी याद नहीं है तो यह इतना कैसे याद रहा?

जैक — क्योंकि आज सुबह मेरी आँख खुली तो मैंने अपने को वहीं पाया।

मिसेज़ बार्थिविक — क्या कहा?

बार्थिविक — या खुदा!

जैक — और मिसेज़ जोन्स ने मुझे देखा। मैं चाहता हूँ कि आप लोग मुझे यों दिक न करें।

रोपर — आपको याद है कि आपने किसी को शराब पिलाई थी?

जैक — हाँ, मैं कसम खाकर कहता हूँ कि मुझे एक आदमी की याद आ रही है...उस आदमी के...

(रोपर की तरफ़ देखता है)

क्या आप मुझसे चाहते हैं कि...

रोपर — (बिजली की तेजी से) जिसका चेहरा गंदा है।

जैक — (प्रसन्न होकर) हाँ, वही, वही! मुझे साफ़ याद आ रहा है...

(बार्थिविक अचानक खिसक जाता है। मिसेज़ बार्थिविक क्रोध से रोपर की तरफ़ देखती है और अपने बेटे की बांह छूती है।)

मिसेज़ बार्थिविक — तुमको बिलकुल याद नहीं है। यह कितनी हंसी की बात है। मुझे उस आदमी के यहाँ आने का बिलकुल विश्वास नहीं है।

बार्थिविक — तुम्हें सच बोलना चाहिए। चाहे यही सच क्यों न हो? लेकिन अगर तुम्हें याद आता है कि तुमने ऐसी बेहूदगी की तो तुम फिर मुझसे कोई आशा न रक्खो।

जैक — (उनकी तरफ़ घूरकर) आखिर आप लोग मुझसे चाहते क्या हैं?

मिसेज़ बार्थिविक — जैक!

जैक — जी हाँ, मेरी समझ में बिलकुल नहीं आता कि आप लोगों की इच्छा क्या है।

मिसेज़ बार्थिविक — हम लोग यही चाहते हैं कि तुम सच बोलो और कह दो कि तुमने उस नीच को घर में नहीं बुलाया।

बार्थिविक — बेशक, अगर तुम खयाल करते हो, कि तुमने इस बेशरमी से उसे व्हिस्की पिलाई और अपनी करतूत उसे दिखाई, और तुम्हारी दशा इतनी खराब थी कि तुम्हें वे बातें बिलकुल याद नहीं, तो...।

रोपर — (जल्दी से) मुझे खुद कोई बात याद नहीं रहती। याददाश्त इतनी कमजोर है।

बार्थिविक — (निराश भाव से) तो मैं नहीं जानता कि तुम्हें क्या कहना पड़ेगा।

रोपर — (जैक से) तुम्हें कुछ कहने की जरूरत नहीं। अपने को इस झमेले में मत डालो। औरत ने चीज चुराई या मर्द ने चीजें

चुराई, आपको इससे कुछ मतलब नहीं। आप तो सोफा पर सो रहे थे।

मिसेज़ बार्थिविक — तुमने दरवाजे में कुंजी लगी हुई छोड़ दी, यही काम कम है? अब और कुछ कहने की जरूरत नहीं।

(उसके माथे को प्यार से छूकर)

तुम्हारा सिर आज कितना गर्म है?

जैक — लेकिन मुझे यह तो बतलाइए कि मुझे करना क्या होगा? (क्रोध से)

मैं नहीं चाहता, कि इस तरह चारों ओर से मुझे दिक करें।

(मिसेज़ बार्थिविक उसके पास से हट जाती है।)

रोपर — (जल्दी से) आप यह सब कुछ भूल जायँ। आप तो सोये थे।

जैक — क्या कल मेरा कचहरी जाना ज़रूरी है?

रोपर — (सिर हिलाकर) नहीं।

बार्थिविक — (जरा शान्तचित होकर) सचमुच।

रोपर — जी हाँ।

बार्थिविक — लेकिन आप तो जायेंगे?

रोपर — जी हाँ।

जैक — (बनावटी प्रसन्नता से) बड़ी इनायत है। मैं यही चाहता हूँ कि मुझे वहाँ जाना न पड़े।

(सिर पर हाथ रखकर)

मुझे क्षमा कीजिएगा। आज सिर में जोरों का दर्द है।

(बाप की तरफ़ से माँ की तरफ़ देखता है।)

मिसेज़ बार्थिविक — (जल्दी से घूमकर) अच्छा, जाओ बेटा।

जैक — अच्छा, अम्माँ।

(वह चला जाता है। मिसेज़ बार्थिविक लम्बी सांस खींचती है। सन्नाटा हो जाता है।)

बार्थिविक — यह बहुत सस्ते छूट गए। अगर मैंने उस औरत को रुपये न दिए होते, तो उसने ज़रूर दावा किया होता।

रोपर — अब आपको मालूम हुआ कि धन कितना उपयोगी है।

बार्थिविक — मुझे अब भी सन्देह है कि हमें सच को छिपा देना चाहिए या नहीं।

रोपर — चालान होगा।

बार्थिविक — क्या आपका मंशा है कि इन्हें अदालत में जाना पड़ेगा?

रोपर — हाँ।

बार्थिविक — अच्छा! मैंने समझा था कि आप...देखिए मिस्टर रोपर। उस थैली का जिक्र मिस्टर कागजों में न आने दीजिएगा।

(रोपर अपनी छोटी आँखें उसके चेहरे पर जमा देता है और सिर हिलाता है।)

मिसेज़ बार्थिविक — मिस्टर रोपर, क्या आपके खयाल में यह मुनासिब नहीं है कि जोन्स परिवार का हाल मैजिस्ट्रेट से कह दिया जाय। मेरा मतलब यह है कि शादी के पहले उनका आपस में कितना अनुचित सम्बन्ध था। शायद जान ने आपसे नहीं कहा।

रोपर — यह तो कोई मार्के की बात नहीं।

मिसेज़ बार्थिविक — मार्के की बात नहीं।

रोपर — निजी बात है। शायद मैजिस्ट्रेट पर भी यही बीत चुकी हो।

बार्थिविक — (पहलू बदलकर, मानो बोझ खिसका रहा है।) तो अब आप इस मामले को अपने हाथ में रखेंगे?

रोपर — अगर ईश्वर की कृपा हुई।

(हाथ बढ़ाता है।)

बार्थिविक — (विरक्त भाव से हाथ हिलाकर) ईश्वर की इच्छा? क्या? आप चले?

रोपर — जी हाँ! ऐसा ही मेरे पास एक दूसरा मुक़दमा भी है।

(मिसेज़ बार्थिविक को झुककर सलाम करता है और चला जाता है। बार्थिविक उसके पीछे-पीछे अन्त तक बातें करता जाता है। मिसेज़ बार्थिविक मेज पर बैठी हुई सिसक-सिसककर रोने लगती है। बार्थिविक लौटता है।)

बार्थिविक — (आप ही आप) बदनामी होगी।

मिसेज् बार्थिविक — (तुरंत अपने रंज को छिपाकर) मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि रोपर ने ऐसी बात को हँसी में क्यों उड़ा दिया?

बार्थिविक — (विचित्र भाव से ताककर) तुम....तुम्हारी समझ में कोई बात नहीं आती। तुम्हें रत्ती भर भी समझ नहीं है।

मिसेज़ बार्थिविक — (क्रोध से) तुम मुझसे कहते हो कि मुझमें समझ नहीं है?

बार्थिविक — (घबराकर) मैं...बहुत परेशान हूँ। सारी बात आदि से अन्त तक मेरे सिद्धान्त के विरुद्ध है।

मिसेज़ बार्थिविक — मत बको। तुम्हारा कोई सिद्धान्त भी है। तुम्हारे लिए दुनिया में डरने के सिवा और कोई सिद्धान्त नहीं है।

बार्थिविक — (खिडकी के पास जाकर) मैं अपनी जिन्दगी मे कभी न डरा। तुमने सुना है, रोपर क्या कहता था? जिस आदमी के घर में ऐसी वारदात हो गई हो, उसके होश उड़ा देने को इतनी बात काफी है। हम जो कुछ कहते या करते हैं, वह हमारे मुँह से निकल ही पड़ता है। भूत सा सिर पर सवार रहता है। मैं इन बातों का आदी नहीं हूँ। वह खिड़की खोल देता है मानों उसका दम घुट रहा हो।

(किसी लड़के के सिसकने की धीमी आवाज सुनाई देती है।)

यह कैसी आवाज है?

वे सब कान लगाकर सुनते हैं।

मिसेज़ बार्थिविक — (तीव्र स्वर में) मुझसे रोना नहीं सुना जाता। मैं मारलो को भेजती हूँ कि इसे रोक दे। मेरे सारे रोएँ खड़े हो गए।

(घंटी बजाती है।)

बार्थिविक — मैं खिड़की बन्द किए देता हूँ, फिर तुम्हें कुछ न सुनाई देगा।

(वह खिड़की बन्द कर देता है और सन्नाटा हो जाता है।)

मिसेज़ बार्थिविक — (तीव्र स्वर में) इससे कोई फायदा नहीं। मेरा दिल धडक रहा है। मुझे किसी बात से इतनी घबड़ाहट नहीं होती, जितनी किसी बालक के रोने से।

(मारलो आता है।)

यह कैसा रोने का शोर है मारलो? किसी बच्चे की आवाज मालूम होती है।

बार्थिविक — बच्चा है। उस मुंडेर से चिपटा हुआ दिखाई तो पड़ता है।

मारलो — (खिड़की खोलकर और बाहर देखकर) यह मिसेज़ जोन्स का छोटा लडका है, हुजूर! अपनी माँ को खोजता हुआ यहाँ आया है।

मिसेज़ बार्थिविक— (जल्दी से खिड़की के पास जाकर) कैसा गरीब लडका है! जान, हमें यह मुकदमा न चलाना चाहिए।

बार्थिविक — (एक कुर्सी पर धम से बैठकर) लेकिन अब तो बात हमारे हाथ से निकल गई!

मिसेज़ बार्थिविक खिड़की की तरफ़ पीठ कर लेती है, उसके चेहरे पर बेचैनी का भाव दिखाई देता है, वह अपने ओंठ दबाये खड़ी होती है। रोना फिर शुरू हो जाता है। बार्थिविक हाथों से अपने कान बन्द कर लेता है और मारलो खिड़की बन्द कर देता है। रोना बन्द हो जाता है।

(पर्दा गिरता है।)

अक 3

पहला दृश्य

[आठ दिन गुजर गए हैं। लन्दन के पुलिस कोर्ट का दृश्य है। एक बजा है। एक चंदवे के नीचे न्याय का आसन. है। इस चंदवे के ऊपर शेर और गैंडे की प्रतिमा बनी हुई है। आँख के सामने एक मुरझाई हुई सूरत का न्यायाधीश अपने कोट के पिछले भाग को गर्म कर रहा है और दो छोटी-छोटी लड़कियों को घूर रहा है, जो नीले और नारंगी चीथड़े पहने हुए हैं। कपड़ों

का रंग बिल्कुल उड़ गया है। ये लड़कियाँ कठघरे में लाई जाती हैं। गवाहों के कठघरे के पास एक अफसर ओवरकोट पहने खड़ा . है' उसकी दाढ़ी छोटी और भूरी है। छोटी लड़कियों के बगल में एक गंजा पुलिस कांस्टेबिल खड़ा है। अगली बेंच पर बार्थिविक और रोपर बैठे हुए हैं। जैक उनके पीछे बैठा है। जंगलेदार कठघरे में कुछ फटेहाल मर्द और औरतें पीछे खड़ी हैं। कई मोटे-ताजे कांस्टेबिल इधर-उधर खड़े या बैठे हैं।]

मैजिस्ट्रेट — (पिता-भाव दिखाता हुआ कठोर स्वर में) अब हमें इन लड़कियों का झगड़ा तय कर देना चाहिए।

अहलमद — थेरसा लिवेंस! माड लिवेंस!

(गंजा कांस्टेबिल छोटी लड़कियों को दिखाता है जो चुपचाप, स्थिति को समझती हुई विरक्त भाव से खड़ी हैं। दारोगा गवाहों के कठघरे में आता है।)

दारोगा! तुम अदालत के सामने जो बयान दोगे, वह बिल्कुल सच, पूरा-पूरा सच और सच के सिवा और कुछ न होगा। ईश्वर तुम्हारी मदद करे। इस किताब को चूमो।

(दारोगा किताब चूमता है।)

दारोगा — (एक ही आवाज में, हरएक आवाज के अन्त में रुकता हुआ ताकि उसका बयान लिखा जा सके।) आज सवेरे करीब दस बजे मैंने इन दोनों लड़कियों को व्ल्यूस्ट्रीट में एक सराय के बाहर रोते हुए पाया। जब मैंने पूछा कि तुम्हारा घर कहाँ है तो उन्होंने कहा कि हमारा घर नहीं है। माँ कहीं चली गयी है। बाप के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि उसके पास कोई काम नहीं है। जब पूछा कि तुम लोग रात कहाँ सोई थीं, तो उन्होंने फूफू का नाम लिया। हुजूर, मैंने तहकीकात की है। औरत घर से निकल गई है और मारी-मारी फिरती है। बाप बेकार है और मामूली सराय में रहता है। उसकी बहन के अपने ही आठ लड़के हैं, वह कहती है कि मैं इन लड़कियों का अब पालन नहीं कर सकती।

मैजिस्ट्रेट — (चंदवे के नीचे अपनी जगह पर आकर) तुम कहते हो कि माँ मारी-मारी फिरती है। तुम्हारे पास क्या सबूत है?

दारोगा — हुजूर, उसका शौहर यहाँ मौजूद है।

मैजिस्ट्रेट — अच्छी बात है। उसे पेश करो।

(लिवेंस का नान पुकारा जाता है। मैजिस्ट्रेट आगे झुक जाता है और कठोर दया से लड़कियों की ओर देखता है। लिवेंस अंदर आता है। उसके बाल खिचड़ी हो गए हैं। कालर की जगह

गुलूबन्द लगाए हुए हैं। वह गवाहों के कठघरे के पास खड़ा हो जाता है।)

अच्छा, तुम इनके बाप हो? तो तुम इन लड़कियों को घर में क्यों नहीं रखते? यह क्या बात है कि तुम इनको इस तरह सड़कों पर फिरने के लिए छोड़ देते हो?

लिवेंस — हुजूर, मेरे कोई घर नहीं है। मेरे खाने का तो ठिकाना नहीं है। मैं बिलकुल बेकार हूँ और न मेरे पास कुछ है जिससे इनका पालन कर सकूँ।

मैजिस्ट्रेट — यह कैसे? '

लिवेंस — (शर्माकर) मेरी बीबी निकल गई और सारी चीजें गिरों रख दीं।

मैजिस्ट्रेट — लेकिन तुमने उसे ऐसा करने क्यों दिया?

लिवेंस — हुजूर, मैं उसे रोक नहीं सका। उधर मैं काम की तलाश में गया, इधर यह निकल भागी।

मैजिस्ट्रेट — क्या तुम उसे मारते-पीटते थे?

लिवेंस — (जोर देकर) हुजूर, मैंने कभी उसे तिनके से भी न मारा।

मैजिस्ट्रेट — तब क्या बात थी, क्या वह शराब पीती थी?

लिवेंस — (धीमी आवाज में) हाँ हुजूर!

मैजिस्ट्रेट — उसका चाल-चलन अच्छा न था?

लिवेंस — (धीमी आवाज में) हाँ, हजूर!

मैजिस्ट्रेट — अब कहाँ है?

लिवेंस — मुझे नहीं मालूम, हुजूर। वह एक आदमी के साथ निकल गई और तब मैं

मैजिस्ट्रेट — हाँ, हाँ, ठीक है। यहाँ कोई उसे जानता थोडे ही है? गंजे कांस्टेबिल से क्या यहाँ कोई जानता है उसे?

दारोगा — इस इलाके में तो कोई नहीं जानता हुजूर! लेकिन मैंने पता लगाया कि...।

मैजिस्ट्रेट — हाँ, हाँ, ठीक है! इतना काफी है।

(बाप से)

तुम कहते हो कि वह घर से निकल गई और इन लड़कियों को छोड़ गई। तुम इनके लिए क्या इन्तजाम कर सकते हो? तुम देखने में तो हट्टे-कट्टे आदमी हो!

लिवेंस — हाँ, हुजूर, हट्टा-कट्टा तो हूँ, और काम भी करना चाहता हूँ, लेकिन अपना कोई बस नहीं। कहीं मजदूरी मिले तब तो?

मैजिस्ट्रेट — लेकिन तुमने कोशिश की थी?

लिवेंस — हुजूर, सब कुछ करके हार गया। कोशिश करने में कोई कसर नहीं उठा रखी।

मैजिस्ट्रेट — अच्छा...।

दारोगा — (सन्नाटा हो जाता है) अगर हुजूर का खयाल हो कि ये बच्चे अनाथ हैं तो हम उनको लेने को तैयार हैं।

मैजिस्ट्रेट — हाँ, हाँ, मैं जानता हूँ। लेकिन मेरे पास कोई ऐसी शहादत नहीं है कि यह आदमी अपने बच्चों की ठीक तौर से देख-रेख नहीं कर सकता।

(वह उठता है और आग के पास चला जाता है।)

दारोगा — हुजूर, इनकी माँ इनके पास आती जाती है।

मैजिस्ट्रेट — हाँ, हाँ! माँ इस योग्य नहीं है कि बच्चे उसे दिए जायँ।

(बाप से)

तुम क्या कहते हो?

लिवेंस — हुजूर, मैं इतना ही कहता हूँ कि अगर मुझे काम मिल जाय तो मैं बड़ी खुशी से उनकी परवरिश करूँगा। लेकिन मैं

क्या करूँ हुजूर, मेरे तो भोजन का ठिकाना नहीं। सराय में पड़ा रहता हूँ। मैं मजबूत आदमी हूँ, काम करना चाहता हूँ। दूसरों से दूनी हिम्मत रखता हूँ, लेकिन हुजूर देखते हैं कि मेरे बाल पक गए हैं बुखार के सबब से।

(अपने बाल छूता है।)

इसलिए मैं जँचता नहीं। शायद इसीलिए मुझे कोई नौकर नहीं रखता।

मैजिस्ट्रेट — (आहिस्ता से) हाँ, हाँ! मैं समझता हूँ कि यह एक मामला है।

(लड़कियों की तरफ़ कड़ी आँखों से देखकर।)

तुम चाहते हो कि ये लड़कियां अनाथालय में भेज दी जायें।

लिवेंस — हाँ, हुजूर, मेरी तो यही इच्छा है।

मैजिस्ट्रेट — एक हफ्ते की मुहलत देता हूँ। आज ही के दिन फिर आना। अगर उस वक्त उचित हुआ तो मैं हुक्म दे दूँगा।

दारोगा — आज के दिन हुजूर!

(गंजा कांस्टेबिल लड़कियों का कंधा पकड़े ले जाता है। बाप उनके पीछे-पीछे जाता है। मैजिस्ट्रेट अपनी जगह पर लौट आता है और झुककर क्लर्क से सायं-सायं बातें करता है।)

बार्थिविक — (हाथ की आड़ से) बड़ा करुण दृश्य है रोपर, मुझे तो उन पर बड़ी दया आ रही है।

रोपर — पुलिस कोर्ट में ऐसे सैकडों आया करते हैं।

बार्थिविक — बड़ी दिल दुखाने वाली बात है। लोगों की दशा जितना ही देखता हूँ, उतना ही मेरे दिल पर असर होता है। मैं पार्लमेंट में उनका पक्ष लेकर अवश्य खड़ा होऊँगा। मैं एक प्रस्ताव...।

(मैजिस्ट्रेट क्लर्क से बोलना बन्द कर देता है।)

क्लार्क — हिरासत वालो!

(बार्थिविक एकाएक रुक जाता है। कुछ हलचल होती है और मिसेज़ जोन्स सदर दरवाजे से अन्दर आती है। जोन्स पुलिस वालों के साथ कैदियों के दरवाजे से आता है। वे कठघरे के अन्दर एक क़तार में खड़े होते हैं।)

क्लार्क — जेम्स जोन्स! जेन जोन्स!

अर्दली — जेन जोन्स?

बार्थिविक — (धीरे से) देखो रोपर, उस थैली की जिक्र न आने पाए। चाहे जो कुछ हो तुम उसे समाचार पत्रों में न आने देना।

(रोपर सिर हिलाता है।)

गंजा कांस्टेबिल — चुप रहो।

(मिसेज़ जोन्स काले पतले फटे कपड़े पहने हुए है। उसकी टोपी काली है। वह कठघरे के सामने की दीवार पर हाथ रक्खे चुपचाप खड़ी हो जाती है। जोन्स कठघरे की पिछली दीवार टेककर खड़ा हो जाता है। और इधर-उधर साहस भरी दृष्टि से ताकता है। उसका चेहरा उतरा हुआ है और बाल बढ़े हुए हैं।)

क्लार्क — (अपने कागज देखकर) हुजूर, यह वही मुकदमा है जो पिछले बुधवार को जेर तजवीज था। एक चाँदी की सिगरेट की डिबिया की चोरी और पुलिस पर हमला — दोनों मुलजिमों का साथ-साथ विचार हो रहा था। जेम्स जोन्स, जेन जोन्स।

मैजिस्ट्रेट — (घूरकर) हाँ, हाँ, मुझे याद है।

क्लार्क — जेन जोन्स!

मिसेज़ जोन्स — हाँ, हुजूर।

क्लार्क — क्या तुम स्वीकार करती हो कि तुमने एक चाँदी की सिगरेट की डिबिया जिसकी ,कीमत 5 पौंड. 10 शिलिंग है, जान बार्थिविक मेम्बर पार्लमेंट के मकान से, ईस्टर मंडे के दिन ग्यारह बजे रात और नहीं ईस्टर ट्यूसडे आठ बजे दिन के बीच में चुराई थी। बोलो, हाँ या नहीं?

मिसेज़ जोन्स — (धीमे स्वर में) नहीं हुजूर, मैंने नहीं...।

क्लार्क — जेम्स जोन्स, क्या तुम स्वीकार करते हो, कि तुमने एक चाँदी की सिगरेट की डिबिया जिसकी कीमत 5 पौंड. 10 शिलिंग है, जान बार्थिविक मेम्बर पार्लमेंट के मकान से ईस्टर मंडे को बजे रात और ईस्टर ट्यूसडे के 8 बजे दिन के बीच में चुराई? और जब पुलिस ईस्टर ट्यूसडे को तीन बजे शाम के वक्त अपना काम करना चाहती थी, तो तुमने उस पर हमला किया? बोलो, हाँ या नहीं?

जोन्स — (रुलाई से) हाँ, लेकिन इसके बारे में मुझे बहुत-सी बातें कहनी हैं।

मैजिस्ट्रेट — (क्लार्क से) हाँ, हाँ। लेकिन यह क्या बात है कि इन दोनों पर एक ही जुर्म लगाया गया है? क्या वे मियां बीवी हैं?

क्लार्क — हाँ हुजूर! आपको याद है कि आपने मुजरिम को हिरासत में रक्खा था कि शौहर के बयान पर और भी शहादत ली जा सके।

मैजिस्ट्रेट — क्या तभी से ये दोनों हवालात में हैं?

क्लार्क — आपने औरत को उसी की जमानत पर छोड़ दिया था।

मैजिस्ट्रेट — हाँ, हा! यह चाँदी की डिबिया वाला मामला है। मुझे अब याद आया। अच्छा!

क्लार्क — टामस मारलो?

(टामस मारलो की पुकार होती है। मारलो अन्दर आता है और गवाहों के कठघरे में जाता है। वहाँ उसे हलफ़ दी जाती है। चाँदी की डिबिया पेश की जाती हैं और कठघरे की दीवार पर रखी जाती है।)

क्लार्क — (मिसिल पद्ता हुआ) तुम्हारा नाम टामस मारलो है? तुम जॉन बार्थिविक नं. 6 राकिंघम गेट के यहाँ खानसामा हो?

मारलो — जी हाँ!

क्लार्क — क्या तुमने पिछ्ले ईस्टरडे की रात को चाँदी की एक डिबिया नं. 6 राकिंघम गेट के खाने के कमरे में एक तश्तरी में रक्खी' क्या यही वह डिबिया है?

मारलो — जी हाँ!

क्लार्क — और जब तुम सुबह को पौने नौ बजे तश्तरी को उठाने गए तो तुम्हें डिबिया नहीं मिली?

मारलो — हाँ हुजूर!

क्लार्क — तुम इस मुजरिम औरत को जानते हो?

(मारलो सिर हिलाता है।)

क्या वह नं. 6 राकिंघम गेट में मजदूरी का कार्य करती है?

(मारलो फिर सिर हिलाता है।)

जब तुमने डिबिया न पाई तो उस वक्त मिसेज़ जोन्स उस कमरे में थी?

मारलो — जी हाँ!

क्लार्क — फिर तुमने उस चोरी का हाल जाकर अपने मालिक से कहा और उसने तुम्हें थाने भेजा?

मारलो— जी हाँ!

क्लार्क — (मिसेज़ जोन्स से) तुम्हें इनसे कुछ पूछना है?

मिसेज़ जोन्स — नहीं हुजूर। कुछ नहीं।

क्लार्क — (जोन्स से) जेम्स जोन्स, क्या तुम्हें इस गवाह से कुछ पूछना है?

जोन्स — मैं तो उसे जानता भी नहीं।

मैजिस्ट्रेट — क्या तुमको ठीक याद है कि तुमने उसी वक्त डिबिया रक्खी थी जिस वक्त की तुम कह रहे हो?

मारलो— हाँ, हुजूर!

मैजिस्ट्रेट — अच्छी बात है। अब अफसर (खुफिया पुलिस) को बुलाओ।

(मारलो चला जाता है और स्नो कठघरे में आता है।)

अर्दली — तुम अदालत के सामने जो बयान दोगे वह सच होगा, बिलकुल सच .होगा और सच के सिवा कुछ न होगा, ईश्वर तुम्हारी मदद करे।

(स्नो किताब चूमता है।)

क्लार्क — (मिसिल पढ़ते हुए) तुम्हारा नाम राबर्ट स्नो है? तुम मिट्रा पुलीटन पुलिस दल नं. 10 बी. विभाग के जासूस हो? आज्ञानुसार ईस्टर ट्यूसडे को तुम कैदी के मकान नं. 34 मरथर स्ट्रीट में गए थे? और क्या तुमने अन्दर जाने पर इस डिबिया को मेज पर पड़ी पाया?

स्नो — जी हाँ!

क्लार्क — क्या यही डिबिया है?

स्नो — (डिबिया को उंगली से छूकर) जी हाँ!

क्लार्क — तब क्या तुमने डिबिया को अपने कब्जे में कुर लिया और इस कैदी औरत पर उस डिबिया के चोरी का इलजाम लगाया? और क्या उसने चोरी से इनकार किया?

स्नो — जी हाँ!

क्लार्क — क्या तुमने उसे हिरासत में ले लिया?

स्नो — जी हाँ!

क्लार्क — उसका बर्ताव कैसा था?

स्नो — उसने जरा भी हुज्जत न की। हाँ, बराबर इनकार करती रही।

मैजिस्ट्रेट — तुम उसे जानते हो?

स्नो — नहीं हुजूर।

मैजिस्ट्रेट — यहाँ और कोई उसे जानता है?

गंजा कांस्टेबिल — नहीं हुजूर! दो में से एक को भी कोई नहीं जानता। हमारे पास इनके खिलाफ़ कोई शिकायत नहीं है।

क्लार्क — (मिसेज़ जोन्स से) तुम्हें इस अफसर से कुछ पूछना है?

मिसेज़ जोन्स — नहीं हुजूर, मुझे कुछ नहीं पूछना है।

मैजिस्ट्रेट — अच्छी बात है, आगे चलो।

क्लार्क — (मिसिल पढ़ता हुआ) और जब तुम इस औरत को गिरफ्तार कर रहे थे, क्या मर्द कैदी ने मुदाखलत की और तुम्हें अपना काम करने से रोका? और क्या तुमको एक घूँसा मारा?

स्नो — जी हाँ!

क्लार्क — क्या उसने कहा, इसे छोड़ दो, डिबिया मैंने ली है?

स्नो — जी हाँ!

क्लार्क — और तब तुमने सीटी बजाई और दूसरे कांस्टेबिल की मदद से उसे हिरासत में ले लिया?

स्नो — जी हाँ!

क्लार्क— क्या थाने पर जाते हुए वह बहुत गुस्से में था और तुम्हें गालियाँ दीं? और बार-बार कहता रहा कि डिबिया मैंने ली है?

(स्नो सिर हिलाता है।)

क्या इस पर तुमने उससे पूछा कि डिबिया तुमने कैसे चुराई? और क्या उसने कहा कि मैं छोटे मिस्टर बार्थिविक के बुलाने पर मकान में गया?

(बार्थिविक अपनी जगह पर घूमकर रोपर की तरफ कड़ी दृष्टि से देखता है।)

क्या उस दिन ईस्टर मंडे की आधी रात थी? और मैंने व्हिस्की पी और उसी के नशे में डिबिया उठा ली?

स्नो — जी हाँ!

क्लार्क— क्या वह बराबर इसी तरह झल्लाता रहा?

स्नो — जी हाँ!

जोन्स — (बीच में बोलकर) जरूर झल्लाता रहा। जब मैं तुमसे कह रहा था कि डिबिया मैंने ली है तो तुमने मेरी बीवी पर क्यों हाथ डाला?

मैजिस्ट्रेट — (गर्दन बढ़ाकर हिश करके डाँटता हुआ) तुम जो कुछ कहना चाहोगे, उसे कहने का मौका तुम्हें अभी मिलेगा। इस अफ़सर से तुम्हें कुछ पूछना है?

जोन्स — (चिढ़कर) नहीं।

मैजिस्ट्रेट — अच्छी बात है। हम पहले मुजरिम औरत का बयान लेंगे।

मिसेज़ जोन्स — हुजूर, मैं तो अब भी वही कहती हूँ जो अब तक बराबर कहती आ रही हूँ कि मैंने डिबिया नहीं चुराई।

मैजिस्ट्रेट — ठीक है, लेकिन क्या तुमको मालूम था कि किसी ने उसे चुराया?

मिसेज़ जोन्स — नहीं हुजूर, और मेरे शौहर ने जो कुछ कहा है उसके बारे में मैं कुछ नहीं जानती। हाँ, इतना ज़रूर जानती हूँ

कि वह सोमवार को बहुत रात गए घर आये। उस वक्त एक बज चुका था। और वह अपने आपे में न थे।

मैजिस्ट्रेट — क्या वह शराब पीये था?

मिसेज़ जोन्स — हाँ हुजूर।

मैजिस्ट्रेट — और वह नशे में था?

मिसेज़ जोन्स — हाँ हुजूर, बिलकुल बे-खबर था?

मैजिस्ट्रेट — और उसने तुमसे कुछ कहा?

मिसेज़ जोन्स — नहीं हुजूर, खाली मुझे गालियाँ देता रहा। और सुबह को जब मैं उठी और काम करने चली गयी तो वह सोता रहा। फिर मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानती। हाँ, मिस्टर बार्थिविक ने, जो मेरे मालिक हैं, मुझसे कहा कि डिबिया गायब हो गई है।

मैजिस्ट्रेट — हाँ! हाँ!

मिसेज़ जोन्स — तो जब मैं अपने शौहर का कोट हिलाने लगी तो सिगरेट की डिबिया उसमें से गिर पड़ी। और सारे सिगरेट चारपाई पर बिखर गए।

मैजिस्ट्रेट — (स्नो से) तुम कहते हो कि सिगरेट चारपाई पर बिखर गए। तुमने सिगरेट चारपाई पर बिखरे देखे थे?

स्नो — नहीं हुज़ूर, मैंने नहीं देखा।

मैजिस्ट्रेट — यह तो कहते हैं कि मैंने उन्हें बिखरे नहीं देखा?

मिसेज़ जोन्स — न देखा हो, लेकिन बिखरे थे।

स्नो — हुज़ूर, मैंने कमरे की सब चीजों के देखने का मौका ही नहीं पाया। इस मर्द ने मेरा काम ही हल्का कर दिया।

मैजिस्ट्रेट — (मिसेज़ जोन्स से) अच्छा तुम्हें और क्या कहना है?

मिसेज़ जोन्स — तो हुज़ूर, मैंने जब डिबिया देखी, तो मेरे होश उड़ गए। और मेरी समझ में न आया कि उन्होंने क्यों ऐसा काम किया। जब जासूस अफ़सर आया तो हम लोगों में इसी के बारे में कहा-सुनी हो रही थी। क्योंकि हुज़ूर, उसने मुझे तबाह कर दिया। अब मुझे कौन नौकर रक्खेगा। मेरे तीन-तीन बच्चे हैं हुज़ूर।

मैजिस्ट्रेट — (गर्दन बढ़ाकर) हाँ, हाँ! लेकिन उसने तुमसे कहा क्या?

मिसेज़ जोन्स — मैंने उससे पूछा कि तुम्हारे ऊपर ऐसी क्या आफ़त आई कि तुमने ऐसा काम कर डाला। उसने कहा कि यह नशे के कारण हुआ। मैंने बहुत शराब पी ली थी और न जाने मुझ पर क्या सनक सवार हो गई थी। और बात यह है हुज़ूर,

कि उन्होंने दिन भर कुछ नहीं खाया था। और जब खाली पेट कोई शराब पीता है, तो चट दिमाग पर असर हो जाता है। हुजूर, न जानते हों, लेकिन यह बात सच है। और-मैं क़सम खाकर कहती हूँ कि जब से हमारा ब्याह हुआ, उसने कभी ऐसा काम नहीं किया। हालांकि हम लोगों को बड़ी-बड़ी आफतें झेलनी पड़ी।

(कुछ जोर देकर बात करती हुई।)

मुझे विश्वास है कि अगर वह अपने आपे में होते तो ऐसा काम कभी न करते।

मैजिस्ट्रेट — हाँ, हाँ! लेकिन क्या तुम नहीं जानतीं कि यह कोई उज्र नहीं है?

मिसेज़ जोन्स — हाँ जानती हूँ हुजूर।

(मैजिस्ट्रेट आगे झुक जाता है और क्लार्क से बातें करता है।)

जैक — (पीछे की जगह से आगे को झुककर) दादा, मैं कहता हूँ।

बार्थिविक — चुप रहो। (रोपर से बातें करते हुए मुँह छिपाकर) रोपर, अच्छा हो कि तुम अब खड़े हो जाओ और कह दो कि और सब बातों और कैदियों की गरीबी का खयाल करके हम इस

मुक़दमे को और आगे नहीं बढाना चाहते। और अगर मैजिस्ट्रेट साहब इसे उस आदमी का फिसाद समझकर करवाई करें...।

(रोपर सिर हिलाता है।)

गंजा कांस्टेबिल — खामोश।

मैजिस्ट्रेट — अच्छा, अब अगर यह मान लिया जाय कि जो कुछ तुम कहती हो वह सच है और जो कुछ तुम्हारा शौहर कहता हे वह भी सच है, तो मुझे यह विचार करना पड़ेगा कि वह कैसे घर के अन्दर पहुँचा। और क्या तुमने अन्दर पहुँचने में उसकी कुछ मदद की? तुम उस मकान में मज़दूरनी का काम करती हो न?

मिसेज़ जोन्स — जी हाँ, हुजूर, लेकिन अगर मैं उसको मकान के अन्दर घुसने में मदद देती तो मेरे लिए यह बहुत बुरा काम होता। और मैंने जहाँ-जहाँ काम किया कभी ऐसा न किया।

मैजिस्ट्रेट — खैर, यह तो तुम कहती हो। अब देखें तुम्हारा शौहर क्या बयान देता है।

जोन्स — (जो पीछे के कठघरे में हाथ टेके हुए धीमी रूखी आवाज से बोलता है) मैं वही कहता हूँ जो कुछ मेरी बीवी कहती है। मैं कभी पुलिस कोर्ट में नहीं लाया गया। और मैं साबित कर सकता हूँ कि मैंने यह काम नशे में किया। मैंने अपनी बीवी

से कह दिया और वह भी यही कहेगी कि मैं उस चीज को पानी में फेंकने जा रहा था। यह इससे कहीं अच्छा था कि मैं उसके पीछे परेशान होता।

मैजिस्ट्रेट — लेकिन तुम मकान के अन्दर घुसे कैसे?

जोन्स — मैं उधर से गुज़र रहा था। मैं 'गोट और बेल्स' सराय से घर जा रहा था।

मैजिस्ट्रेट — गोट और बेल्स क्या चीज है? क्या सराय है?

जोन्स — हाँ, उस कोने पर। उस दिन बैंक की छुट्टी थी और मैंने दो घूँट पी ली थी। मैंने छोटे मिस्टर बार्थिविक को गलत जगह दरवाजे की कुंजी लगाते हुए देखा।

मैजिस्ट्रेट — अच्छा!

जोन्स — (आहिस्ता से और कई बार रुककर) तो मैंने उन्हें कुंजी का सुराख दिखा दिया। वह नवाबों की तरह शराब में चूर था। तब वह चला गया लेकिन थोड़ी देर बाद लौटकर बोला, मेरे पास तुम्हें देने को कुछ नहीं है। लेकिन अन्दर आकर थोड़ी-सी पी लो। तब मैं अन्दर चला गया। आप भी ऐसा ही करते। तब हमने थोड़ी-सी व्हिस्की पी। आप भी इसी तरह पीते। तब छोटे मिस्टर बार्थिविक ने मुझसे कहा, थोड़ी सी शराब पी लो। और

तम्बाकू भी पियो। तुम जो चीज चाहो ले लो। यह कहकर वह सोफा पर सो गया। तब मैंने थोड़ी सी और शराब पी। और सिगरेट भी पिया। फिर मैं आपसे नहीं कह सकता कि इसके बाद क्या हुआ?

मैजिस्टेट — क्या तुम्हारा मतलब है कि तुम नशे में इतने चूर थे कि कुछ भी याद नहीं रहा?

जैक — (बाप से नरमी के साथ) ठीक यही बात है — जो जो —

बार्थिविक — चुप!

जोन्स — हाँ, मेरा यही मतलब है।

मैजिस्ट्रेट — फिर भी तुम कहते हो कि तुमने डिबिया चुराई?

जोन्स — मैंने डिबिया चुराई हरगिज नहीं। मैंने सिर्फ ले ली थी।

मैजिस्ट्रेट — (गर्दन आगे बढ़ाकर) तुमने इसे चुराया नहीं? तुमने इसे सिर्फ ले लिया? क्या तुम्हारी थी? यह चोरी नहीं तो और है क्या?

जोन्स — मैंने इसे ले लिया।

मैजिस्ट्रेट — तुमने इसे ले लिया। तुम इसे उनके घर से अपने घर ले गए...।

जोन्स — (गुस्से से बात काटकर) मेरा, कोई घर नहीं है।

मैजिस्ट्रेट — अच्छी बात है। देखें नवयुवक मिस्टर बार्थिविक, तुम्हारे बयान के बारे में क्या कहते हैं?

(जोन्स गवाहों के कठघरे से चला जाता है। गंजा कांस्टेबिल जैक को इशारे से बुलाता है और वह अपनी टोपी लिए गवाहों के कठघरे में आता है। रोपर मेज के पास चला आता है जो वकीलों के लिए अलग की हुई है।)

इलफ़ देने वाला क्लार्क — तुम अदालत के सामने जो बयान दोगे उसे सच होना चाहिए, बिलकुल सच होना चाहिए और सिवाय सच के कुछ न होना चाहिए। ईश्वर तुम्हारी मदद करे। इस किताब को चूमो।

(जैक किताब चूमता है)

रोपर — (जिरह करते हुए) तुम्हारा क्या नाम है?

जैक — (धीमी आवाज में) जान बार्थिविक जूनियर।

(क्लार्क इसे लिख लेता है।)

रोपर — कहाँ रहते हो?

जैक — नं. 6 राकिंघम गेट।

(उसके सब जवाबों को क्लार्क लिखता जाता है।)

रोपर — तुम मालिक के लड़के हो?

जैक — (बहुत धीमी आवाज में) हाँ।

रोपर — जरा जोर से बोलो। क्या तुम मुजरिम को जानते हो?

जैक — (जोन्स स्त्री पुरुष की ओर देखकर धीमी आवाज में) मैं मिसेज़ जोन्स को जानता हूँ। मैं — (ऊँची आवाज में) मर्द को नहीं जानता।

जोन्स — लेकिन मैं तुमको जानता हूँ।

गंजा कांस्टेबिल — चुप रहो।

रोपर — अच्छा, क्या तुम ईस्टर-मंडे की रात को बहुत देर में घर आए थे?

जैक — हाँ।

रोपर — क्या तुमने गलती से दरवाजे की कुंजी दरवाजे में लगी हुई छोड़ दी?

जैक — हाँ।

मैजिस्ट्रेट — अच्छा, तुमने कुंजी दरवाजे में ही लगी छोड़ दी?

रोपर — और अपने आने के विषय में तुम्हें सिर्फ इतना ही याद है?

जैक — (धीमी आवाज में) हाँ, इतना ही।

मैजिस्ट्रेट — तुमने इस मर्द मुजरिम का बयान सुना है। उसके बारे में तुम क्या कहते हो?

जैक — (मैजिस्ट्रेट की तरफ़ मुड़कर दृढ़ता के साथ) बात यह है हुजूर, कि मैं रात को थिएटर देखने चला गया था। वहाँ खाना खाया और बहुत रात गए घर पहुँचा।

मैजिस्ट्रेट — तुम्हें याद है कि जब तुम आए तो यह आदमी बाहर खड़ा था?

जैक — जी नहीं। (वह हिचकता है) मुझे तो याद नहीं।

मैजिस्ट्रेट — (कुछ गड़बड़ाकर) क्या इस आदमी ने तुम्हें दरवाजा खोलने में मदद दी? जैसा इसने अभी कहा है। किसी ने दरवाजा खोलने में तुम्हें मदद दी?

जैक — जी नहीं। मैं तो ऐसा नहीं समझता। मुझे याद नहीं।

मैजिस्ट्रेट — तुम्हें याद नहीं? लेकिन याद करना पड़ेगा। तुम्हारे लिए यह कोई मामूली बात तो नहीं है कि जब तुम आओ तो दूसरा आदमी दरवाजा खोल दे! क्यों?

जैक — (लज्जा से मुस्कराकर) नहीं।

मैजिस्ट्रेट — अच्छा तब?

जैक — (असमंजस में पड़कर) बात यह है कि शायद मैंने उस रात को बहुत ज्यादा शामपेन पी ली थी।

मैजिस्ट्रेट — (मुस्कराकर) अच्छा तुमने बहुत ज्यादा शामपेन पी ली थी?

जोन्स — मैं इन महाशय से एक सवाल पूछ सकता हूँ?

मैजिस्ट्रेट — हाँ, हाँ! तुम जो कुछ पूछना चाहो पूछ सकते हो।

जोन्स — क्या आपको याद नहीं है कि आपने कहा था कि मैं अपने बाप की तरह लिबरल हूँ और मुझसे पूछा था कि तुम क्या हो?

जैक — (माथे पर हाथ रखकर) मुझे कुछ याद आता है?

जोन्स — और मैंने आपसे कहा था कि मैं पक्का कंजरवेटिव हूँ। तब आपने मुझसे कहा, तुम तो साम्यवादी से मालूम पड़ते हो। जो कुछ चाहो ले लो।

जैक — (दृढ़ता के साथ) नहीं मुझे इस तरह की कोई बात याद नहीं है।

जोन्स — लेकिन मुझे याद है। और मैं उतना ही सच बोलता हूँ, जितना आप। मैं इसके पहले कभी पुलिस कोर्ट में नहीं लाया गया। जरा इधर देखिए, क्या आपको याद नहीं है कि आपके हाथ में एक नीले रंग की थैली थी? और...।

(बार्थिविक उछल पड़ता है।)

रोपर — मैं हुजूर से अर्ज करना चाहता हूँ कि यह प्रश्न फजूल है। क्योंकि कैदी ने खुद इक़बाल कर लिया है कि उसे कुछ याद नहीं।

(मैजिस्ट्रेट के चेहरे पर मुस्कराहट दिखाई पड़ती है।)

अन्धा अन्धे को क्या रास्ता दिखा रहा है।

जोन्स — (बिगड़कर) मैंने इनसे ज्यादा खराब काम नहीं किया है। मैं गरीब आदमी हूँ, मेरे पास न रुपये हैं न दोस्त हैं। वह धनी है, वह जो कुछ चाहे कर सकता है।

मैजिस्ट्रेट — बस-बस, इन बातों से कोई फायदा नहीं। तुम्हें शान्त रहना चाहिए। तुम कहते हो, यह डिबिया मैंने ले ली। तुमने क्यों उसे ले लिया? क्या तुम्हें रुपये की बहुत जरूरत थी?

जोन्स — रुपये की तो मुझे हमेशा जरूरत रहती है।

मैजिस्ट्रेट — क्या इसीलिए तुमने उसे ले लिया?

जोन्स — नहीं।

मैजिस्ट्रेट — (स्नो से) इसके पास कोई चीज बरामद हुई?

स्नो — जी हाँ, हुजूर। इसके पास 6 पौंड. 12 शिलिंग निकले। और यह थैली।

(लाल रेशमी थैली मैजिस्ट्रेट के हाथ में रख दी जाती है। बार्थिविक अपनी जगह से उचक पड़ता है लेकिन फिर बैठ जाता है।)

मैजिस्ट्रेट — (थैली की तरफ़ देखकर) हाँ, हाँ, लाओ, इसे देखूँ।

(सब चुप हो जाते हैं।)

नही, थैली के बारे में कोई बयान नहीं है। तुम्हें वे सब रुपये कहाँ मिले?

जोन्स — (कुछ देर चुप रहकर एकाएक बोल उठता है) मैं इस सवाल का जवाब देने से इनकार करता हूँ।

मैजिस्ट्रेट — अगर तुम्हारे पास इतने रुपये थे तो तुमने डिबिया क्यों ली?

जोन्स — मैंने इसे जलन की वजह से ली।

मैजिस्ट्रेट — (गर्दन बढ़ाकर) तुमने इसे जलन की वजह से लिया? खैर यह एक बात है। लेकिन क्या तुम खयाल करते हो कि तुम जलन की वजह से दूसरों की चीजें लेकर शहर में रह सकते हो?

जोन्स — अगर आपकी हालत मेरी सी होती, अगर आप भी बेकार होते...।

मैजिस्ट्रेट — हाँ, हाँ, मैं जानता हूँ। चूंकि तुम बेकार हो, तुम समझते हो कि चाहे तुम जो कुछ करो, माफ़ हो जाएगा।

जोन्स — (जैक की तरफ उंगली दिखलाकर) आप उनसे पूछिए। उन्होंने क्यों उसकी थैली...।

रोपर — (आहिस्ता से) क्या हुजूर को अभी इस गवाह की और जरूरत है?

मैजिस्ट्रेट — (व्यंग्य से) नहीं। कोई फायदा नहीं।

(जैक कठघरे से चला जाता है, और सिर झुकाए हुए अपनी जगह पर बैठ जाता है।)

जोन्स — आप इनसे पूछिए कि इन्होंने क्यों उस औरत की...।

(लेकिन गंजा कांस्टेबिल उसकी आस्तीन पकड लेता है।)

गंजा कांस्टेबिल — चुप!

मैजिस्ट्रेट — (जोर देकर) मेरी बात सुनो। मुझे इससे कोई मतलब नहीं कि इन्होंने क्या लिया और कर नहीं लिया? तुमने पुलिस के काम में मदाखिलत क्यों की?

जोन्स — उनका काम यह नहीं था कि मेरी बीवी को गिरफ्तार करते। वह एक शरीफ़ औरत है और उसने कुछ नहीं किया है।

मैजिस्ट्रेट — नहीं, पुलिस का यही काम था। तुमने अफ़सर को घूँसा क्यों मारा?

जोन्स — ऐसी हालत में दूसरा आदमी भी मारता? अगर मेरा बस चलता तो फिर मारता।

मैजिस्ट्रेट — इस प्रकार बिगड़कर तुम अपने मुक़दमे को कुछ मदद नहीं पहुंचा रहे हो। अगर सभी तुम्हारी तरह करने लगें तो हमारा काम ही न चले।

जोन्स — (आगे झुककर, चिन्तित स्वर में) लेकिन उसकी क्या दशा होगी? इस बदनामी से उसे जो नुकसान हुआ, वह कौन भरेगा?

मिसेज़ जोन्स — हुजूर, बच्चों की फिक्र इन्हें सता रही है। क्योंकि मेरी नौकरी जाती रही। और इस बदनामी की वजह से मुझे दूसरा मकान लेना पड़ा।

मैजिस्ट्रेट — हाँ हाँ, मैं जानता हूँ। लेकिन इसने अगर ऐसा काम न किया होता, तो किसी का कुछ न होता।

जोन्स — (घूमकर जैक की तरफ़ देखते हुए) मेरा काम इतना बुरा नहीं है, कि जितना इनका। पूछता हूँ इनका क्या होगा?

गंजा कांस्टेबिल कहता है — चुप!

रोपर — मिस्टर बार्थिविक, यह अर्ज कर रहे हैं कि कैदी की गरीबी का खयाल करके वह डिबिए के मामले को आगे नहीं बढाना चाहते। शायद हुजूर, दंगे की कारवाई करेंगे।

जोन्स — मैं इसको दबने न दूँगा। मैं चाहता हूँ कि सब कुछ इंसाफ़ के साथ किया जाए — मैं अपना हक़ चाहता हूँ।

मैजिस्ट्रेट — (डेस्क को पीटकर) तुमको जो कुछ कहना था, वह कह चुके। अब चुप रहो।

(सन्नाटा हो जाता है। मैजिस्ट्रेट झुककर क्लार्क से बातें करता है।)

हाँ, मेरा खयाल है कि इस औरत को बरी कर दूँ।

(वह दया भाव से मिसेज़ जोन्स से कहता है जो अभी तक कठघरे पर हाथ धरे अनिश्चल खड़ी है।)

तुम्हारे लिए यह दुर्भाग्य की बात है कि इस आदमी ने ऐसा काम किया। इसका फल उसको नहीं भोगना पड़ा बल्कि तुमको भोगना पड़ा। तुम्हें यहाँ दो बार आना पड़ा, तुम्हारी नौकरी छूट गई।

(जोन्स की तरफ़ ताकता है।)

और यही हमेशा होता है। तुम अब जाओ। मुझे दुःख है कि तुमको यहाँ व्यर्थ बुलाना पडा।

मिसेज़ जोन्स — (धीमी आवाज में) हुजूर। अनेक धन्यवाद।

(वह कठघरे से चली जाती है और पीछे फिरकर जोन्स की तरफ़ देखती हुई अपने हाथों को मलती है और खड़ी हो जाती है।)

मैजिस्ट्रेट — हाँ हाँ, मेरे बस की बात नहीं। अब जाओ, तुम खुद समझदार हो।

(मिसेज़ जोन्स पीछे खड़ी होती है, मैजिस्ट्रेट अपने हाथ पर सिर झुका लेता है तेब सिर उठा के जोन्स से कहता है।)

मेरी बात सुनो। क्या तुम चाहते हो कि यह मामला यहीं तय कर दिया जाय या जूरी (पंचायत) के पास भेज दिया जाय।

जोन्स — (बड़बड़ाता हुआ) मैं जूरी नहीं चाहता।

मैजिस्ट्रेट — अच्छी बात है। मैं यहीं तय कर दूँगा। (जरा रुककर) तुमने डिबिया चुराना स्वीकार कर लिया है।

जोन्स — चुराना नहीं।

गंजा कांस्टेबिल — चुप!

मैजिस्ट्रेट — और पुलिस पर हमला करना।

जोन्स — भला, कोई भी आदमी ऐसी बेजा...।

मैजिस्ट्रेट — यहाँ तुम्हारा व्यवहार बहुत बुरा था। तुम यह सफाई देते हो कि जब तुमने डिबिया चुराई तब तुम नशे में थे। यह कोई सफाई नहीं है। अगर तुम शराब पीकर कानून को तोड़ोगे तो तुम्हें उसका फल भोगना पड़ेगा। और मैं तुमसे साफ-साफ़ कहता हूँ कि तुम जैसे आदमी जो नशे में चूर हो जाते हैं, और जलन या उसे जो कुछ तुम कहना चाहो, उसके फेर में पड़कर दूसरों की बुराई करते हैं, वे समाज के शत्रु हैं।

जैक — (अपनी जगह पर झुककर) दादा! यही तो आपने मुझसे भी कहा था।

बार्थिविक — चुप! (सब चुप हो जाते हैं।

(मैजिस्ट्रेट क्लार्क से राय लेता है। जोन्स आगे झुका हुआ प्रतीक्षा करता है।)

मैजिस्ट्रेट — यह तुम्हारा पहला कसूर है और मैं तुम्हें हल्की सजा देना चाहता हूँ।

(तीव्र स्वर में लेकिन बिना कोई भाव प्रकट किए हुए)

एक महीने की कड़ी कैद।

(वह झुककर क्लार्क से बातें करता है। गंजा कांस्टेबिल और एक दूसरा सिपाही मिलकर जोन्स को कठघरे से ले जाते हैं।)

जोन्स — (रुककर और पीछे हटकर) तुम इसे न्याय कहते हो? जैक का तो कुछ भी नहीं बिगड़ा? उसने शराब पी, उसने थैली ली — उसी ने थैली ली, लेकिन (ज़बान दबाकर) उसका रुपया उसे बचा ले गया। वाह रे इंसाफ़।

(जोन्स कोठरी में बन्द कर दिया जाता है और स्त्री-पुरुषों के मुँह से एक सूखी धीमी आह निकलती है।)

मैजिस्ट्रेट — (वह अपनी जगह से उठता है) अब हम नाश्ता करने जाते हैं।

(अदालत में हलचल मच जाती है, रोपर उठता है और समाचार के संवाददाता से बातें करता है। जैक सिर उठाकर अकड़ता हुआ बरामदे में चला जाता है। बार्थिविक भी उसके पीछे-पीछे जाता है।)

मिसेज़ जोन्स — (विनीत भाव से उसकी तरफ फिरकर) हुजूर!

(बार्थिविक असमंजस में पड़ जाता है। फिर हिम्मत हारकर वह लज्जित भराव से इंकार का संकेत करता है और जल्दी से कचहरी से चला जाता है। मिसेज़ जोन्स उसकी तरफ देखती खड़ी रह जाती है।)

(पर्दा गिरता है।)

प्रेमचंद

न्याय

जॉन गॉल्सवर्दी (John Galsworthy) के

नाटक Justice का अनुवाद

[हिन्दीकोश]

न्याय

पात्र-सूची

जेम्स हो — सालिसिटर (वकील)

वाल्टर हो — जेम्स हो का लडका

राबर्ट कोकसन — उनका मैनेजिंग क्लार्क (कार्याध्यक्ष)

विलियम फाल्डर — छोटा (जूनियर) क्लार्क

स्वीडिल — आफिस का नौकर

विस्टर — डिटेक्टिव (खुफिया पुलिस)

कावली — एक कैशियर (खजांची)

मिस्टर जस्टिस फ्लाइड — जज विचारक

हैरोल्ड क्लीवर — पुराना एडवोकेट (सरकारी वकील)

हेक्टर फ्रोम --- एक युवक वकील

कैप्टेन डान्सन मी. सी — एक जेल के अध्यक्ष

रेवरेन्ड हिउ मिलर — एक जेल के पादड़ी

एडवर्ड क्लेमेन्ट — एक जेल के डाक्टर

वुडर — प्रधान वार्डर

मोने, क्लिप्टन, ओक्लिअरी — कैदी

रुथ हनीविल — एक औरत

बैरिस्टर गण, सालिसिटर गण, दर्शक गण, चोबदार, रिपोर्ट गण, जूरीमैन, वार्डर गण और कैदी गण।

समय — वर्त्तमान काल।

अंक 1 – जेम्स एण्ड वाल्टर हो का आफिस, जुलाई।

अंक 2 – अदालत, दोपहर, अक्टूबर।

अंक 3 – जेल, दिसम्बर।

पहला दृश्य — जेल अध्यक्ष का आफिस।

दूसरा दृश्य — जाने आने का रास्ता।

तीसरा दृश्य — जेल की कोठरी।

अंक 4 – जेम्स एण्ड वाल्टर हो का आफिस,

सबेरा, मार्च दो वर्ष बाद की घटना।

अंक 1

पहला दृश्य

[जुलाई मास का सबेरा, जेम्स और वाल्टर हो के मैनेजिंग क्लार्क का कमरा है। कमरा पुराने ढंग का, महोगनी की पुरानी कुरसी और मेजों से सजा हुआ है, जिन पर चमडा लगा हुआ है। टीन के बक्स और इलाकों के नक्शे क़तारों में सजे हैं। कमरे में तीन दरवाजे हैं, जिनमें दो दरवाजे बीच दीवार में पास-पास हैं। इन दरवाजों में एक बाहर के दफ्तर में जाने का है.।.लड़की और कांच के परदे की दीवार से मैनेजर का कमरा उस बाहरी कमरे से अलग कर दिया गया है। बाहरी कमरे में जाने का दरवाजा खोलने पर एक चौड़ा दरवाजा और दिखाई देता है जहाँ से नीचे उतरने की सीढ़ियाँ हैं। बीच के दो दरवाजों में दूसरा दरवाजा छोटे क्लार्क के कमरे में जाता है। तीसरा दरवाजा मालिकों के कमरे में जाने का है।

मैनेजिंग क्लार्क कोकसन बैठे हुए मेज पर रखी हुई पास बुक के अंकों को जोइ रहे हैं और अपने ही आप अंकों को दुहराते भी जाते हैं। उनकी उम्र साठ वर्ष की है। चश्मा लगाये हुए हैं। क़द के ठिगने हैं, सिर गंजा है। ठुड्डी कुछ आगे को उठी हुई है, जिससे नीयत की सफाई झलक रही है। एक पुराना काला कोट और धारीदार' पतलून पहने हुए हैं]

कोकसन — और पाँच बारह, और तीन-पन्द्रह, उन्नीस, तेईस बत्तीस, इकतालीस हासिल आए चार।

(पृष्ठ पर एक निशान लगाकर उसी प्रकार उच्चारण करता जाता है।)

पाँच, सात, सत्रह, बारह, चौबीस और नौ तैंतीस, तेरह हासिल आया एक।

(फिर निशान लगाता है। बाहर के कमरे का दरवाजा खुलता है, और ऑफिस का अर्दली स्वीडिल दरवाजे को बन्द करता हुआ भीतर आता है। उसकी अवस्था 16 साल की है। उसके चेहरा का रंग पीला और बाल खड़े हैं। झुँझलाकर ऐसी दृष्टि से देखता हुआ मानो कह रहा हो कि तुम क्या करने आए हो?)

और हासिल आया एक।

स्वीडिल — फाल्डर को कोई पूछ रहा है।

कोकसन — पाँच, नौ, सोलह, इक्कीस, उन्तीस और हासिल आए दो। उसे मारिस के मकान पर भेज दो। नाम क्या है?

स्वीडिल — हनीविल!

कोकसन — चाहता क्या है?

स्वीडिल — औरत है।

कोकसन — शरीफ़ औरत है?

स्वीडिल — नहीं, मामूली है।

कोकसन — उसे भीतर बुला लो। यह पास-बुक मिस्टर जेम्स के पास ले जाओ।

(पास-बुक बन्द करता है।)

स्वीडिल — (दरवाजा खोलकर) जरा आप अन्दर चली आयें।

(रुथ हनीविल भीतर आती है। उसकी अवस्था छब्बीस वर्ष की है। कुद लम्बा, आँखें और बाल काले हैं। चेहरा सुगठित, सुडौल और हाथी दाँत-सा सफेद है। उसके कपड़े सादे हैं। वह बिलकुल चुपचाप खड़ी है। उसके अन्दाज और रंग-ढंग से मालूम होता है कि किसी अच्छे घर की है।)

(स्वीडिल पास-बुक लेकर मालिकों के कमरे की ओर चला जाता है।)

कोकसन — (घूमकर रुथ की ओर देखते हुए) वह अभी बाहर गया है।

(सन्देह के साथ) आप अपना मतलब कहिए।

रुथ — (बेधड़क होकर) जी हाँ, कुछ अपना काम है।

कोकसन — यहाँ निजी काम से कोई नहीं आने पाता। आप चाहें तो उसे कुछ लिखकर रख जायँ।

रुथ — नहीं, मैं उनसे मिलना नहीं चाहती हूँ।

(वह अपनी काली आँखों को सिकोड़कर कटाक्ष से उनकी ओर देखती है।)

कोकसन — (फूलकर) यह बिलकुल नियम के विरुद्ध है। मान लीजिए मेरा ही कोई मित्र यहाँ मुझसे मिलने आए। यह तो ठीक नहीं है।

रुथ — जी नहीं, ठीक है?

कोकसन — (कुछ चकराकर) हाँ कहता तो हूँ, और तुम तो यहाँ एक छोटे क्लार्क से मिलना चाहती हो?

रुथ — जी हाँ, मुझे उससे बहुत ही जरूरी काम है।

कोकसन — (उसकी तरफ़ पूरी तरह मुँह फेरकर, कुछ बुरा मनाकर) लेकिन यह वकील का दफ्तर है। तुम उसके घर पर जाकर मिलो।

रुथ — वहाँ तो वह था ही नहीं।

कोकसन — (चिन्तित होकर)'क्या तुम्हारा उससे कुछ रिश्ता है?

रुथ — जी नहीं।

कौक्सान — (दुविधे में पड़कर) मेरी समझ में नहीं आता क्या कहूँ? यह कोई दफ्तर का काम तो है नहीं।

रुथ — लेकिन मैं करूँ तो क्या करूँ?

कोकसन — वाह! यह मैं क्या जानूँ?

(स्वीडिल लौट आता है, और इस कमरे से कोकसन की ओर कुतूहल से घूरता हुआ कमरे में चला जाता है। जाते समय दरवाजे को सावधानी के साथ दो-एक इंच खुला छोड़ जाता है।)

कोकसन — (उसकी दृष्टि से होशियार होकर) ऐसा नहीं हो सकता, आप जानती हैं, ऐसा किसी तरह नहीं हो सकता! मान लो एक मालिक ही आ जायँ तो?

(बाहरी कमरे के बाहरी दरवाजे से रह-रहकर कुंडी का खटकना और हँसना सुनाई देता है।)

स्वीडिल — (दरवाजे के भीतर सिर डालकर) यहाँ बाहर कुछ बच्चे खड़े हैं।

रुथ — जी, वे मेरे बच्चे हैं।

स्वीडिल — मैं उन्हें देखता रहूँ?

रुथ — यह तो बिल्कुल छोटे बच्चे हैं। (कोकसन की ओर एक कदम बढ़ाती है ॥)

कोकसन — तुम्हें दफ्तर के घण्टों में उसका समय नष्ट न करना चाहिए। यों ही हमारे यहाँ एक क्लार्क की कमी है।

रुथ — मरने जीने का सवाल है जी।

कोकसन — (फिर कान खड़े करके) मरने जीने का?

स्वीडिल — यह फाल्डर साहब आ गए।

(फाल्डर बाहर के कमरे से भीतर आता है। उसका चेहरा पीला है, देखने में अच्छा है। उसकी आँखें तेज और सहमी हुई हैं। वह क्लार्क के कमरे की ओर बढ़ता है और वहाँ हिचकता हुआ खड़ा हो जाता है।)

कोकसन — खैर, मैं तुम्हें एक मिनट दे सकता हूँ। लेकिन यह नियम विरुद्ध है।

(वह कागजों का एक पुलिन्दा उठाकर मालिकों के कमरे में घुस जाता है।)

रुथ — (धीमी, घबराई हुई आवाज़ से) वह फिर पीने लगा, बिल। कल रात को उसने मेरा गला काटने की कोशिश की थी। उसके जागने के पहिले ही मैं बच्चों को लेकर भाग आई हूँ। मैं तुम्हारे घर गई थी।

फाल्डर — मैंने डेरा बदल दिया है।

रुथ — आज रात के लिए सब तैयारी हो गई है न?

फाल्डर — मैं टिकट ले आया हूँ। टिकट घर के पास मुझसे पौने बारह बजे मिलना। ईश्वर के लिए भूल मत जाना कि हम स्त्री-पुरुष हैं।

(उसकी ओर स्थिर और निराश नेत्रों से देखते हुए।)

रुथ — तुम जाने से डर तो नहीं रहे हो?

फाल्डर — क्या अपना और बच्चों का सामान तुमने ठीक कर लिया है?

रुथ — नहीं, सब छोड़ आई हूँ! मुझे हनीविल के जग जाने का भय था। बस एक बेग लेकर चली आई हूँ। मैं अब घर के पास तक नहीं जा सकती।

फाल्डर — (हक्का-बक्का होकर) वह सब रुपया यों ही बरबाद गया! कम-से-कम कितने रुपये हों तो तुम्हारा काम चल जाय?

रुथ — छः पाउंड। मेरे ख्याल से इतने में काम चल जायगा।

फाल्डर — देखो, हमारे जाने की खबर किसी को न हो। (मानो कुछ अपने ही आप से) वहाँ जाकर मैं यह सब भुला देना चाहता हूँ।

रुथ — अगर तुम्हें खेद हो रहा हो, तो रहने दो। मुझे उसके हाथ से मर जाना मंजूर है। परन्तु तुम्हारी मरजी के खिलाफ़ तुम्हें न ले जाऊँगी।

फाल्डर — (एक अजीब हँसी हँसकर) हमारा जाना तो रुक नहीं सकता। तुम्हें परवा नहीं। मैं तो तुम्हें चाहता हूँ।

रुथ — अब भी विचार कर लो, क्योंकि अभी कुछ नहीं बिगड़ा है।

कोकसन — जो कुछ होना था हो गया। यह लो सात पाउंड। याद रखना टिकट घर के पास — पौने बारह बजे। रुथ, यदि मुझे तुमसे प्रेम न होता।

फाल्डर — मुझे प्यार करो।

(दोनों आवेग के साथ चिपट जाते हैं, ठीक इसी समय कोकसन के आ जाने से वे झट अलग हो जाते हैं। रुथ बाहर के कमरे से होकर चली जाती है। कोकसन गंभीर भाव से सब समझते हुए भी दृढ़ता से धीरे-धीरे जाकर अपनी जगह पर बैठते हैं।)

कोकसन — यह बात ठीक नहीं है, फाल्डर।

फाल्डर — फिर ऐसा कभी नहीं होगा।

कोकसन — इस जगह यह बिल्कुल मुनासिब नहीं।

फाल्डर — हाँ, ठीक है।

कोकसन — तुम खुद समझ सकते हो, मैंने केवल इसीलिए आने दिया कि वह कुछ दुःखी थी, और उसके साथ बच्चे थे। (मेज़ की दराज़ से एक पुस्तक निकालकर देते हुए) लो इसे पढ़ना। 'घर की पवित्रता' बडे अच्छे ढंग से लिखी गयी है।

फाल्डर — (एक अजीब मुँह बनाकर उसे लेते हुए) धन्यवाद!

कोकसन — और सुनो फाल्डर, वाल्टर साहब आते ही होंगे। क्या तुमने यह सूची पूरी कर ली जो डेविस जाने से पहिले कर रहा था?

फाल्डर — जी, मैं कल उसे बिलकुल पूरी कर दूँगा। निश्चय।

कोकसन — डेविड को गये एक हफ्ता हो गया। देखो फाल्डर, ऐसे काम नहीं चलेगा। तुम निजके झगड़ो में पड़कर दफ्तर के कामों में लापरवाही कर रहे ही। मैं उस औरत के आने की बात तो किसी से न कहूँगा। लेकिन...।

फाल्डर — (अपने कमरे में जाते हुए) बड़ी दया है।

(कोकसन उस दरवाजे की ओर घूमता है, जिसमें से होकर फाल्डर गया है। फिर एक बार सिर हिलाकर कुछ लिखने के लिए तैयार होता है। उसी समय बाहर कमरे से वाल्टर हो आता

है। उसकी उम्र पैंतीस वर्ष की होगी। सूरत भलेमानुसों की सी है। आवाज मीठी और नम्र है।)

वाल्टर — गुडमार्निंग, कोकसन!

कोकसन — गुडमार्निंग, मिस्टर वाल्टर!

वाल्टर — अब्बा जान?

कोकसन — (बड़प्पन जताते हुए, मानो ऐसे युवक से बातें कर रहा हो, जो अपने काम में जी न लगाता हो) मिस्टर जेम्स तो ठीक ग्यारह बजे यहाँ आ गए हैं।

वाल्टर — मैं तसवीर देखने गिल्डहाल चला गया था।

कोकसन — (इस प्रकार से उसकी ओर देखते हुए मानो उसने ठीक इसी उत्तर की आशा की हो।) देख आए आप? हाँ, यह बोल्टर का पट्टा है। क्यों इसे वकील के पास भेज दूँ?

वाल्टर — अब्बाजान क्या कहते हैं?

कोकसन — उनसे पूछना व्यर्थ है।

वाल्टर — मगर हमें बहुत होशियार रहना चाहिए।

कोकसन — बिलकुल जरा-सी तो बात है। मुश्किल से मिहनताने भर का भी न होगा। मैं समझता था आप खुद ही इसे कर लेंगे।

वाल्टर — नहीं, आप भेज ही दें। मैं जिम्मेदारी अपने सिर नहीं लेना चाहता।

कोकसन — (ऐसे दयाभाव से जो शब्दों में नहीं प्रकट किया जा सकता) जैसी आपकी इच्छा; और यह रास्ते के हक़वाला जो मामला है, उसकी सब लिखा-पट्टी हो गयी है।

वाल्टर — मैं जानता हूँ; लेकिन साफ-साफ़ तो उनकी मंशा यही मालूम होती है कि शिरकत की ज़मीन को अलग कर दिया जाय।

कोकसन — हमें इससे क्या मतलब, हम कानून से बाहर नहीं हैं।

वाल्टर — मैं इसे पसंद नहीं करता।

कोकसन — (सद्भाव से मुसकराकर) हम कानून के खिलाफ़ नहीं जा सकते। आपके पिता जी भी ऐसे कामों में समय नष्ट करना पसंद न करेंगे।

(ठीक इसी समय जेम्स हो मालिकों के कमरे में से होकर भीतर आते हैं। वह ठिगने हैं। सफेद गलमुच्छे हैं। सिर के बाल घने और सफेद हैं। आँखों से होशियारी टपकती है। सोने का कमानीदार चश्मा नाक पर लगा है।)

जेम्स — गुडमार्निंग, वाल्टर!

वाल्टर — आपका मिजाज कैसा है, अब्बा जान?

कोकसन — (अपने हाथ के कागजों को नाक के नीचे से इस तरह देखता हुआ, मानो उनके आकार को तुच्छ समझ रहा हो) मैं बोल्टर के पट्टे को फाल्डर को दिये आता हूँ कि इस बारे में हिदायत तैयार कर दे।

(फाल्डर के कमरे में जाता है।)

वाल्टर — उस रास्ते के हक़वाले मामले में क्या होगा?

जेम्स — हाँ, हमको वहाँ जाना पड़ेगा। मुझे याद आता है तुमने कहा था न, कि फर्म का रोकड चार सौ के कुछ ऊपर है?

वाल्टर — हाँ, है तो।

जेम्स — (पास बुक बेटे की ओर बढ़ाकर) तीन-पाँच-एक — और हाल का तो कोई चेक है ही नहीं। जरा वह चेक-बुक निकाल तो लाओ।

(वाल्टर एक अलमारी की दराज खोलकर चेकबुक लाकर देता है।)

जेम्स — मुसन्नों में पाउंड पर निशान लगाते जाओ। पाँच, चौवन, सात, पाँच, उट्ठाइस, बीस, नब्बे, ग्यारह, बावन, इकहत्तर मिलते हैं न?

वाल्टर — (सिर हिलाकर) कुछ समझ ही में नहीं आता, मैंने तो अच्छी तरह देख लिया था, चार सौ से ऊपर थे।

जेम्स — लाओ मुझे तो दो। (चेक-बुक लेकर मुसन्नों को अच्छी तरह जाँचता है।) देखो तो यह नब्बे कैसा है?

वाल्टर — इसे किसने मँगाया?

जेम्स — तुमने।

वाल्टर — (चेक-बुक लेकर) जुलाई 7 को लिखा गया है? हाँ, उसी दिन मैं ट्रेन्टन का इलाका देखने गया था। शुक्रवार को मैं गया था और मंगलवार को वापस आया था। आपको तो याद होगा। लेकिन देखिए, अब्बा जान, मैंने नौ पाउंड का चेक भुनाया था। पाँच गिन्नी स्मिथर को दिया। बाकी सब मेरे खर्च में आया। हाँ, केवल आधा क्राउन बचा था।

जेम्स — (गम्भीर भाव से) उसे नब्बे पाउंडवाले चेक को देखना चाहिए।

(पासबुक के पाकिट में से चेक को ढूँढ निकालता है।)

ठीक तो मालूम होता है। यहाँ नौ तो कहीं नहीं है। कुछ गड़बड़ है। उस नौ पाउंड के चेक को किसने भुनाया था?

वाल्टर — (परेशानी और दुःख के साथ) लाइए देखूँ, मैं मिसेज़ रेडी की वसीयत लिख रहा था। उतना ही समय मिला था। याद आ गया, हाँ, मैंने कोकसन को दिया था।

जेम्स — इन अक्षरों को तो देखो। क्या तुमने लिखा था?

वाल्टर — (विचारकर) अक्षर पीछे की ओर कुछ घूम जाता है। लेकिन यह तो नहीं घूमता।

जेम्स — (कोकसन उसी समय फाल्डर के कमरे से निकलकर आता है।) उससे पूछना चाहिए। कोकसन जरा इधर आकर सोचो तो सही। क्या तुम्हें याद है, गए शुक्रवार को मिस्टर वाल्टर ने तुम्हें एक चेक भुनाने के लिए दिया था? यह वही दिन है जिस दिन वह ट्रेन्टन गए थे।

कोकसन — हाँ, नौ पाउंड का चेक था।

जेम्स — जरा देखो तो इसे!

(चेक उसके हाथ में देता है।)

कोकसन — नहीं! नौ पाउंड था, मेरा खाना उसी समय आता था। और मैं गर्म-गर्म खाना पसंद करता हूँ इसलिए चेक को मैंने डेविस को दे दिया कि जल्दी बैंक चला जाय। वह गया और सब नोट ही नोट लाया था। आपको तो याद होगा, मिस्टर वाल्टर! गाड़ी के भाड़े के लिए आपको कुछ रेजगारी की दरकार थी! (कुछ अवज्ञा भरी दया की दृष्टि से) इधर लाइए जरा मैं तो देखूँ। आप शायद गलत चेक देख रहे हैं।

(चेक बुक और पास बुक वाल्टर के हाथ से ले लेता है।)

वाल्टर — नहीं, ऐसा नहीं है।

कोकसन — (जाँचकर) बड़े अचम्भे की बात है।

जेम्स — तुमने डेविस को दिया था, और इधर डेविस सोमवार को आस्ट्रेलिया के लिए रवाना हो गया। दाल में कुछ काला है, कोकसन!

कोकसन — (परेशानी और घबराहट के साथ) यह तो पक्का जाल है। नहीं-नहीं, ज़रूर कुछ गलती हो रही है।

जेम्स — मेरा भी ऐसा ही खयाल है।

कोकसन — मुझे यहाँ तीस साल हो गए, पर ऐसा कभी इस दफ्तर में नहीं हुआ।

जेम्स — (चेक और मुसन्ने को देखते हुए) किसी बड़े चालाक आदमी का काम है। यह तुम्हारे लिए चेतावनी है वाल्टर, कि अंकों के बाद जगह मत छोड़ा करो।

वाल्टर — (कुछ चिढ़कर) मैं जानता हूँ, लेकिन उस दिन में बड़ी जल्दी में था।

कोकसन — (अकस्मात्) मेरे तो होश ठिकाने नहीं हैं।

जेम्स — मुसन्ने में भी अंक बदले हुए हैं। बड़ी उस्तादी से माल उड़ाया है। डेविस कौन से जहाज से गया है?

कोकसन — 'सिटी आफ रंगून' से।

जेम्स — हमें तार देकर उसे नेपल्स में गिरफ्तार करा देना चाहिए। अभी वहाँ पहुंचा न होगा।

कोकसन — उसकी जवान बीवी का क्या होगा। उस डेविस युवक को मैं बहुत चाहता हूँ। छी! छी! इस दफ्तर में ऐसी...।

वाल्टर — मैं बैंक जाकर खजांची से दर्याफ्त करूँ?

जेम्स — (गंभीर भाव से) उसे यहाँ ले आओ और कोतवाली को भी टेलीफोन करो।

वाल्टर — सचमुच?

(बाहर के कमरे से होकर चला जाता है, जेम्स कमरे में टहलने लगता है। फिर ठहरकर कोकसन की ओर देखता है जो बेचैनी से पाजामे के ऊपर से घुटनों को रगड़ रहा है।)

जेम्स — देखो कोकसन, चाल-चलन बड़ी चीज है। है न?

कोकसन — (चश्मे के ऊपर से उसकी ओर देखकर) मैं आपका ठीक मतलब समझ नहीं सका।

जेम्स — तुम्हारा बयान उसे बिलकुल न जँचेगा, जो तुम्हें नहीं जानता है।

कोकसन — आँ-हाँ (वह हँस पड़ता है और फिर यकायक गंभीर होकर कहता है।) मैं उस युवक के लिए बहुत दुःखित हूँ। मिस्टर जेम्स, मुझे अपने लड़के के लिये भी इससे अधिक दुःख न होता।

जेम्स — बुरी बात है।

कोकसन — सब काम ठीक चलता हो वहाँ यकायक ऐसी वारदात हो जाय! आफ़त है और क्या। आज खाना भी न रुचेगा।

जेम्स — ऐं — यहाँ तक नौबत पहुँच गई?

कोकसन — चिंता में डालने वाली बात है। (धीरे से) वह ज़रूर किसी लालच में पड़ गया होगा।

जेम्स — इतनी जल्दी नहीं, कोकसन। अभी उस पर दोष भी तो नहीं साबित हुआ है।

कोकसन — अगर मुझे एक महीने की तनख्वाह न मिलती तो मुझे अफ़सोस न होता, मगर यह तो — (सोचता है)

जेम्स — मैं ख्याल करता हूँ वह जल्दी पहुँचेगा।

कोकसन — (खजांची के लिए सब सामान ठीक कर) पचास गज भी तो नहीं है यहाँ से; अभी एक मिनट में आ पहुँचता है।

जेम्स — इस दफ्तर में बेईमानी! यह सोचकर मेरे दिल को चोट लगती है।

(वह मालिकों के कमरे की ओर जाता है।)

स्वीडिल — (आहिस्ते से आकर धीरे-धीरे कोकसन से) वह फिर आ पहुँची। फाल्डर से शायद कुछ कहना भूल गई है।

कोकसन — (यकायक चौंककर) हैं? नहीं असंभव है! लौटा दो उसे।

जेम्स — मामला क्या है?

कोकसन — कुछ नहीं मिस्टर जेम्स, एक निजी मामला है। चलो, मैं खुद चलता हूँ।

(जेम्स के मालिक के कमरे में जाते ही, वह बाहर के दफ्तर में आता है।)

देखो अब तुम तंग मत करो, अभी हम किसी से मिल नहीं सकते।

रुथ — क्या एक मिनट के लिए भी नहीं?

कोकसन — नहीं, हरगिज नहीं। अगर तुम्हें कुछ बहुत जर री काम हो, तो बाहर ठहरो। अभी थोड़ी देर बाद वह खाना खाने जायगा।

रुथ — जी! बहुत अच्छा!

(वाल्टर खजांची के साथ जाता है, और रुथ के बगल से होकर निकलता है। रुथ भी उसी समय बाहर के कमरे से चली जाती है।)

कोकसन — (खजांची से, जो देखने में, घुडसवार पलटन का एक आलसी सिपाही सा मालूम होता था।) गुडमार्निंग (वाल्टर से) आपके अब्बाजान कहाँ हैं?

(वाल्टर मालिकों के कमरे की ओर चला जाता है।)

कोकसन — मिस्टर कौली, बात तो छोटी है पर है बड़ी भदी। मुझे शर्म आती है कि इसके लिए आपको कष्ट देना पड़ा।

कौली — मुझे वह चेक खूब याद है। उसमें कोई ख़राबी नहीं थी।

कोकसन — खैर, आप बैठिए तो। मैं ऐसा आदमी तो नहीं हूँ कि जरा-सी बात में घबड़ा जाऊँ, लेकिन इस तरह का मामला ऐसी जगह में हो जाय, यह तो ठीक नहीं। मैं तो यह चाहता हूँ कि लोग सच्चे दिल से खुशी-खुशी काम करें।

कौली — ठीक है।

कोकसन — (बटन पकड़कर, खींचते हुए और मालिकों के कमरे की ओर देखते हुए।) मान लिया कि वह अभी बिल्कुल नासमझ है, पर मैंने उससे कई बार कहा कि अंकों के आगे जगह न छोड़ा करो, पर वह सुनता ही नहीं।

कौली — मुझे उस आदमी का सूरत खूब याद है-बिल्कुल जवान था।

कोकसन — पर बात यों है कि शायद उस आदमी को हम आपके आगे पेश न कर सकें।

(जेम्स और वाल्टर अपने कमरे में से बाहर आते हैं।)

जेम्स — गुडमार्निंग, मिस्टर कौली! आपने मुझे और मेरे लडडके को तो देख ही लिया। मिस्टर कोकसन और मेरे आफिस के नौकर स्वीडिल को भी आप देख चुके हैं। मैं समझता हूँ, हममें से कोई न था। (ख़जांची मुस्कराकर सिर हिलाता है)

जेम्स — आप कृपाकर बैठिए तो यहाँ, मिस्टर कौली! कोकसन तुम जरा तब तक इनसे बातें तो करो। (फाल्डर के कमरे की ओर जाते हैं।)

कोकसन — जरा एक बात सुनते जाइए, मिस्टर जेम्स।

जेम्स — कहो, कहो।

कोकसन — उस बेचारे को क्यों परेशान करते हैं? वह गरीब तो यों ही बात-बात में घबड़ा जाता है।

जेम्स — इस मामले को बिलकुल साफ़ कर लेना चाहिए कोकसन। फाल्डर की ही नहीं तुम्हारी भी नेकनामी है इसी में।

कोकसन — (जरा अकड़कर) खैर, मेरी तो आप चिन्ता न करें। वह आज सवेरे एक बार हैरान हो चुका है। मैं नहीं चाहता कि उसे दोबारा उलझन में डाला जाय।

जेम्स — यह तो जाब्ते की बात है, लेकिन ऐसे विषय में भलमंसी की क्या बात है। बहुत संगीन मामला है। जब तक कौली

साहब को बातों में लगाइए। (फाल्डर के कमरे का दरवाजा खोलता है।) बोल्टर के पट्टे की मिसिल तो लाओ फाल्डर।

कोकसन — (झटके के साथ) आप कुत्ते तो नहीं पालते?

(खजांची दरवाजे की ओर एकटक देखता रहता है, और कुछ जवाब नहीं देता।)

कोकसन — आपके पास कोई बुलड़ाग का बच्चा हो, तो एक मुझे दे दीजिए।

(ख़जांची के चेहरे का रंग देखकर उसका चेहरा उतर जाता है, और वह फाल्डर की ओर मुड़कर देखता है। फाल्डर कौली के चेहरे की ओर इस तरह टकटकी लगाए द्वार पर खड़ा है, जैसे खरगोश साँप की ओर आँख जमा लेता है।)

फाल्डर — (कागजों को लाकर) जी, ये हैं सब।

जेम्स — (उनको लेकर) धन्यवाद!

फाल्डर — जी, तो मेरे लिये और कोई काम नहीं है?

जेम्स — नहीं। (फाल्डर घूमकर अपने कमरे में चला जाता है, जैसे ही वह दरवाजा बन्द करता है, जेम्स खजांची की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखता है। ख़जांची सिर हिलाता है)

जेम्स — यही था? हमें तो यह संदेह न था।

कौली — बिलकुल ठीक, यह भी मुझे पहिचान गया। उस कमरे से भाग तो नहीं सकता?

कोकसन — (दुःखित होकर) एक ही खिड़की है, नीचे पूरा एक मंजिल और तहखाना।

(फाल्डर के कमरे का दरवाजा खुलता है, फाल्डर हाथ में टोपी लिये, बाहरी कमरे के दरवाजे की तरफ़ जाता है।)

जेम्स — (धीरे से) कहाँ जाते हो, फाल्डर?

फाल्डर — जी, खाना खाने।

जेम्स — थोड़ी देर और ठहर सकते हो? मुझे तुमसे इस पट्टे के बारे में कुछ कहना है। समझे!

फाल्डर — जी, अच्छा! (अपने कमरे में वापस जाता है।)

कौली — अगर जरूरत पड़े, तो मैं क़सम खाकर कह सकता हूँ कि इसी आदमी ने चेक भुनाया था। उस दिन सवेरे वही आखिरी चेक था जो खाना खाने के पहिले मैंने लिया था। देखिए मेरे पास उन नोटों के नम्बर भी मौजूद हैं।

(एक कागज का पुरजा मेज पर रखता है फिर अपनी टोपी घुमाते हुए।)

अच्छा, गुडमार्निंग!

जेम्स — गुडमार्निंग, मिस्टर कौली!

कौली — गुडमार्निंग, मिस्टर कोकसन!

कोकसन — (कुछ भौंचक्के से होकर) गुडमार्निंग!

(खजांची बाहर के आफिस घर से होकर जाता है, अपनी कुर्सी पर इस भांति बैठ जाता है, मानो इस परेशानी में उसे सिर्फ कुर्सी ही का सहारा है।)

वाल्टर — आप अब क्या करना चाहते हैं?

जेम्स — उसे यहाँ बुलाओ, चेक और मुसन्ना मुझे दे दो।

कोकसन — आखिर यह बात क्या है; मैंने तो समझा था, यह डेविस...।

जेम्स — अभी सब मालूम हुआ जाता है।

वाल्टर — ठहरिए, क्या आपने अच्छी तरह सोच लिया है?

जेम्स — बुलाओ उसको अन्दर।

कोकसन — (मुश्किल से उठकर फाल्डर के कमरे का दरवाजा खोलकर भारी स्वर से) जरा यहाँ तो आना।

(फाल्डर आता है।)

फाल्डर — (शान्त भाव से) जी, हाजिर हूँ!

जेम्स — (अचानक उसकी) ओर मुड़कर चेक को उसकी ओर बढाते हुए)

तुम इस चेक को पहिचानते हो, फाल्डर?

फाल्डर — जी नहीं!

जेम्स — अच्छी तरह देखो तो इसे, तुमने पिछले शुक्रवार को इसे भुनाया था।

फाल्डर — हाँ, जी हाँ! यह वही है, जिसे डेविस ने मुझे दिया था।

जेम्स — मुझे मालूम है। और तुमने डेविस को रुपये दिए थे?

फाल्डर — जी हाँ!

जेम्स — जब डेविस ने तुम को यह चेक दिया था तब क्या यह ठीक ऐसा ही था?

फाल्डर — जी हाँ, मेरा तो यही ख़याल है।

जेम्स — क्या तुम्हें मालूम है कि मिस्टर वाल्टर ने केवल 9 पाउंड का चेक लिखा था?

फाल्डर — जी नहीं, नब्बे का।

जेम्स — नहीं फाल्डर, सिर्फ नौ का।

फाल्डर — (घबड़ाकर) मैंने समझा नहीं।

जेम्स — मतलब यह कि इस चेक में फेरफार किया गया है। अब सवाल यह है कि तुमने किया या डेविस ने!

फाल्डर — मैंने-मैंने?

जेम्स — समझकर जवाब दो, सोच लो!

फाल्डर — (समझकर) जी नहीं, मुझसे यह काम नहीं हुआ।

जेम्स — मिस्टर वाल्टर ने कोकसन को चेक दिया था। उसी समय कोकसन का खाना आया था। उस समय जरूर एक बजा होगा।

कोकसन — हाँ, इसीलिए तो मैं जा नहीं सका।

जेम्स — ठीक है, इसीलिए कोकसन ने डेविस को चेक दे दिया। तुमने सवा बजे चेक भुनाया था। यह ऐसे पता चलता है कि खजांची ने खाना न खाने के पहिले इसी चेक के रुपये दिए थे।

फाल्डर — जी हाँ, डेविस ने मुझे इसलिए चेक दिया था कि उसके कुछ मित्र उसे एक दावत दे रहे थे।

जेम्स — (सिटपिटाकर) तो तुम डेविस पर दोष लगाते हो?

फाल्डर — यह मैं कैसे कह सकता हूँ? बड़े अचरज की बात है!

(वाल्टर अपने बाप के बिलकुल पास जाकर कान में कुछ कहता है।)

जेम्स — फिर शनिवार के बाद तो डेविस यहाँ नहीं या न?

कोकसन — (किसी प्रकार इस युवक को सहारा देने की इच्छा से और इस बात के टलने की झलक की तनिक आशा पाकर) नहीं, वह सोमवार को चला गया।

जेम्स — वह यहाँ आया तो नहीं था? क्यों फाल्डर?

फाल्डर — (बहुत धीमे स्वर से) जी नहीं।

जेम्स — बहुत अच्छा, तब तुम इस बात का क्या जवाब देते हो कि मुसन्ना में नौ के बाद सिफ़र मंगल के दिन या उसके बाद जोडा गया।

कोकसन — (आश्चर्य से) यह क्या?

(फाल्डर का सिर चकराने लगता है, बड़ी कठिनाई के साथ वह अपने को संभालता है। मगर उसकी हालत बुरी हो जाती है।)

जेम्स — (बहुत गंभीर होकर) कोकसन, बात पकड गई न! चेकबुक मिस्टर वाल्टर की जेब में मंगलवार तक था। क्योंकि उसी दिन सवेरे ट्रेन्टन से लौटे हैं। क्या अब भी तुम इनकार करते हो फाल्डर तुमने चेक और मुसन्ने को नहीं बदला?

फाल्डर — जी नहीं, जी नहीं, हाँ साहब। जी हाँ, मैंने ही यह काम किया है।

कोकसन — (दुःख के आवेश में) छी! छी! ऐसा काम किया तुमने?

फाल्डर — साहब, मुझे रुपये की बड़ी सख्त जरूरत थी। मुझे ध्यान ही न रहा कि मैं क्या कर रहा हूँ।

कोकसन — तुम्हारे दिमाग में यह बात आई कैसे?

फाल्डर — (उसकी बातों का मतलब समझकर) मैं कुछ नहीं कह सकता, साहब, एक मिनट के लिए मैं पागल हो गया था।

जेम्स — तुम्हारा मिनट बहुत लम्बा होता है, फाल्डर। (मुसन्ने को ठोंकते हुए) कम से कम चार दिन का।

फाल्डर — हुजूर मैं कसम खाता हूँ, मुझे बिलकुल ख्याल न था कि मैं क्या कर रहा हूँ। जब कर चुका तब होश आया। मेरी इतनी हिम्मत न हुई कि कह दूँ। भूल जाइए, साहब, मेरी इस दुर्बलता को, मैं सब रुपये वापस कर दूँगा, मैं वादा करता हूँ।

जेम्स — अपने कमरे में जाओ।

(फाल्डर करुणाजनक दृष्टि से देखकर अपने कमरे में चला जाता है। सन्नाटा छा जाता है।)

इससे बुरा मामला और क्या हो सकता है?

कोकसन — ऐसी सीनाजोरी और यहाँ!

वाल्टर — अब क्या करना चाहिए?

जेम्स — और कुछ नहीं, मुक़दमा चलाइए।

वाल्टर — मगर यह इसका पहिला कुसूर है।

जेम्स — (सिर हिलाकर) मुझे इसमें बहुत सन्देह है। कितनी सफाई के साथ हाथ मारा है!

कोकसन — मैं तो समझता हूँ इसे किसी ने मोह में डाल दिया।

जेम्स — जीवन भारी मोह के सिया और है क्या?

कोकसन — हाँ, यह तो ठीक है लेकिन मैं काया और कामिनी की बात कर रहा हूँ, मिस्टर जेम्स! उससे मिलने के लिए आज ही एक औरत आई थी।

वाल्टर — वही औरत जो आते वक्त हमारे सामने से निकली थी। क्या वह इसकी बीवी है?

कोकसन — नहीं, कोई रिश्ता नहीं। (आँखें मटकाना चाहता है, पर समय का विचार करके रुक जाता है।) हाँ, विवाहिता है।

वाल्टर — आपको कैसे मालूम?

कोकसन — अपने बच्चों को साथ लाई थी।

(विरक्ति के साथ।)

वे दफ्तर के बाहर थे।

जेम्स — तब तो पक्का शोहदा है।

वाल्टर — मेरे ख्याल से उसे इस बार क्षमा कर देना चाहिए।

जेम्स — जिस कमीनापन से उसने यह काम किया है, उससे तो मैं क्षमा नहीं कर सकता। यह समझे बैठा था, कि अगर बात खुल गई, तो हमारा सन्देह डेविस पर होगा। यह बिलकुल इत्तिफाक था कि चेक-बुक तुम्हारी जेब में पड़ी रह गई।

वाल्टर — जरूर किसी क्षणिक मोह में पड़ गया था। उसको सोचने का वक्त नहीं मिला।

जेम्स — कोई ईमानदार और साफ दिल आदमी एक मिनट के अन्दर ऐसे मोह में नहीं पड जाता। उसका कोई ठिकाना नहीं है। रुपये के मामले में अपनी नीयत को साफ़ रखने की शक्ति उसमें नहीं है।

वाल्टर — (रूखे स्वर से) लेकिन पहिले कभी उसने ऐसा नहीं किया।

जेम्स — (उसकी बात को अनसुनी करके) अपने समय में मैंने ऐसे बहुत आदमी देखे हैं। इसके सिवा कोई उपाय नहीं कि उन्हें हानि के पथ से दूर रक्खा जाय। उनकी आँखें नहीं होतीं।

वाल्टर — उसे सख्त कैद की सजा हो जायगी।

कोकसन — जेल बड़ी बुरी जगह है!

जेम्स — (हिचकता हुआ) समझ में नहीं आता, उसे कैसे छोड़ दिया जा सकता है। इस दफ्तर में उसे रखने का तो अब कोई सवाल ही नहीं। लेकिन ईमान ही मनुष्य का सबसे बड़ा गुण है।

कोकसन — (मंत्र मुग्ध की भाँति) इसमें क्या शक।

जेम्स — वैसे ही उसे हम उन लोगों के बीच में नहीं छोड़ सकते जो उसके चाल चलन को नहीं जानते। समाज की ओर भी हमारा कुछ कर्तव्य है।

वाल्टर — लेकिन उस पर इस तरह तो दाग लगा देना अच्छा नहीं।

जेम्स — अगर चकमा देने की कोशिश न करता, तो मैं उसे क्षमा कर देता। लेकिन उसने अपराध पर अपराध किया है। आवारा है।

कोकसन — मैं यह नहीं कहता, परिस्थितियों पर विचार करके उसका अपराध हलका हो जाता है।

जेम्स — एक ही बात है, उसने खूब दाव घात लगाई, और मालिकों की आँखों में धूल झोंकी, और एक निर्दोषी आदमी के सिर अपराध मढ़ दिया। अगर ऐसा मामला भी कानून के लायक न हो, तो कौन होगा।

वाल्टर — फिर भी उसकी सारी जिन्दगी की ओर देखिए।

जेम्स— (चुटकी लेते हुए) अगर तुम्हारी चले तो कोई अभियोग ही न चले।

वाल्टर — (मुँह सिकोड़कर) मैं ऐसी बातों से नफ़रत करता हूँ।

कोकसन — हमें तो सिर्फ अपने बचाव से मतलब है।

जेम्स — ऐसी बातों से कोई फायदा नहीं।

(अपने कमरे की ओर बढ़ता है।)

वाल्टर — थोड़ी देर के लिए, आप अपने को उसकी जगह पर रखिए, पिताजी!

जेम्स — यह मेरे बस की बात नहीं।

वाल्टर — हमें क्या मालूम कि उसके ऊपर क्या संकट पड़ा था।

जेम्स — यह समझ लो वाल्टर, कि जो आदमी ऐसा करना चाहता है, वह करेगा, चाहे संकट हो या न हो। अगर न करना चाहे, तो कोई उसको मजबूर नहीं कर सकता।

वाल्टर — वह आगे ऐसा काम नहीं करेगा।

कोकसन — अच्छा, मैं अभी उससे इस बारे में बातें करता हूँ। उस बेचारे पर सख्ती न करनी चाहिए।

जेम्स — अब जाने दो, कोकसन! मैंने इरादा पक्का कर लिया है।

अपने कमरे में चला जाता है।

कोकसन — (थोड़ी देर सन्देह के साथ कुछ सोचकर) तुम्हारे पिता, का कोई विशेष दोष नहीं है, अगर वह यही उचित समझते हैं, तो मैं उनका हाथ न पकड़ूँगा।

वाल्टर — हटो भी कोकसन, तुम मेरी बात पर जोर क्यों नहीं देते। उस पर दया तो आती है।

कोकसन — (गुरूर से) मैं नहीं कह सकता मुझे दया आ रही है, या नहीं।

वाल्टर — हमें पछताना पड़ेगा।

कोकसन — उसने जान-बूझकर यह काम किया है।

वाल्टर — दया खींचतान से नहीं आती।

कोकसन — (प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी ओर देखकर) नाराज न हो, हमें सोच-समझकर काम करना चाहिए।

स्वीडिल — (तश्तरी में खान लाकर) आपका खाना, हुजूर।

कोकसन — रखो।

(स्वीडिल खाना मेज पर रखता है, ठीक इसी समय जासूस विस्टर बाहर के कमरे में आता है। और वहाँ किसी को न देखकर भीतर चला आता है। वह मोटा आदमी है, क़द मामूली, मूँछे मुड़ी हुई, नीले रंग का टिकाऊ सूट पहिने है। मज़बूत बूट पैर में हैं।)

विस्टर — (वाल्टर से) मैं स्काटलैण्ड यार्ड के थाने से आ रहा हूँ। मेरा नाम डिटेक्टिव सार्जेण्ट विस्टर है।

वाल्टर — (प्रश्नसूचक दृष्टि से देखता हुआ) बहुत अच्छा, मैं अपने पिता को खबर देता हूँ।

(वह मालिकों वाले कमरे में जाता है, जेम्स आता है।)

जेम्स — गुडमार्निंग!

(कोकसन से जो उसकी ओर करुणा भरी दृष्टि से देखता है।)

मुझे अफ़सोस है कि मैं मान नहीं सकता। मुझे ऐसा करना ही पड़ेगा। उस दरवाजे को खोलो।

(स्वीडिल आश्चर्य के साथ सहमते हुए दरवाजा खोलता है।)

इधर आओ, फाल्डर।

(जैसे ही फाल्डर झिझकता हुआ बाहर निकलता है, डिटेक्टिव जेम्स का इशारा पाकर उसकी बाहों को पकड लेता है।)

फाल्डर — (सिकुड़ते हुए) नहीं-नहीं-नहीं-नहीं!

विस्टर — बस! बस! तुम तो समझदार आदमी हो।

जेम्स — मैं इस पर चोरी करने का जुर्म लगाता हूँ।

फाल्डर — हुजूर, दया कीजिए, एक औरत है जिसके लिये मैंने यह काम किया। मुझे कल तक के लिए छोड़ दीजिए।

(जेम्स हाथ का इशारा करता है। उसके उस निष्ठुर भाव को देखकर फाल्डर निश्चल हो जाता है। फिर धीरे-धीरे मुड़कर अपने को डिटेक्टिव के हाथ में दे देता है। जेम्स कठोर और गम्भीर होकर पीछे-पीछे चलता है। स्वीडिल लपककर द्वार खोलता है, और उनके पीछे बाहर के कमरे से दालान तक जाता है, जब वे सब चले जाते हैं कोकसन एक बार चारों ओर घूमकर बाहर के कमरे की ओर दौड़ता है।

कोकुसन — (अधीर होकर) सुनो, सुनो! ये सब हम क्या कर रहे हैं?

(चारों ओर सन्नाटा छा जाता है, वह अपना रूमाल निकाल कर मुँह पर से पसीना पोंछता है। फिर अपनी मेज के पास अंधे की तरह आकर बैठ जाता है। और खाने की ओर उदास भाव से देखता है।)

(पर्दा गिरता है।)

अंक 2

पहला दृश्य

[न्यायालय। अक्टूबर महीने का तीसरा पहर, चारों ओर कुहरा छाया हुआ है। कचहरी में बारिस्टर, वकील, संवाददाता, चपरासी, जूरियों से ठसाठस भरा है। एक बड़े मजबूत कठघरे में फाल्डर है। उसके दोनों तरफ़ दो सिपाही निगरानी के लिए खड़े हैं, मानो उनकी उस पर कुछ विशेष दृष्टि नहीं है। फाल्डर ठीक जज के

सामने बैठा है। जज एक ऊँची जगह पर बैठा है। उसका भी ध्यान किसी खास चीज पर नहीं है। सरकारी वकील हेरोल्ड क्लीवर दुबला और पीला आदमी है। उम्र अधेड़ से कुछ अधिक है। सिर पर एक नक़ली बाल लगाए बैठा है, जिसका रंग उसके चेहरे के रंग से मिलता-जुलता है। वादी का वकील हेक्टर फ्रोम जवान और लम्बे क़द का है। मूँछ और दाढ़ी साफ़ है। एक सफेद नक़ली बाल सिर पर 'पहिने है। दर्शकों में जेम्स और मिस्टर होम बैठे हैं। उनकी गवाही हो चुकी है। कोकसन और ख़जाची भी बैठे हैं। विस्टर गवाही के कठघरे से उतर रहा है।]

क्लीवर — यह सरकारी मुक़दमा है हुजूर।

(अपने कपड़ों को संभालकर बैठता है।)

फ्रोम — (अपनी जगह से उठता हुआ, जज को सलाम करके) हुजूर जज और जूरी के सदस्य गण! मैं इस यथार्थ बात को अस्वीकार नहीं करता कि अभियुक्त ने चेक के अंकों को बदला था। मैं आपके सम्मुख इस बात का प्रमाण दूँगा कि उस समय अभियुक्त की मानसिक अवस्था कैसी थी, और आपकी सेवा में निवेदन करूँगा कि उस समय उसे उसका जिम्मेदार समझने में आप उसके साथ अन्याय करेंगे, वास्तव में अभियुक्त ने यह काम

चित्त की अव्यवस्थित दशा में किया जो क्षणिक उन्माद के समान था। इसका कारण वह भीषण समस्या थी, जो उस पर आ पड़ी थी। महोदय! अभियुक्त को उम्र केवल तेईस वर्ष की है। मैं अभी एक औरत को यहाँ पेश करता हूँ जिसके बयान से आपको मालूम हो जायगा, कि अभियुक्त ने यह काम क्यों किया। आप स्वयं उसके मुख से उसके जीवन की करुण-कथा और उससे भी करुण प्रेम-वृत्तांत सुनेंगे, जो अभियुक्त के हृदय में उसने जागृत की थी। महाशय गण! वह औरत अपने पति के साथ बड़ी बुरी अवस्था में रहती है। उसका पति बराबर उसके साथ अत्याचार करता है। यहाँ तक कि उस बेचारी को डर है कि वह उसे मार तक न डाले। इस समय मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि किसी नवयुवक के लिए किसी की विवाहित स्त्री से प्रेम करना प्रशंसनीय या उचित है अथवा उसको यह अधिकार है कि वह उस स्त्री की उसके पिशाच पति से रक्षा करे। परन्तु हम सबको मालूम है, कि प्रेम आदमी से क्या-क्या नहीं करा सकता। महोदयो! मैं आपसे कहता हूँ कि उस औरत का बयान सुनते समय आप इस बात पर ध्यान रखें, कि एक निर्दय और अत्याचारी व्यक्ति से विवाह होने के कारण वह उसके हाथ से छुटकारा नहीं पा सकती। क्योंकि विवाह-विच्छेद कराने के लिए

मार-पीट के सिवा किसी और दोष का दिखाना जरूरी है जो शायद उसके पति में नहीं है।

जज — क्या इन बातों का भी अभियोग से कोई सम्बन्ध है, मिस्टर फ्रोम?

फ्रोम — हुजूर, मैं अभी यह आपको साबित करूँगा।

जज— बहुत अच्छा।

फ्रोम — इस प्रकार की अवस्था में वह और क्या कर सकती थी। उसके लिए और कौन-सा रास्ता खुला था? या तो वह अपने शराबी पति के साथ रहकर अत्याचारों को चुपचाप सहती अथवा अदालत के जरिए विवाह-विच्छेद कराती। लेकिन महाशय गण! अपने अनुभवों से मैं कह सकता हूँ कि अदालत की शरण लेकर भी अपने पति के अत्याचारों से बचना कठिन था। और किसी तरह वह बच भी जाती, तो सिवा किसी कारखाने में जाने या सड़क पर मारे-मारे फिरने के और कुछ भी नहीं कर सकती थी। क्योंकि कोई काम न जानने वाली औरत के लिए अपना और अपने बच्चों का पालन करना आसान काम नहीं। यह अब उसे मालूम हो रहा है। या तो वह सरकारी खैरात-खाने में जाती या अपनी लाज बेचती।

जज — आप अपने विषय से बहुत दूर चले गए। मिस्टर फ्रोक।

फ्रोम — मैं एक मिनट के अन्दर अपना आशय बतला दूँगा, हुजूर।

जज — खैर, कहो।

फ्रोम — महोदय! विचार कीजिए। यह औरत स्वयं आपको ये बातें बतायेगी और अभियुक्त भी उसका समर्थन करेगा, क्रि ऐसी अवस्थाओं में पड़कर उसने अपने उद्धार की सारी आशाएँ उस पर छोड़ दीं। क्योंकि इस युवक के हृदय में उसने जो भाव उत्पन्न किए थे, उससे वह अपरिचित न थी। इस विपत्ति से बचने के लिए, उसे इसके सिवा और कोई मार्ग दिखाई न दिया कि किसी दूर देश में जाकर, जहाँ उन्हें कोई न पहिचाने, वे पति-पत्नी की तरह रहें। बस यही उनका अंतिम और, जैसा निस्संदेह मेरे मित्र मिस्टर क्लेवर कहेंगे, अविचार-पूर्ण निर्णय था। परन्तु यह सच्ची बात है कि दोनों का मन इसी पर तुला हुआ था। एक अपराध से बचने के लिए दूसरा अपराध करना अच्छी बात नहीं। और जिनके लिए ऐसी अवस्था में पड़ने की संभावना नहीं है, वे शायद मेरी बातों पर चौंक उठेंगे। परन्तु मैं उनका उत्तर देना नहीं चाहता। महोदय, चाहे आप इनके इस कार्य को किसी भी दृष्टि से देखें, चाहे इस दशा में पड़कर इन दोनों को कानून के हाथ में ले लेना आपको उचित मालूम हो या अनुचित पर बात यह अवश्य ठीक है। आफ़त की मारी हुई यह बेचारी औरत

और उसको जान से चाहने वाला यह अभियुक्त, जो बालक से कुछ ही अधिक उम्र का होगा, इन दोनों ने एक साथ किसी दूर देश में जाने का निश्चय कर लिया था। अब इसके लिए इनको रुपये की आवश्यकता भी थी। परन्तु इनके पास रुपया नहीं था। अब सातवीं जुलाई की घटनाओं के विषय में, जिस दिन चेक पर का अंक बदला गया था, और जिन घटनाओं से मैं यह सिद्ध करना चाहता हूँ कि अभियुक्त इस कार्य के लिए जिम्मेदार नहीं था, ये बातें आप गवाहों के मुख से ही सुनेंगे। राबर्ट कोकसन....।

(एक बार चारों ओर घूम पड़ता है फिर सादा कागज हाथ में लेकर इन्तजार करता है। कोकसन की पुकार होती है, वह आकर गवाहों के कठघरे में जाता है, टोपी को अपने सामने पकड़े रहता है, उसे हलफ दी जाती है।)

फ्रोम — आपका नाम क्या है?

कोकसन — राबर्ट कोकसन।

फ्रोम — क्या आप उस आफिस के मैनेजिंग क्लर्क हैं, जिसमें अभियुक्त नौकर था?

कोकसन — हाँ।

फ्रोम — अभियुक्त उनके यहाँ कितने दिनों से काम कर रहा है?

कोकसन — दो साल से। नहीं — मैं भूल रहा हूँ — हाँ — बस सत्रह दिन कम दो साल।

फ्रोम — ठीक है, अच्छा मिहरबानी करके यह बतलाइए, कि दो साल में आपने उसका चाल-चलन कैसा पाया है?

कोकसन — (मानो इस प्रश्न से कुछ ताज्जुब हुआ हो, वह धीरे से जूरी से कहता है।) वह बहुत अच्छा और शरीफ आदमी था। मैंने कभी उसका कोई दोष नहीं देखा। मुझे तो बड़ा आश्चर्य हुआ था, जब उसने ऐसी हरकत की।

फ्रोम — क्या कभी उसने ऐसा मौका दिया था, जिससे उसकी ईमानदारी पर आपको संदेह हुआ हो?

कोकसन — नहीं, हमारे दफ्तर में बेईमानी! नहीं, ऐसा कभी नहीं हुआ।

फ्रोम — मुझे विश्वास है मिस्टर कोकसन, कि जूरी महोदय गण आपकी बात को ध्यान से सुन रहे हैं।

कोकसन — हर एक रोजगारी आदमी जानता है कि कारबार में ईमानदारी ही सब कुछ है।

फ्रोम — क्या आप उसके चाल-चलन की तारीफ़ कर सकते हैं?

कोकसन — (जज की ओर मुड़कर) बेशक! हमेशा से हम लोग सब बहुत अच्छी तरह आनंदपूर्वक रहते थे। उसे सुनकर मेरे तो होश उड़ गए।

फ्रोम — अच्छा, अब सातवीं जुलाई का दिन याद कीजिए। जिस दिन कि यह चेक बदला गया था। उस दिन उसके चित्त की क्या दशा थी?

कोकसन — (जूरियों से) यदि मुझसे पूछो, तो मैं कहूँगा, कि उस समय उसका चित्त ठिकाने नहीं था।

जज — (तीव्र स्वर में) क्या तुम्हारा मतलब है कि वह पागल था?

कोकसन — परेशान था।

जज — जरा साफ-साफ़ कहो।

फ्रोम — (नम्रता के साथ) कहिए, मिस्टर कोकसन!

कोकसन — (कुछ चिढ़कर) मेरी राय में...।

(जज की ओर देखकर।)

वह जैसी कुछ भी हो। वह कुछ डाँवाडोल-सा था, अवश्य जूरीगण मेरे मतलब को समझ गए होंगे।

फ्रोम — क्या आप कह सकते हैं कि आपने यह राय कैसे कायम की।

कोकसन — हाँ! मैं कह सकता हूँ, मैं होटल से खाना मँगवाता हूँ। थोड़ा-सा कबाब और आलू। इससे वक्त की बहुत बचत होती है। हाँ, जब मेरा खाना आया मिस्टर वाल्टर ही ने मुझे वह चेक भुनाने के लिए दिया। इधर अगर मैं उस समय जाऊँ, तो खाना ठंडा हुआ जाता है, और फिर ठंडा खाना किस काम का। यह तो आप समझ ही सकते हैं। हाँ, तो बस मैं क्लर्कों के कमरे में गया, और दूसरे क्लर्क डेविस को मैंने वह चेक भुना लाने को दे दिया। मैंने उस समय फाल्डर को कमरे में टहलते देखा, मैंने उससे कहा भी था 'फाल्डर यह चिड़ियाघर नहीं है।'

फ्रोम — क्या आपको याद है उसने इसका क्या जवाबं दिया?

कोकसन — हाँ, उसने कहा, 'ईश्वर इसे चिड़ियाघर बना देता तो अच्छा होता।' मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ।

फ्रोम — और भी आपने कोई विशेष बात देखी?

कोकसन — हाँ, देखा था।

फ्रोम — वह क्या?

कोकसन — उसके गले का बटन खुला हुआ था। मैं हमेशा चाहता हूँ कि लोग साफ़ और कायदे से रहें। मैंने उससे कहा, तुम्हारे कालर का बटन खुला है।

फ्रोम — उसने आपकी बात का क्या जवाब दिया था?

कोकसन — उसने मुझे घूरकर देखा, यह बेअदबी थी।

जज — तुम्हें घूरकर देखा था? क्या यह एक बहुत मामूली बात नहीं है?

कोकसन — हाँ, लेकिन उसका देखना कुछ... मैं ठीक बयान नहीं कर सकता, एक अजीब तरह का था।

फ्रोम — क्या आपने कभी ऐसी दृष्टि उसकी आँखों से आगे नहीं देखी थी?

कोकसन —नहीं। अगर देखता, तो मैं मालिकों से उसकी शिकायत कर देता। हम ऐसे झक्की आदमी को अपने यहाँ नहीं रखते।

जज — क्या तुमने इस बात की शिकायत अपने मालिकों से की थी?

कोकसन — (आहिस्ते से) बिना किसी पक्के सबूत के मैं उनको कष्ट देना उचित नहीं समझता।

फ्रोम — लेकिन आप पर इस बात का खास असर पडा था?

कोकसन — इसमें क्या शक! डेविस अगर यहाँ होता, तो वह भी यही कहता।

फ्रोम — अफ़सोस है कि वह यहाँ नहीं है। खैर, अब आप उस दिन की बात याद कर सकते हैं, जिस दिन वह जाल पकड़ा गया। क्या उस दिन कोई खास बात हुई थी? वह अठारह तारीख थी।

कोकसन — (कान पर हाथ रखकर) मैं कुछ कम सुनता हूँ।

फ्रोम — जिस दिन आपको इस जाल की बात मालूम हुई उस दिन उसके पहिले कोई ऐसी घटना हुई थी, जिससे आपका ध्यान आकर्षित हुआ हो?

कोकसन — हाँ, एक औरत।

जज — इस बात से इसका क्या सम्बन्ध है, मिस्टर फ्रोम?

फ्रोम — हुजूर, मैं कोशिश कर रहा हूँ जिससे मालूम हो जाय कि अभियुक्त ने यह काम किस प्रकार की मानसिक अवस्था में किया. है।

जज — ठीक है, यह मैं समझता हूँ। लेकिन आप जो पूछ रहे हैं, वह इसके बहुत बाद की बात है।

फ्रोम — हाँ, हजूर। लेकिन यह मेरे कथन को पुष्ट करती है।

जज — — ठीक है।

फ्रोम — आपने क्या कहा? एक औरत? तो क्या वह दफ्तर में आई थी?

कोकसन — हाँ।

फ्रोम — किस लिये?

कोकसन — फाल्डर से मिलने के लिए। वह उस समय मौजूद नहीं था।

फ्रोम — उसे आपने देखा था?

कोकसन — हाँ! देखा था।

फ्रोम — क्या वह अकेली आई थी?

कोकसन — (दृढ़ता से) आप मुझे मुश्किल में डाल रहे हैं। चपरासी ने जो कुछ कहा था वह बयान करते हुए मुझे संकोच होता है।

फ्रोम — ठीक है, मिस्टर कोकसन, ठीक है!

कोकसन — (अकस्मात् इस भाव से जैसे कहता हो तुम इन बातों को क्या समझो अभी बच्चे हो, मैं कहता हूँ।) फिर भी दूसरी तरह

समझा देता हूँ। एक आदमी के किसी प्रश्न के उत्तर में उस औरत ने जवाब दिया था, वे मेरे हैं, महाशय!

जज — वे क्या थे? कौन थे?

कोकसन — उसके बच्चे बाहर थे।

जज — आपको कैसे मालूम?

कोकसन — हुजूर। मुझसे यह बात न पूछे, वरना मुझे सब माजरा कहना पड़ेगा। यह ठीक नहीं है।

जज — (मुस्कराते हुए) दफ्तर के चपरासी ने आपसे सब माजरा कह दिया।

कोकसन — जी हाँ! जी हाँ!

फ्रोम — खैर, मैं जो पूछना चाहता हूँ, मिस्टर कोकसन, वह यह है, कि जब वह औरत मिस्टर फाल्डर से मिलने के लिए आग्रह कर रही थी, उस समय उसने कोई ऐसी बात कहीं थी, जो आपको खास तौर से याद हो?

कोकसन — (उसकी ओर इस तरह से देखता हुआ मानो उसे उस वाक्य को पूरा करने के लिए उत्साहित कर रहा हो) हाँ, कुछ और कह रहा था।

फ्रोम — या उसने कुछ नहीं कहा था?

कोकसन — नहीं, कहा था। लेकिन मैं इस प्रश्न का उत्तर देना ठीक नहीं समझता।

फ्रोम — (चिढ़ से मुस्कराकर) क्या आप जूरी से भी नहीं कह सकते?

कोकसन — जीने मरने का सवाल है।

जूरी का मुखिया — क्या आपका मतलब है कि उस औरत ने यह कहा था?

कोकसन* (सिर हिलाकर) यह ऐसी बात है जो आप सुनना पसंद न करेंगे।

फ्रोम — (बेसब्र होकर) क्या फाल्डर उस औरत के सामने ही आ गया था?

(कोकसन सिर हिलाता है।)

और वह उससे भेंट करके चली गई?

कोकसन — ऐ! मैंने ठीक समझा नहीं, मैंने उसे जाते नहीं देखा।

फ्रोम — तो क्या वह अब भी वहीं है?

कोकसन — (प्रसन्नता से मुस्कराकर) नहीं।

फ्रोम — धन्यवाद, मिस्टर कोकसन।

वह बैठता है।

क्लीवर — (उठाकर) आपने कहा कि जाल के दिन अभियुक्त कुछ विचलित-सा था। उसके मानी क्या, महाशय?

कोकसन — (नर्मी से) यह आपको खुद समझ लेना चाहिए, आपने कोई ऐसा कुत्ता देखा है — कुत्ता जो अपने मालिक से भटक गया हो — उस समय वह चारों ओर निगाह दौड़ाता है?

क्लीवर — ठीक, मैं भी आँखों की बात पूछने वाला था। आपने कहा, उसकी दृष्टि कुछ अजीब थी। अजीब से आपका क्या मतलब है? विचित्र या कुछ और?

कोकसन — हाँ, अजीब-सी।

क्लीवर — (झुंझलाकर) हाँ, यह तो ठीक है। लेकिन आपके लिए जो अजीब हो, मुमकिन है वह मेरे लिए अथवा जूरी के लिए अजीब न हो। आपका मतलब क्या है डरी हुई, लजाई हुई, या गुस्से में भरी हुई?

कोकसन — आप मेरा काम और मुश्किल कर रहे हैं। मैं एक शब्द कहता हूँ, आप उसके लिए दूसरा शब्द चाहते हैं।

क्लीवर — (टेबिल पर हाथ रगड़ते हुए) क्या अजीब का अर्थ पागल है?

कोकसन — पागल नहीं — अजीब।

क्लीवर — खैर, आपने कहा उसके गले का बटन खुला हुआ था। क्या उस दिन बहुत गर्मी थी?

कोकसन — हाँ, शायद थी तो।

क्लीवर — जब आपने उससे कहा, तो क्या उसने बटन लगा लिया?

कोकसन — हाँ, शायद लगा लिया।

क्लीवर — क्या इससे यह मालूम होता है कि उसका दिमाग ठीक नहीं था?

(कोकसन जवाब देने को मुँह खोलकर ही रह जाता है। क्लीवर बैठ जाता है।)

फ्रोम — (जल्दी से उठकर) क्या आपने कभी पहिले भी उसे ऐसे अस्त-व्यस्त देखा था?

कोकसन — नहीं, वह हमेशा शांत और साफ रहता था।

फ्रोम — बस, उतना काफी है।

(कोकसन जज की ओर घूमकर इस प्रकार से देखता है मानो वकील भूल गया हो कि जज भी कुछ पूछेगा। फिर जब समझ

जाता है कि जज कुछ नहीं पूछेगा तो उतरकर जेम्स और वाल्टर के बग़ल में बैठ जाता है।)

फ्रोम — रुथ हनीविल!

(रुथ हनीविल अदालत में आकर गवाहों के कठघरे में स्थिर भाव से शांत खड़ी होती है, उसका चेहरा मुरझाया हुआ है।)

फ्रोम — नाम क्या है?

रुथ — रुथ हनीविल।

फ्रोम — उमर?

रुथ — छब्बीस साल।

फ्रोम — आपकी शादी हो चुकी है? अपने पति के साथ रहती हैं? जरा जोर से बोलिए

रुथ — नहीं, जुलाई से उसके साथ नहीं रहती।

फ्रोम — आपके बाल बच्चे हैं?

रुथ — जी हाँ! दो हैं।

फ्रोम — क्या वे आपके साथ रहते हैं?

रुथ — जी हाँ!

फ्रोम — क्या आप अभियुक्त को जानती हैं?

रुथ — (उसकी ओर देखकर) हाँ!

फ्रोम — आपके साथ उसका किस प्रकार का सम्बन्ध था?

रुथ — मित्र का।

जज — मित्र!

रुथ — (भोलेपन से) जी हाँ, प्रेमी।

जज — (तीव्र स्वर से) किस मानी में?

रुथ — हम दोनों एक दूसरे को प्यार करते हैं।

जज — ठीक है! लेकिन...।

रुथ — (सिर हिलाकर) जी नहीं, और कुछ नहीं हुआ।

जज — अभी तक कुछ नहीं...हूँ...।

(रुथ से फाल्डर की ओर दृष्टि घुमाकर।)

ठीक है!

फ्रोम — आपके पति क्या करते हैं?

रुथ — मुसाफिर हैं।

फ्रोम — आप दोनों में कैसी पटती है?

रुथ — (सिर हिलाकर) वह कहने की बात नहीं है।

फ्रोम — क्या वह तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार करते थे या और कोई बात है?

रुथ — हाँ, पहिले बच्चे के बाद से ही।

फ्रोम — किस प्रकार?

रुथ — यह मैं नहीं कह सकती-हर तरह से।

जज — मुझे डर है, आप यह सब नहीं कह सकते।

रुथ — (फाल्डर की ओर इशारा करके) उन्होंने मुझे अपनी शरण में लेने का वचन दिया। हम दक्षिण अमरीका जाने वाले थे।

फ्रोम — (जल्दी से) हाँ, ठीक है। और फिर अड़चन क्या पड़ी?

रुथ — मैं दफ्तर के बाहर ही खड़ी थी कि वह पकड़ लिए गए। इससे मेरा दिल टूट-सा गया।

फ्रोम — तो आप जान गई थीं कि वह गिरफ्तार कर लिया गया?

रुथ — जी हाँ, मैं उसके बाद दफ्तर में गई थी, और उन्होंने...

(कोकसन की ओर इशारा करके।)

मुझे सब बतला दिया।

जज — अच्छा, क्या आपको 7 वीं जुलाई की बात याद है?

रुथ — हाँ।

फ्रोम — क्यों?

रुथ — उस दिन मेरे पति ने मेरा गला घोंट डालना चाहा था।

जज — गला घोंट डालना चाहा था?

रुथ — (सिर नीचा करके) जी हाँ।

फ्रोम — हाथ से या किसी...

रुथ — हाँ, मैं किसी प्रकार वहाँ से भाग आई, और अपने मित्र से मिली। उस समय ठीक आठ बजे थे।

जज — सवेरे? तुम्हारे पति उस समय शराब के नशे में तो नहीं थे?

रुथ — हमेशा शराब के नशे में ही नहीं मारते थे।

फ्रोम — आप उस समय किस हालत में थीं?

रुथ — बहुत बुरी हालत में। मेरे कपड़े सब फट रहे थे, और मेरा दम घुट रहा था।

फ्रोम — क्या आपने अपने मित्र से यह माजरा कहा था?

रुथ — हाँ, कहा था। अब समझती हूँ, अगर न कहती, तो अच्छा होता।

फ्रोम — क्या यह सुनकर वह आपे से बाहर हो गया था?

रुथ — बुरी तरह।

फ्रोम — उसने किसी चेक के बारे में कभी आपसे कुछ कहा था?

रुथ — कभी नहीं।

फ्रोम — उसने कभी आपको रुपये भी दिए थे?

रुथ — हाँ, दिए थे।

फ्रोम — किस दिन?

रुथ — शनिवार के दिन।

फ्रोम — आठ तारीख को।

रुथ — मेरे और बच्चों के लिए कपड़े खरीदने और चलने की तैयारी करने के लिए।

फ्रोम — क्या इससे आपको आश्चर्य हुआ था?

रुथ — किस बात से?

फ्रोम — कि उसके पास तुम्हें देने को रुपये निकल आए।

रुथ — हाँ, हुआ था। इसलिए कि जब मेरे पति ने मुझे मारा था उस दिन सवेरे मेरे मित्र रोने लगे थे कि उनके पास रुपये नहीं हैं जो वे मुझे कहीं ले चलें। बाद को उन्होंने मुझसे कहा था कि अचानक उनकी किस्मत खुल गई है।

फ्रोम — आपने उनको आखिरी बार कब देखा था?

रुथ — जब वे पकड लिए गए। यही दिन हमारे रवाना होने का था।

फ्रोम — अच्छा, क्या आपसे उसकी मुलाकात शुक्रवार और उस दिन के बीच में और भी कभी हुई थी?

(रुथ सिर हिलाकर कुबूल करती है।)

उस समय उसकी क्या हालत थी?

रुथ — गूँगे के समान। कभी-कभी तो उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकलता था।

फ्रोम — मानो कोई असाधारण बात हो गई हो?

रुथ — हाँ!

फ्रोम — रंज की, खुशी की, या किसी बात की?

रुथ — जैसे उनके सिर पर कोई विपत्ति मँडरा रही हो!

फ्रोम — (कुछ हिचककर) मैं पूछ सकता हूँ कि तुम्हें उससे बहुत प्रेम था?

रुथ — (सिर नवाकर) हाँ।

फ्रोम — क्या वह भी आपसे बहुत प्रेम करता था?

रुथ — (फाल्डर की ओर देखकर) हाँ, साहब!

फ्रोम — अच्छा जी, आपका क्या विचार है? आपको खतरे और आफ़त में देखकर वह बदहवास हो गया और उसका अपने ऊपर काबू न रहा या और कुछ?

रुथ — हाँ, यही बात है।

फ्रोम — भले बुरे का ख्याल भी जाता रहा?

रुथ — हाँ, कुछ देर के लिए अवश्य।

फ्रोम — अच्छा, क्या शुक्रवार को वह बहुत घबड़ाया हुआ था या साधारण दशा में?

रुथ — बहुत ही घबड़ाए हुए। मैं उन्हें अपने पास से जाने न देती थी।

फ्रोम — क्या आप अब भी उसे चाहती हैं?

रुथ — (फाल्डर की ओर देखकर) उन्होंने मेरे लिए अपना सत्यानाश कर लिया।

फ्रोम — धन्यवाद!

वह बैठ जाता है, रुथ वहीं पर अविचलित भाव से सीधी खड़ी रहती है।

क्लीवर — (लेहाज़ से) जब शुक्रवार सात तारीख के सवेरे आप उनसे विदा हुईं, उस समय वह होशहवास में थे?

रुथ — जी हाँ!

क्लीवर — धन्यवाद! मुझे आपसे और कुछ नहीं पूछना है।

रुथ — (जूरी की ओर कुछ झुककर) शायद मैं भी उनके लिए ऐसा ही कर सकती थी, अवश्य कर सकती थी।

जज — जरा ठहरो, तुम कहती हो कि तुम्हारा विवाहित जीवन बिलकुल सुख रहित है। दोनों ही का दोष होगा।

रुथ — मेरा दोष है कि मैं कभी उसकी खुशामद नहीं करती। ऐसे आदमी की खुशामद करें ही क्यों?

जज — तुम उनका कहना नहीं मानती होगी।

रुथ — (प्रश्न को टालकर) मैं हमेशा उसकी इच्छा के अनुसार काम करती रही हूँ।

जज — मुलजिम से जान-पहचान होने के पहिले तक?

रुथ — नहीं, बाद को भी।

जज — मैं यह सवाल इसलिए पूछ रहा हूँ कि तुम मुलजिम से प्रेम करना निंदा की बात नहीं समझती?

रुथ — (हिचककर) कदापि नहीं, मेरे जीवन का यही आधार है।

जज — (कड़ी निगाह से देखकर) अच्छा, अब तुम जा सकती हो।

(रुथ फाल्डर की ओर देखती है, फिर धीरे-धीरे उतरकर गवाहों में जाकर बैठ जाती है।)

फ्रोम — मैं अब मुलजिम को बुलाता हूँ, हुजूर!

(फाल्डर कठघरे में से उतरकर गवाहों के कठघरे में जाता है। बाकायदा कसम दिलाई जाती है।)

फ्रोम — तुम्हारा नाम क्या है?

फाल्डर — विलियम फाल्डर।

फ्रोम — और उम्र?

फाल्डर — तेईस साल।

फ्रोम — तुम्हारी शादी नहीं हुई है?

(फाल्डर सिर हिलाकर इनकार करता है।)

फ्रोम — उस महिला को तुम कितने दिनों से जानते हो?

फाल्डर — छः महीने से।

फ्रोम — उसने तुम्हारे साथ अपना जो रिश्ता बतलाया है, क्या वह ठीक है?

फाल्डर — हाँ।

फ्रोम — तो तुम्हें उससे गहरा प्रेम है। क्यों?

फाल्डर — हाँ

जज — यह जानते हुए भी कि उसकी शादी हो गई है?

फाल्डर — हुजूर, मैं लाचार हो गया।

जेज — लाचार हो गए?

फाल्डर — हुजूर; मैं अपने को संभाल न सका।

(जज कंघा हिलाता है।)

फ्रोम — तुमसे उससे जान-पहिचान कैसे हुई?

फाल्डर — मेरी एक विवाहिता बहिन के जरिए।

फ्रोम — क्या तुम जानते थे कि अपने पति के साथ वह सुखी थी, अथवा नहीं?

फाल्डर — उसे कभी सुख नहीं मिला।

फ्रोम — क्या तुम उसके पति को जानते थे?

फाल्डर — हाँ, केवल उसी के द्वारा मैंने जाना था वह नरपशु है।

जज — मैं नहीं चाहता पड़ोस में किसी आदमी को गालियाँ दी जायँ।

फ्रोम — (सिर झुकाकर) जैसी हुजूर की आज्ञा! (फाल्डर से) क्या तुम इस चेक में रद्दोबदल स्वीकार करते हो?

(फाल्डर सिर झुका लेता है।)

फ्रोम — तारीख सात जुलाई की बात याद करो और जूरी से उस दिन की घटना बयान करो।

फाल्डर — (जूरी की ओर देखकर) मैं सवेरे अपना नाश्ता कर रहा था जब वह आई। उसके सारे कपड़े फटे हुए थे, वह हाँफ रही थी मानो सांस लेने में उसे कष्ट हो रहा हो। उसके गले पर पुरुष की उंगलियों के निशान थे। उसकी बाँहों में चोट आ गई थी। और खून जमा गया था। मैं उसकी यह दशा देखकर डर गया। उसके बाद उसने सब हाल मुझसे कहा। मुझे ऐसा मालूम

होने लगा-ऐसा मालूम होने लगा और वह मैं बयान नहीं कर सकता। मेरे लिए वह असह्य था।

(एकाएक तनकर।)

आप उसे देखते, और आपके दिल में भी उसके लिए मेरी जैसी मुहब्बत होती तो आप भी मेरे ही समान व्याकुल हो जाते।

फ्रोम — अच्छा!

फाल्डर — वह मेरे पास से चली गई क्योंकि मुझे दफ्तर जाना था। तो इस भय से मेरे होश उड़े थे कि कहीं वह फिर उस पर अत्याचार न करे। सोच रहा था क्या करूँ। मैं काम न कर सका। रात दिन इसी तरह बीत गया। किसी काम में जी ही न लगता था। सोचने की शक्ति न थी। चुपचाप बैठा न जाता था। ठीक उसी समय डेविस मेरे पास आया, और चेक देकर बोला, फाल्डर जाओ, जरा बैंक से रुपये लेते आओ; शायद हवा में फिर आने से तुम्हें कुछ आराम मिले। मालूम होता है तुम्हारी आधी जान निकल गई है। फिर जब वह चेक मेरे हाथ में आया मैं नहीं जानता मुझे क्या हुआ। न जाने क्योंकर मेरे मन में आया कि अगर टी वाई जोड कर अंक के आगे एक बिंदी लगा दूँ तो रुथ को वहाँ हटा ले जाने के लिए रुपये हो जायँगे। वह बात मेरे दिमाग में आई और चली गई। मुझे फिर कुछ याद नहीं कि

डेविस के जाने के बाद मैंने क्या किया। केवल जब कैशियर को मैंने चेक दिया, तो उसने पूछा था कि क्या नोट दूँ? तब शायद मुझे मालूम हुआ कि मैंने क्या किया। जब मैं बाहर आया, तो जी में आया किसी मोटर के नीचे दबकर मर जाऊँ। मैंने चाहा रुपयों को फेंक दूँ, लेकिन फिर मुझे उसकी याद आई और मैंने उसे बचाने की ठान ली, चाहे कुछ भी हो। यह सच है कि सफर के टिकट के रुपये और जो कुछ मैंने उसको दिए थे सब मिट्टी में मिल गए। लेकिन बाकी रुपये मैंने बचा लिए हैं। मैं सोच रहा हूँ मैंने यह काम कैसे किया, क्योंकि यह मेरा स्वभाव नहीं हैं।

(फाल्डर चुप हो जाता है और हाथ मलता है।)

फ्रोम — तुम्हारे आफिस से बैंक कितनी दूर है?

फाल्डर — कोई पचास गज से अधिक न होगा।

फ्रोम — डेविस के चले जाने के बाद से तुम्हारे चेक भुनाने में कितना समय लगा होगा?

फाल्डर — चार मिनट से ज्यादा न लगे होंगे, क्योंकि मैं दौड़ता हुआ गया था।

फ्रोम — क्या चार मिनट के भीतर का हाल तुम्हें याद नहीं?

फाल्डर — जी नहीं, सिवाय इसके कि मैं दौड़ता हुआ गया था।

फ्रोम — टी वाई और बिन्दी का जोडना भी तुम्हें याद नहीं?

फाल्डर —जी नहीं, मैं सच कहता हूँ।

(फ्रोम बैठता है और क्लीवर उठता है।)

क्लीवर — लेकिन तुम्हें याद है कि तुम दौड़े थे?

फाल्डर — जब मैं बैंक पहुंचा, उस समय मेरा दम फूल रहा था।

क्लीवर — और तुम्हें चेक का बदलना याद नहीं?

फाल्डर — (धीरे से) जी नहीं।

क्लीवर — मेरे मित्र ने जो विलक्षणता का आवरण डाल रक्खा है उसे हटा देने से क्या वह साधारण जालसाजी के सिवा और कुछ हो सकता है? बोलो?

फाल्डर — मैं उस दिन आधा पागल हो रहा था, जनाब।

क्लीवर — ठीक, ठीक! लेकिन तुम इनकार नहीं कर सकते कि टी वाई और सिफर बाकी लिखावट के साथ ऐसा मिल गया था, कि खजांची धोखा खा गया।

फाल्डर — संयोग था।

क्लीवर — (खुश होकर) विचित्र का संयोग था, क्यों? मुसन्ने को तुमने कब बदला?

फाल्डर — (सिर झुकाकर) बुधवार के दिन।

क्लीवर — क्या वह भी संयोग था?

फाल्डर — (क्षीण स्वर में) जी नहीं।

क्लीवर — यह काम करने के लिए तुम अवश्य मौका ढूँढ़ते रहे होंगे। क्यों?

फाल्डर — (आवाज़ मुश्किल से सुनाई पड़ती है।) हाँ।

क्लीवर — तुम यह तो नहीं कहते, कि काम करते वक्त भी तुम बहुत उत्तेजित थे?

फाल्डर — मेरे सिर पर भूत सवार था।

क्लीवर — पकड़े जाने के डर से?

फाल्डर — (बहुत धीरे से) हाँ!

जज — क्या तुमने यह नहीं सोचा कि अपने मालिकों से सारी बातें कहकर रुपये लौटा देना ही तुम्हारे लिए अच्छा होगा?

फाल्डर — मैं डरता था।

(सब चुप हो जाते हैं।)

क्लीवर — नि—संदेह तुम्हारी इच्छा थी कि तुम इसके बाद उस औरत को भगा ले जाओगे।

फाल्डर — जब मुझे मालूम हुआ कि मैंने ऐसा काम कर डाला, तो उसका उपयोग न करना गुनाह बेलज्जत था। इससे तो कहीं अधिक अच्छा नदी में डूबकर मर जाना था।

क्लीवर — तुम जानते थे कि क्लर्क डेविस इंग्लैंड से जा रहा है। जब तुमने चेक बदला था तब क्या तुम्हें नहीं सूझा था कि सबका शक डेविस पर होगा?

फाल्डर — मैंने पल भर के भीतर सब काम किया। हाँ, बाद में यह बात मेरी समझ में आई थी।

क्लीवर — और फिर भी तुमसे अपनी गलती जाहिर न की गई?

फाल्डर — (उदासी से) मैंने सोचा था वहाँ पहुँचकर मैं सब कुछ लिख भेजूँगा। मेरी इच्छा रुपये को चुका देने की थी।

जज — लेकिन इसी बीच में तुम्हारा निर्दोषी मित्र क्लर्क गिरफ्तार हो सकता था।

फाल्डर — मैं जानता था, कि वह बहुत दूर है, हुजूर। मैंने सोचा था कि वक्त मिल जायगा। इतनी जल्दी बात जाहिर हो जायगी यह मुझे ख़याल ही नहीं था।

फ्रोम — शायद हुजूर को याद दिलाना बेजा न होगा, चेक बुक मिस्टर वाल्टर हो के पास डेविस के चले जाने के बाद तक था। अगर यह जालसाजी एक दिन बाद पकड़ी जाती, तो फाल्डर भी चला गया होता। इससे शक भी फाल्डर पर ही होता न डेविस पर।

जज — सवाल यह है कि मुलजिम को यह बात मालूम थी या नहीं कि शक उस पर होगा न कि डेविस पर?

(फाल्डर से तीव्र स्वर में।)

क्या तुम जानते थे कि चेक मिस्टर वाल्टर हो के पास डेविस के चले जाने के बाद तक था?

फाल्डर — मैं...मैं...मैंने सोचा था...वह...

जज — देखो सच-सच बोलो, हाँ या नहीं।

फाल्डर — (बहुत आहिस्ते) नहीं हुजूर, यह मैं नहीं जानता था।

जज — यहाँ तुम्हारी बात कट जाती है, मिस्टर फ्रोम।

(फ्रोम सिर झुकाता है)

क्लीवर — क्या ऐसी सनक तुम्हें पहले भी कभी सवार हुई थी?

फाल्डर — (कातर भाव से) जी नहीं।

क्लीवर — तीसरे पहर तुम इतने स्वस्थ हो गए थे कि फिर तुम उस समय पूरे तौर से काम पर वापस अपना काम करने के लिए गए।

फाल्डर — हाँ, मुझे रुपया लेकर आफिस से वापस जाना था।

क्लीवर — तुम्हारा मतलब नौ पाउंड से है। तुम्हारा होश तो इतना ठीक था कि तुम्हें यह खूब अच्छी तरह याद थी फिर भी तुम कहते हो कि तुम्हारे चेक के अंक बदलने की बात याद नहीं।

फाल्डर — अगर मैं उस समय पागल न होता, तो मैं कभी भी यह काम करने की हिम्मत न करता।

फ्रोम — (उठकर) क्या वापस जाने के पहिले तुमने अपना खाना खाया था?

फाल्डर — नहीं, मैंने दिन भर कुछ नहीं खाया था। और रात को नींद भी मुझे नहीं आई।

फ्रोम — अच्छा, डेविस के जाने और नोट भुनाने के बीच जो चार मिनट बीते थे, उसकी बात क्या तुम्हें बिलकुल याद नहीं है?

फाल्डर — (एक मिनट ठहरकर) मुझे केवल यह याद है कि उस समय मिस्टर कोकसन का चेहरा मुझे याद आ रहा था।

फ्रोम — मिस्टर कोकसन का चेहरा? उससे और तुम्हारे काम से क्या सम्बन्ध?

फाल्डर — नहीं, महाशय।

फ्रोम — क्या तुम्हें आफिस में जाने के पहले भी वही बात याद थी?

फाल्डर — हाँ! उस समय, बाहर दौड़ते समय भी।

फ्रोम — और क्या उस समय तक ही याद थी जब खजांची ने तुम से कहा 'क्या नोट लेंगे?'

फाल्डर — हाँ, उसके बाद मुझे होश आ गया। लेकिन तब सोचना बेकार था।

फ्रोम — धन्यवाद! बस सफाई के सब गवाह गुजर चुके।

(जज सिर हिलाता है। फाल्डर अपनी जगह पर वापस आता है।)

फ्रोम — (कागज वगैरह संभालकर) हुजूर और जूरी गण, मेरे मित्र ने अपनी जिरह में इस सफाई का मजाक उड़ाने की कोशिश की है जो इस मामले में हमारी तरफ से पेश की गई है। मैं जानता हूँ कि जो गवाह पेश किए गए हैं उससे अगर आपके दिल में यह यकीन न हो गया हो कि मुलजिम ने यह काम केवल एक क्षणिक दुर्बलता के कारण किया है, और दरअसल उसको इसके

लिए जिम्मेदार नहीं कहा जा सकता तो मेरे कथन का भी कुछ असर आप पर नहीं पड़ेगा। उसके हृदय में जो भयानक उथल-पुथल था, उसने उसकी मानसिक और नैतिक शक्तियों को ऐसा कुचल डाला कि उसे एक क्षणिक पागलपन कहा जा सकता है। मेरे मित्र ने कहा है कि मैंने इस मामले पर विलक्षणता का आवरण डालने की कोशिश की है। महोदय गण, मैंने ऐसी कोशिश नहीं की। मैंने केवल जीवन का वह आधार दिखाया है — उस अस्थिर जीवन का, जो प्रत्येक पाप का कारण होता है, चाहे , मेरे मित्र उसकी कितनी हँसी क्यों न उड़ाएँ। महाशय गण, हम इस समय एक ऐसे सभ्य युग में पहुँच गए हैं कि किसी प्रकार के भीषण अत्याचार का दृश्य हमारे दिल पर एक खास असर डाले बिना नहीं रहता, चाहे हमारे साथ उस मामले का कुछ भी सम्बन्ध न हो। पर अगर हम ऐसा अत्याचार एक औरत पर होते देखें, और वह ऐसी औरत हो जिसे हम प्यार करते हैं, तब क्या होगा? सोचिए, यदि मुलजिम की दशा में आप होते, तो किस प्रकार का भाव आपके मन में उत्पन्न होता? इस बात को सोचिए और लब उसके मुँह की ओर देखिए। वह उन बेफिक्रों में और बेहयाओं में नहीं है जो उस औरत पर जिसे वह प्यार करता है पैशाचिक अत्याचार के चिह्न देखे और विचलित न हो। हाँ महाशय गण, देखिए उसके मुख पर दृढ़ता नहीं है। और न

उसके चेहरे से पाप ही झलक रहा है। यह एक ऐसा साधारण चेहरा है जो बड़ी आसानी से अपने भावों के वशीभूत हो जाता है। उसकी आँखों का हाल भी आपने सुना है। मेरे मित्र चाहें 'अजीब' शब्द पर हँस उठें, लेकिन दरअसल ऐसी अवस्थाओं में मनुष्यों की आँखों में जो चंचलता आ जाती है वह सिवाय 'अजीब' के और कुछ नहीं कही जा सकती। याद रखिए, मैं यह नहीं कहता कि उसकी मानसिक दुर्बलता क्षणिक अन्धकार की झलक मात्र नहीं थी जिसमें धर्म और अधर्म का ज्ञान लुप्त हो गया, लेकिन मैं यह कहता हूँ कि जिस तरह कोई मनुष्य ऐसी परिस्थिति में आत्म-हत्या कर लेने पर आत्म-हत्या. के दोष से मुक्त हो जाता है, उसी भांति वह इस अव्यवस्थित दशा में दूसरे अपराध भी कर सकता है, और करता ।

इस कारण उसको अपराधी न कहकर एक मरीज कहना चाहिए और उसके इलाज का प्रबन्ध भी करना चाहिए। मैं मानता हूँ इस तर्क का दुरुपयोग किया जा सकता है। परिस्थिति को देखकर ही इसका निर्णय करना चाहिए। लेकिन यह एक ऐसी भावना है, जिसमें आपको सन्देह का फल अपराधी को देना चाहिए। आपने सुना होगा मैंने अपराधी से प्रश्न किया था कि उसने उन अभागे चार मिनट में क्या सोचा था। उसने क्या जवाब दिया? 'मुझे मिस्टर कोकसन का चेहरा याद आ रहा था।'

महाशय गण, कोई आदमी बनावटी तौर से ऐसा जवाब नहीं दे सकता। इस पर सत्य की एक गम्भीर छाप लगी हुई है। जो औरत आज अपनी जान को भी जोखिम में डालकर यहाँ गवाही देने आई है, उसके साथ अपराधी का जो प्रेम है, चाहे उचित हो या न हो, वह भी आप से अब छिपा नहीं है। जिस दिन उसने यह काम किया था उस दिन वह कितना घबड़ाया हुआ था इसमें तो कोई सन्देह करना असम्भव है। इस प्रकार के दुर्बल और भाव-प्रबल आदमी का ऐसी दशा में कितना पतन हो सकता है यह हम सबको अच्छी तरह मालूम है। यह सारा काम केवल क मिनट में हुआ। बाकी काम ठीक वैसे ही हुआ, जैसे छुरा भोंकने के बाद आदमी मर जाता है या सुराही उलट देने से पानी गिर पड़ता है।

आपको यह बतलाने की जरूरत नहीं कि जीवन में कोई बात इतनी दुखदाई नहीं है जितनी यह कि जो हो चुका वह मिटाया नहीं जा सकता। एक बार जब चेक पर अंक बदल दिया गया और उसके रुपये मिल गए, जो चार भयंकर मिनटों का काम था, तो चुप साध लेने के सिवा और क्या किया जा सकता था? लेकिन उन चार मिनटों में यह आदमी जो आपके सामने खड़ा है उस पिंजड़े में आकर फँस गया जो आदमी को बेदाग नहीं छोड़ता। उसके बाद के काम — उसका अपराध स्वीकार न करना, मुसन्ने

को बदलना, भागने की तैयारी करना — इनसे यह नहीं सिद्ध होता कि उसने दृढ़ पापमय संकल्प से ये काम किए, जो मूल आचरण के फलमात्र थे। बल्कि इनसे केवल उसके चरित्र की दुर्बलता सिद्ध होती है और यही उसकी विपत्ति का कारण है। लेकिन क्या हमें केवल इसलिए उसे पतित कर देना चाहिए कि वह जन्म और शिक्षा से दुर्बल चरित्र है। महोदय गण, इस अपराधी की तरह हजारों आदमी हमारे कानून की चक्की में रोज पिसकर मर रहे हैं। केवल इसलिए कि हममें वह इनसानियत की आँख नहीं है जिससे हम देखें कि वे अपराधी नहीं केवल मरीज हैं। यदि मुलजिम अपराधी साबित हो गया और उसके साथ मुलजिम या पाप में सने प्राणियों का-सा व्यवहार किया गया तो वह सचमुच ही एक अपराधी बन जायगा, जैसा हम अपने अनुभव से कह सकते हैं।

मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि ऐसी व्यवस्था न दीजिए जो उसे जेल में ले जाकर हमेशा के लिए दाग लगा दे। महोदय गण! न्याय एक यन्त्र है जिसे यदि कोई चला दे तो फिर वह अपने ही आप चलता रहता है। क्या हम इस व्यक्ति को दरअसल उस मशीन के नीचे दबाकर चकनाचूर कर देंगे? और वह इसलिए कि दुर्बलता के वशीभूत होकर उसने एक भूल की है। क्या आप उसे उन अभागे मल्लाहों का एक सदस्य बनाना चाहते हैं जो उन

अंधेरे और भीषण जहाजों को चलाते हैं जिन्हें हम जेलखाना कहते हैं? क्या उसे वह यात्रा शुरू करनी होगी जहाँ से शायद ही कोई लौटता हो? या फिर उसे एक बार समय देना चाहिए कि सुबह का खोया हुआ शाम को भी लौट आता है, या नहीं? मैं आप लोगों से अर्ज करता हूँ कि उस नौजवान की जिन्दगी को बरबाद न कीजिए। यह सारी बरबादी उन्हीं चार मिनटों का फल है। घोर सर्वनाश उसकी ओर मुँह खोले खड़ा है। अभी यह बच सकता है। आज आप उसे अपराधी की तरह सजा दे दीजिए और मैं आपसे कह देता हूँ कि वह हमेशा के लिए हाथ से निकल जायगा। न तो उसका चेहरा और न उसका रंग-ढंग यह कह सकता है कि वह उस अग्नि-परीक्षा से बच निकलेगा। उसके अपराध को एक पलड़े में तौलिए और दूसरे पर उसके उन कष्टों को तौलिए जो वह पा चुका है। आपको मालूम होगा कि कष्टों का पलड़ा दस गुना अधिक भारी हो गया। दो महीने से वह हवालात में सड़ रहा है। क्या सम्भव है वह इसे भूल जायगा? इन दो महीने में उसके हृदय को जो दुःख हुआ होगा उसे सोचिए। आप यकीन रखिए कि उसकी सजा काफी हो गयी। न्याय की भीषण चक्की उसको तभी से पीसने लगी है जब से इसका गिरफ्तार होना तय हो चुका था। यह उसकी सजा की

दूसरी मंजिल चल रही है। यदि आप तीसरी पर ले जाने की चेष्टा करेंगे तो मैं आगे कुछ नहीं कहना चाहता।

(अपनी उंगली और अंगूठे को मिलाकर एक दायरा बनाता है, फिर हाथ को नीचा कर लेता है और बैठ जाता है। जूरी एक दूसरे का मुँह देखकर सिर हिलाते हैं, फिर सरकारी वकील की ओर देखते हैं। वह उठता है और अपनी आँखें उसी जगह गड़ाकर जिससे उसे कुछ सुविधा मालूम पड़ती है बार-बार आँखें फेरकर जूरी की ओर देखता जाता है।)

क्लीवर — हुजूर! (पंजे के बल खड़े होकर) और जूरी गण! इस मामले की घटनाओं पर कोई आपत्ति नहीं की गई और मेरे मित्र क्षमा करें, सफाई जो दी गई है वह इतनी कमजोर है कि मैं फिर गवाहों के बयान की आलोचना करके आपका समय नहीं खराब करना चाहता। सफाई में क्षणिक पागलपन की दलील पेश की गई है, और क्यों यह बे-सिर-पैर की सफाई पेश की गई? शायद आप मुझे माफ़ करें, मैं आपसे ज्यादा अच्छी तरह जानता हूँ! ऐसी सफाई को बे-सिर-पैर के सिवा और क्या कहा जाय? कसूर को इक़बाल कर लेना ही दूसरा रास्ता था। महोदय गण! अगर अपराध स्वीकार कर लिया गया होता, तो मेरे मित्र को हुजूर की सीधी-सादी दया की प्रार्थना करने के सिवा और कोई उपाय न था। परन्तु उन्होंने ऐसा न करके इस मामले की कतर-ब्योंत की

है, और यह सफाई गढ़ डाली है जिससे उन्हें त्रिया-चरित्र की बानगी दिखाने, एक स्त्री को गवाह के कठघरे में खड़ा करने और इसे एक करुण-प्रेम के रंग में रंगने का अवसर दे दिया है। मैं अपने मित्र की इस सूझ-बूझ की तारीफ़ करता हूँ। इससे उन्होंने किसी हद तक कानून से बचने की कोशिश की है। शायद और किसी तरह वह प्रेरणा और चिन्ता के सारे किस्से को अदालत वे सामने इस प्रकार न खड़ा कर सकते। लेकिन महोदय गण! एक बार जब आपको असली बात मालूम हो गई, तब आप सारी बात मान गए।

(सहृदय उपेक्षा के साथ)

अच्छा, इस पागलपन की दलील को देखिए। पागलपन के सिवा हम इसे कुछ नहीं कह सकते। आपने उस औरत का बयान सुना है। वह कैदी के हक़ में गवाही देगी इसमें कुछ आश्चर्य की बात नहीं। फिर भी उसने क्या कहा था, आपको मालूम है? उसने कहा — जब उसने कैदी से विदा ली थी उस समय वह किसी तरह अव्यवस्थित न था। अगर चिन्ताओं ने उसे अशान्त कर दिया था तो वही एक ऐसा वक्त था, जब उसके मन की अशान्ति प्रगट होती। सफाई के दूसरे गवाह मैनेजिंग क्लर्क की गवाही भी आपने सुनी जो उन्होंने कैदी के हक में दी थी। कुछ

कठिनाई के बाद मैं उससे कुबूल करा पाया हूँ कि डेविस को चेक देते वक्त मुलजिम कुछ अस्थिर....

(उनका विचार ऐसा मालूम होता था कि आप इस शब्द का आशय समझ जायेंगे और यकीन है, महाशय गण आप समझ गए होंगे।)

होने पर भी पागल नहीं था। अपने मित्र की भांति मुझे भी दुःख है कि डेविस यहाँ नहीं है। लेकिन मुलजिम ने वे शब्द कहे हैं जो डेविस ने उन्हें चेक देते समय कहे थे। अवश्य ही वह इस समय पागल नहीं था। नहीं तो वह इन शब्दों को जरूर भूल जाता। खजांची ने भी कहा कि चेक भुनाते वक्त उसके होश-हवाश बिलकुल ठीक थे। इसलिए इस सफाई का मतलब यह हुआ कि एक आदमी जो एक बजकर दस मिनट पर स्वस्थ था और एक बजकर पन्द्रह मिनट पर भी ठीक था, वह अपने को इस समय के बीच में केवल अपराध की सजा पाने के डर से पागल कह रहा है।

महाशय, यह दलील इतनी लचर है कि मैं ज्यादा बकवास करके आपका समय नष्ट नहीं करना चाहता। आप स्वयं निश्चय कर सकते हैं कि उसका क्या मूल्य है। मित्र ने यह आधार लेकर जवानी, प्रलोभन, आदि के विषय में बहुत कुछ कहा है और बडे

सुन्दर शब्दों में कहा है। परन्तु मैं केवल इतना ही याद दिलाता हूँ कि मुलजिम ने जो अपराध किया है कानून की दृष्टि से बहुत भारी अपराध है। साथ ही इस मामले में कुछ और भी विचार करने की बात है। जैसे मुलजिम का अपने साथ के निर्दोषी क्लर्क पर शक करवाने की कोशिश करना, दूसरे की ब्याही हुई औरत के साथ रिश्ता रखना 'इत्यादि। इन सब बातों से आपके लिए इस सफाई को अधिक महत्त्व देना कठिन हो जायगा। सारांश यह कि मैं आपसे मुलजिम को दोषी स्वीकार करने की प्रार्थना करता हूँ, जो इन सारी बातों को देखते हुए आपके लिए लाजिम हो गई है।

(दृष्टि को जज और जूरी की ओर से फेरकर, फाल्डर की ओर घुमाता है, फिर बैठ जाता है।)

जज — (जूरी की ओर कुछ झुककर और हाकिमाना अंदाज़ से) जूरीगण, आपने गवाहों के बयान और उन पर जिरह सुन ली है। मेरा काम केवल यही है कि मैं आपके सामने वह तनकीहें रख दूँ जिन पर आपको विचार करना है। यह बात तो स्वीकार कर ही ली गई है कि चेक और मुसन्ने के अंकों को मुलजिम ने बदला। अब सफाई यह दी गई है कि मुलजिम ने जब यह अपराध किया, उस समय वह अपने होश-हवास में न था। जहाँ तक पागलपन की बात है आपने मुलजिम का सारा किस्सा और दूसरे गवाहों के

बयान भी सुन लिए। अगर इन बातों से आप इस नतीजे पर पहुंचे कि जाल करते वक्त मुलजिम पागल था तो आप यही कह सकते हैं कि मुलजिम अपराधी है, लेकिन वह पागल था। और यदि आपको यह विश्वास हो कि मुलजिम का दिमाग ठीक था। (याद रखिए पूरा पागल होना ज़रूरी है) तो आप उसे अपराधी ठहराएँगे। उसके मन की दशा के विषय में जो शहादतें हैं, उन पर विचार करते समय आप बहुत होशियारी से जालसाजी के पहिले और पीछे मुलजिम के रंग-ढंग और चाल-ढाल पर ध्यान रक्खें। खुद मुलजिम की, उस औरत की, कोकसन की, और कैशियर की शहादतों से क्या सिद्ध होता है? इस विषय में मैं आपको यह भी याद दिलाना चाहता हूँ कि मुलजिम ने कबूल किया है कि टी वाई और सिफ़र को जोड़ने की बात चेक हाथ में आते ही उसके मन में आ गई थी। मुसन्ने के बदलने के बाद उसका आचरण कैसा था इसे भी ध्यान में रखिए। इन सब बातों का पूर्व-निश्चय के प्रश्न से जो सम्बन्ध है वह खुला हुआ है। और पूर्व-निश्चय स्वस्थ दशा में ही हो सकता है। उसकी उम्र और चित्त की चंचलता इत्यादि बातों पर विचार करके आपको उसके साथ रियायत करने की जरूरत नहीं। यदि आप उसे दोषी के साथ पागल निर्णय करें, तो यह सोच देखें कि वह पागलपन

उसका उस लायक था या नहीं कि उस वक्त वह पागलखाने भेज दिया जाता।

(वह रुक जाता है, फिर जूरी के मेम्बरों को दुविधे में पड़ा हुआ देखकर कहता है।)

अब आप चाहें तो अलग जा सकते हैं।

(जज के पीछे के दरवाजे से जूरी चले जाते हैं, जज कुछ कागजों को सिर झुकाकर देखने लगता है, फाल्डर अपने कठघरे से झुककर अपने वकील से घबड़ाए हुए स्वर में रुथ की ओर संकेत कर कुछ बात करता है। वकील उसे सुनकर फ्रोम से कहता है।)

फ्रोम — (उठकर) हुजूर, मुलजिम ने मुझे आपसे यह अर्ज करने को कहा है कि आप कृपा करके रिपोर्टरों से कह दें कि वे अख़बार में उस गवाह औरत का नाम इस मामले की कार्यवाही की रिपोर्ट में न छापें। शायद हुजूर समझ सकते हैं कि नतीजा उसके लिए कितना बुरा हो सकता है।

जज — (चोट करते हुए हलकी सी मुस्कराहट के साथ) लेकिन मिस्टर फ्रोम, आप इन बातों को जानते हुए भी उसे यहाँ लाए हैं न?

फ्रोम — (सन्देह के साथ सिर झुकाकर) क्या हुजूर समझते हैं कि और किसी प्रकार मैं मामले को साफ-साफ पेश कर सकता था?

जज — हूँ! खैर!

फ्रोम — हुजूर, दरअसल उस पर बड़ी भारी आफ़त आ जायगी।

जज — यह कोई कारण नहीं है कि मैं आपकी बात पर ध्यान दूँ।

फ्रोम — हुजूर, इतनी दया करें। मैं यकीन दिलाता हूँ, कि मैं अत्युक्ति नहीं कर रहा हूँ।

जज — गवाह के नाम को छुपा रखना मेरे नियम के विरुद्ध है।

(फाल्डर की ओर देखता है, जो हाथ मलता रहता है, फिर रुथ की ओर देखता है, जो स्थिर बैठी हुई फाल्डर की ओर देखती है।)

मैं आपकी बात पर विचार करूँगा। मैं सोचूँगा, क्योंकि मुझे यह भी देखना है कि यह औरत कहीं कैदी के लिए झूठी गवाही देने न आई हो।

फ्रोम — हुजूर, मैं सच —

जज — ठीक है, मैं अभी कोई ऐसी बात नहीं कह रहा हूँ। मिस्टर फ्रोम, अभी इस बात को छोड़िए।

(बात ख़तम होते ही जूरी लौटते हैं और अपनी जगह पर बैठते हैं।)

अहलमद — जूरीगण, क्या आप सब की राय मिल गई है?

फोरमैन — हाँ, मिल गई है।

अहलमद — क्या आपने उसे दोषी निर्णय किया है, या दोषी के साथ पागल भी?

फोरमैन — दोषी।

(जज प्रसन्न होकर सिर हिलाता है, फिर कागजों को हिला कर . फाल्डर की ओर देखता है जो चुपचाप स्थिर भाव से बैठा है।)

फ्रोम — (उठकर) हुजूर का हुक्म हो तो आप से उसकी सजा कुछ कम करने के लिए अर्ज करूँ। जूरी से तो मैं उसकी उम्र और यह काम करते समय उसके मन की चंचलता के विषय में जो कुछ कहना था, कह चुका। उसके उपरान्त हुजूर से कुछ और कहने की जरूरत मैं नहीं समझता।

जज — मेरा तो ऐसा ही खयाल है।

फ्रोम — अगर हुजूर ऐसा फरमाते हैं, तो मैं केवल इतना ही अर्ज करूँगा कि हुजूर सजा देते वक्त मेरी अर्ज का खयाल रक्खें।

जज — (क्लर्क से) कैदी को आवाज दो।

क्लर्क — मुलजिम! सुनो तुम्हारे ऊपर जालसाजी करने का अपराध लगाया गया है। क्या तुम्हें इस विषय में कुछ कहना है कि अदालत से तुम्हें कानून के मुताबिक सजा क्यों न दी जाय? (फाल्डर सिर हिलाकर 'नहीं' कहता है।)

जज — विलियम फाल्डर, तुम्हारा विचार अच्छी तरह किया गया और तुम्हारे ऊपर जालसाजी का अपराध सिद्ध हुआ है, और मेरी राय में ठीक सिद्ध हुआ है।

(कुछ ठहरकर कागज देखता है और कहता है।)

तुम्हारी ओर से यह सफाई दी गई थी कि यह अपराध करते समय तुम अव्यवस्थित थे, और इसलिए इस काम के लिए तुम जिम्मेदार नहीं कहे जा सकते। मैं खयाल करता हूँ कि यह केवल उस प्रलोभन का प्रत्यक्ष रूप दिखाने की एक चाल थी, जिसने तुम्हें चंचल कर दिया, क्योंकि तुम्हारे विचार के प्रारम्भ से ही तुम्हारे वकील ने एक प्रकार से केवल दया की प्रार्थना की है। यह सफाई पेश करने से इतना जरूर हुआ कि उन्हें ऐसी गवाहियाँ दिलाने का अवसर मिला जो उस विचार से ध्यान देने योग्य हैं। यह कार्यवाही उचित थी या नहीं थी, दूसरी बात है। उन्होंने तुम्हारे बारे में कहा है कि तुम्हें अपराधी नहीं, मरीज समझना चाहिए। और उनकी इस दलील का जिसका अन्त दया

की एक मर्मस्पर्शी प्रार्थना पर हुआ, तत्त्व क्या है? यही कि हमारी न्यायपद्धति दूषित है और पापवृत्ति को सुधारने के बदले उसको पुष्ट और पूर्ण करती है। इस प्रार्थना को कितना महत्त्व देना चाहिए इस विषय में कई बातें विचारणीय हैं। पहले तो तुम्हारे अपराध की गुरुता है। किस चालाकी के साथ तुमने मुसन्ने को बदला, किस कमीनापन से एक निर्दोषी के सिर अपराध मढ़ने की कोशिश की। और यह मेरे खयाल में एक बहुत बड़ी बात है। और सबसे बड़ी बात यह है कि मुझे दूसरों को तुम्हारा उदाहरण दिखाकर ऐसे कामों से रोकना है। दूसरी ओर यह भी विचार करना है कि तुम कम उम्र हो।

इसके पहिले तुम्हारा चाल-चलन हमेशा अच्छा रहा है। और जैसा कि तुम्हारे और तुम्हारे गवाहों के बयान से मालूम होता है कि तुम यह काम करते वक्त कई कारणों से कुछ अस्थिरचित्त भी थे। तुम्हारे प्रति और समाज के प्रति जो मेरा कर्तव्य है उसके अन्दर रहते हुए मेरी पूरी इच्छा है कि मैं तुम पर दया का व्यवहार करूँ। और यह मुझे इन बातों की याद दिलाता है जिनके आधार पर ही मुआमले का विचार किया जा सकता है। तुम वकील के दफ्तर में क्लर्क का काम करते हो यह इस मामले में एक बड़ी भारी बात है। यह तुम किसी प्रकार भी नहीं कह सकते कि तुम्हें अपराध की भीषणता या उसके दंड का पूरा

ज्ञान नहीं था। हाँ, यह कहा गया है, कि तुम्हारे मनोभावों ने तुम्हें अस्थिर बना दिया था। हनीविल से जो तुम्हारा रिश्ता था उसका वृत्तान्त आज कहा गया है, इसी वृत्तान्त पर सफाई और दयाप्रार्थना दोनों ही का आधार रक्खा गया है। दया की प्रार्थना केवल उसी पर से की गई है। अच्छा, अब वह वृत्तान्त क्या हैं। तुम एक युवक हो और वह एक विवाहिता युवती है, यद्यपि उसका विवाहित जीवन दुःखी है। तुम दोनों का आपस में प्रेम हो गया। तुम दीनों कहते हो कि वह सम्बन्ध अपवित्र और कलुषित नहीं था। मैं नहीं जानता कि यह बात कहाँ तक सच है। फिर भी तुम स्वीकार करते हो कि शीघ्र ही वह होने वाला था। तुम्हारे वकील ने इस बात पर पर्दा डालने के लिए यह कहा है कि उस औरत की अवस्था बड़ी करुण थी। मैं अपनी राय इस विषय में नहीं देना चाहता। मैं इतना जानता हूँ कि वह एक विवाहिता स्त्री है, और यह खुली हुई बात है कि तुमने यह अपराध एक भ्रष्ट संकल्प को पूरा करने के लिए किया। इच्छा होने पर भी मैं दया प्रार्थना का अनुमोदन नहीं कर सकता, जिसका आधार सदाचार के विरुद्ध है। तुम्हारे वकील ने यह भी कहा है कि तुमको और अधिक कैद की सजा देना तुम्हारे प्रति अविचार होगा। मैं उनके इस कथन से सहमत नहीं हूँ। कानून जो है वही रहेगा। कानून एक विशाल भवन है जो हम सबकी रक्षा

करता है, और जिसका हर एक पत्थर दूसरे पत्थर पर अवलम्बित है। मैं केवल इसका व्यवहार करने वाला हूँ। तुमने जो अपराध किया है वह बड़ा भारी है। इस हालत में कर्तव्य की ओर दृष्टि रखकर हृदय में तुम्हारे प्रति जो दया की इच्छा है, वह मैं पूरी नहीं कर सकता। तुम्हें तीन साल की सख्त सजा भोगनी पड़ेगी।

(फाल्डर जो अब तक व्यग्रता के साथ जज की वक्तृता को सुन रहा था, अपनी छाती पर सिर झुका लेता है। जैसे ही वार्डर उसे ले जाने लगते हैं रुथ अपनी जगह पर खड़ी होती है। अदालत में गोलमाल होने लगता है।)

जज — (रिपोर्टरों से) प्रेस के महोदयगण, आज के मामले में जिस औरत ने गवाही दी है उसका नाम कागजों में जाहिर न हो।

(रिपोर्टर लोग सिर झुकाकर स्वीकार करते हैं।)

जज — (रुथ से जो उसकी ओर देख रही है) तुम समझ गई न? तुम्हारा नाम जाहिर न होगा।

कोकसन — (रुथ की आस्तीन पकड़कर) जज आपसे कुछ कह रहे हैं।

(रुथ जज की ओर देखती है और चली जाती है।)

जज — आज मैं अभी और बैठूँगा। दूसरा मामला पेश करो। अहलमद जान वूली को आवाज दो।

अहलमद — (वार्डर से) जान वूली वाले गवाह हाजिर हैं?

वह आवाज देता है — जान वूली वाले गवाह हाजिर हैं?

(पर्दा गिरता है।)

अंक 3

पहला दृश्य

[जेलखाने में मामूली तरह से सजा हुआ एक कमरा, जिसमें दो बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ हैं। खिड़कियों में छड़ लगी हुई है, जिनमें से कैदियों वे कसरत करने का आंगन दिखाई दे रहा है। वहाँ कैदी पीले कपड़े पहिने हुए दिखाई देते हैं। उनके कपड़ों पर तीर का निशान लगा हुआ है। सिर पर पीली मुंडी टोपी है। वे सब एक क़तार में चार-चार गज के फासले से सफेद और टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों पर तेजी से चलते दिखाई देते हैं जो आंगन के फर्श पर बनी हैं। दो' सिपाही नीले रंग का कपडा पहिने हुए, तलवार लिए

बीच में खड़े हैं। उनकी टोपी के सामने थोड़ा-सा हिस्सा निकला हुआ है। कमरे की दीवारें रंग से पुती हुई हैं। कमरे में किताब रखने का एक आला है जिसमें सरकारी ढंग की किताबें रक्खी हैं। दोनों खिड़कियों के बीच एक अलमारी है। दीवार पर जेलखाने का एक नक्शा लटक रहा है। एक लिखने की मेज पर सरकारी कागजात रखे हैं। यह क्रिसमस की संध्या है। दारोगा साफ़ रोबदार आदमी है। कतरी हुई छोटी मूँछें हैं। मुल्लाओं की-सी आँखें, बाल खिचड़ी हो गए हैं, और कनपट्टी से फिरे हुए हैं। मेज के पास खड़ा एक आरी को देख रहा है, जो किसी धातु की बनी हुई है। जिस हाथ में वह उसे पकड़े हुए है उसमें दस्ताना है, क्योंकि उसके हाथ की दो उंगलियां गायब हैं। प्रधान वार्डर वुडर लम्बा और दुबला है, और पलटनिया मालूम होता है। उसकी उम्र साठ वर्ष की है। मूँछे सफेद हैं। बन्दर की-सी उदास आँखें हैं। गवर्नर से दो क़दम की दूरी पर मुस्तैदी से खड़ा है।]

दारोगा — (रूखी और हलकी मुस्कराहट के साथ) बड़े आश्चर्य की बात है, मिस्टर वुडर! तुम्हें यह कहाँ मिली?

वुडर — उसकी चादर के नीचे, साहब। ऐसी बात दो वर्ष से नज़र नहीं आई।

दारोगा — (आश्चर्य से) कोई सधी-बधी बात थी क्या?

वुडर — उसने अपनी खिड़की की गराद इतनी काट डाली है।

(अंगूठे और उंगली को एक चौथाई इंच अलग करके उठाता है।)

दारोगा — मैं दोपहर को उससे मिलूँगा, उसका नाम क्या है? मोनी, शायद कोई पुराना आसामी है।

वुडर — हाँ, साहब! यह चौथी बार सजा भुगत रहा है। ऐसे पुराने खिलाडी को तो ज्यादा समझ से काम लेना चाहिए था।

(करुणाभाव से।)

कह रहा था, मन बहलाता था। कहीं घुस गए, कहीं से निकल आए। सब इसी धुन में पड़े रहते हैं।

दारोगा — दूसरे कमरे में कौन रहता है?

वुडर — ओक्लियरी, हुजूर!

दारोगा — अच्छा, वह आइरिश मैन?

वुडर — उसके दूसरे कमरे में रहता है वह युवक फाल्डर, सभ्य श्रेणी का। उसके बाद बूढा क्लिपटन।

दारोगा — हाँ, वह दार्शनिक। मैं उससे मिलूँगा। उसकी आँखों के बारे में पूछना है।

वुडर — कुछ अक्ल काम नहीं करती। ऐसा मालूम होता है कि अगर एक भागने की कोशिश करता है, तो बाकी सबों को इसकी खबर हो जाती है। सभी भागने पर उतारू हो जाते हैं। खूब हलचल मच रही है।

गवर्नर — (विचार करके) यह हलचल बुरा है।

(कैदियों को कसरत करते देखता हुआ।)

वहाँ तो सब के सब बड़े शान्त मालूम होते हैं।

वुडर — उस आइरिशमैन ओक्लियरी ने आज दरवाजे पर धक्का देना शुरू किया। बिलकुल जरा-सी बात उनमें खलबली डाल देने को काफी है। वे कभी-कभी सब बे-जबान जानवरों से हो जाते हैं।

दारोगा — घोडों में बादल गरजने ने पहले यह बात-औने देखी है। सवारों की कतारों को चीरते हुए निकल जाते थे।

(जेल का पादरी आता है। बाल काले हैं, वैराग्य का भाव है,

गिर्जे के कपड़े पहिने हैं। चेहरा बहुत गम्भीर, होंठ कुछ जकड़े हुए। धीरे से सभ्य भाषा में बात करता है।)

दारोगा — (आरा दिखाकर) इसे देखा तुमने, मिलर?

चैपलेन — काम की चीज मालूम होती है।

दारोगा — अजायबघर में भेजने लायक है।

(अलमारी के पास जाकर उसे खोलता है और उसमें पुरानी रस्सियों के टुकड़े, कीलें और धातुओं के बने हुए औजार नज़र आते हैं। उनमें कागज के पर्चे बंधे हुए हैं।)

अच्छा, धन्यवाद मिस्टर वुडर, तुम जा सकते हो।

वुडर — (सलाम करके) जो हुक्म।

(चला जाता है।)

दारोगा — क्यों मिस्टर मिलर-दो तीन दिन में यह क्या हो गया है? सारे जेल की हवा बिगड़ी हुई है।

चैपलेन — मुझे तो कुछ नहीं मालूम।

दारोगा — खैर, जाने दो। कल यहीं भोजन कीजिए न?

चैपलेन — बड़ा दिन है, अनेक धन्यवाद।

दारोगा — आदमियों की हलचल मुझे परेशान कर देती है।

(आरे को देखते हुए।)

इस शैतान को भी सजा देनी पड़ेगी। जो भागने की कोशिश करता है उस पर सख्ती करने का जी नहीं चाहता।

(आरे को जेब में रख लेता है, और अलमारी में भी ताला बन्द करता है।)

चैपलेन — बाज-बाज बला के हठीले और शरीर होते हैं। बिना सख्ती के कुछ नहीं किया जा सकता।

दारोगा — क्यो भी तो कोई नतीजा नहीं। गोल्फ के लिए जमीन बहुत कड़ी है, क्यों?

(वुडर फिर भीतर आता है।)

वुडर — एक आदमी आपसे मिलना चाहते हैं, महाशय! मैंने उनसे कहा ऐसा कायदा नहीं है।

दारोगा — क्या चाहता है?

वुडर — कहिए तो विदा कर दूँ।

दारोगा — (मजबूरी से) नहीं, नहीं, बुलाओ। तुम बैठो, मिलर।

(वुडर किसी को आने के लिए इशारा करता है, और उसके भीतर आते ही वह चला जाता है। मिलने वाला कोकसन है, वह घुटने

तक मोटा ओवरकोट पहिने है। हाथ में ऊनी दस्ताने हैं। ऊँची टोपी लिये हुए है।)

कोकसन — मुझे आपको कष्ट देने का खेद है। लेकिन मुझ एक युवक के बारे में कुछ कहना है।

दारोगा — यहाँ तो बहुत से युवक हैं।

कोकसन — फाल्डर नाम है। जालसाजी में। (अपने नाम का कार्ड दारोगा को देकर) जेम्स एण्ड वाल्टर हो या कार्यालय वकालत के लिए मशहूर है।

दारोगा — (मुस्कराहट के साथ कार्ड लेते हुए) आप किसलिए मुझसे मिलना चाहते हैं?

कोकसन — (अकस्मात् कैदियों की कवायद देखकर) कैसा दृश्य है।

दारोगा — हाँ, हमारे यहाँ से अच्छी तरह दिखाई देता है। मेरे दफ्तर की मरम्मत हो रही है।

(टेबिल के पास बैठकर।)

हाँ, कहिए।

कोकसन — (मानो कष्ट के साथ अपनी दृष्टि को कैदियों की ओर फेरकर) मैं आपसे दो एक बात करना चाहता हूँ। मुझे अधिक देर लगेगी।

(धीरे से) बात यह है कि मैं कायदे से तो यहाँ नहीं आ सकता। परन्तु उसकी बहन मेरे पास आई थी। बाप-माँ तो कोई है ही नहीं। वह बहुत घबराई हुई थी। मुझसे बोली मेरे पति तो मुझे उससे मिलने जाने नहीं देते। कहते हैं उसने कुल में कलंक लगाया है। दूसरी बहन बिलकुल चलने-फिरने से लाचार है। उसने मुझसे आने के लिए कहा। मुझे भी उस युवक से प्रेम है। मेरा ही मातहत था। मैं भी उसी गिर्जे में जाया करता हूँ। इसलिए मैं इनकार न कर सका।

दारोगा — लेकिन खेद है, उसे किसी से मिलने का हुकुम नहीं है। वह यहाँ केवल एक मास की काल कोठरी के लिए आया है।

कोकसन — मैं उससे उस समय एक बार मिला था जब वह हवालात में बन्द था और उसका मामला चल रहा था। बेचारे के आगे-पीछे कोई नहीं है।

दारोगा — (कुछ प्रसन्न होकर) मिलर जरा घंटी तो बजाओ।

(कोकसन से।)

क्या आप सुनना चाहते हैं कि डाक्टर उसके बारे में क्या कहते हैं?

चैपलेन — (घंटी बजाकर) मालूम होता है कि आप जेलखाने में बहुत कम जाते हैं।

कोकसन — हाँ, लेकिन देखकर दुःख होता है, वह अभी बिल्कुल युवक है। मैंने उससे कहा — 'धीरज रखो!' हाँ, यही कहा था। 'धीरज' उसने जवाब दिया। 'एक दिन अपने को कमरे में बन्द कर्‌के मेरी ही भाँति सोचिए और कलपिए तो मालूम हो। बाहर का एक दिन यहाँ के एक वर्ष के समान है। मैं क्या करूँ?' उसने फिर कहा, 'मैं कोशिश करता हूँ, मिस्टर कोकसन, परन्तु अपनी आदत से लाचार हूँ।' फिर हाथों से मुँह ढाXप कर वह रोने लगा। मैंने देखा उंगलियों के बीच में से होकर आँसू टपक रहे थे। मैं तो तड़प उठा।

चैपलेन — वही युवक है न जिसकी आँखें कुछ अजीब तरह की हैं। चर्च आफ इंग्लैंड का नहीं मालूम होता।

कोकसन — नहीं।

चैपलेन — जानता हूँ।

दारोगा — (वुडर से जो भीतर आया है) डाक्टर साहब से कहो कि कृपा करके एक मिनट के लिए मुझसे आकर मिल लें।

(वुडर सलाम करके चला जाता है।)

उसकी शादी तो नहीं हुई है।

कोकसन — नहीं।

(गुप्त भाव से।)

लेकिन एक औरत है, जिसे वह बहुत चाहता है, ठीक वेश्या नहीं है। बड़ी करुण कहानी है।

चैपलेन — अगर दुनिया में शराब और औरत न होती, तो जेलखाने ही न होते।

कोकसन — (चश्मे के ऊपर से चैपलेन का देखता हुआ) हाँ, लेकिन मैं विशेषकर वही बात आपसे कहने आया हूँ। यह चिन्ता उसे मारे डालती है।

दारोगा — अच्छा!

कोकसन — बात यह है कि उस औरत का पति बड़ा ही बदमाश है और वह उसे छोड़ बैठी है। वह उस युवक के साथ ही भाग जाने का इरादा करती है। यह बात अच्छी नहीं है। लेकिन मैंने इस पर ध्यान नहीं दिया। जब मुक़दमा खत्म हो गया, तो उसने

कहा....कि अलग रहकर अपना पेट चलाऊँगी और जब तक वह सजा काटकर बाहर न आए, उसके नाम पर बैठी रहूँगी। उसको इस बात से बड़ी भारी शान्ति मिली थी। लेकिन एक महीने बाद वह मुझको मिली। मुझसे उससे जान पहिचान नहीं है। पर बोली — 'अपनी बात तो दूर है, मैं अपने बच्चों तक का पालन नहीं कर सकती। मेरे कोई मित्र नहीं है। मैं ज्यादा किसी से मिल-जुल भी नहीं सकती। उससे मेरे पति को मेरा पता लग जाने का डर है। मैं बिलकुल दुबली हो गयी हूँ।' दरअसल वह दुबली हो गई है। 'अबे शायद मुझे किसी कारखाने में जाना पड़ेगा।' यह बड़ी दुःख भरी कहानी है। मैंने कहा, 'नहीं, कहीं न जाना पड़ेगा। मेरे घर पर मेरी स्त्री है, बच्चे हैं। यदि उन्हें भोजन मिलेगा तो तुमको भी क्यों नहीं मिल सकता?' दरअसल वह बड़ी नेक औरत है। उसने जवाब दिया, 'सच? लेकिन मैं आपसे यह नहीं कह सकती। इससे तो अच्छा है, कि मैं अपने पति के पास लौट जाऊँ।' यद्यपि मैं जानता हूँ कि उसका पति एक शराबी तथा पशु के समान अत्याचारी आदमी है फिर भी मैंने उसे पति के पास जाने को मना नहीं किया।

चैपलेन — आप कैसे कर सकते थे?

कोकसन — हाँ, लेकिन उसके लिए मुझे दुःख है। युवक को अभी तीन साल सजा भुगतनी है। मैं चाहता हूँ वह कुछ आराम से रहे।

चैपलेन — (कुछ चिढ़कर) कानून आपके साथ बिलकुल सहमत नहीं।

कोकसन — वह बिलकुल अकेला है, मुझे डर है वह पागल न हो जाय। भला ऐसा कौन चाहता होगा? मुझे जब उसने देखा तो रोने लगा, मुझसे किसी का रोना देखा नहीं जाता।

चैपलेन — यह बहुत ही कम देखा गया है, कि कैदी किसी को देखकर रोने लगे।

कोकसन — (उसकी ओर ताकता हुआ यकायक जामे से बाहर होकर) मेरे घर कुत्ते भी हैं।

चैपलेन — अच्छा!

कोकसन — हाँ, और मैं कह सकता हूँ कि मैं कभी उन्हें हफ्तों तक अकेले बन्द नहीं रख सकता। चाहे वह मुझे टुकड़े-टुकड़े कर डालें।

चैपलेन — मगर अपराधी तो कुत्ते नहीं हैं। उनमें धर्म-अधर्म का ज्ञान होता है।

कोकसन — लेकिन उसको समझाने का यह ढंग नहीं है।

चैपलेन — खेद है हम आप से एक-मत नहीं हो सकते।

कोकसन — कुत्तों में भी यही बात है, आप उनसे दया का व्यवहार करेंगे तो वे आपके लिए सब कुछ करेंगे। मगर उनको अकेले बन्द कर रखिए। आप देखेंगे वे झल्ला उठेंगे।

चैपलेन — मगर इतना आप जरूर स्वीकार करेंगे, जो आपसे ज्यादा अनुभव रखते हैं वह जानते हैं कि कैदियों से किस तरह व्यवहार किया जाय।

कोकसन — (हठ करके) मैं इस बेचारे युवक को जानता हूँ। मैं उसे वर्षो से देखता आ रहा हूँ। वह कुछ दिल का कमजोर है। उसका बाप भी क्षय से मरा था। मैं केवल उसके भविष्य की बात सोच रहा हूँ। अगर उसको काल कोठरी में रक्खा जायगा जहाँ कुत्ता-बिल्ली तक उसके साथी नहीं हैं, तो उसके स्वास्थ्य को जरूर नुकसान पहुँचेगा। मैंने उससे पूछा था कि 'तुम्हें क्या कष्ट है?' उसने जवाब दिया, 'यह मैं आपसे ठीक बयान नहीं कर सकता, मिस्टर कोकसन, लेकिन कभी-कभी जी चाहता है कि अपना सिर दीवार पर पटक दूँ।' कितनी भयानक बात है।

(उसकी बात के बीच में ही डाक्टर भीतर आते हैं। उनका 'कद मझोला है, खूबसूरत भी कहा जा सकता है, आँखें तेज हैं, खिड़की पर झुककर खड़े होते हैं।)

दारोगा — यह महाशय कह रहे हैं कि एकांतवास से उच्च श्रेणी के नंबर तीन हजार सात वही दुबला सा युवक...फाल्डर की दशा बिगड़ रही है। आपकी क्या राय है डाक्टर क्लेमेंट?

डाक्टर — हाँ, वह जरूर ऊब गया है। परन्तु उसके स्वास्थ्य में तो कोई खराबी नहीं आई है। केवल एक महीना तो है।

कोकसन — लेकिन यहाँ आने के पहिले तो उसे हफ्तों रहना पड़ा था।

डाक्टर — यह तो जानी-बूझी बात है। यहाँ उसका वजन कुछ नहीं घटा है।

कोकसन — लेकिन मेरा मतलब उसके दिमाग से है।

डाक्टर — उसका दिमाग भी दुरुस्त है। कुछ घबड़ाया-सा ज़रूर रहता है। परन्तु और कोई शिकायत नहीं है। मैं उसके विषय में सावधान हूँ।

कोकसन — (लाजवाब होकर) मुझे यह सुनकर बड़ी खुशी हुई।

चैपलेन — (सज्जनता के साथ) यही एक ऐसा वक्त है कि हम उसके दिल पर कुछ असर डाल सकते हैं। मैं अपने निज की दृष्टि से कहता हूँ।

कोकसन — (दारोगा की ओर भौचक्केपन से देखकर) मैं आपसे शिकयत नहीं करना चाहता, परन्तु मेरे खयाल में यह अच्छी बात नहीं।

दारोगा — मैं खुद जाकर आज उसे देखूँगा।

कोकसन — इसलिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। मेरा खयाल है कि रोज देखते रहने से शायद आपको कुछ पता न लगे।

दारोगा — (कुछ तीखेपन से) अगर उसके स्वास्थ्य में कुछ भी खराबी मालूम हुई तो मामला फौरन आगे भेज दिया जावेगा, इसका काफी प्रबन्ध है।

(वह उठता है।)

कोकसन — (अपनी ही धुन में) यह बात अवश्य है कि जो बात आँख से नहीं देखी जाती उसके लिए कष्ट नहीं होता। परन्तु मैं उधर से निश्चिन्त हो जाना चाहता हूँ।

दारोगा — आप उसे हमारे ऊपर छोड़ दीजिए।

कोकसन — (नम्र और विनीत भाव से) शायद आप मेरा आशय समझ गए हों। मैं सीधा-सादा आदमी हूँ। अफ़सर के विरुद्ध मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

(चैपलेन की ओर झुककर।)

बुरा न मानिएगा। गुडमार्निंग।

(जब वह चला जाता है, तब तीनों कर्मचारी एक दूसरे की ओर नहीं देखते। लेकिन उनके चेहरे पर एक विचित्र भाव छा जाता है।)

चैपलेन — हमारे इन मित्र का खयाल है कि जेल अस्पताल है।

कोकसन — (अकस्मात् लौटकर बड़े ही विनीत भाव से) एक बात और है, वह औरत — मेरे खयाल में आपसे यह कहना उचित न होगा, अगर आवे तो उसे इससे मिला दीजिएगा। इससे दोनों निहाल हो जायँगे। वह उसी का ध्यान कर रहा होगा। माना वह उसकी बीवी नहीं है, लेकिन किसी बात का खटका नहीं है। बेचारे दोनों बड़े ही दुःखी हैं। आप कोई खास रियायत नहीं कर सकते?

दारोगा — (उकताकर) मुझे सचमुच ही दुःख है कि मैं कोई खास रियायत नहीं कर सकता। वह जब तक मामूली जेलखाने में न जाय, तब तक वह किसी से नहीं मिल सकता।

कोकसन — ठीक है। (निराश स्वर से) आपको तकलीफ़ दी, माफ़ कीजिए। फिर बाहर चला जाता है।

चैपलेन — (कंधों को हिलाकर) बड़ा सीधा आदमी है विचारा। चलो क्लेमेंट खाना खा लो।

(वह और डाक्टर बातें करते जाते हैं।)

दारोगा एक लम्बी सांस लेकर टेबिल के पास कुर्सी पर बैठ जाता है और क़लम उठा लेता है।

(परदा गिरता है।)

दूसरा दृश्य

[जेलखाने की पहिली मंजिल के दालान का हिस्सा। दीवारें फीके हरे रंग से गहरे रंग की एक धारी तक रंगी हुई हैं जो मनुष्य के कन्धे की ऊंचाई तक होंगी। इसके ऊपर सफेदी की हुई है।

जमीन काले पत्थरों की बनी हुई है। किनारे पर की एक खिड़की से रोशनी छनकर आ रही है। चार कोठरियों के दरवाजे नज़र आ रहे हैं। आँख की ऊंचाई पर हर एक कोठरी के दरवाजे में एक छोटा झरोखा है जिस पर एक गोल ढंकना लगा है। उसको ऊपर उठाने से कोठरी का भीतरी दृश्य दिखाई देता है। कोठरी के पास ही दीवार पर एक छोटा चौकोर तख्ता लगा है जिस पर कैदी का नाम, नम्बर और हाल लिखा है।

ऊपर दोमंजिले और तिमंजिले के दालानों के लोहे के छज्जे दिखाई दे रहे हैं।

वार्डर (जमादार) एक कोठरी से बाहर निकल रहा है। उसके दाढी है और नीली वर्दी पहिने हुए है। वर्दी पर एक गर्दपोश है, उसमें चाबियाँ लटक रही हैं।]

जमादार — (दरवाजे से कोठरी के अन्दर बोलते हुए) जब यह कर लोगे तो मैं तुम्हें कुछ थोड़ा-सा काम और दूँगा।

ओक्लियरो — (नेपथ्य में आयरिश स्वर में) ठीक है, हुजूर!

जमादार — (दोस्ताना ढंग से) आखिर बैठकर क्या करोगे? कुछ न कुछ करना । ही अच्छा है।

ओक्लियरी — यही तो मैं सोचता हूँ।

(कोठरियों के बन्द होने और ताला पड़ने का शब्द सुनाई देता है। फिर किसी के पैरों की आवाज़ सुनाई देती है।)

जमादार — (गला कुछ बदलकर जल्दी से) देखो, अच्छी तरह काम करो।

(कोठरी का दरवाजा बन्द करता है और तनकर खड़ा होता है। दारोगा आता है, पीछे-पीछे वुडर है।)

दारोगा — कोई नई बात?

जमादार — (सलाम करके) नंबर तीन हजार सात।

(एक कोठरी की ओर इशारा करके।)

काम में पीछे है। उसको आज नम्बर नहीं मिल सकता।

(दारोगा सिर हिलाता है और आखिरी कोठरी के पास जाता है। जमादार चला जाता है।)

दारोगा — इन्हीं महाशय ने आरी बनायी है न?

(जेब में से आरी निकालता है, वुडर कोठरी का दरवाजा खोलता है, कैदी सिर पर टोपी दिए बिछौने पर सीधा लेटा नज़र आता है। वह चौंक पड़ता है और कोठरी के बीच में खड़ा हो जाता

है। वह दुबला आदमी है, उम्र छप्पन वर्ष की, कान चमगादड़ के-से, डरावनी घूरती हुई और कठोर आँखें हैं।)

वुडर — टोपी उतारो।

(मोनी टोपी उतारता है।)

बाहर आओ।

(मोनी दरवाजे के पास आता है।)

दारोगा — (उसे दालान में निकल आने का इशारा करके जेब में से आरी निकालकर उसे दिखाते हुए इस ढंग से बोलता है जैसे कोई अफ़सर सिपाही से बात कर रहा हो।) इसके बारे में कुछ कहना है? बोलो।

(मोनी चुप रहता है फिर पूछने पर बोलता है।)

मोनी — वक्त काट रहा था।

दारोगा — (कोठरी की ओर इशारा करके) काम कम है, क्यों?

मोनी — उसमें मन नहीं लगता!

दारोगा — (आरी को खटखटाकर) तो इससे अच्छा ढंग सोचना चाहिए था।

मोनी — (मुँह लटकाकर) और कौन सा ढंग था? जब तक मैं यहाँ से निकल न जाऊँ, तब तक मुझे किसी न किसी काम में अपना वक्त काटना पड़ेगा। इस उम्र में और मेरे लिए रक्खा ही क्या है?

(ज्यों-ज्यों जबान हिलती है वह नर्म होता जाता है।)

आपको तो मालूम ही है कि इस मियाद के बाद दो ही एक साल में मुझे फिर लौट आना पड़ेगा। मैं बाहर निकलकर अपनी बेइज्जती न कराऊँगा। जेल को कायदे से दुरुस्त रखने में आपको गर्व है। मुझे भी अपनी इज्जत प्यारी है।

(यह देखकर कि दारोग्रा उसकी बातों को ध्यान से सुन रहा है वह आरी की ओर इशारा करके कहता है।)

कुछ थोड़ा-थोड़ा यह काम भी करता रहूँ तो किसी का क्या बिगड़ता है? पाँच हफ्तों से मैं इसे बना रहा था। शायद बुरा तो नहीं बना। अब शायद काल कोठरी मिलेगी। या सात दिन सिर्फ रोटी और पानी। आपके बस की बात नहीं। मैं जानता हूँ कायदे से आप भी लाचार हैं।

दारोगा — अच्छा, देखो मोनी अगर मैं इस बार तुम्हें माफ कर दूँ तो क्या तुम मुझसे वायदा कर सकते हो कि आगे तुम कभी ऐसा न करोगे? सोचो।

(वह कमरे में घुसता है और उसके सिरे तक चला जाता है। फिर स्टूल पर चढ़कर खिड़की की सलाखों को आजमाता है।)

दारोगा — (लौटकर) क्या कहते हो?

मोनी — (जो सोच रहा था) अभी मुझे छः हफ्ते और यहाँ अकेले रहना है। कैसे मुमकिन है कि मैं बिना कुछ किए चुपचाप रहूँ। कोई चीज जरूर चाहिए जिसमें मेरा मन लगे। आपकी बड़ी दया है। लेकिन मैं कोई वायदा नहीं कर सकता। एक भले आदमी को धोखा नहीं देना चाहता।

(कोठरी की ओर देखकर।)

अगर चार घंटे डटकर और मिलते तो मैं इसे पूरा कर लेता।

दारोगा — तो उससे होता क्या? फिर पकड़ लिए जाते। यहाँ लाए जाते और सजा मिलती। पाँच हफ्ते की सख्त मेहनत करने पर भी कोठरी में बन्द रहना पड़ता। तुम्हारी खिड़की पर एक नई गराद लगा दी जाती। सोचो मोनी क्या यह काम इस लायक है?

मोनी — (कुछ डरावने भाव से) हाँ, है।

दारोगा — (हाथों से भौंहों को खुजाते हुए) अच्छा, दो दिन कोठरी और सिर्फ रोटी और पानी।

मोनी — धन्यवाद!

(वह जानवर की भांति घूमता है और अपने कमरे में घुस जाता है। दारोगा उसकी ओर देखता रहता है, और सिर हिलाता है। वुडर कोठरी को बन्द करके ताला डालता है।)

दारोगा — क्लिप्टन की कोठरी खोलो।

(वुडर क्लिप्टन की कोठरी खोलता है, क्लिप्टन ठीक दरवाजे के पास एक स्टूल पर बैठा हुआ पाजामा सी रहा है। वह नाटा, मोटा और अधेड़ है। सिर मुंडा हुआ। धुँधले चश्मे के पीछे छोटी और काली आँखें मानो बुझ रही हों। वह उठकर दरवाजे में चुपचाप खड़ा हो जाता है और आने वालों को घूरता है।)

दारोगा — (उसको बाहर आने का इशारा कर) ज़रा एक मिनट के लिए बाहर आओ, क्लिप्टन!

(क्लिप्टन एक डरावनी खामोशी के साथ बाहर आता है, सुई-डोरा उसके हाथ में है। दारोगा वुडर से इशारा करता है, वह जांच करने के लिए कोठरी के भीतर जाता है।)

दारोगा — तुम्हारी आँखें कैसी 'हैं?

क्लिप्टन — मुझे उनकी कुछ शिकायत नहीं करनी है। यहाँ सूरज के कभी दर्शन नहीं होते।

(चोरों की तरह कदम उठाकर सिर बढ़ा देता है।)

मैं चाहता हूँ कि आप मेरे इस दूसरे कमरे में महाशय से कुछ कह दें कि वह जरा कुछ चुप 'रहा करें।

दारोगा — क्यों, क्या बात है? मैं चुगली नहीं सुनना चाहता, क्लिप्टन।

क्लिप्टन — मैं नहीं जानता वह कौन है। मुझे तो उसके मारे नींद तक नहीं आती।

(उपेक्षा से)

शायद कोई उच्च (स्टार) श्रेणी का होगा। उसे हमारे साथ नहीं रखना चाहिए।

दारोगा — (शान्त स्वर से) ठीक है, क्लिप्टन, जब कोई कोठरी खाली होगी तब वह हटा दिया जायगा।

क्लिप्टन — सवेरे वह दरवाजों पर धमाधम शब्द करता है, मानो कोई जंगली जानवर हो। मुझे बरदाश्त नहीं होती। मेरी नींद खुल जाती है। शाम को भी यही हाल होता है। यह कोई अच्छी बात नहीं है। आप ही सोच देखिए। नींद के सिवा यहाँ और है क्या? वह मुझे पेट भर मिलनी चाहिए।

(वुडर कोठरी के बाहर आता है। जैसे ही वह आता है, क्लिप्टन चोर की तरह झट से अपनी कोठरी में घुस जाता है।)

वुडर — सब ठीक है, हुजूर!

(दारोगा सिर हिलाता है, वुडर दरवाजे को बन्द कर ताला लगाता है।)

दारोगा — वह कौन है जो सवेरे अपने दरवाजे पर धक्का मार रहा था?

वुडर — (ओक्लियरी की कोठरी के पास जाकर) यह है, साहब।

(वह ढकना उठाकर झरोखे में से भीतर देखता है।)

दारोगा — खोलो।

(वुडर दरवाजा बिल्कुल खोल देता है, ओक्लियरी दरवाजे के पास टेबिल के सामने कान लगाए बैठा हुआ नज़र आता है। दरवाजा खुलते ही वह उछलकर ठीक द्वार पर सीधा खड़ा हो जाता है। उसका चेहरा चौडा है, उम्र अधेड़ है, मुँह पतला, चौड़ी और गालों की ऊँची हड्डियों के नीचे गढ़े हो गए हैं।)

दारोगा — क्या मजाक है, ओक्लियरी?

ओक्लियरी — मजाक, हुजूर! मैंने तो बहुत दिनों से इसे नहीं देखा।

दारोगा — अपने दरवाजे पर धक्के लगाना!

ओक्लियरी — ओ! वह!

दारोगा — यह जनानों का-सा काम है।

ओक्लियरी — और दो महीने से हो क्या रहा है?

दारोगा — कोई शिकायत है?

ओक्लियरी — नहीं हुजूर।

दारोगा — तुम पुराने आदमी हो, तुम्हें सोच समझकर काम करना चाहिए।

ओक्लियरी — यह सब तो सुन चुका हूँ।

दारोगा — तुम्हारे बाद वाले कमरे में एक लौंडा है, वह घबड़ा जायगा।

ओक्लियरी — कभी-कभी सनक सवार हो जाती है, हुजूर। मैं क्या करूँ? हमेशा मन ठिकाने नहीं रहता।

दारोगा — काम तो पसंद है न?

ओक्लियरी — (एक चटाई उठाकर जो वह बना रहा था) यह काम मुझे दिया गया है। मेरे चाहे कोई प्राण ही ले ले, पर यह मुझसे न होगा। ऐसा सड़ियल काम! एक चूहा भी इसे बना सकता है।

9 मुँह बनाकर।)

बस, यही मुझसे नहीं सहा जाता। यही सन्नाटा! जरा-सी कोई भनक कान में आए तो जी हलका हो जाता है।

दारोगा — तुम बाहर किसी दुकान में ही होते, तो क्या बातें करने पाते?

आक्लियरी — संसार की बातचीत तो सुनता।

दारोगा — (मुस्कराकर) अच्छा, अब ये बातें बन्द होनी चाहिए।

ओक्लियरी — अब जबान न खोलूँगा हुजूर।

दारोगा — (घूमकर) सलाम!

ओक्लियरी — सलाम, हुजूर।

(वह कोठरी में जाता है, दारोगा दरवाजा बन्द करता है।)

दारोगा — (चाल-चलन की तख्ती को पढ़कर) इस पाजी से कुछ कहने को जी नहीं चाहता।

वुडर — हाँ, साहब, मुहब्बती आदमी है।

दारोगा — (दालान से निकलने के रास्ते की ओर इशारा करके) वुडर, जाकर डाक्टर को बुला लाओ।

(वुडर उधर चला जाता है।)

(दारोगा फाल्डर की कोठरी की ओर जाता है। वह हाथ उठाकर झरोखे के ढकने को खोलना चाहता है कि अचानक ही सिर हिलाकर हाथ नीचा कर लेता है। फिर चाल-चलन की तख्ती पढ़कर वह दरवाजे को खोलता है। फाल्डर जो दरवाजे के सहारे ही खड़ा हुआ था गिरते-गिरते संभलता है।)

दारोगा — (बाहर आने का इशारा कर) कहो, क्या अब भी तुम शांत नहीं हो सके, फाल्डर?

फाल्डर — (हाँफता हुआ) हाँ, साहब!

दारोगा — मेरा मतलब यह है कि अपने सिर को दीवार पर पटकने से कुछ न होगा।

फाल्डर — जी नहीं!

दारोगा — फिर ऐसा मत किया करो।

फाल्डर — कोशिश करूँगा, हुजूर।

दारोगा — क्या तुम्हें नींद नहीं आती?

फाल्डर — बहुत थोड़ी। दो बजे और उठने के समय के बीच में दिल बहुत घबड़ाता है।

दारोगा — क्यों?

फाल्डर — (उसके ओंठ फैल जाते हैं, जैसे मुस्कराता हो) यह नहीं जानता। मैं कच्चे दिल का आदमी हूँ।

(अचानक वाचाल होकर।)

उस समय सभी बातें मुझे भयानक मालूम होती हैं। कभी-कभी सोचता हूँ कि शायद मैं यहाँ से कभी बाहर नहीं निकलूँगा।

दारोगा — दोस्त यह वहम है। अपने को संभालो।

फाल्डर — (अचानक झुंझलाकर) हाँ, करना ही पड़ेगा।

दारोगा — अपने और साथियों को देखो।

फाल्डर — उनको आदत हो गई है। जी हाँ, शायद मैं भी कुछ दिनों में उन्हीं जैसा हो जाऊँगा।

दारोगा — (कुछ दुःखित होकर) खैर, यह तुम जानो। अच्छा, अब काम में अपना मन लगाने की कोशिश करो। तुम अभी बिलकुल जवान हो। आदमी जैसा चाहे बन सकता है।

फाल्डर — (उत्सुकता से) जी हाँ।

दारोगा — अपने मन को वश में रक्खो। कुछ पढ़ते हो?

फाल्डर — (सिर झुकाकर) मेरी समझ में कुछ आता ही नहीं। मैं जानता हूँ इससे कोई फायदा नहीं। फिर भी बाहर क्या हो रहा है, यह जानने की इच्छा होती है।

दारोगा — क्या कोई घरेलू मामला है?

फाल्डर — जी हाँ।

दारोगा — उन बातों को तुम्हें नहीं सोचना चाहिए।

फाल्डर — (कोठरी की ओर देखकर) यह मेरे बस की बात नहीं है।

(वुडर और डाक्टर को आते देखकर बिलकुल चुप और स्थिर हो जाता है। दारोगा उसे कोठरी में जाने का इशारा करता है।)

फाल्डर — (जल्दी से धीमे स्वर में) मेरा दिमाग बिलकुल ठीक है, साहब।

(कोठरी के भीतर जाता है।)

दारोगा — (डाक्टर से) जाओ और उसे जरा देख आओ, क्लेमेंट।

(डाक्टर के भीतर जाते ही दारोगा दरवाजा को भेड़ देता है, फिर खिड़की की ओर जाता है।)

वुडर — (उनके पीछे-पीछे चलकर) बडे दुःख की बात है कि आपको इन सबों के पीछे इतना कष्ट उठाना पड़ता है। मगर सब आदमी सुखी हैं।

दारोगा — क्या तुम ऐसा सोचते हो?

वुडर — हाँ, साहब, केवल 'बड़े दिन' के कारण सब जरा बेचैन हो उठे हैं!

दारोगा — (अपने ही आप) अजीब बात है।

वुडर — क्या कहा, हुजूर?

दारोगा — बड़ा दिन।

(खिड़की की ओर मुँह फेरता है। वुडर उनकी ओर बड़ी चिंता और दया की दृष्टि से देखता है।)

वुडर — (यकायक) कहिए तो अबकी कुछ धूमधाम ज्यादा की जाय, या आप चाहें तो हाली [1] के और पौधे लगा दिए जाएं।

दारोगा — कोई जरूरत नहीं।

(डाक्टर फाल्डर के कमरे से बाहर आता है, दारोगा उसे इशारे से बुलाता है।)

---

[^1] क्रिसमस में यूरोप में हाली के पौधों से सजावट की जाती है। इसे शुभ समझा जाता है।

दारोगा — कहिए।

डाक्टर — मैं तो कोई खराबी नहीं पाता हूँ। हाँ, कुछ घबड़ाया जरूर है

दारोगा — क्या उसकी हालत की इत्तला देनी चाहिए? सच कहो, डाक्टर।

डाक्टर — बात तो यह है, उसे इस प्रकार एकांत में रखने से कोई फायदा नहीं हो रहा है। परन्तु यह बात तो मैं बहुतों के लिए कह सकता हूँ।

दारोगा — आपका मतलब है कि आपको औरों के लिए भी सिफारिश करनी पड़ेगी।

डाक्टर — कम से कम एक दर्जन के लिए। केवल जरा घबराहट है और कोई बात स्पष्ट नहीं है। यही देखो न।

(ओक्लियरी की कोठरी की ओर इशारा करके।ः

इसकी भी हालत यही है। अगर मैं लक्षणों को छोड़ दूँ तो कुछ भी कर ही नहीं सकता। ईमान की बात तो यह है कि मैं कोई खास रियायत नहीं कर सकता। वजन में कुछ घटा नहीं है। आँखें ठीक हैं, नब्ज भी ठीक है। बातें बिलकुल होश की करता है। और अब एक हफ्ता तो रह ही गया है।

दारोगा — उन्माद का रोग तो नहीं मालूम होता?

डाक्टर — (सिर हिलाकर) यदि आप कहें तो मैं उसके बारे में रिपोर्ट पेश कर सकता हूँ। लेकिन' फिर मुझे औरों के लिए भी रिपोर्ट पेश करनी पड़ेगी [

दारोगा — अच्छा! (फाल्डर की कोठरी की ओर देखते हुए) उस बेचारे को अभी यहीं रहना होगा।

(कहने के साथ कुछ अनमना-सा होकर वुडर की ओर देखता है)

वुडर — आप कुछ कह रहे हैं, हुजूर?

(जवाब के बदले दारोगा उसकी ओर आँखें फाड़कर देखता है। फिर पीछे फिरकर चलने लगता है। किसी धातु की चीज पर कुछ ठोंकने का शब्द सुनाई देता है।)

दारोगा — (ठहरकर) क्या है, मिस्टर वुडर?

वुडर — अपने दरवाजे को पीट रहा है, साहब। अभी शांत होता नहीं जान पड़ता।

(वह जल्दी से दारोगा की बगल से होकर चला जाता है, दारोगा भी धीरे-धीरे उसी ओर जाता है।)

(परदा गिरता है।)

तीसरा दृश्य

[फाल्डर की कोठरी। दीवारों पर सफेदी है, कमरा तेरह फीट चौडी, सात फीट लम्बा है। ऊँचाई नौ फीट है। छत गोल है। जमीन चमकीली, काली ईटों की बनी है। जंगलेदार खिड़की है जिसके ऊपर हवादान है। खिड़की सामने की दीवार के बीचोंबीच बनी है। उसके सामने की दीवार में छोटा-सा दरवाजा है। एक कोने में चादर और बिछावन लपेटा हुआ रक्खा है (दो कम्बल, दो चादरें और एक गिलाफ)। ठीक उसके ऊपर चौथाई गोल लकडी का ताक है, जिस पर बाइबिल और कई धर्मग्रन्थ तले ऊपर मीनार की तरह रक्खे हैं। बालों का काला बुरुश, दांतों का बुरुश, और एक छोटा-सा साबुन भी रक्खा है। दूसरे कोने में लकडी की एक खाट खड़ी रक्खी है। खिड़की के नीचे एक अंधेरा हवादान है और एक दरवाजे के ऊपर भी है। फाल्डर का काम (एक कमीज पर उसे बटन के काज बनाने को दिया गया है।॥ एक खूंटी पर टंगा हुआ है। उसके नीचे एक लकड़ी की मेज पर उपन्यास 'लौना दून' खुला हुआ रक्खा है। कोने में

दरवाजे के पास कुछ नीचे एक वर्ग फुट का मोटा कांच का पर्दा है जो दीवार में लगी हुई गैस की नाली के द्वार को छेके हुए हैं। एक लकडी का स्टूल भी रक्खा है। उसके नीचे जूते रक्खे हैं। खिड़की के नीचे तीन चमकदार टीन के डब्बे जड़े हुए हैं।

दिन शीघ्रता से ढल रहा है। फाल्डर मोजा पहिने हुए दरवाजे से सिर लगाकर (मानो कुछ सुन रहा हो) चुपचाप खड़ा है। वह दरवाजे के कुछ और पास बढ़ता है, पैरों में मोजा रहने के कारण शब्द नहीं होता। वह दरवाजे से सटकर खड़ा होता है। वह खूब कोशिश करता है कि बाहर की कोई बात उसे सुनाई दे जाय। अचानक वह उछलकर सीधा सांस बन्द करके खड़ा होता है मानो किसी की आहट पाई हो। फिर एक लम्बी सांस लेकर वह अपने काम (कमीज) की ओर बढ़ता है और सिर नीचा करके उसे देखता है। सुई लेकर दो एक टांके लगाता है। उसकी मुद्रा से प्रकट होता है कि वह रंज में इतना डूबा है कि हर एक टांका मानो उसमें स्फूर्ति का संचार कर रहा है। फिर यकायक काम छोड़कर वह इस तरह कोठरी में टहलने लगता है जैसे पिंजड़े में जानवर। वह फिर दरवाजे के पास खड़ा होता है, कुछ सुनता है, फिर हथेली को फैलाकर दरवाजे पर रखता है, और माथे को दरवाजे से टेक लेता है। वहाँ से मुड़कर धीरे-धीरे उंगली को दीवार की ऊँची रंगीन लकीर पर फेरता हुआ वह खिड़की के

पास आता है। वहाँ आकर ठहरता है, और टीन के डिब्बे का एक ढकना उठाकर देखता है मानो अपने ही चेहरे का एक साथी बनाना चाहता हो। बहुत कुछ अंधेरा हो गया है। अचानक उसके हाथ से टीन का ढक्कन झन-झन शब्द के साथ गिर पड़ता है। सन्नाटे में इस आवाज से वह कुछ चौंक उठता है। वह उस कमीज की ओर एक नज़र से देखता रहता है जो दीवार पर लटकी हुई है, और अंधेरे में कुछ सफेदी दिखाई- देती है। ऐसा मालूम होता है मानो कोई चीज या किसी आदमी को देख रहा हो। खट से एक आवाज होती है, कमरे के अन्दर की गैस की बत्ती जो शीशे के आइने में है जल.उठती है। कमरे में खूब उजाला होने लगता है, फाल्डर हाँफता हुआ नज़र आता है, अचानक दूर पर कोई शब्द होता है मानो धीरे-धीरे किसी धातु पर कोई चीज ठोकी जा रही हो। फाल्डर पीछे खिसकता है, उससे यह अचानक आने वाला शोर नहीं सुना जाता। परन्तु आवाज बढती जाती है मानो कोई बड़ा ठेला कोठरी की ओर आ रहा हो। फाल्डर मानो इस आवाज से सम्मोहित होता जाता है। वह यकायक इंच दरवाजे की ओर खिसकता है, धम-धम की आवाज कोठरियों को पार करती हुई और भी पास आती जाती है। फाल्डर हाथ हिलाने लगता है मानो उसकी आत्मा इस शब्द से मिल गई हो। फिर वह आवाज मानो कमरे के भीतर घुस

आती है। अकस्मात् वह बंधी हुई मुट्ठी उठाता है, जोर-जोर से हाँफता हुआ वह दरवाजे पर गिर पड़ता है और उसे पीटने लगता है।]

(परदा गिरता है।)

अंक 4

पहला दृश्य

[दो साल गुजर गए हैं। कोकसन का वही कमरा। मार्च का महीना है। दस बजने को दो मिनट बाकी हैं। दरवाजे सब अच्छी तरह खुले हैं। स्वीडिल आफिस को ठीक कर रहा है। उसकी अब छोटी-छोटी मूँछे निकल आई हैं। वह कोकसन के टेबिल को झाड़-पोंछ रहा है। फिर एक ढक्कनदार सिंगार मेज के पास जाता है और ढक्कन को खोलकर शीशे में अपना चेहरा देखता है। ठीक इसी समय रुथ हनीविल बाहर के दफ्तर के भीतर से होकर आती है और दरवाजे के पास खड़ी हो जाती है। उसके चेहरे पर आनन्द के भाव झलक रहे हैं।]

स्वीडिल — (उसको देखते ही उसके हाथ से ढक्कन छूटकर धम्म से गिर पड़ुता है।) अच्छा, आप है!

रुथ — हाँ!

स्वीडिल — अभी तो यहाँ केवल मैं ही हूँ, वे सुबह ही सुबह आकर अपना वक्त खराब नहीं करते। ओफ्! करीब दो साल बाद आप से मुलाकात हुई।

(कुछ हिचककर)

आप क्या करती थीं?

रुथ — (जबरदस्ती हँसकर) जी रही थी।

स्वीडिल — (दु:खित होकर) अगर आप उनसे —

(कोकसन की कुर्सी की ओर इशारा करके।)

मिलना चाहती हैं तो जरा बैठिए। वे आते ही होंगे। उनको कभी देर नहीं होती।

(संकोच के साथ)

मैं ख्याल करता हूँ वे देहात से वापस आए होंगे। उनकी मियाद तो तीन महीने हुए पूरी हो गई, जहाँ तक मुझे याद है।

(रुथ सिर हिलाकर स्वीकार करती है।)

मुझे उनके लिए बहुत दुःख है। मेरे खयाल से मालिक ने उनके साथ अन्याय किया।

रुथ — हाँ, अन्याय तो किया।

स्वीडिल — उनको चाहिए था कि उन्हें उस बार माफ कर देते। और जज को भी चाहिए था कि उन्हें छोड़ देते। वे आदमी का स्वभाव क्या जानें। हम लोग इनसे कहीं अच्छी तरह जानते हैं।

(रुथ कनखियों से देखकर मुस्कराती है।)

स्वीडिल — ये हमारे कन्धों पर पत्थरों की गाड़ी लाद देते हैं, हमें मटियामेट कर देते हैं, और फिर यदि हम उठ न सकें तो हमीं को बुरा कहते हैं। मैं इन लोगों को खूब जानता हूँ। मैंने इस थोड़ी-सी उम्र में ऐसी बातें बहुत देखी हैं।

(इस तरह सिर हिलाकर मानो बुद्धि उसी के हिस्से में पड़ी है।)

यही देखो न उस दिन मालिक.....

(कोकसन बाहर के दफ्तर से भीतर आता है। पूर्वी हवा ने कुछ ताजा कर दिया है। हाँ, बाल कुछ और सफेद हो गए हैं।)

कोकसन — (कोट और दस्तानों को खोलते हुए) अच्छा, तुम हो।

(स्वीडिल को बाहर जाने का इशारा करके दरवाजा बन्द करते हुए।)

बिलकुल भूल गया। दो वर्ष बाद तुम्हें देखा, मुझसे मिलने आई हो? अच्छा मैं तुम्हें कुछ समय दे सकता हूँ। बैठ जाओ, घर पर सब कुशल तो है?

रुथ — मैं अब वहाँ नहीं रहती।

कोकसन — (तिरछी नज़र से उसकी ओर देखकर) मैं आशा करता हूँ घर की अवस्था पहिले से अच्छी होगी।

रुथ — उतने बखेड़े के बाद मैं हनीविल के साथ न रह सकी।

कोकसन — तुम कोई पागलपन कर बैठी? मुझे यह सुनकर दुःख होगा।

रुथ — मैंने बच्चों को अपने पास रक्खा है।

कोकसन — (उसे चिन्ता होने लगती है कि बातें वैसी आशाजनक नहीं हैं, जैसा उसने खयाल किया था।) खैर, मुझे तुमसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। रिहाई के बाद तो तुमसे शायद फाल्डर से मुलाकात नहीं हुई होगी।

रुथ — नहीं, कल अकस्मात् उनसे भेंट हो गई।

कोकसन — अच्छी तरह है न?

रुथ — (अकस्मात् झल्लाकर) उन्हें कुछ काम नहीं मिल रहा है। उनकी हालत बुरी हो रही है। हड्डी-हड्डी निकल आई है।

कोकसन — (सच्ची सहानुभूति से) सच! मुझे यह सुनकर बहुत रंज हुआ।

(अपने को संभालकर।)

उसको रिहा करने के बाद क्या उन लोगों ने कोई काम नहीं तलाश कर दिया?

रुथ — वह केवल तीन हफ्ते वहाँ काम कर पाए थे। पर उसे छोड़ना पडा।

कोकसन — मेरी समझ में नहीं आता तुम्हारी क्या मदद करूँ। किसी को साफ जवाब देते मुझे बुरा लगता है।

रुथ — मुझसे उसकी यह दशा नहीं देखी जाती।

कोकसन — (उसकी प्यारी सूरत की ओर देखता हुआ) मुझे मालूम है उसके रिश्तेदार उसे आश्रय न देंगे। शायद तुम इस बुरे वक्त में उसकी कुछ मदद कर सको।

रुथ — अब नहीं कर सकती। पहिले कर सकती थी। अब नहीं कर सकती।

कोकसन — मेरी समझ में नहीं आता तुम कह क्या रही हो।

रुथ — (अभिमान से) मैं उससे फिर मिली थी। अब कोई आशा नहीं।

कोकसन — (उसकी ओर गौर से देखकर कुछ घबड़ाया हुआ) मैं बाल-बच्चों वाला आदमी हूँ। मैं ऐसी कोई खराब बात नहीं सुनना चाहता। मुझे माफ करो। अभी मुझे बहुत काम करना है।

रुथ — मैं अपने घर वालों के पास गाँव में बहुत दिन पहिले चली गई होती, लेकिन हनीविल से शादी करने के कारण वे मुझे कभी माफ न करेंगे। मैं चालाक तो कभी नहीं थी साहब, लेकिन मुझमें गुरूर अवश्य है। मैं बहुत छोटी थी जब मैंने उससे शादी की थी। मैं समझती थी कि इससे बढ़कर कोई होगा ही नहीं। वह अक्सर हमारे खेतों में आया करता था।

कोकसन — (दुःख से) मैंने तो समझा था कि मुझसे मिलने के बाद उसने तुमसे अच्छा व्यवहार किया होगा।

रुथ — वह मुझे और भी सताने लगा। वह मुझे अपने काबू में तो न ला सका लेकिन मेरा स्वास्थ्य खराब हो गया। फिर उसने बच्चों को मारना शुरू किया। मैं नहीं बरदाश्त कर सकी। अब अगर वह मर रहा हो, तो मैं उसके पास नहीं जाऊँगी।

कोकसन — (खड़ा होकर इस तरह कन्नी काटता है, मानो अग्नि-प्रवाह से बच रहा हो) हमें इतना आपे से बाहर नहीं होना चाहिए — क्यों?

रुथ — (क्रोध से) जो आदमी ऐसा कमीना बर्ताव....

(सन्नाटा छा जाता है।)

कोकसन — (स्वभाव के विरुद्ध अनुरक्त होकर) हाँ, तो फिर तुमने क्या किया?

रुथ — (सिहरकर) पहिली बार उसे छोड़कर जो करती थी वही काम फिर शुरू किया। कमीजों की सिलाई सस्ती बेचनी पड़ती थी। यही एक काम मैं कर सकती थी। परन्तु किसी हफ्ते में सात-आठ रुपये से ज़्यादा न कमा सकी। अपना सूत होता था और दिन भर काम करना पड़ता था। रात को बारह बजे के पहिले कभी नहीं सोती थी। नौ महीने तक मैं तक मैं यह करती रही।

(क्रोध से)

लेकिन मैं इस तरह काम नहीं कर सकती थी। मर जाना अच्छा है।

कोकसन — चुप रहो, ऐसी बातें मत करो।

रुथ — बच्चों को भी भूखों मरना पड़ता था। इतने आराम से रहने के बाद मैं उनकी तरफ से बेपरवाह हो गई। मैं बहुत थक जाती थी।

(चुप हो जाती है।)

कोकसन — (उत्कंठा से) फिर क्या हुआ?

रुथ — (हँसकर) दुकान के मालिक ने मेरे ऊपर दया की, अभी तक उनकी दया बनी हुई है।

कोकसन —ओफ! मैंने ऐसी बात कभी नहीं सुनी।

रुथ —(उदासीन भाव से) उनका व्यवहार मेरे साथ अच्छा है। लेकिन अब वह सब खत्म हो गया।

(उसके होंठ अचानक काँपने लगते हैं। उलटी हथेली से वह होठों को छिपा लेती है।)

मैंने कभी नहीं सोचा था कि फिर उनसे कभी मेरी मुलाकात होगी। अचानक ही मुझसे कल 'हर्द बाग' में मुलाकात हो गई। हम दोनों वहाँ बहुत देर तक बैठे रहे। उसने अपनी सब राम कहानी मुझे सुना दी। ओफ्! कोकसन साहब, आप उसे फिर अपने यहाँ ले लीजिए।

कोकसन — (व्यग्र होकर) तो तुम दोनों ने अपनी रोजी खो दी। कितनी भीषण समस्या 'है।

रुथ — अगर वह यहाँ आ जाते तो यहाँ तो उनके विषय में कोई पूछताछ न होती।

कोकसन — हम कोई काम नहीं कर सकते जिससे कार्यालय की बदनामी हो।

रुथ — मेरे लिए और कहीं ठिकाना नहीं है।

कोकसन — मैं मालिकों से कहूँगा, लेकिन मैं नहीं खयाल करता कि वे उसे ले लेंगे। बात ऐसी ही आ पड़ी है।

रुथ — वह मेरे साथ आए हैं, उधर सड़क पर बैठे हैं।

(खिड़की की ओर दिखाती है।)

कोकसन — (शान दिखाकर) उसे नहीं आना चाहिए जब तक कि उसे बुलाया न जाय। ।

(उसके मुख की ओर देखकर नम्र स्वर से।)

हमारे यहाँ एक जगह खाली है, लेकिन मैं वादा नहीं कर सकता।

रुथ — आप उसे प्राण दान देंगे।

कोकसन — मुझसे जहाँ तक होगा मैं कोशिश करूँगा लेकिन निश्चय नहीं कह सकता। अच्छा, उससे कह दो वह यहाँ न आए जब तक मैं अवस्था को विचार न लूं। अपना पता बता जाओ।

(उसके पते को दुहराकर।)

तिरासी मलिंगर स्ट्रीट।

(ब्लाटिंग कागज पर लिख लेता है।)

अच्छा, सलाम।

रुथ — धन्यवाद! (वह दरवाजे के पास जाकर कुछ कहने के लिए रुकती है। परन्तु फिर चली जाती है।)

कोकसन — (सिर और कपाल का पसीना एक बड़े सफेद रूमाल से पोंछकर) ओफ्, क्या बुरी गत है।

(कागजों की ओर देखकर घंटी बजाता है। स्वीडिल आता है।)

कोकसन — क्या वह जवान रिचार्ड आज क्लर्क की जगह के लिए आएगा?

स्वीडिल — जी हा!

कोकसन — अच्छा उसे टाल देना। मैं अभी उससे मिलना नहीं चाहता।

स्वीडिल — उससे क्या कहूँ, हुजूर?

कोकसन — (झिझककर) कोई बहाना सोच लो। बुद्धि से काम लो। हाँ, उसे एकदम भगा मत देना।

स्वीडिल — क्या उससे कह दूँ कि आपकी तबियत खराब है?

कोकसन — नहीं, झूठ मत बोलो। कह देना कि मैं आज आया नहीं हूँ।

स्वीडिल — अच्छा, साहब, तो मैं उसे अभी घुमाता रहूँ।

कोकसन — हाँ! और देखो तुम फाल्डर को तो भूले नहीं हो, न? शायद वह मुझसे मिलने आवे। देखो उसके साथ वैसा ही बर्ताव करना जैसा उसकी दशा में तुम खुद चाहते।

स्वीडिल — यह तो मेरा धर्म ही है।

कोकसन — ठीक, गिरे हुए को ठोकर मारना चाहिए। फायदा ही क्या? उसे हाथ का सहारा दे दो। यह एक ऐसा सिद्धान्त है जिसे जीवन में कभी न भूलना चाहिए। यही पक्की नीति है।

स्वीडिल — आपको आशा है कि मालिक लोग उन्हें ले लेंगे।

कोकसन — यह अभी कुछ कह नहीं सकता।

(बाहर के दफ्तर में किसी के पैरों की आहट पाकर।)

कौन है?

स्वीडिल — (दरवाजे के पास जाकर देखता हुआ) फाल्डर आए हैं।

कोकसन — (चिल्लाकर) ओफ्! यह उसकी बड़ी बेवकूफी है। उसे फिर आने को कहो। मैं नहीं चाहता.....

(फाल्डर के भीतर आते ही वह चुप हो जाता है। उसका चेहरा पीला और मुरझाया हुआ है। उम्र भी ज्यादा हो गई है। आँखें अस्थिर हो रही हैं। कपड़े पुराने और फटे हैं। स्वीडिल खुशी के साथ अभिवादन करके चला जाता है।)

कोकसन — तुम्हें देखकर बहुत खुश हुआ, मगर तुम कुछ पहले आ गए।

(लल्लो-चप्पो करते हुए।)

आओ, हाथ मिलाओ। वह तो खूब दौड़-धूप कर रही है।

(पसीना पोंछकर।)

उसका कुसूर नहीं है, बिचारी बहुत चिन्तित है।

(फाल्डर संकोच के साथ कोकसन से हाथ मिलाता है और मालिकों के कमरे की ओर देखता है।)

कोकसन — नहीं, अभी वे आए नहीं हैं, बैठ जाओ।

(फाल्डर कोकसन की मेज के किनारे एक कुर्सी पर बैठता है और अपनी टोपी मेज पर रखता है।)

अच्छा, अब अपना कुछ हाल बतलाओ।

(चश्मे के ऊपर से उसको देखते हुए।)

तबीयत कैसी है?

फाल्डर — जीता हूँ।

कोकसन — (किसी और ध्यान में पड़े हुए) यह सुनकर मुझे खुशी है। हाँ, उसके बारे में देखो, मैं कोई ऐसी बात नहीं करना चाहता। जो देखने में भद्दी हो। यह मेरी आदत है। मैं सीधा आदमी हूँ। मैं सब बातें साफ-साफ करना ही पसंद करता हूँ। मैंने, लेकिन तुम्हारे मित्र से वादा किया है कि मालिकों से तुम्हारे बारे में कहूँगा। तुम जानते हो मैं अपनी जबान का पक्का हूँ।

फाल्डर — बस मैं एक मौका और चाहता हूँ, मिस्टर कोकसन। मैंने जो काम किया था उसका हजार गुना दंड भोग चुका। हाँ, साहब, हजार गुना ज्यादा। मेरे दिल से पूछिए। लोग कहते हैं मेरा वजन बढ़ गया है। लेकिन इस...।

(सिर पर हाथ रखकर।)

चीज को उन्होंने नहीं तौला। कल तक भी मैं सोचता था यह शायद यहाँ....

(दिल पर हाथ रखकर।)

अब कुछ नहीं है।

कोकसन — (चिन्तित भाव से) तुम्हें दिल की बीमारी तो नहीं हुई है?

फाल्डर — उनके खयाल में मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा है।

कोकसन — लेकिन उन्होंने तुम्हारे लिए कोई जगह तो तलाश कर दी थी न?

फाल्डर — कर दी थी, बहुत अच्छे लोग थे। सब जानते हुए भी मुझसे खुश थे। मैंने सोचा था मजे से दिन कट जायँगे। लेकिन एक दिन और क्लर्कों के कान में भनक पड़ गई...वे मुझसे....फिर मैं वहाँ न रह सका, मिस्टर कोकसन! बहुत मुश्किल था।

कोकसन — दिल को संभालो; भाई, घबड़ाओ मत।

फाल्डर — उसके बाद एक जगह और मुझे मिल गई थी, पर चली नहीं।

कोकसन — क्यों?

फाल्डर — आपसे झूठ बोलकर कुछ फायदा नहीं है, मिस्टर कोकसन! बात यह है मुझे ऐसा मालूम होता है कि मुझे किसी चीज ने चारों ओर से जकड़ रक्खा है जिसमें फँसा पडा हुआ हूँ। ठीक जैसे मैं किसी जाल में फाँस लिया गया हूँ। ताड़ से गिरता हूँ तो बबूल पर अटकता हूँ। बिना प्रशंसा-पत्र के कोई काम नहीं देता था। इस विषय में मुझे जो कुछ न करना चाहिए था वह मैंने किया। और उपाय ही क्या था? परन्तु मुझे डर लगा कि कहीं पकड़ा न जाऊँ। बस, इसीलिए छोड़ दिया। अब भी मुझे डर लगा रहता है।

(सिर नीचा कर टेबिल के सहारे निराश होकर झुक जाता है।)

कोकसन — तुम्हारी हालत पर मुझे बहुत रंज है। विश्वास मानो। क्या तुम्हारी बहन तुम्हारे लिए कुछ न करेगी?

फाल्डर — एक को तपेदिक की बीमारी है और दूसरी.....

कोकसन — हाँ, मुझे याद है, तुमने मुझसे कहा था कि उनके पति तुमसे बहुत खुश नहीं हैं।

फाल्डर — मैं जब वहाँ गया तब वे खाना खा रहे थे। मेरी बहन मुझे चूम लेना चाहती थी। मगर उसने उसकी ओर घूरकर देखा....फिर मुझसे कहा, 'तुम क्यों आये हो?' मैंने अपने सब अभिमानों को दबाकर कहा, 'क्या तुम मुझसे हाथ नहीं मिलाओगे,

जिम?...' उसने कहा, 'देखो जी, जो कुछ हुआ वह हुआ। मैं तुमसे निबटारा कर लेना चाहता हूँ। मैं जानता था कि तुम आओगे, और मैंने पहिले ही निश्चय कर लिया है। मैं तुम्हें पच्चीस गिन्नी देता हूँ। तुम केनाडा चले जाओ।' मैंने कहा, ठीक है, सब गला छुड़ा रहे हो। धन्यवाद! मुझे जरूरत नहीं है, पच्चीस गिन्नी अपने पास रक्खो। जिस दशा में मैं रह चुका हूँ, उस दशा में रहने के बाद फिर कहाँ की दोस्ती?

कोकसन — मैं समझ गया। अच्छा, यदि मैं तुम्हें पच्चीस गिन्नी दूँ तो तुम लोगे, भाई?

(फाल्डर को अपनी ओर मुस्कराते देखकर झेंपता है।)

बुरा मानने की बात नहीं, मेरा इरादा बुरा न था।

फाल्डर — तो यहाँ मुझे नौकरी न मिलेगी?

कोकसन — नहीं, नहीं, तुम मेरा मतलब नहीं समझ रहे हो।

फाल्डर — मैंने इस हफ्ते में रात बगीचे में सोकर काटी है। कवियों की उषा का वहाँ कहीं पता भी नहीं। लेकिन कल उससे मिलकर मुझे मालूम होता है कि मैं आज कुछ और ही हो गया हूँ। मेरे जीवन में जो सुख या शान्ति है यह केवल उसके प्रेम में

है। वह मेरे लिये पवित्र है। फिर भी उसने मेरा सर्वनाश कर दिया। कितनी अजीब बात है।

कोकसन — हम सब को ही तुम्हारे लिये दुःख है।

फाल्डर — हाँ, यहाँ तो मैं भी देख रहा हूँ। अत्यन्त दुःख है।

(श्लेष के साथ।)

लेकिन चोर, डाकुओं के साथ मिलना आपकी शान के खिलाफ़ है।

कोकसन — छीः फाल्डर, क्यों अपने को गाली देते हो? इससे कोई फायदा नहीं है। इस पर परदा डाल दो।

फाल्डर — परदा डाल देना मामूली बात है, अगर आपके पास काफी धन हो। मेरी तरह टूट जाइए तो मालूम हो। मसल है — 'जो जैसा करता है फल पाता है।' मुझे तो कुछ ज्यादा मिल गया।

कोकसन — (चश्मे के ऊपर से उसकी ओर तिरछी नज़र से देखकर) तुम साम्यवादी तो नहीं बन गये हो?

(फाल्डर अकस्मात् चुप हो जाता है मानो पिछली बातें सोच रहा है। कुछ अजीब तरह से हँसता है।)

कोकसन — विश्वास मानो, सब लोग दिल से तुम्हारी भलाई चाहते हैं। तुम्हारा नुकसान करना कोई नहीं चाहता।

फाल्डर — आप बहुत ठीक कहते हैं, कोकसन। हमारा दुश्मन तो कोई नहीं है। फिर भी जान के गाहक सब हैं।

(चारों ओर देखने लगता है, मानो कोई उसे फँसा रहा हो।)

यह मुझे कुचले डालता है।

(मानो अपने को भूलकर)

जान ही लेकर छोड़ोगे।

कोकसन — (बहुत बेचैन होकर) यह सब कुछ नहीं है। सब अपने आप ठीक हो जायगा। मैं बराबर तुम्हारे लिए प्रार्थना करता था। तुम निश्चिन्त रहो। मैं होशियारी से काम लूँगा और जब वे जरा मौज में रहेंगे, तब यह जिक्र छेडूँगा।

(ठीक इसी समय जेम्स और वाल्टर हो आते हैं।)

कोकसन — (कुछ घबराकर, परन्तु साथ ही उन्हें इतमीनान दिलाने के लिए) आज तो आप लोग बहुत जल्द आ गए। मैं जरा उनसे बातें कर रहा था-आप इन्हें भूले न होंगे?

जेम्स — (तीव्र गम्भीर भाव से देखकर) बिलकुल नहीं। कैसे हो फाल्डर?

वाल्टर — (डरता हुआ अपना हाथ फैलाकर) तुम्हें देखकर बहुत खुश हुआ, फाल्डर।

फाल्डर — (अपने को संभालकर वाल्टर से हाथ मिलाते हुए) आपको धन्यवाद देता हूँ।

कोकसन — आपसे एक बात करनी है, मिस्टर जेम्स।

(क्लर्क के कमरे की ओर फाल्डर को इशारा करके।)

तुम जरा वहाँ जाकर बैठ जाओ। मेरा जूनियर आज नहीं आएगा। उसकी स्त्री के बच्चा हुआ है।

(फाल्डर हिचकता हुआ क्लर्क के कमरे में जाता है।)

कोकसन — (गोपनीय भाव से) मैं आपसे इसी के बारे में कहना चाहता हूँ। अपनी भूल पर बहुत लज्जित है। लेकिन लोग उस पर शुभा करते हैं। और उसका चेहरा भी आज उतरा हुआ है। भोजन के लाले पड़े हैं। भोजन के बिना कोई कैसे रह सकता है?

जेम्स — अच्छा भोजन भी नहीं मिलता?

कोकसन — हाँ, मैं आपसे यही पूछना चाहता था, अब तो उसको काफी सबक मिल गया है और हमें एक क्लर्क की ज़रूरत भी

है। फाल्डर हम लोगों के लिये कोई नया आदमी नहीं है। एक युवक ने दरखास्त तो भेजी है, लेकिन मैं उसे टाल रहा हूँ।

जेम्स — क्या जेल के असामी को आफिस में रक्खोगे, कोकसन? मुझे तो अच्छा नहीं लगता।

वाल्टर — वकील की वह बात मैं कभी न भूलूँगा। 'न्याय की चक्की के चलते हुए पाट।

जेम्स — इस मामले में मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया जिसे कोई बुरा कह सके। जेल से निकलकर अब तक क्या करता रहा?

कोकसन — एकाध जगह नौकरी मिली थी, मगर वहाँ टिक नहीं सका। वह बहुत शक्की है — स्वाभाविक बात है — उसे मालूम होता है कि सारी दुनिया उसके पीछे पड़ी है।

जेम्स — यह और ख़राब बात है, मैं उसे पसंद नहीं करता। कभी नहीं किया। 'दुर्बल चरित्र' तो मानो उसके चेहरे पर लिखा हुआ है।

वाल्टर — हमें एक बार उसे सहारा तो देना ही चाहिए।

जेम्स — उसने अपने ही हाथों तो अपने पैर में कुल्हाड़ी मारी।

वाल्टर — इस जमाने में पूरी जिम्मेदारी का सिद्धान्त मानने योग्य नहीं।

जेम्स — (गम्भीरता से) फिर भी तुम्हारा कल्याण इसी में है कि इसे मानते रहो।

वाल्टर — हाँ, अपने लिए, दूसरों के लिए नहीं।

जेम्स — खैर, मैं सख्ती नहीं करना चाहता।

कोकसन — मुझे खुशी है कि आप ऐसा कहते हैं।

(हाथ फैलाकर)

वह अपने चारों ओर कुछ देखता रहता है। यह दुर्बलता का चिह्न है।

जेम्स — उस औरत का क्या हुआ जिससे उसका कुछ सम्बन्ध था? ठीक वैसी ही एक औरत को बाहर अभी देखा है।

कोकसन — वह-वह — आपसे कह देना ही ठीक है, वह उससे मिल चुका है।

जेम्स — क्या वह अपने पति के साथ रहती है?

कोकसन — नहीं।

जेम्स — शायद फाल्डर उसके साथ रहता होगा।

कोकसन — (बनती हुई बात को बनाए रखने की प्रबल चेष्टा करके) यह मुझे नहीं मालूम। मुझसे इससे क्या मतलब?

जेम्स — लेकिन अगर हम उसे नौकर रक्खेंगे, तो हमें इससे जरूर मतलब है।

कोकसन — (अनिच्छा से) शायद आपसे कहना ही ठीक है। वह आज यहाँ आई थी।

जेम्स — मैंने भी यही सोचा था।

(वाल्टर से)

नहीं, बेटा, हम ऐसा नहीं कर सकते। सरासर बदनामी है।

कोकसन — दोनों बातों के मिल जाने से मामला बेढब हो गया है। मैं समझता हूँ।

वाल्टर — मैं नहीं समझता कि हमें उसकी निजी बातों से क्या सरोकार है।

जेम्स — नहीं-नहीं, यहाँ आने के पहिले, उसे उस औरत को छोड़ना पड़ेगा।

वाल्टर — गरीब बिचारा!

कोकसन — आफ उससे मिलेंगे?

(जेम्स को सिर हिलाते देखकर।)

शायद मैं उसे समझा सकूँ।

जेम्स — (गम्भीर भाव से) मैं समझा लूँगा, तुम्हें कुछ कहने की जरूरत नहीं।

वाल्टर — (कोकसन जब फाल्डर को बुलाता है उस समय धीमे स्वर में जेम्स से) उसकी सारी जिन्दगी अब आपके हाथ में है, पिता जी।

(फाल्डर आता है, उसने अपने को संभाल लिया है, बेधड़क आकर खड़ा होता है।)

जेम्स — देखो फाल्डर, वाल्टर और मैं चाहता हूँ कि तुम्हें फिर एक बार मौका दूँ। लेकिन मैं दो बातें तुमसे कह देना चाहता हूँ। पहिली बात यह है कि यहाँ सताए हुए की भांति आना ठीक नहीं है। अगर तुम्हारा यह ख़याल है कि तुम्हारे साथ अन्याय किया गया है, तो उसे भूल जाना पड़ेगा। आग में कूदकर यह नहीं हो सकता कि आँच न लगे। समाज यदि अपनी रक्षा न करेगा, तो उसकी कोई परवा न करेगा। समझते हो?

फाल्डर — जी हाँ, लेकिन क्या मैं भी कुछ कह सकता हूँ।

जेम्स — कहो।

फाल्डर — मैंने जेल में इन सब बातों पर बहुत विचार किया है।

कोकसन — (उत्साह देते हुए) हाँ, अवश्य किया होगा।

फाल्डर — वहाँ सब तरह के आदमी थे। मुझे मालूम हुआ, यदि पहिली बार मेरे साथ नर्मी की गई होती और जेल में रखने के बदले किसी ऐसे आदमी के मातहत रक्खा जाता जो हमारी कुछ देख-भाल करता, तो वहाँ जितने कैदी हैं उनके एक चौथाई भी न रहते।

जेम्स — (सिर हिलाकर) मुझे इसमें बहुत सन्देह है, फाल्डर।

फाल्डर — (कुछ ईर्ष्या के भाव से) ठीक है साहब, लेकिन मेरा यह अनुभव है।

जेम्स — भाई, तुम्हें यह न भूलना चाहिए कि तुमने शुरू किया था।

फाल्डर — लेकिन मेरी मंशा बुराई की नहीं थी।

जेम्स — शायद न हो, लेकिन तुमने की जरूर।

फाल्डर — (बीते हुए कष्टों की बात सोचकर) इसने मुझे कुचल डाला, साहब! सीधा खड़ा होकर। मैं कुछ और था और अब कुछ और हूँ।

जेम्स — इससे तो हमारे मन में शंका होती है, फाल्डर।

कोकसन — आप समझे नहीं, मिस्टर जेम्स, उसका मतलब यह नहीं है।

फाल्डर — (तीव्र शोक से उद्धत होकर) नहीं, मेरा मतलब यही है कि मिस्टर कोकसन....

जेम्स — खैर, उन सब बातों को छोड़ो, फाल्डर, अब आगे की ओर देखो।

फाल्डर — (तत्परता के साथ) हाँ, साहब, लेकिन आप समझ नहीं सकते कि जेल क्या चीज है।

(अपनी छाती को पकड़कर।)

बस, यहाँ उसकी चोट पड़ती है।

कोकसन — (जेम्स के कान में) मैंने आपसे कहा था कि उसे अच्छे भोजन की जरूरत है।

वाल्टर — मत घबड़ाओ मित्र, यह सब शान्त हो जायगा। समय तुम पर दया करेगा।

फाल्डर — (कुछ मुँह सिकोड़कर) मुझे भी ऐसी आशा है।

जेम्स — (बड़ी नम्रता से) खैर, देखो भाई, तुम्हें जो कुछ करना है, वह यह कि बीती हुई बातों पर पर्दा डालो और अपनी अच्छी साख जमाओ। अब रही दूसरी बात, वह यह है कि जिस औरत

के साथ तुम्हारा सम्बन्ध था, तुम्हें वचन देना पड़ेगा कि आगे उसके साथ तुम्हारा कोई सरोकार नहीं रहेगा। अगर तुम इस तरह का सम्बन्ध रखकर अपना जीवन-सुधार शुरू करोगे, तो तुम कभी अपनी नीयत ठीक नहीं रख सकते।

फाल्डर — (हर एक के मुँह की ओर दुःखी आँखों से देखकर) लेकिन साहब ....इसी भरोसे पर तो मैंने यह सब दुःख झेले हैं। और भी....कल रात को ही मुझसे उसकी मुलाकात हुई है।

(यह और इसके पीछे की बातें सुनकर कोकसन की परेशानी बढती जाती है।)

जेम्स — यह बहुत दुःख की बात है, फाल्डर। तुम समझ सकते हो मेरे जैसे कार्यालय के लिए यह असंभव है कि वह अपनी आँखें सब तरफ से बन्द कर ले। अपनी नीयत ठीक करने का यह प्रमाण दे दो, बस मैं तुम्हें अपने यहाँ रख लूँगा, नहीं तो मैं लाचार हूँ।

फाल्डर — (जेम्स की ओर स्थिर दृष्टि से देखते हुए अचानक कुछ दृढ़ होकर) नहीं, मैं उसे छोड़ नहीं सकता। यह असम्भव है। मेरे लिए उसके सिवा और कोई नहीं है, साहब। और उसके लिए भी मैं ही सब कुछ हूँ।

जेम्स — मुझे इसके लिए दुःख है, फाल्डर। लेकिन मैं अपना विचार बदल नहीं सकता। तुम दोनों के लिए आगे चलकर इसका नतीजा अच्छा होगा। इस सम्बन्ध में भलाई कभी नहीं हो सकती। यही तुम्हारे सब दुःखों का कारण था।

फाल्डर — लेकिन, साहब, इसका तो यह मतलब है कि मैंने वे सारे दुःख व्यर्थ ही झेले, किसी काम का नहीं रहा। मेरा स्वास्थ्य बिल्कुल चौपट हो गया। यह सब मैंने उसके लिए ही किया था।

जेम्स — अच्छा सुनो, अगर दरअसल वह अच्छी औरत है, तो खुद ही समझ जायगी। वह कभी तुम्हारी दुर्गति न कराएगी। हाँ, अगर उसके साथ तुम्हारे विवाह होने की आशा होती, तो दूसरी बात थी।

फाल्डर — यह मेरा कसूर नहीं है, साहब, कि वह अपने पति से छुटकारा नहीं पा सकी। अगर उसका वश होता, तो वह जरूर ऐसा करती। यही सारी विपत्ति का मूल कारण है। (अकस्मात् वाल्टर की ओर देखकर) अगर कोई इसकी मदद कर सकता। अब केवल धन की जरूरत है।

कोकसन — (वाल्टर हिचककर कुछ कहना ही चाहता था कि बीच में बात काटकर) मेरी समझ में अभी उसकी चर्चा करने की जरूरत नहीं। यह बहुत दूर की बात है।

फाल्डर — (वाल्टर की ओर कातर भाव से) उसने तब से उस पर और भी अत्याचार किया होगा। वह साबित कर सकती है, कि उसने उसे छोडने पर मजबूर किया।

वाल्टर — मैं तुम्हारी सब तरह से मदद करने को तैयार हूँ, फाल्डर, अगर अपने बस की बात हो।

फाल्डर — आपकी मुझ पर बड़ी कृपा है।

(वह खिड़की के पास जाकर नीचे सडक की ओर देखता है।)

कोकसन — (जल्दी से) मेरी बातों पर न जाइए मि. वाल्टर। उसके विशेष कारण हैं।

फाल्डर — (खिड़की के पास से) वह नीचे खड़ी है, बुलाऊँ? यहीं से बुला सकता हूँ।

(वाल्टर हिचकता है, और कोकसन तथा जेम्स की ओर देखता है।)

जेम्स — (सिर हिलाकर) हाँ, बुलाओ।

(फाल्डर खिड़की से इशारा करता है।)

कोकसन — (घबड़ाकर जेम्स और वाल्टर से धीमी आवाज में) नहीं, मिस्टर जेम्स, जब यह जेल में था तब उसे जिस तरह रहना

चाहिए था, वैसे वह न रह सकी। उसने मौका खो दिया। हम कानून को धोखा देने की सलाह नहीं कर सकते।

(फाल्डर खिड़की के पास से चला आता है। तीनों आदमी चुपचाप गम्भीर भाव से उसकी तरफ़ देखते हैं।)

फाल्टर — (उनके भावों में परिवर्तन देखकर सशंक नेत्रों से हर एक की तरफ़ देखते हुए) हमारा और उसका सम्बन्ध अभी तक पवित्र है, साहब! जो कुछ मैंने अदालत में कहा था वह बिलकुल सच है। कल रात को हम थोड़ी देर तक बगीचे में केवल बैठे ही थे।

(स्वीडिल बाहर के कमरे से आता है।)

कोकसन — क्या है?

स्वीडिल — श्रीमती हनीविल।

सब चुप रहते हैं।

जेम्स — बुलाओ।

(रुथ धीरे-धीरे भीतर आती है, और फाल्डर के पास एक किनारे स्थिर भाव से खड़ी हो जाती है। बाकी तीनों आदमी दूसरी ओर खड़े हैं। कोई बोलता नहीं। कोकसन अपनी मेज के पास जाकर कागजों को देखने के लिए झुक जाता है मानो अवस्था ऐसी ही

आ गई है कि वह अपनी पुरानी जगह पर आ बैठने के लिए मजबूर है।)

जेम्स — (तेज आवाज़ से) दरवाजा बन्द कर दो।

(स्वीडिल दरवाजा बन्द करता है।)

हमने तुम्हें इसलिए बुलाया है कि इस मामले में कुछ बातें तय करनी जरूरी हैं। मुझे मालूम हुआ कि तुम फाल्डर से अभी हाल में ही फिर मिली हो।

रुथ — जी हाँ, कल ही।

जेम्स — उसने अपने बारे में सब बातें हमसे कह दी हैं, और हमें उनके लिए बहुत रंज है। मैंने उसे अपने यहाँ काम देने का वादा किया है इस शर्त पर कि वह फिर से नई जिन्दगी शुरू करे। (रुथ की ओर गौर से देखकर) इसमें केवल जरा हिम्मत की ज़रूरत है।

(रुथ अपने हाथों को मलती हुई फाल्डर की ओर देखती रहती है। मानो उसे विपत्ति का आभास हो गया है।)

फाल्डर — वाल्टर साहब ने हमारे ऊपर दया करके कहा है कि वह तुम्हारा विवाह-विच्छेद करा देंगे।

(रुथ चौंककर जेम्स और वाल्टर की ओर देखती है।)

जेम्स — वह तो बहुत कठिन है, फाल्डर।

फाल्डर — लेकिन साहब.....।

जेम्स — (गम्भीर होकर) देखो श्रीमती हनीविल, तुम्हें इनसे प्रेम है?

रुथ — हाँ, साहब, मैं उनसे प्रेम करती हूँ।

(फाल्डर की ओर दुखित नेत्रों से देखती है।)

जेम्स — तब तुम उसके रास्ते का कांटा नहीं बनोगी — क्यों?

रुथ — (कंपित कंठ से) मैं उसकी सेवा कर सकती हूँ।

जेम्स — सबसे अच्छी सेवा जो तुम कर सकती हो, वह यह है कि तुम उसे छोड़ दो।

फाल्डर — नहीं, कोई मुझे तुमसे अलग नहीं कर सकता, रुथ। तुम विवाह-विच्छेद करा सकती हो। हममें तुममें और कोई बात तो नहीं हुई है। बोलो।

रुथ — (उसकी ओर न देखकर उदासी के साथ सिर हिलाते हुए) नहीं।

फाल्डर — हुजूर, जब तक मामला साफ़ न हो जायगा हम एक दूसरे से अलग रहेंगे। हम यह वचन देते हैं। केवल आप हमारी मदद करें।

जेम्स — (रुथ से) तुम सब बातें समझ रही हो न? मेरा मतलब भी तुम समझती हो।

रुथ — (बहुत धीरे से) हाँ।

कोकसन — (अपने ही आप) औरत समझदार है।

जेम्स — यह अवस्था भयंकर है।

रुथ — क्या मुझे उसको छोडना ही पड़ेगा, साहब?

जेम्स — (अनिच्छा से उसकी ओर देखकर) मैं तुम्हारे ऊपर छोड़ता हूँ। देवी उसका भविष्य तुम्हारे ही हाथ में है।

रुथ — (व्याकुल होकर) मैं उसकी भलाई के लिए सब कर सकती हूँ।

जेम्स — (कुछ खुशी से) यही तो चाहिए। यही तो चाहिए।

फाल्डर — मेरी समझ में कुछ नहीं आता। क्या सचमुच तुम मुझे छोड़ दोगी? कोई और बात है।

(जेम्स की ओर एक क़दम बढ़ाकर।)

मैं ईश्वर की कसम खाकर कहता हूँ कि अभी हम दोनों का सम्बन्ध बिलकुल पवित्र है।

जेम्स — मैं- तुम पर विश्वास करता हूँ, फाल्डर। तुम भी उसकी तरह हिम्मत बाँधो।

फाल्डर — अभी-अभी आप कह रहे थे कि तुम्हारी मदद करेंगे। (रुथ की ओर ताकता है जो मूर्ति की भाँति खड़ी है। ज्यों-ज्यों उसे समस्या का ज्ञान होता है उसके मुँह और हाथ काँपने लगते हैं। यह क्या बात है? आपने तो....

वाल्टर — पिता जी! रोपर सिर हिलाता है।

जेम्स — (जल्दी से) मत घबड़ाओ, मत घबड़ाओ, फाल्डर। मैं तुम्हें काम देता हूँ। केवल मुझे जानने मत देना कि तुम क्या कर रहे हो — बस।

फाल्डर — (मानो सुना ही नहीं) रुथ।

(रुथ उसकी ओर देखती है, फाल्डर अपने हाथों से मुँह ढाँप लेता है। सन्नाटा छा जाता है।)

कोकसन — (अचानक) बाहर कमरे में कोई आया है।

(रुथ से)

तुम जरा भीतर जाओ, दो-चार मिनट अकेले रहने से तुम्हें आराम मिलेगा।

(क्लर्क के कमरे की ओर इशारा करता है और बाहर की ओर जाने लगता है। फाल्डर चुप खड़ा रहता है। रुथ डरते-डरते अपना हाथ बढ़ाती है। उसके स्पर्श से फाल्डर सिहरकर पीछे की ओर हटता है। वह दुःखित होकर क्लर्क के कमरे की ओर जाती है। अचानक चौंककर वह भी पीछे हो लेता है और दरवाजे के भीतर जाकर उसका कंधा पकड़ता है। कोकसन दरवाजा बन्द करता है।)

जेम्स — (बाहर के कमरे की ओर उंगली दिखाकर) कोई भी हो अभी भगा दो।

स्वीडिल — (दरवाजा खोलकर सहमी हुई आवाज से) सार्जेन्ट विस्टर, खुफिया पुलिस।

(डिटेक्टिव कमरे में आकर दरवाजा बन्द कर देता है।)

विस्टर — आपको तकलीफ दी, माफ़ कीजिए। ढाई साल पहिले आपके यहाँ एक क्लर्क था जिसको मैंने इसी कमरे में गिरफ्तार किया था।

जेम्स — हाँ, तो क्या हुआ?

विस्टर — मैंने सोचा कि शायद आपको इसका पता मालूम हो।

(संकोचवश कोई जवाब नहीं देता है।)

कोकसन — (हँसकर बात बनाते हुए) यह बतलाना हमारा काम नहीं कि वह कहाँ है — बतलाइए!

जेम्स — आपका उससे क्या काम है?

विस्टर — उसने इधर हाजिरी नहीं बोली है।

वाल्टर — क्या अभी तक पुलिस से उसका पिंड नहीं छूटा है?

विस्टर — हाँ, हमें उसका पता मालूम होना जरूरी है। खैर, यह कोई ऐसी बात नहीं थी। लेकिन हमें मालूम हुआ है कि झूठे प्रशंसापत्र दिखाकर उसने एक नौकरी कर ली थी। दोनों बातें साथ-साथ आ पड़ी। अब हम उसे छोड़ नहीं सकते।

(फिर सब चुप हो जाते हैं। वाल्टर और कोकसन कनखियों से जेम्स की ओर देखते हैं जो खड़ा डिटेक्टिव की ओर स्थिर दृष्टि से देखता रहता है।)

कोकसन — (कुछ तेज होकर) अभी हम बहुत व्यस्त हैं और किसी वक्त आइए तब शायद हम बतला सकें।

जेम्स — (दृढ़ता से) मैं नीति का सेवक हूँ। लेकिन किसी की मुखबिरी करना मुझे पसन्द नहीं। मुझसे ऐसा काम नहीं हो सकता। अगर तुम्हें उसे गिरफ्तार करना है तो बिना हमारी मदद के कर सकते हो।

(बातें करते-करते उसकी आँख फाल्डर कों टोपी पर पड़ती है जो टेबिल पर पड़ी हुई थी। वह मुँह सिकोड़ता है।)

विस्टर — (उसके भाव के परिवर्तन को देखकर शान्त स्वर से) बहुत अच्छा, साहब। लेकिन मैं आपको होशियार कर देता हूँ कि उसको आश्रय देना....।

जेम्स — मैं किसी को आश्रय नहीं देता, लेकिन आप आगे कभी-आकर मुझसे ऐसे प्रश्न न कीजिएगा जिनका जवाब देने के लिए हम मजबूर नहीं हैं।

विस्टर — (रूखी आवाज से) खैर, साहब, अब आगे मैं आपको तकलीफ़ नहीं दूँगा।

कोकसन — मुझे दरअसल अफसोस है कि मैं आपको कोई खबर नहीं दे सकता। खैर, आप तो समझते ही हैं। अच्छा, सलाम!

(विस्टर जाने के लिए मुड़ता है, लेकिन बाहर की ओर न जाकर क्लर्क के कमरे की ओर बढ़ता है।)

कोकसन — वह नहीं — नहीं, दूसरा दरवाजा।

(विस्टर क्लर्क के कमरे का दरवाजा खोलता है, रुथ की आवाज सुनाई देती है। वह कह रही है, 'मान जाओ'। फाल्डर कहता है, 'नहीं, मैं नहीं मान सकता।' थोड़ी देर सन्नाटा रहता है। अचानक

रुथ डरकर चिल्ला उठती है 'यह कौन है?' विस्टर भीतर घुस जाता है। तीनों आदमी दरवाजे की ओर हक्के-बक्के होकर देखते हैं।)

विस्टर — (भीतर से) तुम हट जाओ।

(वह जल्दी से फाल्डर का हाथ पकड़कर बाहर आता है। फाल्डर का चेहरा बिल्कुल सफेद हो गया है, वह तीनों आदमियों की ओर देखता है।)

वाल्टर — ईश्वर के लिए उसे इस बार छोड़ दो।

विस्टर — मैं अपने ऊपर यह जिम्मेदारी नहीं ले सकता, साहब।

फाल्डर — (एक विचित्र निराशपूर्ण हँसी के साथ) अच्छी बात है!

(रुथ की ओर एक दृष्टि डालकर वह सिर उठाता है, और बाहर के आफिस से निकल जाता है। विस्टर उसके साथ प्रायः घिसटता हुआ जाता है।)

वाल्टर — (व्यथित होकर) बस, अब कहीं का नहीं रहा। बराबर यही बला सिर पर सवार रहेगी।

(स्वीडिल बाहर के कमरे से ताकता हुआ नज़र आता है। सीढ़ी से नीचे उतरने की आवाज आती है। अचानक द्वार पर विस्टर की धीमी आवाज 'या खुदा!' सुनाई देती है।)

जेम्स — यह क्या हुआ?

(स्वीडिल झपटकर आगे बढ़ता है, दरवाजा भी बन्द हो जाता है। पूरा सन्नाटा छा जाता है।)

वाल्टर — (भीतर के कमरे की ओर बढ़कर) अरे! यह औरत बेहोश हो रही है।

(वह और कोकसन बेहोश होती हुई रुथ को उठाकर क्लर्क के कमरे के दरवाजे से बाहर लाते हैं।)

कोकसन — (घबड़ाकर) शान्त हो, शान्त हो, मत घबड़ाओ।

वाल्टर — तुम्हारे पास ब्रांडी नहीं है?

कोकसन — मेरे पास शेरी है।

वाल्टर — अच्छा, ले आओ जल्दी।

(जेम्स एक कुर्सी खींच लाता है, वाल्टर रुथ को उस पर लिटा देता है।)

कोकसन — (शेरी की बोतल लाकर) यह लीजिए, बहुत तेज अच्छी शेरी है।

(वे उसके होठों के भीतर शेरी डालने की चेष्टा करते हैं। पैरों की आहट पाकर ठहर जाते हैं। बाहर का दरवाजा खुलता है

और उसी कमरे में विस्टर और स्वीडिल कोई चीज लादकर लाते हैं।)

जेम्स — (तेजी से बढ़कर) यह क्या है?

(वे उस बोझ को नजरों से बाहर दफ्तर में उतारते हैं। रुथ के सिवा सब जाकर उसके चारों ओर खड़े हो जाते हैं और दबी जबान से बातें करते हैं।)

विस्टर — कूद पड़ा — गर्दन टूट गयी।

वाल्टर — हा ईश्वर!

विस्टर — यह सोचना पागलपन था कि मुझे झाँसा देकर निकल जायगा। दो-चार महीने के सिवा और तो कुछ होता ही नहीं।

वाल्टर — (निराशा से) बस, इतना ही।

जेम्स — ओफ्! जान ही पर खेल गया।

(अचानक बड़े ही व्यथित कंठ से।)

जल्दी जाओ। एक डाक्टर बुला लाओ।

(स्वीडिल दौड़ता है।)

एक डोली भी लाना।

(विस्टर चला जाता है। रुथ के चेहरे पर भय और कातरता का भाव बढ़ता जाता है मानो किसी की बात सुनने की हिम्मत उसमें न हो। फिर धीरे-धीरे उठकर उनकी ओर बढ़ती है।)

वाल्टर — (अचानक उसकी ओर देखकर) हटो।

(तीनों आदमी रास्ता छोड़कर पीछे हटते हैं। रुथ घुटनों के बल देह के पास गिर पड़ती है।)

रुथ — (धीमी आवाज से) यह क्या? इसकी सांस बन्द हो रही है।

(लाश से लिपटकर)

मेरे प्रियतम! मेरे सुहाग!

(बाहर के कमरे के दरवाजे पर लोग खड़े नज़र आते हैं।)

रुथ — (उन्मत्त की भांति खड़ी होकर) नहीं, नहीं, वह मर गए। मत छुओ।

(सब लोग हट जाते हैं।)

कोकसन — (चुपके से बढ़कर बैठे हुए कंठ से) हाय दुखिया! तुझ पर इतनी विपत्ति!

(अपने पीछे पैरों की आहट सुनकर रुथ कोकसन की ओर देखती है।)

कोकसन — अब उसे कोई नहीं छू सकता और न कभी छू सकेगा। वह अब ईश्वर के शान्तिभवन में सुरक्षित है।

(रुथ पत्थर की भांति निश्चल होकर दरवाजा के पास खड़े हुए कोकसन की ओर देखती है। कोकसन झुककर व्यथित भाव से उसका हाथ पकड लेता है जैसे कोई किसी भूले-भटके को पथ बताने के लिए पकड़ता हो।)

(परदा गिरता है।)

प्रेमचंद

हड़ताल

जॉन गॉल्सवर्दी (John Galsworthy) के नाटक Strife का अनुवाद

[हिन्दीकोश]

हड़ताल

पात्र-सूची

जॉन ऐंथ्वनी — टिनार्थ के टीन के कारखाने का मालिक

एडगार ऐंथ्वनी — जॉन ऐंथ्वनी का पुत्र

हेनरी टेंच्च — मन्त्री

फ्रांसिस अन्डरवुड — मैनेजर

साइमन हार्निस — ट्रेड यूनियन का एक अधिकारी

फ्रास्ट — जॉन ऐंथ्वनी का खानसामा

एनिड — जान ऐंथ्वनी की बेटी

एनी राबर्ट — डेविड राबर्ट की बीबी

मेज टामस — हेनरी टामस की बेटी

मिसेज़ राउस' – जॉर्ज और हेनरी राउस की माँ

मिसेज़ बल्जिन — जॉन बल्जिन की बीबी

मिसेज़ यो — एक मजदूर की बीबी

अन्डरवुड — परिवार की एक सेविका

जॉन — मेज का छोटा भाई

बोर्ड के डाइरेक्टर

फ्रेडरिक वाइल्डर, विलियम स्केंटलबरी, ओलिवर वेंकलिन

मजदूरों की कमेटी

डेविड राबर्ट, जेम्स ग्रीन, जान बल्जिन, हेनरी टामस, जॉर्ज राउस

कारखाने के मजदूर

हेनरी राउस, लुइस, जागो, एवेंस, एक लोहार, डेविस, लाल बालवाला युवक, ब्राउन

अंक 1 – मैनेजर के घर का भोजनालय।

अंक 2 – पहला दृश्य — राबर्ट के घर का बावर्चीखाना।

दूसरा दृश्य — कारखाना के बाहर का दृश्य।

अंक 3 – मैनेजर के घर का दीवानखाना।

घटना सातवीं फरवरी को तीसरे पहर बारह और छः बजे के बीच में शुरू होती है।

अंक 1

पहला दृश्य

[दोपहर का समय है, अन्डरवुड के भोजनालय में तेज आग जल रही है। आतिशदान के एक तरफ़ दुहरे दरवाजे हैं, जो बैठक में जाते हैं। दूसरी तरफ़ एक दरवाजा है, जो बडे कमरे में जाता है। कमरे के बीच में, एक लम्बी खाने की मेज है। उस पर कोई मेजपोश नहीं है। वह लिखने की मेज बना ली गई है। उसके सिरे पर सभापति के स्थान पर जॉन ऐंथ्वनी बैठा हुआ है। वह एक बुड्ढा, बडे डीलडौल का आदमी है। दाढी मूँछ मुड़ी हुई, रंग लाल, घने सफेद बाल और घनी काली भौंहें। चाल-ढाल से वह सुस्त और कमजोर मालूम होता है, लेकिन उसकी आँखें बहुत तेज हैं। उसके पास पानी का एक गिलास रक्खा हुआ है। उसकी दाहिनी तरफ़ उसका बेटा एडगार बैठा अख़बार पढ रहा है। उसकी उम्र तीस साल की होगी। सूरत से उत्साही मालूम होता है। उसके बाद वेंकलिन झुका हुआ दस्तावेजों को देख रहा है, उसकी भौंहें उभरी हुई हैं और बाल खिचड़ी हो गए हैं। टेंच जो मन्त्री है, खड़ा उसे मदद दे रहा है। वह छोटे क़द का दुबला, और कुछ गरीब आदमी है। वह गलमुच्छे रक्खे हुए है।

वेंकलिन की दाहिनी तरफ़ मैनेजर अन्डरवुड बैठा है। वह शान्त मनुष्य है जिसके जबड़े की हड्डी लम्बी और गठी हुई है और आँखें स्थिर हैं। आतिशदान के पीछे स्केंटलबरी बैठा हुआ है, जो भारी भरकम, पीला सुस्त आदमी है। उसके बाल सफेद हैं, और कुछ गंजा है। उसके और सभापति के बीच में दो खाली कुर्सियाँ हैं।]

वाइल्डर — (दुबला मुर्दा और चिड़चिड़ा आदमी है। उसकी सफेद मूँछे झुकी हुई हैं। आग के सामने खड़ा है।) इस आग के मारे नाक में दम है। क्यों टेंच, यहाँ कोई जंगला होगा?

स्केंटलबरी — जंगला!

टेंच — हाँ, अवश्य मिस्टर वाइल्डर।

(वह अन्डरवुड की तरफ देखता है।)

शायद मैनेजर — शायद मिस्टर अन्डरवुड —

स्केंटलबरी — अन्डरवुड यह तुम्हारे आतिशदान —

अन्डरवुड — (कागजों को देखते-देखते चौंककर) पर्दा? शायद! मुझे खेद है।

(वह कुछ मुस्कराकर द्वार की ओर जाता है।)

हम तो आजकल यहाँ यह शिकायत कम सुनते हैं कि आग बहुत तेज़ है।

(वह इस तरह धीरे-धीरे और चबा-चबाकर बोलता है, जैसे मुँह में पाइप लिए हुए हो।)

वाइल्डर — (दुःखी होकर) तुम्हारा मतलब मजदूरों से है, अच्छा।

(अन्डरवुड बाहर चला जाता है।)

स्केंटलबरी — बड़े दुःखी हैं, बेचारे।

वाइल्डर — यह उन्हीं का दोष है स्केंटलबरी।

एडगार — (अपना अख़बार ऊपर उठाकर) इस अख़बार से तो मालूम होता है कि उन्हें बहुत तकलीफ़ है।

वाइल्डर — अजी वह रद्दी अख़बार है, इसे वेंकलिन को दे दो। उसके उदार विचारों से मेल खाता है। ये सब हमें शायद दानव कहते होंगे। इस रद्दी अख़बार के एडीटर को गोली मार देना चाहिए।

एडगार — (पढ़ता है) 'अगर उन सभ्य पुरुषों का बोर्ड, जो लन्दन में आराम कुर्सियों पर बैठे हुए टिनार्थ के टीन के कारखाने को चलाते हैं, इतनी दया करे कि यहाँ आकर इस हड़ताल में मजदूरों की दुर्दशा को अपनी आँखों से देखे...'

वाइल्डर — अब तो हम आ गए हैं।

एडगार — (पढ़ता हुआ) 'तो हमें विश्वास नहीं होता कि उनके पाषाण हृदय भी द्रवित न हो जायँ।'

(वेंकलिन उसके हाथ से पत्र ले लेता है।)

वाइल्डर — बदमाश! मैं इस आदमी को उस समय से जानता हूँ जब उसके पास झंझी कौड़ी भी न थी। शैतान ने उन लोगों को धमका-धमकाकर खूब धन जोड लिया है, जिनके विचार उसके विचारों से नहीं मिलते।

(ऐंथ्वनी कुछ कहता है, जो सुनाई नहीं पड़ता।)

वाइल्डर — तुम्हारे पिता जी क्या कहते हैं?

एडगार — वह कहते हैं-'पतीली और बर्तन।

वाइल्डर — अच्छा!

(वह स्कैंटलबरी के बगल में बैठ जाता है।)

स्केंटलबरी — (मुँह से हवा निकालकर) अगर, जंगला न आएगा तो मैं उबल जाऊँगा।

(अन्डरवुड और एनिड एक जंगला लेकर आते हैं और आग के सामने रख देते हैं। एनिड का क़द लम्बा, चेहरा दृढ़ और छोटा और अवस्था अट्ठाईस साल है)

एनिड — इसे और पास रक्खो फ्रेंक। इससे काम चल जायगा मिस्टर वाइल्डर? इससे बड़ा हमारे पास नहीं है।

वाइल्डर — बहुत अच्छी तरह, धन्यवाद।

स्केंटलबरी — (आनन्द से सांस लेकर घूमता हुआ) आपने बड़ी दया की देवी जी।

एनिड — पिता जी, आपको किसी और चीज की जरूरत है?

(ऐंथ्वनी सिर हिलाता है।)

तुम्हें कुछ चाहिए एडगार?

एडगार — हाँ, मुझे एक 'जे' निब दे दो।

एनिड — वह मिस्टर स्केंटलबरी के पास रक्खी हुई है।

स्केंटलबरी — (निबों की एक छोटी-सी डिबिया उठाकर) अच्छा! तुम्हारे भाई साहब 'जे' निब से लिखते हैं। मैनेजर साहब किस निब से लिखते हैं?

(विशेष नम्रता से)

तुम्हारे पति किस निब से लिखते हैं।

अन्डरवुड — पर की क़लम से।

स्केंटलबरी — बतख का पर भी कितनी अच्छी चीज है।

(वह पर की क़लमों को दिखाता है।)

अन्डरवुड — (रुखाई से) धन्यवाद! एक मुझे दीजिए।

(वह एक क़लम लेता है।)

खाने में क्या देर है एनिड?

एनिड — (दुहरे दरवाजे पर रुकती है) हम यहाँ दीवानखाने में खाना खायेंगे। इसलिए कमरे में जल्दी करने की जरूरत नहीं।

(वेंकलिन और वाइल्डर सिर झुकाते हैं और वह चली जाती है।)

स्केंटलबरी — (यकायक चौंककर) अच्छा खाना! वह होटल — भयंकर! कल रात को तुमने भुनी हुई चर्बी खाई थी?

वाइल्डर — साढे बारह बज गए! क्यों टेंच तुम जलसे की कार्यवाही नहीं पढ़ोगे?

टेंच — (रजामन्दी के लिए सभापति की ओर देखकर, एक स्वर में तेजी से पढ़ता है।) बोर्ड के एक जलसे की कार्यवाही जो 3 जनवरी को कम्पनी के दफ्तर नंबर 59 केनन स्ट्रीट में हुआ।

उपस्थित मिस्टर ऐंथ्वनी सभापति, मिस्टर वाइल्डर, विलियम स्केंटलबरी, ओलिवर वेंकलिन, और एडगार ऐंथ्वनी। मैनेजर के वह पत्र पढ़े गए जो उसने 20, 23, 25 और 28 जनवरी को कम्पनी के कारखानों की हड़ताल के विषय में लिखे थे। वह पत्र पढरे गए जो मैनेजर को 23, 24, 26 व 29 जनवरी को लिखे गए। सेन्ट्रल यूनियन के प्रतिनिधि मिस्टर साइमन हार्निस का पत्र पढ़ा गया। जिसमें उन्होंने बोर्ड से बातचीत करने की अनुमति मांगी थी। मजदूरों की कमेटी का पत्र पढ़ा गया जिस पर डेविड राबर्ट, जेम्स ग्रीन, जॉन बल्जिन, हेनरी टामस, जॉर्ज राउस के दसखत थे, जिसमें उन्होंने बोर्ड से बात-चीत करनी चाही थी। यह निश्चय हुआ कि सातवीं फ़रवरी को मैनेजर के मकान पर बोर्ड की एक विशेष बैठक हो जाय, जिसमें मिस्टर साइमन हार्निस और मजदूरों की कमेटी से उसी जगह इस मामले पर बातचीत की जाय। बारह बैनामे मंजूर हुए, नौ सर्टीफिकेट और एक बकाया के सर्टीफिकेट पर दखत किये और मुहर लगाई।

(वह रजिस्टर को सभापति की ओर बढ़ा देता है।)

ऐंथ्वनी — (लम्बी सांस लेकर) अगर आप लोग उचित समझें तो उस पर दसख़त कर दें।

(क़लम को मुश्किल से घुमाकर हस्ताक्षर कर देता है।)

वाइल्डर — क्यों टेंच, यूनियन की यह क्या चाल है? मजदूरों से तो उनका मेल नहीं हुआ। हार्निस किसलिए मिलना चाहता है?

टेंच — उसे आशा है कि हममें कोई समझौता हो जायगा? वह आज शाम को मजदूरों से कुछ बातचीत करेगा।

वाइल्डर — हार्निस! ठीक! वह एक ही घुटा हुआ, काइयां आदमी है। मैं इन पर विश्वास नहीं करता। मुझे ऐसा मालूम होता है कि हमने नरमी करने में भूल की। मजदूर लोग यहाँ कब तक आ जायेंगे?

अन्डरवुड — आते ही होंगे।

वाइल्डर — अच्छी बात है, अगर हम तैयार नहीं हैं, तो उन्हें रुकना पड़ेगा — अगर थोड़ी देर तक अपनी एड़ियाँ ठंडी कर लें, तो उन्हें कोई हानि न होगी।

स्केंटलबरी — (अहिस्ता से) बेचारे गरीब हैं। बर्फ गिर रही है, क्या मौसम है।

अन्डरवुड — (अपने मतलब से रुक-रुककर) इस घर से ज्यादा गर्म जगह इन जाड़ों में उन्हें न मिली होगी।

वाइल्डर — खैर, मुझे आशा है, हम इस मामले को इतनी जल्द तय कर लेंगे कि मुझे साढे छः की गाड़ी मिल जाय। मैं कल अपनी बीवी को स्पेन ले जा रहा हूँ।

(गप-शप करने के विचार से)

मेरे बाप के कारखाने में भी सन् 69 में हड़ताल हुई थी। ठीक यही फरवरी का महीना था। मजदूर लोग उन्हें गोली मार देना चाहते थे।

वेंकलिन — अच्छा! इस जीवरक्षा के दिनों में जिन महीनों में चिड़ियाँ अंडे देती हैं, उनमें शिकार खेलना मना है।

वाइल्डर — मालिकों के लिए जीवरक्षा के दिन थे। वह जेब में पिस्तौल रखकर दफ्तर जाया करते थे।

स्केंटलबरी — (कुछ डरकर) सच!

वाइल्डर — (बातचीत का अन्त करने के लिए) नतीजा यह हुआ कि उन्होंने एक मज़दूर के पैर में गोली मार दी।

स्केंटलबरी — (बे-अखितियार जाँघ को स्पर्श करके) सच! ईश्वर बचाए!

ऐंथ्वनी — (एजिन्डा को ऊपर उठाकर) हमें यह विचार करना है कि इस हड़ताल के सम्बन्ध में बोर्ड का क्या निश्चय होगा।

(सब चुप हो जाते हैं।)

वाइल्डर — यह सत्यानाशी तिरमुखी लड़ाई है — यूनियन, मजदूर और हम।

वेंकलिन — यूनियन से हमें कोई मतलब नहीं।

वाइल्डर — मेरा तो यह अनुभव है कि यूनियन हमेशा बीच में कूद पड़ता है। उसका बुरा हो! अगर यूनियन मजदूरों की सहायता से मुँह मोडना चाहता है और वैसा कर भी रहा है, तो फिर उसने क्यों इन आदमियों को हड़ताल करने ही दिया?

एडगार — ऐसे एक दर्जर्न अवसर आ चुके।

वाइल्डर — लेकिन मैं इसे कभी समझ नहीं सका। यह मेरी समझ से बाहर है। वे कहते हैं कि इंजीनियरों और भट्ठी वालों की मांग बहुत ज्यादा है — बात ठीक है, लेकिन यह इस बात के लिए काफी नहीं है कि यूनियन उनकी सहायता से मुँह मोड ले। इसका क्या मतलब है?

अन्डरवुड — हार्पर और टाइनवेल के कारखानों में हडताल होने का डर।

वाइल्डर — (विजय-गर्व से) अच्छा! तो दूसरी हड़तालों से डरते हैं! बस, अब बात समझ में आ गई। लेकिन हमें पहले यह क्यों न बतलाया गया?

अन्डरवुड — बतलाया गया था।

टेंच — आप उस दिन बोर्ड में न आए थे।

स्केंटलबरी — मजदूर लोग समझ गए कि अगर यूनियन ने हाथ खींच लिया, तो फिर उनका कहीं ठिकाना नहीं है। यह पागलपन है।

अन्डरवुड — यह राबर्ट की करतूत है।

वाइल्डर — यह हमारा सौभाग्य है कि मजदूरों को राबर्ट जैसा कट्टर उपद्रवी नेता मिल गया।

(सब चुप हो जाते हैं।)

वेंकलिन — (ऐंथ्वनी को देखकर) अब!

वाइल्डर — (चिड़-चिड़ाता हुआ बोल उठता है) पूरी आफत है। हम लोग जिस स्थिति में पड गए हैं, मैं उसे नहीं पसंद करता। मैं बहुत दिनों से यही कहता आ रहा हूँ।

(वेंकलिन को देखकर।)

जब वेंकलिन और मैं क्रिसमस के पहिले यहाँ आए थे, तो ऐसा मालूम होता था कि मजदूर लोग राह पर आ जायँगे। तुम्हारा भी तो यही विचार था अन्डरवुड।

अन्डरवुड — हाँ।

वाइल्डर — लेकिन वे राह पर नहीं आए, और हमारी दशा दिन-दिन बिगड़ती जाती है — हमारे ग्राहक टूटते जाते हैं — हिस्सों का दर घटता जाता है।

स्केंटलबरी — (सिर हिलाकर) हा हा!

वेंकलिन — क्यों टेंच, इस हडताल से हमें कितना घाटा हुआ?

टेंच — पचास हजार से ऊपर।

स्केंटलबरी — (दुःख से) यह बात है!

वाइल्डर — इस घाटे का पूरा होना कठिन है।

टेंच — और क्या।

वाइल्डर — किसे मालूम था कि मज़दूर लोग इस तरह अड़े रहेंगे — किसी ने मुँह तक नहीं खोला।

(टेंच को क्रोध से देखता हैं।)

स्केंटलबरी — (सिर हिलाकर) मैं लड़ाई-झगड़े से हमेशा भागता हूँ और हमेशा भागूँगा।

ऐंथ्वनी — हम उनके पैरों नहीं पड़ सकते।

(सब उसकी तरफ़ ताकने लगते हैं।)

वाइल्डर — पैरों कौन पड़ना चाहता है?

(ऐंथ्वनी उसकी तरफ़ ताकता है।)

मैं सोच समझ कर काम करना चाहता हूँ। जब मजदूरों ने राबर्ट को दिसम्बर में बोर्ड के पास भेजा था तब अवसर था। हमें उसको मिला लेना चाहिए था; इसके बदले सभापति ने —

(ऐंथ्वनी के सामने आँखें नीची करके।)

हमने उसे झिड़क दिया। अगर उस वक्त जरा चतुराई से काम लेते तो सब हमारे पंजे में आ जाते।

ऐंथ्वनी — समझौता नहीं हो सकता!

वाइल्डर — यही तो बात है। यह हड़ताल अक्तूबर से अब तक चली आ रही है और जहां तक मैं समझता हूँ, शायद छः महीने और चले। तब तक तो हम चौपट ही हो जायँगे। अगर आँसू पोंछने की कोई बात है, तो'यही कि मजदूर लोग और भी चौपट हो जायँगे।

एडगार — (अन्डरवुड से) क्यों फ्रेंक, आज कल उनकी असली हालत क्या है?

अन्डरवुड — (उदासीन भाव से) बहुत खराब!

वाइल्डर — लेकिन यह कौन समझ सकता था कि वे इतने दिनों तक बिना सहायता के डटे रहेंगे।

अन्डरवुड — जो उन्हें जानते हैं वे समझे हुए थे।

वाइल्डर — मैं हाथ मारकर कहता हूँ कि यहाँ उन्हें कोई नहीं जानता! अच्छा, टिन का क्या रंग है? दिन-दिन तेज होता जाता है। जब हमारा कारखाना चलने भी लगेगा तो हमें बाजार-भाव के ऊपर चुकाए हुए माल को लेना पड़ेगा।

वेंकलिन — इसके बारे में आप क्या कहते हैं सभापति महोदय?

ऐंथ्वनी — लाचारी है।

वाइल्डर — ईश्वर जाने कब तक हम नफा न दे सकेंगे!

स्केंटलबरी — (जोर देकर) हमें हिस्सेदारों का ख़याल रखना चाहिए।

(सभापति की ओर फिरकर)

सभापति महोदय, हमें हिस्सेदारों का खयाल रखना चाहिए।

(ऐंथ्वनी मुँह में कुछ कहता है।)

स्केंटलबरी — आप क्या कह रहे हैं?

टेंच — सभापति कहते हैं कि उन्हें आपका खयाल है।

स्केंटलबरी — (फिर शिथिल होकर) काटे खाता है!

वाइल्डर — यह अब दिल्लगी की बात नहीं है। सभापति महोदय को नफे की चिन्ता न हो, लेकिन मैं बरसों तक नफे को तिलांजलि नहीं दे सकता। हमसे यह नहीं हो सकता कि कम्पनी के धन को मटियामेट करते रहें।

एडगार — (कुछ लज्जित होकर) मेरा विचार है कि हमें मज़दूरों की दशा का अधिक ध्यान रखना चाहिए।

(ऐंथ्वनी के सिवा सब अपनी-अपनी जगहों पर बैठे इशारेबाजी करने लगते हैं।)

स्केंटलबरी — (लम्बी सांस लेकर) मित्र, पर हमें यहाँ अपने निजी मनोभावों का विचार न करना चाहिए। इससे काम न चलेगा।

एडगार — (व्यंग्य से) मैं अपने लोगों के मनोभावों का विचार नहीं कर रहा हूँ, मजदूरों के भावों का विचार कर रहा हूँ।

वाइल्डर — इसका जवाब तो यही है कि हम भी रोजगारी आदमी हैं, परोपकार करने नहीं बैठे हैं।

वेंकलिन — इसी का तो रोना है।

एडगार — मजदूरों की यह सब दुर्दशा देखकर यह ज़रूरी नहीं है कि हम इस मामले को इतना बढाएँ — यह....यह निर्दयता है।

(किसी की ज़बान नहीं खुलती, मानो एडगार ने कोई ऐसी चीज खोलकर सामने रख दी है जिसका मौजूद होना कोई भला आदमी स्वीकार नहीं कर सकता।)

वेंकलिन — (व्यंग्यमय हँसी के साथ) यह तो उचित नहीं है कि हम अपनी नीति की बुनियाद दया जैसी शौक की बातों पर रक्खें।

एडगार — मुझे ऐसे मामलों से घृणा है।

ऐंथ्वनी — हमने तो रार नहीं मोल लिया था।

एडगार — इतना तो मैं भी जानता हूँ साहब, लेकिन हम लोग अब बहुत दूर बढ़े जा रहे हैं।

ऐंथ्वनी — हर्गिज नहीं।

(सब एक दूसरे का मुँह ताकते हैं।)

वेंकलिन — सभापति महोदय, शौक़ की बात अलग है, हमें यह देखना है कि हम कर क्या रहे हैं।

ऐंथ्वनी — मजदूरों से एक बार दबे तो फिर हमेशा दबते रहना पड़ेगा। कभी इसका अन्त न होगा।

वेंकलिन — मैं इसे मानता हूँ, लेकिन —

(ऐंथ्वनी सिर हिलाकर स्वीकार करता है।)

मगर महोदय, फिर वही शौक की बात आ गई। हम यहाँ सिद्धान्तों की रक्षा करने नहीं बैठे हैं। हिस्सों का मूल्य घट गया है।

वाइल्डर — और अबकी नफा बाँटने के समय तक आधा ही रह जायगा।

स्केंटलबरी — (घबराकर) अजी नहीं, ऐसी बुरी दशा क्या होगी।

वाइल्डर — (धमकाकर) वह तो आगे ही आएगी।

(ऐंथ्वनी की बात सुनने के लिए आगे को झुककर।)

मैं कुछ सुन नहीं सका —

एडगार — (तेजी से) पिता जी कहते हैं जो कुछ करना चाहिए वह करो और दूसरे झगड़ों में न पड़ो।

वाइल्डर — छी!

स्केंटलबरी — (हाथ ऊपर उठाकर) सभापति बैरागी हैं — मैं हमेशा कहता आता हूँ कि सभापति बैरागी हैं।

वाइल्डर — हमारी तो लुटिया ही डूब जायगी।

वेंकलिन — (मधुर स्वर में) सभापति महोदय, क्या आप सचमुच केवल एक — एक सिद्धान्त के लिए-अपने जहाज को डुबा दोगे?

ऐंथ्वनी — वह डूबेगा नहीं।

स्केंटलबरी — (घबराकर) जब तक मैं बोर्ड में हूँ तब तक तो मुझे आशा है न डूबेगा।

ऐंथ्वनी — (आँखें मारकर) जरा समझ-बूझकर, स्केंटलबरी।

स्केंटलबरी — क्या आदमी है।

ऐंथ्वनी — मैंने उन्हें हमेशा ललकारा है और कभी नीचा नहीं देखा।

वेंकलिन — हमारा और आपका सिद्धान्त एक है महोदय। लेकिन हम सब लोहे के नहीं बने हैं!

ऐंथ्वनी — हमें केवल अटल रहना चाहिए।

वाइल्डर — (उठकर आग के पास जाता है) और जितनी जल्द हो सके तबाह हो जाना चाहिए।

ऐंथ्वनी — तबाह हो जाना दब जाने से कहीं बढ़कर है।

वाइल्डर — (चिढ़कर) यह आपको अच्छा लगता होगा, लेकिन मुझे तो नहीं अच्छा लगता, और जहां तक मैं समझता हूँ, और कोई भी इसे पसंद नहीं करता।

(ऐंथ्वनी उसके मुख की ओर ताकता है — सब चुप हो जाते हैं।)

एडगार — हड़ताल जारी रहने का मतलब यह है कि मजदूरों के बाल-बच्चे भूखों मर जायँ। मेरी समझ में नहीं आता हम इस बात को कैसे भूल सकते हैं।

(वाइल्डर यकायक आग की ओर मुँह फेर लेता है और स्केंटलबरी इस ख़याल को दूर रखने के लिए हाथ फैलाता है।)

वेंकलिन — फिर वही दया और धर्म की बात आ गई!

एडगार — क्या आपका ख़याल है कि व्यापारियों के लिए सज्जनता का नाम लेना ही पाप है?

वाइल्डर — मजदूरों .के लिए मुझे भी उतना ही दुःख है जितना दूसरों को हो सकता है, लेकिन अगर वे अपने पाँव में कुल्हाड़ी मारें तो यह हमारा दोष नहीं। हमारे लिये अपनी और हिस्सेदारों की चिन्ता काफी है।

एडगार — (चिढ़कर) अगर हिस्सेदारों को एक या दो बार नफा न मिले तो वह मर न जायेंगे। यह तो ऐसा कारण नहीं कि हम लोग अपनी हार मान लें।

स्कैंटलबरी — (बहुत घबराकर) भाई जान, तुम तो ऐसी बातें करते हो मानो मुनाफा कोई चीज ही नहीं। मुझे नहीं मालूम कि हम कितने पानी में हैं।

वाइल्डर — इस मामले में केवल एक बात सोचने की है। हम इस हडताल के हाथों तबाह नहीं होना चाहते।

ऐंथ्वनी — हम क़दम पीछे न हटाएँगे।

स्कैंटलबरी — (निराशा का संकेत करके) जरा आपकी सूरत देखिए।

(ऐंथ्वनी अपनी कुरसी पर फिर टिककर बैठ रहा है। सब लोग उसकी ओर देखते हैं।)

वाइल्डर — (अपनी जगह पर लौटकर) अगर सभापति की यही राय है तो मेरी समझ में नहीं आता कि हम लोग यहाँ आए क्या करने।

ऐंथ्वनी — मजदूरों से यह कहने के लिए कि हमसे कोई आशा मत रक्खो। (दृढ़ता से) जब तक उनसे सीधी-सादी भाषा में यह न कह दिया जायगा उन्हें इसका विश्वास न आएगा।

वाइल्डर — ठीक। मुझे बिलकुल आश्चर्य न होगा। अगर उस पाजी राबर्ट ने यही बात कहने के लिए हमें यहाँ बुलाया हो। कपटी आदमियों से मुझे चिढ़ है।

एडगार — (क्रोध से) हमने उसके आविष्कार का कुछ भी मूल्य नहीं दिया। मैं तभी से यह कहता चला आता हूँ।

वाइल्डर — हमने उसे पाँच सौ रुपये उसी वक्त दिए और दो साल बाद दो सौ रुपये बोनस दिया। क्या इतनी रक़म काफी नहीं है? वह और क्या चाहता है?

टेंच — (असन्तोष के भाव से) कम्पनी ने उसके आविष्कार से एक लाख पैदा किया और उसके हत्थे चढ़े कुल सात सौ रुपये। इसी तरह उसके दिन कट रहे हैं।

वाइल्डर — वह तो आग लगाने वाला आदमी है। मुझे इन पंचायतों से घृणा है, लेकिन अब हार्निस यहाँ आ गया है, और हमें चाहिए कि उसकी मार्फत सारे झगड़े तय कर लें।

ऐंथ्वनी — नहीं।

सब के सब फिर उसकी ओर देखते हैं।

अन्डरवुड — राबर्ट मजदूरों को इस पर राजी न होने देगा।

स्केंटलबरी — खूनी आदमी है, खूनी।

वाइल्डर — (ऐंथ्वनी की ओर देखकर) और वह अकेला ही नहीं है।

(फ्रास्ट बड़े कमरे से अन्दर आता है।)

फ्रास्ट — (ऐंथ्वनी से) यूनियन के मिस्टर हार्निस आए हुए हैं। मज़दूर लोग भी आ गए हैं।

(ऐंथ्वनी सिर हिलाता है।)

(अन्डरवुड जाता है और हार्निस को लेकर लौटता है। हार्निस दाढ़ी मोंछ मुड़ाए हुए है, उसका रंग पीला है, गाल पिचके हुए, आँखें तेज और ठुड्डी गोल — फ्रास्ट चला जाता है।)

अन्डरवुडङ — (टेंच की कुर्सी की तरफ़ इशारा करके) वहाँ सभापति के बगल में बैठ जाव मिस्टर हार्निस।

(हार्निस के आते ही बोर्ड के लोग एक दूसरे के पास आ जाते हैं और उसकी तरफ़ देखते हैं जैसे मवेशी किसी कुत्ते को देखे।)

हार्निसं — (सब को .गौर से देखकर और सिर झुकाकर) धन्यवाद।

(वह बैठ जाता है। नाक से बोलता है।)

महाशयगण, मुझे आशा है कि आज हम लोग इस मामले को तय करेंगे।

वाइल्डर — ये तो इस बात पर मुनहसर है कि तुम किसे तय करना कहते हो। आदमियों को अन्दर क्यों नहीं बुला लेते?

हार्निस — (चतुराई से) मजदूर लोग आप लोगों से कहीं ज्यादा न्याय पर हैं। हमारे सामने अब यह प्रश्न है कि हमें उन लोगों की फिर मदद करनी चाहिए या नहीं।

(वह ऐथ्वनी के सिवा और किसी से नहीं बोलता। उसका रुख ऐंथ्वनी की तरफ़ है।)

ऐंथ्वनी — तुम्हारा जी चाहे तुम उनकी मदद करो। हम खुद मजदूर रख लेंगे और तुमसे कोई सरोकार न रक्खेंगे।

हार्निस — यह नहीं हो सकता मिस्टर ऐंथ्वनी, आपको बगैर पंचायत की मदद के मजदूर न मिलेंगे और आप इसे जानते हैं।

ऐंथ्वनी —यही देखना है।

हार्निस — मैं आपसे सफाई के साथ बातें करना चाहता हूँ। हम आपके मजदूरों की मदद से इसलिए हाथ खींचने पर मजबूर हुए कि उनकी कुछ मांगें बाजार दर से बढ़ी हुई हैं। मुझे आशा है कि आज हम लोग उनसे वह शर्तें उठवा लेंगे। अगर उन्होंने ऐसा किया, तो मैं आप लोगों से साफ़ कहता हूँ कि हम फिर उनकी मदद करने लगेंगे। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आज हम लोग कुछ न कुछ तय करके ही उठें। क्या हम लोग इस पुराने ढंग की खींचातानी का अन्त नहीं कर सकते? इससे आप लोगों को क्या मिल रहा है? आप लोग यह क्यों नहीं मानते कि ये बेचारे आप ही लोगों जैसे मनुष्य हैं, और उसी तरह अपना भला चाहते हैं जेसे आप लोग अपना भला चाहते हैं —

(कटु स्वर में।)

आपकी मोटर गाड़ियाँ, और शाम्पेन और लम्बी-लम्बी दावतें...

ऐंथ्वनी — अगर मजदूर लोग काम पर आ जायँ तो हम उनके साथ कुछ रियायत कर देंगे।

हार्निस — (व्यंग्य से) आप लोगों की भी यही राय है साहब? आप...आप...आप?

(डाइरेक्टर लोग जवाब नहीं देते।)

खैर, मैं यही कह सकता हूँ कि इस ध्वनि में रईसों का घमंड और रोष भरा हुआ है जिसका मेरे खयाल में अब जमाना नहीं रहा — लेकिन मालूम होता है मैं गलती पर था।

ऐंथ्वनी — यह वही ध्वनि है जिसमें मजदूर लोग बातें करते हैं। अब तो यह देखना है कि कौन ज्यादा दिनों तक अड़ सकता है — वह लोग हमारे बिना या हम लोग उनके बिना?

हार्निस — मुझे आश्चर्य है कि आप लोग व्यापारी होकर भी शक्ति के इस तरह बरबाद होने पर लज्जित नहीं होते। इसका नतीजा जो कुछ होगा, वह आपसे छिपा नहीं है।

ऐंथ्वनी — क्या होगा?

हार्निस — समझौता-यही बराबर होता है।

स्केंटलबरी — आप मजदूरों को यह नहीं समझा सकते कि हमारा और उनका एक ही स्वार्थ है?

हार्निस — (घूमकर व्यंग्य से) अगर यह बात ठीक होती तो मैं उन्हें समझ सकता था।

वाइल्डर — देखो हार्निस, तुम बुद्धिमान हो और साम्यवादियों के उन गोरखधंधों को नहीं मानते जिनकी आजकल धूम मची हुई है। उनके और हमारे दिल में जरा भी अन्तर नही है।

हार्निस — मैं आप से एक बहुत सीधा-सादा, छोटा-सा प्रश्न करता हूँ। आप मजदूरों को उससे एक कौड़ी भी ज्यादा देंगे जितना आपको लाचार होकर देना पड़ेगा।

(वाइल्डर चुप रहता है।)

वेंकलिन — (उसी स्वर में) मेरा तुच्छ विचार तो यह है कि आदमियों को उतनी ही मजदूरी देना जितना जरूरी हो, वाणिज्य का क, ख, ग है।

हार्निस — (व्यंग्य से) हाँ, मालूम तो यही होता है कि वह वाणिज्य का क, ख, ग है और यही वाणिज्य का क, ख, ग आपके हित को मजदूरों के हित से अलग किये हुए है।

स्केंटलबरी — (धीरे से) हमें कुछ निश्चय-कर लेना चाहिए।

हार्निस — (रुखाई से) तो यह तय हो गया कि बोर्ड मजदूरों के साथ कोई रियायत न करेगा?

(वेंकलिन और वाइल्डर कुछ बोलने के लिए आगे झुकते हैं, पर रुक जाते हैं।)

ऐंथ्वनी — (सिर हिलाकर) हाँ।

(वेंकलिन और वाइल्डर फिर आगे को झुकते हैं और स्केंटलबरी यकायक गुर्रा उठता है।)

हार्निस — शायद आप कुछ कहने जा रहे थे?

(लेकिन स्केंटलबरी कुछ नहीं बोलता।)

एडगार — (यकायक सिर उठाकर) हमें मजदूरों की इस दशा पर बहुत खेद है।

हार्निस — (बेपरवाही से) मजदूरों को आपकी दया की ज़रूरत नहीं है साहब, वह केवल न्याय चाहते हैं।

ऐंथ्वनी — तो उन्हें न्यायी बनाओ।

हार्निस — 'न्यायी' की जगह 'दीन' कहिए मि. ऐंथ्वनी, मगर वह क्यों दीन बनें? यह संयोग की बात है कि उनके पास धन नहीं है, नहीं तो आप लोगों ही जैसे मनुष्य वे लोग भी हैं।

ऐंथ्वनी — ढोंग है!

हार्निस — खैर, मैं पाँच साल अमेरिका में रह चुका हूँ। इससे आदमी के विचारों पर असर पड़ता ही है।

स्केंटलबरी — (मानो अपनी अधूरी गुर्राहट की कसर निकालने के लिए) मजदूरों को भीतर बुलाकर सुनना चाहिए कि वह क्या कहते हैं।

(ऐंथ्वनी सिर हिलाता है और अन्डरवुड इकहरे दरवाजे से बाहर जाता है।)

हार्निस — (बेपरवाही से) आज शाम को मेरी उन लोगों से बातचीत होगी। इसलिए मैं आपसे अर्ज करूँगा कि जब तक वह पूरी न हो जाय आप लोग कोई तोड़ न करें।

(ऐंथ्वनी फिर सिर हिलाता है, और अपना गिलास उठाकर पीता है। अन्डरवुड फिर अन्दर आता है। उसके पीछे-पीछे राबर्ट, ग्रीन बलजिन, टामस, और राउस आते हैं। वे हाथ में हाथ मिलाकर एक कतार में चुपचाप खड़े हो जाते हैं। राबर्ट दुबला, औसत क़द का आदमी है, उसकी पीठ कुछ झुकी हुई है। उसकी खसखसी भूरी दाढ़ी है, गाल की हड्डियां ऊँची, गाल पिचकें हुए, आँखें तेज और छोटी। वह एक पुराना चरबी के दागों से भरा हुआ नीले सर्ज का कोट पहिने हुए है। उसके हाथ में पुरानी टोपी है। वह सभापति के समीप ही खड़ा होता है। उसके बाद ग्रीन है। उसका चेहरा मुरझाया और मुड़ा हुआ है, छोटी सफेद बकरियों की-सी दाढ़ी है और नीचे झुकी हुई मूँछे, शान्त और निष्कपट आँखों के ऊपर लोहे की ऐनक लगाये हुए है। वह एक ओवरकोट पहिने है, जो पुराना होने से हरा हो गया है। उसके बाद बलजिन है जो एक लम्बा मज़बूत, काली मूँछों वाला और मज़बूत कल्ले का आदमी है। वह एक लाल मफलर पहिने हुए और अपनी टोपी को इस हाथ से उस हाथ बदलता रहता है। उसके बगल में टामस है। वह बुड्ढा आदमी है जिसकी मूँछे पकी

हुई हैं, दाढी घनी और चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ी हुई हैं। उसके दाहिनी तरफ राउस है वह पाँचों से छोटा है और सिपाही सा दीखता है, उसकी आँखें चमकदार हैं।)

अन्डरवुड — (इशारा करके} राबर्ट, दीवार से मिली हुई वह कुर्सियाँ हैं, उन्हें खींच लो और बैठो।

राबर्ट — धन्यवाद, मिस्टर अन्डरवुड हम बोर्ड के सामने खड़े ही रहेंगे।

(वह कड़ी आवाज में बातें करता है और उसका उच्चारण विदेशियों जैसा है।)

कैसा मिजाज है मिस्टर हार्निस? आज शाम तक तो आशा न थी कि आपसे भेंट होगी।

हार्निस — (दृढ़ता से) तो हम फिर मिल लेंगे राबर्ट।

राबर्ट — बडे आनन्द की बात है। हमारा कुछ संदेश है। उसे आप अपनी सभा तक पहुँचा दीजिएगा।

ऐंथ्वनी — ये लोग क्या चाहते हैं?

राबर्ट — (तीव्र स्वर में) जरा फिर कहिए, मैं चेयरमैन की बात नहीं सुन पाया।

टेंच — (सभापति की कुर्सी के पीछे से) सभापति यह जानना चाहते हैं कि आदमियों को क्या कहना है।

राबर्ट — हम यहाँ यह सुनने के लिए आए हैं कि बोर्ड को क्या कहना है। पहिले बोर्ड को बोलना चाहिए।

ऐंथ्वनी — बोर्ड को कुछ नहीं कहना है।

राबर्ट — (मज़दूरों की पंक्ति की ओर देखकर) ऐसी दशा में हम डाइरेक्टरों का समय नष्ट नहीं करना चाहते। हमें इस कीमती गालीचे पर से अपने पैर उठा लेने चाहिए।

(वह घूमता है और मज़दूर भी धीरे-धीरे चलते हैं, मानो सम्मोहित हो गए हों।)

वेंकलिन — (नरमी से) सुनो राबर्ट, तुमने हमें इस जाड़े-पाले में इतना ही कहने के लिए तो नहीं बुलाया। हमने कितना लम्बा सफर किया है।

टामस — (जो वेल्स का रहने वाला है) नहीं साहब, और मैं यह कहता हूँ...

राबर्ट — (तीव्र कंठ से) हाँ-हाँ टामस, बोलो क्या कहते हो? डाइरेक्टरों से बातें करने के लिए तुम मुझसे कहीं अच्छे हो।

(टामस चुप हो जाता है।)

टेंच — सभापति कहते हैं कि मजदूरों ही ने इस बैठक के लिए कहा था। इसलिए बोर्ड सुनना चाहता है कि वे क्या कहते हैं।

राबर्ट — अगर मैं उनकी दुःख कहानी कहने लगूँ तो आज पूरी न होगी। और आप में से कुछ लोग पछताएँगे कि लन्दन के महल छोड़कर न आते तो अच्छा होता।

हार्निस — तुम्हारा मतलब क्या है जी। बेमतलब की बातें न करो।

राबर्ट — आप मतलब की बात चाहते हैं मिस्टर हार्निस, तो आज इस बैठक के पहिले जरा यहाँ की सैर कीजिए।

(वह मज़दूरों की ओर देखता है, उनमें से कोई नहीं बोलता। तो तुम्हें बड़े अच्छे-अच्छे दृश्य दिखाई देंगे।)

हार्निस — बहुत अच्छा दोस्त, मगर देखो टाल मत देना।

राबर्ट — (मजदूरों से) हम लोग मिस्टर हार्निस को टालेंगे नहीं। भोजन के साथ थोड़ी शाम्पेन भी लीजिएगा। आपको इसकी जरूरत पड़ेगी।

हार्निस — अच्छा, अब कुछ काम करना चाहिए।

टामस — यह समझ लीजिए कि हम जो कुछ माँगते हैं वह सीधा-सादा न्याय है।

राबर्ट — (जहरीले स्वर में) लन्दन से न्याय? क्या बकते हो हेनरी टामस, पागल तो नहीं हो गए हो? '

(टामस चुप है।)

हम खूब जानते हैं कि हम क्या हैं — मरभुखे कुत्ते-जिन्हें कभी संतोष नहीं होता — सभापति ने मुझसे लंदन में क्या कहा था? "तुम जानते ही नहीं कि तुम क्या कह रहे हो। तुम मूर्ख, गँवार आदमी हो। और उन आदमियों के विषय में कुछ नहीं जानते जिनके पक्ष में तुम खड़े हो।"

एडगार — आप तो विषय से दूर चले जा रहे हैं।

ऐंथ्वनी — (हाथ उठाकर) राबर्ट, मालिक एक ही हो सकता है।

राबर्ट — तो फिर हम ही मालिक होंगे।

(सब चुप हो जाते हैं, ऐंथ्वनी और राबर्ट एक दूसरे से आँखें मिलाते हैं।)

अन्डरवुड — राबर्ट, अगर तुम्हें डाइरेक्टरों से कुछ नहीं कहना है, तो ग्रीन या टामस को मजदूरों की तरफ से क्यों नहीं बोलने देते।

(ग्रीन और टामस चिन्तित भाव से राबर्ट को, एक दूसरे को और दूसरे आदमियों को देखते हैं।)

ग्रीन — (जो अंगरेज है) महाशयो, अगर आप लोगों ने मेरी बात मानी होती...।

टामस — मुझे जो कुछ कहना है, वही हम सबको कहना है...।

राबर्ट — तुम्हें जो कुछ कहना हो कहो, हेनरी टामस।

स्केंटलबरी — (तीव्र आत्मिक अशांति के भाव से) ये बेचारे अपनी आत्मा की रक्षा भी नहीं कर सकते।

राबर्ट — और क्या? आत्मा के सिवा उनके पास और है ही क्या? क्योंकि देह का तो आप लोगों ने उद्धार कर दिया, मिस्टर स्केंटलबरी।

(चुभती हुई आवाज में, मानो मिस्टर का शब्द निकालना ही आपत्ति है।)

(मज़दूरों से) क्यों तुम लोग बोलते हो या मैं ही तुम्हारी तरफ से बोलूं?

राउस — (चौंककर) राबर्ट, या तो तुम्हीं बोलो -या दूसरों को ही बोलने दो।

राबर्ट — (व्यंग्य के भाव से) धन्यवाद जॉर्ज राउस!

(ऐंथ्वनी की तरफ़ रुख करके।)

सभापति और डाइरेक्टरों के बोर्ड ने हमारी विपत्ति-कथा सुनने के लिए लंदन से यहाँ आकर हमारा सम्मान किय है। यह उचित नहीं है कि हम उन्हें और देर यहाँ इन्तजार में रक्खें।

वाइल्डर — इसके लिए ईश्वर को धन्यवाद।

राबर्ट — हमारी कथा सुन लेने के बाद आप ईश्वर को धन्यवाद न देंगे, मिस्टर वाइल्डर, चाहे आप कितने ही बड़े धर्मात्मा हों। सम्भव है आपके लंदनी ईश्वर के पास मजदूरों की बातें सुनने के लिए समय न हो! मैंने सुना है कि वह ईश्वर बड़ा धनवान है, लेकिन यदि वह मेरी बात -सुने तो उससे उसे कहीं ज्यादा ज्ञान होगा जितना केंसिंगटन (लंदन में अमीरों का एक महल्ला) में हो सकता है।

हार्निस — देखो राबर्ट, जिस तरह तुम अपने ईश्वर को पूज्य समझते हो, वैसे ही दूसरे आदमियों के ईश्वर को भी समझो।

राबर्ट — यह ठीक है साहब, हमारा यहाँ दूसरा ही ईश्वर है। मैं समझता हूँ कि वह मिस्टर वाइल्डर के ईश्वर से भिन्न है। हेनरी टामस से पूछो वह बतायेंगे कि उनका और वाइल्डर का ईश्वर एक है या दो।

(टामस आपना हाथ उठाता है, और सिर ऊँचा कर लेता है, जैसे कोई भविष्यवाणी कर रहा हो।)

वेंकलिन — राबर्ट, ईश्वर के लिए, मूल विषय ही पर रहो।

राबर्ट — मेरे विचार में तो यही मूल विषय है, मिस्टर वेंकलिन। अगर आप धन के ईश्वर को श्रम की गलियों में ले आएं और इसका ध्यान रक्खें कि वह क्या-क्या देखता है, तो मैं आपकी सज्जनता का कायल हो जाऊँगा, हालांकि आप रेडिकल (स्वतन्त्रतावादी) हैं।

ऐंथ्वनी — मेरी बात सुनो, राबर्ट,

(राबर्ट चुप हो जाता है।)

तुम यहाँ आदमियों की तरफ़ से बोलने आए हो जैसे मैं बोर्ड की तरफ़ से बोलने आया हूँ।

(वह धीरे-धीरे इधर-उधर ताकता है।)

(वाइल्डर, वेंकलिन और स्केंटलबरी विरोध के भाव प्रगट करते हैं और एडगार ज़मीन की तरफ़ ताकता है। हार्निस के चेहरे पर हल्की मुस्कराहट आ जाती है।)

अब बोलो तुम क्या कहते हो?

राबर्ट — जी हाँ ठीक है-

(इसके बाद जो कुछ होता है उसमें वह और ऐंथ्वनी एक दूसरे पर आँखें जमाए रहते हैं। मज़दूर लोग और डाइरेक्टर भिन्न-भिन्न

रीति से अपने छिपे हुए उद्वेग प्रगट करते हैं मानो वे ऐसी बातें सुन रहे हैं जो वे खुद न कहते।)

मज़दूर लंदन तक जाने की सामर्थ्य नहीं रखते और उन्हें विश्वास नहीं है कि वे जो कुछ लिखकर देंगे उसे आप लोग न मानेंगे। पत्र-व्यवहार का हाल भी उन्हें मालूम है।

(वह अन्डरवुड और टेंच को घूरकर देखता है।)

और डाइरेक्टरों की बैठकों का हाल भी उनसे छिपा नहीं हैं। मैनेजर से कैफियत तलब करो — मैनेजर से पूछा जाय, कि मज़दूरों की हालत क्या है। क्या हम उन्हें और कुछ दबा सकते हैं?

अन्डरवुडे — (धीमी आवाज में) कमर के नीचे वार मत करो, राबर्ट।

राबर्ट — क्या यह कमर के नीचे है, मिस्टर अन्डरवुड? मजदूरों से पूछो जब मैं लंदन गया था तो मैंने सब हाल साफ़-साफ़ कह दिया था। पर उसका फल क्या हुआ? मुझसे कह दिया गया कि तुम खुद नहीं जानते क्या कहते हो। मुझमें यह सामर्थ्य नहीं है कि वही बात सुनने के लिए फिर लंदन जाऊँ।

ऐंथ्वनी — तुम्हें आदमियों के विषय में क्या कहना है?

राबर्ट — पहिले मुझे उनकी दशा बतलानी है। आप लोगों को इसकी जरूरत नहीं है कि मैनेजर से पूछें। अब आप उन्हें और नहीं दबा सकते। हममें से हर एक भूखों मर रहा है।

(मज़दूर लोग चकित हो-होकर एक दूसरे के कान में कुछ कहने लगते हैं। राबर्ट चारों तरफ देखता है।)

आपको आश्चर्य होगा कि मैं यह क्यों कह रहा हूँ? हम सभी का बुरा हाल है। इधर कई हफ्तों से हमारी जो दशा है उससे हीन अब हो ही नहीं सकती। आप लोग यह न समझें कि कुछ दिन और अड़े रहने से आप हमें काम करने पर मजबूर कर देंगे। इसके पहिले हम लोग प्राण दे देंगे। मजदूरों ने आप लोगों को यह अंतिम सूचना देने को बुलाया है, कि आप लोग उनकी मांगें स्वीकार करते हैं या नहीं? मैं मन्त्री के हाथ में कागज का ताव देख रहा हूँ।

(टेंच कुछ घबरा जाता है।)

यह वही है न मिस्टर टेंच? यह तो बहुत बड़ा नहीं है।

टेंच — (सिर हिलाकर) हाँ।

राबर्ट — उस कागज पर एक वाक्य भी ऐसा नहीं है जिसे हम छोड़ सकें।

(आदमियों में कुछ हलचल होती है, राबर्ट चमककर उनकी तरफ़ देखता है।)

आप लोग इसे मानते हैं न?

(मज़दूर लोग अनिच्छा से स्वीकार करते हैं। ऐंथ्वनी टेंच से कागज लेकर पढ़ता है।)

एक वाक्य भी नहीं। इनमें से कोई माँग ऐसी नहीं है जो अनुचित कहीं जा सके। हमने कोई बात ऐसी नहीं माँगी है जिसका हमें हक न हो। मैंने लन्दन में जो कुछ कहा था वही अब फिर कहता हूँ। उस कागज पर कोई ऐसी बात नहीं है जिसे मांगने या देने में किसी शरीफ आदमी को संकोच हो।

(कुछ सोचने लगता है।)

ऐंथ्वनी — इस कागज पर एक माँग भी ऐसी नहीं है, जो हम लोग पूरी कर सकें।

(इन शब्दों के बाद जो हलचल मच जाता है, उसमें राबर्ट डाइरेक्टरों को ध्यान से देखता है और ऐंथ्वनी मजदूरों को। वाइल्डर यकायक उठ जाता है और आग की तरफ़ जाता है।)

राबर्ट — यह आप दिल से कहते हैं।

ऐंथ्वनी — हाँ।

(वाइल्डर आग के पास खड़ा स्पष्ट रूप से घृणा का भाव दिखाता है।)

राबर्ट — (गहरी निगाह से देखता हुआ पर उदासीन भाव से) आप लोग खूब जानते हैं कि कम्पनी की दशा आदमियों की दशा से अच्छी है या नहीं।

(डाइरेक्टरों के चेहरों को गौर से देखकर।)

आप लोग खूब जानते हैं कि आप यह अन्याय कर सकते हैं या नहीं। लेकिन मैं यह आपसे कहूँगा अगर आप लोग सोचते हैं कि मजदूर जौ भर भी दबेंगे तो आप लोग भयंकर भूल करते हैं।

(स्केंटलबरी के चेहरे पर आँखें जमा देता है।)

यह बड़े शर्म की बात है, कि यूनियन हमारी मदद नहीं कर रहा है। इससे आप लोग यह सोचते होंगे कि हम लोग एक शुभ मुहूर्त में आपके पैरों पर गिर पड़ेंगे। आप लोग सोचते हैं कि इन आदमियों के बाल-बच्चे हैं इसलिए यह दो-एक हफ्तों ही का मामला है...।

ऐंथ्वनी — हमारे क्या विचार हैं अगर तुम इसे मन ही में रक्खो तो अच्छा।

राबर्ट — हाँ, मैं जानता हूँ कि इससे हमें कुछ फायदा नहीं हैं। मिस्टर ऐंथ्वनी, मैं आपकी इतनी तारीफ तो जरूर करूँगा कि आप जो कुछ कहते हैं स्पष्ट कहते हैं।

(ऐंथ्वनी की ओर देखकर।)

मुझे आपकी ओर से कोई भ्रम नहीं है।

ऐंथ्वनी — (व्यंग्य से) धन्यवाद!

राबर्ट — और मैं भी जो कुछ कहता हूँ स्पष्ट ही कहता हूँ। सुन लीजिए, मजदूर लोग अपनी बीवी-बच्चों को किसी देहात में भेज देंगे और चाहे भूखों मर जायँ, मगर हार न मानेंगे। मैं आपको सलाह देता हूँ मिस्टर ऐंथ्वनी, कि आप कम्पनी का सर्वनाश देखने के लिए तैयार रहिए। आप सोचते होंगे कि यह लोग मूर्ख हैं। लेकिन हम हवा का रुख देख रहे हैं। आपकी दशा बहुत अच्छी नहीं है।

ऐंथ्वनी — कृपा करके हमारी दशा के बारे में अपनी राय मत प्रगट करो। जाओ और अपनी दशा पर फिर विचार करो।

राबर्ट — (आगे बढ़कर) मिस्टर ऐंथ्वनी, अब आप जवान नहीं हैं। जबसे मुझे याद है, आप हमेशा अपने मजदूरों को शत्रु समझते आए हैं। मैं यह नहीं कहता कि आप कमीने या निर्दयी आदमी

हैं, लेकिन आपने कभी उन्हें अपने विषय में एक शब्द कहने का भी अवसर नहीं दिया। आप उन्हें चार बार नीचा दिखा चुके हैं। मैंने यह भी सुना है कि आपको लड़ाई अच्छी लगती है। लेकिन मैं आपसे कहे देता हूँ कि यह आपकी आखिरी लड़ाई है।

(टेंच राबर्ट की आस्तीन छूता है।)

अन्डरवुड — राबर्ट, राबर्ट¦

राबर्ट — क्या राबर्ट-राबर्ट कर रहे हो? जब सभापति अपने मन की बात मुझसे कहते हैं तो मैं क्यों अपनी बात न कहने पाऊँ।

वाइल्डर — आज क्या होने वाला है?

(ऐंथ्वनी की ओर देखता है।)

ऐंथ्वनी — (वाइल्डर की ओर देखकर दृढ़ता से मुस्कराता है) हाँ-हाँ, कहो राबर्ट, जो कुछ जी में आवे कहो।

राबर्ट — (जरा ठहरकर) अब मुझे कुछ नहीं कहना है।

ऐंथ्वनी — यह बैठक पाँच बजे तक के लिए स्थगित है।

वेंकलिन — (अन्डरवुड से धीमी आवाज में) इस तरह तो हम कुछ भी न तय कर सकेंगे।

राबर्ट — (चुटकी लेकर) हम सभापति और डाइरेक्टरों को धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने दया करके हमारी दशा सुन ली।

(वह धीरे-धीरे द्वार की तरफ जाता है ¦ मज़दूर लोग भौंचक्के होकर एक जगह जुमा हो जाते हैं। तब राउस अपना सिर उठाकर राबर्ट के सामने से होता हुआ बाहर चला जाता है। उसके पीछे और आदमी भी चले जाते हैं।)

राबर्ट — (दरवाजे पर हाथ रखकर-कटुता से) बन्दगी साहबो।

चला जाता है।

हार्निस — (चुटकी लेता हुआ) आप लोगों ने जो रवादारी का भाव प्रकट किया है, उस पर मैं आपको बधाई देता हूँ। आपके आज्ञानुसार में फिर साढे पाँच बजे आऊँगा। बन्दगी।

(वह कुछ सिर झुकाकर ऐंथ्वनी को ध्यान से देखता है। ऐंथ्वनी भी स्थिर भाव से उसकी ओर ताकता है। तब हार्निस और अन्डरवुड दोनों बाहर चले जाते हैं। एक क्षण सन्नाटा छाया रहता है। अन्डरवुड ड्योढ़ी में फिर आता है।)

वाइल्डर — (बुरी तरह चिढ़कर) अब?

(दुहरे दरवाजे खुल जाते हैं।)

एनिड — (ड्योढ़ी में खड़ी होकर) भोजन तैयार है।

(एडगार यकायक उठकर अपनी बहिन के पास होता हुआ बाहर चला जाता है।)

वाइल्डर — क्यों स्केंटलबरी, भोजन करने आते हो?

स्कटलबरी — (कठिनता से उठकर) हाँ-हाँ, इसके सिवा और क्या करना है।

(वे दुहरे दरवाजे से बाहर चले जाते हैं।)

वेंकलिन — (आहिस्ता से) क्यों सभापति जी क्या आप सचमुच अंत तक लड़ना चाहते हैं?

(ऐंथ्वनी सिर हिलाता है।)

वेंकलिन — होशियार रहिए। कब दबना चाहिए, यह जान लेना सबसे बड़ी सिद्धि है।

(ऐंथ्वनी कोई जवाब नहीं देता।)

वेंकलिन — (बड़ी गम्भीरता से) यही विनाश का मार्ग है। मिसेज़ अन्डरवुड, तुम्हारे पिता जी ने पुराने जमाने के ट्रोजनों को भी मात कर दिया।

(वह दुहरे दरवाजे से चला जाता है।)

एनिड — मैं पिता जी से कुछ बातें करना चाहती हूँ फ्रैंक।

(अन्डरवुड और वेंकलिन दोनों बाहर चले जाते हैं। टेंच मेज की चारों तरफ़ घूमकर फैले हुए क़लमों और कागृजों को संभालकर रख रहा है।)

एनिड — क्या आप नहीं आ रहे हैं दादा?

(ऐंथ्वनी सिर हिलाकर नहीं कहता है। एनिड टेंच की तरफ मार्मिक भाव से देखती है।)

एनिड — क्यों मिस्टर टेंच, आप कुछ भोजन करने नहीं जा रहे हैं?

टेंच — (हाथ में कागज लिए हुए) धन्यवाद!

वह पीछे ताकता हुआ धीरे-धीरे चला जाता है।

एनिड — (दरवाजे को बन्द करके) दादा, मामला तय हो गया न?

ऐंथ्वनी — नहीं!

एनिड — (बहुत निराश होकर) अरे! क्या आप लोगों ने कुछ नहीं किया?

ऐंथ्वनी सिर हिलाकर नहीं करता है।

एनिड — फ्रैंक कहते हैं कि राबर्ट के सिवा और सबके सब कुछ समझौता करना चाहते हैं। सच!'

ऐंथ्वनी — मैं नहीं करना चाहता।

एनिड — हम लोगों के लिए यह स्थिति बहुत ही भयंकर है। अगर आप मैनेजर की स्त्री होते, और यहाँ का सारा हाल अपनी आँखों से देखते, तो आपकी आँखें खुल जातीं।

ऐंथ्वनी — सच?

एनिड — हमें सारी दुर्गति देखनी पड़ती है। आपको मेरी नौकरानी एनी का ख्याल आता है, जिसने राबर्ट से विवाह किया था?

(ऐंथ्वनी सिर हिलाता है।)

उसकी दशा बहुत ही खराब है। उसको दिल की बीमारी है। जबसे हडताल शुरू हुई, उसे ठीक भोजन भी नहीं मिल रहा है। मेरी आँखों देखी बात है, दादा।

ऐंथ्वनी — ग़रीब है बेचारी, उसे जिस चीज की जरूरत हो दे दो।

एनिड — राबर्ट उसे हम लोगों से कोई चीज न लेने देगा।

ऐंथ्वनी — (सामने ताकता हुआ) अगर मजदूर लोग जान देने पर तुले हैं तो मेरा क्या दोष है?

एनिड — सबके सब कष्ट में हैं, दादा। मेरी खातिर से इसे बन्द कर दो।

ऐंथ्वनी — (उसे तीव्र दृष्टि से देखकर) बेटी, तुम इस बात को न समझ सकोगी।

एनिड — अगर मैं डाइरेक्टर होती, तो कुछ न कुछ जरूर ही करती।

ऐंथ्वनी — क्या करती?

एनिड — इस झगड़े का कारण यही है, कि आपको दबना बुरा लगता है। यह बिलकुल ...।

ऐंथ्वनी — हाँ-हाँ कहो।

एनिड — बिलकुल अनावश्यक है।

ऐंथ्वनी — तुम क्या जानती हो कि कौन-सी बात आवश्यक है? अपने उपन्यास पढ़ो, गाना गाओ, गपशप करो, मगर मुझे यह बतलाने की चेष्टा मत करो कि इस टंटे का कारण क्या है?

एनिड — मैं यहाँ रहती हूँ और सब कुछ आँखों से देखती हूँ।

ऐंथ्बनी — तुमने कभी सोचा है कि जिन लोगों पर तुम्हें इतनी दया आ रही है, उनके और हमारे बीच में कौन-सी दीवार खड़ी है?

एनिड — (उदासीनता से) मैंने आपका मतलब नहीं समझा, दादा।

ऐंथ्वनी — अगर वह लोग जिन्हें ईश्वर ने आँखें दी हैं परिस्थिति को न देखें और अपने हक के लिए खड़े होने का साहस न करें तो थोड़े ही दिनों में तुम्हारी और तुम्हारे बाल-बच्चों की दशा इन्हीं आदमियों जैसी हो जायगी।

एनिड — मजदूरों की जो दशा है उसे आप नहीं जानते।

ऐंथ्वनी — खूब जानता हूँ।

एनिड — आप नहीं जानते, दादा; अगर आप जानते तो आप -

ऐंथ्वनी — तुम खुद इस प्रश्न की सीधी-सादी बातों को नहीं जानती हो। अगर हम मजदूरों की शर्तों को आँखें बन्द करके मानते चले जायँ तो समझती हो तुम्हारी क्या दशा होगी? यह दशा होगी।

(वह अपना हाथ गले पर रखता है और उसे दबाता है।)

पहले तुम्हारे कोमल मनोभाव विदा हो जायेंगे। तुम्हारी सभ्यता और तुम्हारी सुख सामग्रियों का कहीं पता न लगेगा।

एनिड — मैं नहीं चाहती कि समाज में भिन्न-भिन्न श्रेणियाँ बन जायँ।

ऐंथ्वनी — तुम नहीं चाहती — कि समाज में — भिन्न-भिन्न-श्रेणियाँ बन जायँ?

एनिड — (उदासीनता से) और मेरी समझ में यह नहीं आता कि इस मामले से उसका क्या सम्बन्ध है।

ऐंथ्वनी — यह समझने के लिए तुम्हें एक या दो पुश्त चाहिए।

एनिड — यह सब कुछ आप और राबर्ट के कारण हो रहा है दादा, और आप इसे जानते हैं।

(ऐंथ्वनी अपना नीचे का होंठ निकाल लेता है।)

इससे कम्पनी का सर्वनाश हो जायगा।

ऐंथ्वनी — इस विषय में मैं तुम्हारी राय नहीं मांगता।

एनिड — (चिढ़कर) यह मुझसे नहीं हो सकता कि राबर्ट की स्त्री यों कष्ट भोगे और मैं खड़ी तमाशा देखती रहूँ और दादा, बच्चों का भी तो ख्याल कीजिए। मैं आपको जताए देती हूँ।

ऐंथ्वनी — (निर्दयता से मुस्कराकर) आखिर तुम्हारी क्या मंशा है?

एनिड — इसे आप मुझ पर छोड़ दीजिए।

(ऐंथ्वनी केवल उसकी ओर ताकता है।)

एनिड — (बदली हुई आवाज में उसकी आस्तीन खींचती हुई) दादा, आपको मालूम है यह चिन्ता आपके लिए हानिकारक है। आपको याद है डॉक्टर फिशर ने क्या कहा था?

ऐंथ्वनी — कोई बूढा आदमी बूढी औरतों की-सी बातें सुनना पसंद नहीं करता।

एनिड — लेकिन अगर आपके लिए यह सिद्धान्त की ही बात हो तब भी आप बहुत कुछ कर चुके।

ऐंथ्वनी — तुम्हारा यह खयाल है!

एनिड — अब इन बातों में न पड़िए दादा, आपको हमारा खयाल करना चाहिए।

(उसके चेहरे से याचना का भाव प्रकट होता है।)

ऐंथ्वनी — रखता हूँ।

एनिड — यह भार आप सह न सकेंगे।

ऐंथ्वनी — (आहिस्ता से) मैं अभी मरूँगा नहीं विश्वास रक्खो।

(टेंच कागज लेकर फिर आता है। वह उनकी तरफ़ कनखियों से देखता है तब हिम्मत करके आगे बढ़ता है।)

टेंच — क्षमा कीजिएगा, मैडम; मैंने सोचा खाना खाने के पहले इन कागजों को निबटा दूँ।

(एनिड उकताकर उसी तरफ देखती है, तब अपने बाप की ओर देखकर यकायक लौट पड़ती है, और दीवानखाने में चली जाती है।)

टेंच — (बहुत डरता हुआ ऐंथ्वनी के सामने कागज और कलम रखता है।) कृपा कर इन कागजों पर दस्तखत कर दीजिए।

(ऐंथ्वनी क़लम लेकर दस्तखत करता है।)

टेंच — (सोखते का एक टुकड़ा लिए एडगार की कुर्सी के पीछे खड़ा हो जाता है और डरते-डरते बोलना शुरू करता है।) यहाँ मुझे हुजूर ही ने नौकर रक्खा।

ऐंथ्वनी — क्या बात है?

टेंच — यहाँ जो कुछ होता है वह सब मुझे देखना पड़ता है। कम्पनी ही मेरा आधार है। अगर इसमें कुछ गड़बड़ हुआ तो मैं कहीं का न रहूँगा।

(ऐंथ्वनी सिर हिलाता है।)

और मेरे घर में हाल ही में दूसरा बच्चा हुआ है, इसलिए इस समय मैं और भी चिन्तित हूँ। हमारी तरफ बाजार का भाव भी बड़ा तेज है।

ऐंथ्वनी — (कठोर विनोद के साथ) हमारी तरफ भी तो बाजार भाव उतना ही तेज है।

टेंच — जी नहीं। (बहुत डरकर) मुझे मालूम है कि कम्पनी की आप को बड़ी चिन्ता है।

ऐंथ्वनी — हाँ है। मैंने ही इसे खोला था।

टेंच — जी हाँ। अगर हड़ताल जारी रही तो बहुत बुरा होगा। मैं समझता हूँ कि डाइरेक्टरों की समझ में अब यह बात आने लगी है।

ऐंथ्वनी — (व्यंग्य से) सच?

टेंच — मैं जानता हूँ कि इस विषय में आपके विचार बड़े कट्टर हैं और कठिनाइयों का सामना करना आपकी आदत है, लेकिन मैं समझता हूँ कि डाइरेक्टर लोग इसे पसंद नहीं करते क्योंकि अब उन्हें असली हाल मालूम होने लगा है।

ऐंथ्वनी — (कठोरता से) शायद तुम्हें भी पसंद न होगा।

टेंच — (फीकी हंसी के साथ) यह बात नहीं है, हुजूर। मेरे बाल-बच्चे अवश्य हैं, और पत्नी-भी बीमार है। मेरी दशा में इन बातों का ख्याल करना लाचारी है।

(ऐंथ्वनी सिर हिलाता है।)

लेकिन मैं यह नहीं कह रहा था, अगर आप मुझे क्षमा करें।

(हिचकता है।)

ऐंथ्वनी — तो फिर कहते क्यों नहीं?

टेंच — मेरे पिता मुझसे कहा करते थे कि आदमी जब बुड्ढा हो जाता है तो उसके दिल पर हरेक बात का गहरा असर पड़ता है।

ऐंथ्सनी — (पिता भाव से) क्या कहते हो टेंच, कहो?

टेंच — मुझे कहते अच्छा नहीं लगता, हुजूर।

ऐंथ्वनी — (कठोरता से) तुमको बतलाना पड़ेगा।

टेंच — (ज़ुरा दम लेकर निर्भयता से बोलता हुआ) मेरा खयाल है कि डाइरेक्टर लोग आपको दगा देंगे।

ऐंथ्वनी — (चुपचाप बैठा रहता है). घंटी बजाओ।

(टेंच डरता हुआ घंटी बजाता है, और आग के पास खड़ा हो जाता है।)

टेंच — यह बात कहने के लिए मुझे क्षमा कीजिए। मैं केवल आपके ख्याल से कह रहा था।

(फ्रास्ट बड़े कमरे से आता है, वह मेज के पाए के पास आता है, और ऐंथ्वनी की तरफ देखता है। टेंच अपनी घबराहट को छिपाने के लिए कागजों को संभालने लगता है।)

ऐंथ्वनी — मेरे लिए व्हिस्की और सोडा लाओ।

फ्रास्ट — खाने के लिए भी कुछ लाऊँ, हुजूर?

(ऐंथ्वनी सिर हिलाकर नहीं करता है — फ्रास्ट छोटी मेज के पास जाता है और शराब तैयार करता है।)

टेंच — (धीमी आवाज में बिलकुल गिड़गिड़ाकर) अगर आप कोई समझौता कर लेते, तो मेरा चित्त बहुत कुछ शान्त हो जाता।

(वह सिर उठाकर ऐंथ्वनी को देखता है, जो स्थिर भाव से बैठा रहता है।)

सचमुच इससे मुझे बड़ी चिन्ता हो रही है। मुझे कई हफ्तों से अच्छी नींद नहीं आई।

(ऐंथ्वनी उसके चेहरे की ओर ताकता है, तब धीरे से सिर हिलाता है।)

टेंच — (निराश होकर) आपको मंजूर नहीं है?

(वह कागजों को संभालता रहता है। फ्रास्ट व्हिस्की और सोडा एक किश्ती में लाता है और ऐंथ्वनी के दाहिने हाथ के पास रख

देता है। वह ऐंथ्वनी को चिन्तित आँखों से देखकर अलग खड़ा हो जाता है।)

फ्रास्ट — क्या आप कोई चीज न खायेंगे?

(ऐंथ्वनी सिर हिलाकर नहीं करता है।)

आपको मालूम है कि डॉक्टर ने आप से क्या कहा था?

ऐंथ्वनी — हाँ, मालूम है।

(फ्रास्ट यकायक उसके समीप चला जाता है, और धीमी आवाज में बोलता है।)

फ्रास्ट — हुजूर, इस हड़ताल ने आपको बहुत चिन्ता में डाल रक्खा है। आप नाहक इसके पीछे इतने हैरान हो रहे हैं।

(ऐंथ्वनी कुछ शब्द मुँह से निकालता है जो सुनाई नहीं देते।)

बहुत अच्छा, हुजूर।

(वह घूमकर हॉल में चला जाता है। टेंच दोबारा बोलने की चेष्टा करता है, लेकिन सभापति से आँखें मिल जाने के कारण आँखें नीची कर लेता है। तब उदास भाव से घूमकर वह भी चला जाता है। ऐंथ्वनी अकेला रहा जाता है। वह गिलास उठाता है, उसे हिलाता है, और एक सांस में पी जाता है। तब गहरी सांस

लेकर उसे रख देता है और अपनी कुर्सी पर तकिया लगा लेता है।)

(परदा गिरता है।)

अंक 2

पहला दृश्य

[साढ़े तीन बजे 'हैं। राबर्ट के झोंपड़े के रसोईघर में धीमी आग जल रही है। कमरा साफ और सुथरा है। ईंट का फर्श है, सफेद पुती हुई दीवारें हैं, जो धुएँ से काली हो गई हैं। सजावट के सामान बहुत थोडे हैं। चूल्हे के सामने एक दरवाजा है जो अन्दर की तरफ़ खुलता है। दरवाजे के सामने बर्फ से भरी हुई गली है। लकड़ी की मेज पर एक प्याला और एक तश्तरी, एक चायदान, छुरी और रोटी और पनीर की एक रकाबी रक्खी हुई है। चूल्हे के पास एक पुरानी आरामकुर्सी है जिस पर एक

चीथड़ा लपेटा हुआ है। उस पर मिसेज़ राबर्ट बैठी हुई हैं। वह एक दुबली और काले बालों वाली औरत है, अवस्था पैंतीस के लगभग होगी। आँखों से दीनता बरसती है। उसके बालों में कंघी नहीं की हुई है, पीछे की तरफ एक फीते से बांध दिए गए हैं। आग के पास ही मिसेज़ यो हैं। उसके बाल लाल और मुँह चौड़ा है। मेज के पास मिसेज़ राउस बैठी हैं। वह एक बुड्ढी औरत है, बिल्कुल सफेद, बाल सन हो गए हैं। दरवाजे के पास मिसेज़ बल्जिन इस तरह खड़ी है मानो जाने वाली हो। वह एक छोटी-सी पीले रंग की दुबली-पतली औरत है। एक कुर्सी पर कुहनियों को रक्खे और चेहरे को हाथों से थामे मेज टामस बैठी हुई है। वह बाईस साल की रूपवती स्त्री है। उसके गाल की हड्डियां ऊँची हैं, आँखें गहरी, और बाल काले और उलझे हुए। वह न बोलती है, न हिलती है, केवल बातें सुन रही है।]

मिसेज़ यो — बस, उसने मुझे छः पेन्स दिये और इस हफ्ते में मुझे पहिली बार इन्हीं पैसों के दर्शन हुए। यह आग बहुत मन्द है। मिसेज़ राउस, आकर हाथ पैर सेंक लो। तुम्हारा चेहरा बर्फ की तरह सफेद हो गया है, सच!

मिसेज़ राउस — (काँपती हुई शान्त भाव से) होगा। लेकिन असली सर्दी तो उसी साल पड़ी जिस दिन मेरे बूढ़े पति यहाँ नौकर हुए। 79 का साल था जबकि तुममें से किसी का जन्म भी न हुआ होगा, न मेज टामस का, न मिसेज़ बल्जिन का।

(उनकी ओर बारी-बारी से देखती है।)

क्यों एनी राबर्ट, उस वक्त तुम्हारी क्या उम्र थी?

मिसेज़ राबर्ट — सात साल!

मिसेज़ राउस — बस सात साल। तब तो तुम बिलकुल बच्ची थीं।

मिसेज़ यो — (घमंड से) मेरी उम्र दस साल की थी। मुझे याद है।

मिसेज़ राउस — (शान्त भाव से) तब कम्पनी को खुले हुए तीन साल भी न हुए थे। दादा तेजाब घर में काम करते थे। वहीं उनकी टांग सड़ गई थी। मैं उनसे कहती थी, दादा, तुम्हारी टांग सड़ गई है; वह कहते थे सड़े या गले, मैं खाट पर नहीं पड़ा सकता। और दो दिन के बाद उन्होंने खाट पकड़ ली और फिर न उठे। ईश्वर की मर्जी थी। तब हर्जाने वाला कानून न था।

मिसेज़ यो — क्या उस जाड़े में कोई हड़ताल नहीं हुई थी?

(फिर विकट हास्य के भाव से।)

यह जाड़ा तो मेरे लिए बहुत बुरा है। क्यों मिसेज़ राबर्ट, सर्दी खूब पड़ रही है या अभी जी नहीं भरा? क्यों मिसेज़ बल्जिन, भूख लगी है न?

मिसेज़ बल्जिन — चार दिन हुए हमने रोटी और चाय खाई थी।

मिसेज़ यो — शुक्र की धुलाई वाला काम तुम्हें मिला या नहीं?

मिसेज़ बल्जिन — (दुःखी होकर) उन्होंने मुझे काम देने का वायदा तो किया था, लेकिन जब मैं शुक्रवार को गई तो कोई जगह ही न थी। अब मुझे अगले हफ्ते में फिर जाना है।

मिसेज़ यो — अच्छा! वहाँ भी आदमियों की भरमार है। मैं तो यो को बर्फ के मैदान में भेज देती हूँ कि अमीरों को बर्फ पर चलाएँ जो कुछ मिल जाय वही सही। उन्हें घर की चिन्ता से तो छुट्टी मिल जाती है।

मिसेज़ बल्जिन — (रूखी और उदास आवाज से) मर्दों को तो जाने दो, लड़कों का हाल और भी बुरा है। मैं तो उन्हें सुला देती हूँ। पड़े रहने से भूख कुछ कम लगती है, लेकिन रो-रोकर सब नाक में दम कर देते हैं।

मिसेज़ यो — तुम्हारे लिए तो इतनी कुशल है कि बच्चे छोटे-छोटे हैं। जो पढ़ने जाते हैं उन्हें तो और भी भूख लगती है। क्या बल्जिन तुम्हें कुछ नहीं देते?

मिसेज़ बल्जिन — (सिर हिलाकर नहीं करती है, तब कुछ सोचकर) कुछ बस ही नहीं चलता तो क्या करें?

मिसेज़ यो — (बनावट से) क्या कम्पनी में उनके हिस्से नहीं हैं?

मिसेज़ राउस — (उठकर काँपती हुई, किन्तु प्रसन्नमुख से) अच्छा अब चलती हूँ, एनी राबर्ट।

मिसेज़ राबर्ट — ठहरो, जरा चाय तो पीती जाओ।

मिसेज़ राउस — (कुछ मुस्कराकर) राबर्ट आएगा तो वह भी तो चाय पिएगा। मैं तो जाकर खाट पर पड़ी रहूँगी। खाट ही पर बदन में गर्मी आवेगी।

(लड़खड़ाती हुई द्वार की ओर चलती है।)

मिसेज़ यो — (उठकर उसे हाथ का सहारा देती हुई) आओ अम्माँ, मेरा हाथ पकड लो। यही तो हम सब की गति होगी।

मिसेज़ राउस — (हाथ पकड़कर) अच्छा, खुश रहो बेटियों!

(दोनों चली जाती हैं, पीछे मिसेज़ बल्जिन भी जाती है।)

मेज — (अब तक चुप रहने के बाद बोलती है) देखा एनी। मैंने जॉर्ज राउस से कहा — जब तक यह हड़ताल बन्द न हो जाय मेरे पीछे न पड़ो। तुम्हें शर्म नहीं आती कि तुम्हारी माँ मर रही है और घर में लकड़ी का नाम नहीं। हम चाहे भूखों मर ही जायँ लेकिन तुम्हें तम्बाकू पीने को चाहिए। उसने कहा — 'मेज, मैं कसम खाता हूँ कि इन तीन हफ्तों से न तम्बाकू की सूरत देखी न शराब की।' मैंने कहा, फिर क्यों अपनी जिद पर अड़े हुए हो? बोला, 'मैं राबर्ट की बात को नहीं दुलख सकता।' बस जहाँ देखो राबर्ट-राबर्ट! अगर वह न बोले, तो आज हड़ताल बन्द हो जाय। उसकी बातें सुनकर सबों पर नशा चढ़ जाता है।

(वह चुप हो जाती है। मिसेज़ राबर्ट के मुख से दुःख का भाव प्रगट होता है।)

तुम यह कब चाहोगी कि राबर्ट हार जाय। वह तुम्हारा स्वामी है। साये की तरह सबके पीछे लगा रहता है।

(मिसेज़ राबर्ट की ओर देखकर मुँह बनाती है।)

जब तक राउस राबर्ट से अलग न हो जायगा, मैं उससे बात न करूँगी। अगर वह उसका साथ छोड़ दें, तो फिर सब छोड़ दें। सब यही चाह रहे हैं कि कोई आगे चले। दादा उनसे बिगड़े हुए हैं — सबके सब मन में उन्हें गालियाँ देते हैं।

मिसेज़ राबर्ट — तुम्हें राबर्ट से इतनी चिढ़ है।

(दोनों चुपचाप एक दूसरे की ओर ताकती हैं।)

मेज — क्यों न चिढ़ूँ? जिनकी माँ और बच्चे इधर-उधर ठोकरें खाते फिरते हों उन्हें यह जिद शोभा नहीं देती — सब कायर हैं।

मिसेज़ राबर्ट — मेज!

मेज — (मिसेज़ राबर्ट को चुभती हुई आँखों से देखकर) समझ में नहीं आता तुम्हें कैसे मुँह दिखाता है।

(आग के सामने बैठकर हाथ सेंकती है।)

हार्निस फिर आ गया। आज सबों को कुछ न कुछ निश्चय करना पड़ेगा।

मिसेज़ राबर्ट — (नर्म', धीमी आवाज में) राबर्ट इंजीनियरों और भट्टीवालों का पक्ष न छोड़ेंगे। यह उचित नहीं है।

मेज — मैं इन बातों में नहीं आने की। यह उसका घमंड है!

(कोई द्वार खटखटाता है। दोनों औरतें घूमकर उधर देखती हैं। एनिड अन्दर आती है। वह एक गोल ऊन की टोपी पहिने हुए हैं, और गिलहरी की खाल का एक जाकिट। वह दरवाजा बन्द करके आती है।)

एनिड — मैं अन्दर आऊँ, ऐनी!

मिसेज़ राबर्ट — (झिझककर) आप हैं मिस एनिड! मेज, मिसेज़ अंडरवुड को कुर्सी दो।

(मेज एनिड को वही कुर्सी देती है जिस पर आप बैठी हुई थी।)

एनिड — धन्यवाद! अब तबीयत कुछ अच्छी है?

मिसेज़ राबर्ट — हाँ मालकिन, अब तो कुछ अच्छी हूँ।

एनिड — (मेज की ओर इस तरह देखती है, मानो-उससे कह रही है, तुम चली जाओ) तुमने मुरब्बे क्यों लौटा दिए? यह तुमने अच्छा नहीं किया।

मिसेज़ राबर्ट — आपने मुझ पर बड़ा अनुग्रह किया, लेकिन मुझे उसकी ज़रूरत नहीं थी।

एनिड — ठीक है। यह राबर्ट की करतूत होगी। है न? तुम लोगों को इतना कष्ट सहते उनसे कैसे देखा जाता है।

मेज — (चौंककर) कैसा कष्ट?

एनिड — (चकित होकर) क्या मैं कुछ झूठ कहती हूँ?

मेज — कौन कहता है कि हमें कष्ट है?

मिसेज़ राबर्ट — मेज!

मेज — (अपना शाल सिर पर डालकर) हमारे बीच में बोलने वाली आप कौन होती हैं? हम नहीं चाहते कि आप हमारे घर में आकर ताक-झाँक करें।

एनिड — (उसे क्रोध से देखकर लेकिन बगैर उठे हुए) मैं तुमसे नहीं बोलती।

मेज — (गुस्से से भरी हुई, नीची आवाज में) आपका दया-भाव आपको मुबारक रहे। आप समझती हैं कि आप हम लोगों में मिल सकती हैं। लेकिन यह आपकी भूल है। जाकर मैनेजर साहब से कह देना।

एनिड — (कठोर स्वर में) यह तुम्हारा घर नहीं है।

मेज — (द्वार की ओर घूमकर) नहीं यह मेरा घर नहीं है। मेरे मकान में कभी न आइयेगा।

(वह चली जाती है, एनिड कुर्सी को उंगलियों से खटखटाती है।)

मिसेज़ राबर्ट — मेज टामस को क्षमा कीजिए, हुजूर! वह आज बहुत दुःखी है।

एनिड — (उसकी ओर देखकर) उसकी क्या बात है, मैं तो समझती हूँ सब के सब मूर्ख हैं, काठ के उल्लू।

मिसेज़ राबर्ट — (कुछ मुस्कराकर) हैं तो।

एनिड — क्या राबर्ट बाहर गए हैं?

मिसेज़ राबर्ट — जी हाँ!

एनिड — यह उन्हीं की करतूत है कि कोई बात तय नहीं होती। झूठ तो नहीं है ।

मिसेज़ राबर्ट — (एनिड की ओर ताकती हुई और एक हाथ की उंगलियों को अपनी छाती पर हिलाते हुए) लोग कहते हैं कि तुम्हारे बाप.... ।

एनिड — मेरे बाप अब बुड्ढे हो गए हैं और तुम बुड्ढे आदमियों का स्वभाव जानती हो।

मिसेज़ राबर्ट — मुझे खेद है कि मैंने यह बात छेड़ी।

एनिड — (और नर्मी से) तुमने वाजिबी बात कही। तुमको इसका खेद क्यों हो? मैं जानती हूँ कि इसमें राबर्ट का भी दोष है और मेरे पिता का भी।

मिसेज़ राबर्ट — मुझे बूढ़े आदमियों पर दया आती है हुजूर। बुढ़ापे से ईश्वर बचाए। मैं तो मिस्टर ऐंथ्वनी को हमेशा बहुत ही नेक आदमी समझती थी।

एनिड — (भावुकता से) तुम्हें याद नहीं है वह तुम्हें कितना चाहते थे? अब बतलाओ एनी मैं क्या करूँ? मुझे कोई नहीं बताता। तुम्हें जिन चीजों की जरूरत है वह यहाँ एक भी मयस्सर नहीं।

(आग के पास जाकर वह डेगची उतार लेती है और कोयला ढूँढने लगती है।)

और तुम इतनी मनहूस हो कि झोल और सारी चीजें लौटा दीं।

मिसेज़ राबर्ट — (कुछ मुस्कराकर) हाँ हुजूर!

एनिड — (झुँझलाकर) क्या तुम्हारे यहाँ कोयला भी नहीं है?

मिसेज़ राबर्ट — कृपा करके पतीली को फिर ऊपर रख दो.। राबर्ट आयेंगे तो उन्हें चाय के लिए देर हो जायगी। चार बजे उन्हें मजूरों से मिलना है।

एनिड — (डेगची ऊपर रखकर) इसका अर्थ यह है कि वह फिर मजूरों का मिजाज गर्म कर देंगे। क्यों एनी, तुम उनको मना नहीं कर सकतीं?

(मिसेज़ राबर्ट दीन भाव से मुस्कराती है।)

तुमने कभी आजमाया है?

(ऐनी कोई उत्तर नहीं देती।)

क्या वह जानते हैं कि तुम्हारी क्या हालत है?

मिसेज़ राबर्ट — मेरा दिल कमजोर है, हुजूर और कोई बीमारी नहीं है।

एनिड — जब तुम हमारे साथ थीं तब तो तुम्हें कोई रोग न था।

मिसेज़ राबर्ट — (गर्व से) राबर्ट मुझ पर बड़ी दया रखते हैं?

एनिड — लेकिन तुम्हें जिस चीज की ज़रूरत हो, वह मिलनी चाहिए और तुम्हारे पास कुछ नहीं है।

मिसेज़ राबर्ट — (विनीत भाव से) सब यही कहते हैं, कि तुम्हारी सूरत मरने वालों की-सी नहीं है।

एनिड — बेशक नहीं है। अगर तुम्हें अच्छा भोजन-अगर तुम चाहो तो मैं डॉक्टर को तुम्हारे पास भेज दूँ? उनकी दवा से तुम्हें अवश्य लाभ होगा।

मिसेज़ राबर्ट — (कुछ आपत्ति करके) हाँ हुजूर!

एनिड — मेज टामस को यहाँ मत आने दिया करो, वह तुम्हें और दिक करती है। मुझसे मजूरों की कौन-सी बात छिपी है? मुझे उनकी दशा देखकर बड़ा दुःख होता है, लेकिन तुम जानती हो कि उन्होंने बात को कितना बढ़ा दिया है।

मिसेज़ राबर्ट — (उंगलियों को बराबर हिलाती हुई) लोग कहते हैं मजूरी बढ़वाने के लिए दूसरा उपाय नहीं है।

एनिड — (तत्परता से) यही तो कारण है, कि यूनियन उनकी मदद नहीं करता। मेरे स्वामी को मजूरों का बड़ा ख्याल है। लेकिन वह कहते हैं कि उनकी मजूरी कम नहीं है।

मिसेज़ राबर्ट — यह बात है?

एनिड — ये लोग यह नहीं सोचते कि इनकी मुँहमाँगी मजूरी देकर कम्पनी कैसे चलेगी।

मिसेज़ राबर्ट — (बलपूर्वक) लेकिन नफा तो बहुत हो रहा है, हुजूर।

एनिड — तुम लोग सोचती हो कि हिस्सेदार लोग बड़े मालदार हैं। लेकिन यह बात नहीं है। उनमें से बहुतों की दशा मजूरों से अच्छी नहीं है।

(मिसेज़ राबर्ट मुस्कराती है।(

उन्हें भलमनसी का निर्वाह भी तो करना पड़ता है।

मिसेज़ राबर्ट — हाँ हुजूर!

एनिड — तुम लोगों को कोई टैक्स या महसूल नहीं देना पड़ता। और सैकडों बातें हैं जो उन्हें करनी पड़ती हैं और तुम्हें नहीं

करनी पड़ती। अगर मजूर लोग शराब और जुए में इतना न उड़ा दें तो चैन से रह सकते हैं। ये लोग तो कहते हैं कि काम इतना कठिन है, .कि मन बहलाने के लिए कुछ न कुछ होना चाहिए।

एनिड — लेकिन इस तरह की बुरी-बुरी बातें तो नहीं?

मिसेज़ राबर्ट — (कुछ चिढ़कर) राबर्ट तो कभी छूते भी नहीं और जुआ तो उन्होंने कभी जिन्दगी में नहीं खेला।

एनिड — लेकिन वह मामूली मजूर — वह इंजीनियर हैं, ऊँचे दर्जे के आदमी हैं।

मिसेज़ राबर्ट — हाँ बीवी! राबर्ट कहते हैं कि और किसी तरह के मन बहलाव का मजूरों के पास कोई सामान ही नहीं है।

एनिड — (सोचकर) हाँ कठिन तो है।

मिसेज़ राबर्ट — (कुछ ईर्ष्या से) लोग तो कहते हैं ये भद्र लोग भी यही बुराइयाँ करते हैं।

एनिड — (मुस्कराकर) मैं इसे मानती हूँ एनी, लेकिन तुम खुद जानती हो यह बिलकुल गप है।

मिसेज़ राबर्ट — (बड़े कष्ट से बोलकर) बहुत से आदमी तो कभी शराबखाने की तरफ़ ताकते ही नहीं। लेकिन उनकी बचत भी

बहुत कम होती है। और यदि कोई बीमार पड गया तो वह भी गायब हो जाती है।

एंनिड — लेकिन उनके क्लब भी तो हैं?

मिसेज़ राबर्ट — क्लब एक परिवार को हफ्ते में केवल अट्ठारह शिलिंग देता है और इतने में क्या होता है? राबर्ट कहते हैं मजूर लोग हमेशा फाकेमस्त रहते हैं। कहते हैं आज का छः पेन्स कल के एक शिलिंग से अच्छा है।

एनिड — लेकिन इसी को तो जुआ कहते हैं।

मिसेज़ राबर्ट — (आवेश के प्रवाह में) राबर्ट कहते हैं कि मजूरों का सारा जीवन जन्म से लेकर मरने तक जुआ ही है।

(एनिड प्रभावित होकर आगे झुक जाती है। मिसेज़ राबर्ट का आवेश बढ़ता जाता है। यहाँ तक कि अन्तिम शब्दों में वह अपने ही दुःख से विकल हो जाती है।)

राबर्ट कहते हैं कि मजूर के घर जब बच्चा पैदा होता है तो उसकी सांसें गिनी जाने लगती हैं, भय होता है इस सांस के बाद दूसरी सांस लेगा भी या नहीं। और इसी तरह उसका जीवन झट जाता है। और जब वह बुड्ढा हो जाता है, तो अनाथालय या कब्र के सिवा उसके लिए दूसरा ठिकाना नहीं। वह कहते हैं कि जब

तक आदमी बहुत चालाक न हो और कौड़ी-कौड़ी पर निगाह न रक्खे और बच्चों का पेट न काटे, वह कुछ बचा नहीं सकता। इसीलिए तो वह बच्चों से चिढ़ते हैं। चाहे मेरी इच्छा भी हो।

एनिड — हाँ-हाँ जानती हूँ।

मिसेज़ राबर्ट — नहीं, बीवी, आप नहीं जानतीं। आपके बच्चे हैं और उनके लिए आपको कभी चिन्ता न करनी पड़ेगी।

एनिड — (नम्रता से) इतनी बातें मत करो एनी।

(इच्छा न रहने पर भी कहती है।)

लेकिन राबर्ट को तो उस आविष्कार के लिए काफी रुपये दिए गए थे।

मिसेज़ राबर्ट — (अपना पक्ष संभालती हुई) राबर्ट ने जो कुछ जोड़ा था वह सब खर्च हो गया। वह बहुत दिनों से इस हड़ताल की तैयारी कर रहे हैं। वह कहते हैं जब दूसरे लोग कष्ट उठा रहे हैं, तो मैं एक पैसा भी अपने पास नहीं रख सकता। मगर सबका यह हाल नहीं है। बहुत से तो किसी से कोई मतलब ही नहीं रखते। हाँ, उनकी आमदनी होती रहे।

एनिड — जब उन्हें इतना कष्ट है, तो इसके सिवा और कर ही क्या सकते हैं।

(बदली हुई आवाज में।)

लेकिन राबर्ट को तुम्हारा तो ख्याल करना ही चाहिए। डेगची खौल गई है, चाय बना दूँ?

(चायदानी उठाती है और उसमें चाय पाकर पानी डाल देती है।)

तुम भी तो एक प्याला लो।

मिसेज़ राबर्ट — नहीं बीवी, मुझे क्षमा करो।

(कोई आवाज सुन रही है जैसे किसी की आहट हो।)

मैं चाहती हूँ कि राबर्ट से आपकी भेंट न हो।

(वह आपे से बाहर हो जाती है।)

एनिड — लेकिन मैं तो बिना मिले न जाऊँगी, एनी। मैं बिलकुल शांत रहूँगी वायदा करती हूँ।

मिसेज़ राबर्ट — उनके लिए यह जीवन और मरण का प्रश्न है।

एनिड — (बहुत कोमलता से) मैं उन्हें बाहर ले जाकर बातें करूँगी। हम तुम्हें दिक नहीं करेंगे।

मिसेज़ राबर्ट — (क्षीण स्वर में) नहीं बीवी।

(वह जोर से चौंक पड़ती है, राबर्ट यकायक अन्दर आ जाता है।)

राबर्ट — (अपनी टोपी उतारकर चुटकी लेता हुआ) अन्दर आने के लिए क्षमा करना। तुम किसी लेडी से बातें कर रही हो।

एनिड — मि. राबर्ट, मैं आपसे कुछ बातें करना चाहती हूँ।

राबर्ट — मुझे किससे बातें करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है?

एनिड — आप तो मुझे जानते हैं! मैं मिसेज़ अंडरवुड हूँ।

राबर्ट — (द्वेष भरे हुए अभिवादन के साथ) हमारे सभापति की बेटी!

एनिड — (तत्परता से) मैं यहाँ आपसे कुछ बातें करने आयी हूँ। एक मिनट के लिए जरा बाहर चले आइए।

(वह मिसेज़ राबर्ट की ओर ताकती है।)

राबर्ट — (अपनी टोपी लटकाता हुआ) मुझे आपसे कुछ नहीं कहना है, देवी जी।

एनिड — लेकिन मुझे बहुत जरूरी बातें करनी हैं।

(वह द्वार की ओर चलती है।)

राबर्ट — (यकायक कठोर होकर) मेरे पास कुछ सुनने के लिए समय नहीं है।

मिसेज़ राबर्ट — डेविड!

एनिड — बहुत कम समय लूँगी, मि. राबर्ट।

राबर्ट — (कोट उतारकर) मुझे खेद है कि मैं एक महिला की — मिस्टर ऐंथ्वनी की बेटी की बात भी नहीं सुन सकता।

एनिड — (दुबिधे में पड़ जाती है फिर यकायक दृढ़ होकर) मिस्टर राबर्ट, मैंने सुना है कि मजूरों की दूसरी सभा होने वाली है।

(राबर्ट सिर झुकाकर स्वीकार करता है।)

मैं आपके पास भिक्षा माँगने आई हूँ। ईश्वर के लिए कुछ समझौता करने की चेष्टा करो। थोडा-सा दब जाओ चाहे अपनी ही खातिर क्यों न दबना पड़े।

राबर्ट — (आप ही आप) मिस्टर ऐंथ्वनी की बेटी मुझसे यह कहती हैं कि कुछ दब जाऊँ, चाहे अपनी खातिर क्यों न हो।

एनिड — सब की खातिर, अपनी पत्नी की खातिर।

राबर्ट — अपनी पत्नी की खातिर, सबकी खातिर, मिस्टर ऐंथ्वनी की खातिर।

एनिड — आपको मेरे पिता से क्यों इतनी चिढ़ है? उन्होंने तो आपसे कभी कुछ नहीं कहा।

राबर्ट — कभी कुछ नहीं कहा?

एनिड — जिस तरह आप अपनी राय नहीं बदल सकते उसी तरह वह भी अपनी राय नहीं बदल सकते।

राबर्ट — अच्छा! मुझे यह आज मालूम हुआ कि मेरी भी कोई राय है।

एनिड — वह बूढ़े आदमी हैं और आप...।

(उसको अपनी तरफ़ ताकते देखकर वह रुक जाती है।)

राबर्ट — (आवाज ऊँची किए बगैर) अगर मैं मिस्टर ऐंथ्वनी को मरते देखूँ और मेरे हाथ उठाने से उनकी जान बचती हो, तो भी मैं एक उंगली न हिलाऊँगा।

एनिड — आप-आप!

(वह रुक जाती है और अपने होंठ काटने लगती है।)

राबर्ट — हाँ, मैं एक उंगली भी न उठाऊँगा, और यह सच है।

एनिड — (रुखाई से) यह तुम ऊपरी मन से कह रहे हो।

राबर्ट — नहीं, मैं दिल से कह रहा हू...।

एनिड — लेकिन क्यों ऐसा कहते हो?

राबर्ट — (चमककर) इसलिए कि मिस्टर ऐंथ्वनी अन्याय का झंडा उठाए हुए हैं।

एनिड — वाहियात बात।

(मिसेज़ राबर्ट उठने की चेष्टा करती है लेकिन अपनी कुर्सी पर गिर पड़ती है।)

एनिड — (तेजी से आगे बढ़कर) एनी!

राबर्ट — मैं नहीं चाहता कि आप मेरी पत्नी की देह में हाथ लगायें।

एनिड — (एक प्रकार की घृणा से पीछे हटकर) मैं समझती हूँ कि तुम पागल हो गए हो।

राबर्ट — एक पागल आदमी का घर किसी महिला के लिए अच्छी जगह नहीं है।

ऐनिड — मैं तुमसे डरती नहीं।

राबर्ट — (सिर झुकाकर) मिस्टर ऐंथ्वनी की बेटी भला किसी से डर सकती है। मिस्टर ऐंथ्वनी उनमें से दूसरों की तरह कायर नहीं हैं।

एनिड — (चौंककर) तो शायद तुम इस झगड़े को बढ़ाए रखना वीरता समझते हो।

राबर्ट — या मिस्टर ऐंथ्वनी गरीब स्त्रियों और बच्चों की गरदन पर छुरी चलाना वीरता समझते हैं? मैं समझता हूँ मिस्टर ऐंथ्वनी

धनी आदमी हैं। क्या वह उन लोगों से लड़ने में अपनी बहादुरी समझते हैं जो दाने-दाने को मुहताज हैं? क्या वे इसे बहादुरी समझते हैं कि बच्चों को दुःख से रुलाया जाय और औरतें सर्दी के मारे ठिठुरें।

एनिड — (अपना हाथ उठाकर मानो कोई वार बचा रही है) मेरे पिता जी अपने सिद्धान्त पर चल रहे हैं। और आप इसे जानते हैं।

राबर्ट — मैं भी वही कर रहा हूँ।

एनिड — आप हमें शत्रु समझते हैं, और अपनी हार मानते आपकी कोर दबती है।

राबर्ट — मिस्टर ऐंथ्वनी भी तो हार नहीं मानते। चाहे मुँह से कुछ ही क्यों न कहें।

एनिड — बहरहाल आपको अपनी पत्नी पर दया करनी चाहिए।

(मिसेज़ राबर्ट जो कि छाती को हाथ से दबाए हुए है, हाथ उठा लेती है, और सांस रोकना चाहती है।)

राबर्ट — इसके सिवा मुझे और कुछ नहीं कहना है।

(वह रोटी उठा लेता है, दरवाजे की कुंडी खटकती है और अंडरवुड अन्दर आता है। वह खड़ा होकर उनकी तरफ ताकता

है। एनिड फिरकर उसकी तरफ देखती है, और दुबिधे में पड़ जाती है।)

अंडरवुड — एनिड!

राबर्ट — (व्यंग्य से) आपको अपनी बीवी के लिए यहाँ आने की ज़रूरत न थी, मिस्टर अंडरवुड। हम शोहदे नहीं है।

अंडरवुड — इतना मालूम है, राबर्ट। मिसेज़ राबर्ट तो अच्छी हैं।

(राबर्ट बिना जवाब दिए मुँह फेर लेता है।)

आओ एनिड।

एनिड — मिस्टर राबर्ट, मैं आपकी पत्नी की खातिर एक बार आपसे फिर विनय करती हूँ।

राबर्ट — (मीठी छुरी चलाकर) अगर आप बुरा न मानें तो अपने पिता और स्वामी की खातिर यह विनय कीजिए।

(एनिड जवाब देने की इच्छा को दबाकर चली जाती है। अंडरवुड दरवाजा खोलता है, और उसके पीछे-पीछे चला जाता है। राबर्ट आग के पास जाता है, और उठती हुई चिंगारियों के सामने हाथ उठाता है।)

राबर्ट — कैसा जी है, प्रिये? अब तो कुछ अच्छी हो न?

(मिसेज़ राबर्ट कुछ मुस्कराती है। वह अपना ओवरकोट लाकर उसे उढ़ा देता है। घड़ी की तरफ देखकर)

चार बजने में दस मिनट हैं।

(मानो उसे कोई बात सूझ जाती है।)

मैंने उनके चेहरे देखे हैं, उस बुड्ढे डाकू के सिवा और किसी में दम नहीं है।

मिसेज़ राबर्ट — जरा ठहर जाव और कुछ खा लो डेविड, आज तो तुमने दिन भर कुछ नहीं खाया।

राबर्ट — (गले पर हाथ रखकर) जब तक ये भेड़िए यहाँ से चले न जायँगे मुझसे कुछ न खाया जायगा।

(इधर से उधर टहलता है।)

मुझे मज़ूरों से अभी बहुत माथा-पच्ची करनी पड़ेंगी। किसी में हिम्मत नहीं है। सब कायर हैं। बिलकुल अन्धे। कल की किसी को फिकर ही नहीं।

मिसेज़ राबर्ट — यह सब औरतों के कारण हो रहा है, डेविड।

राबर्ट — हाँ, औरतों को ही वह सब बदनाम करते हैं। जब अपना पेट काँ कूँ करता है, तो औरतों की याद आती है। औरत

उन्हें शराब पीने से नहीं रोकती। लेकिन एक शुभ कार्य में जब कुछ तकलीफ़ होती है तो चट औरतों की दुहाई देने लगते हैं।

मिसेज़ राबर्ट — लेकिन उनके बच्चों का तो ख्याल करो, डेविड।

राबर्ट — अगर वे गुलाम पैदा करते चले जायँ और जिन्हें पैदा करते हैं उनके भविष्य की कुछ भी चिन्ता न करें...।

मिसेज़ राबर्ट — (सांस भरकर) बस रहने दो डेविड, उसकी चर्चा ही मत करो। मुझसे नहीं सुना जाता। मैं नहीं सुन सकती।

राबर्ट — सुनो, जरा सुनो।

मिसेज़ राबर्ट — (हाँफती हुई) नहीं-नहीं, डेविड, मुझसे मत कहो।

राबर्ट — हैं-हैं! तबियत को संभालो। (व्यथित होकर)

मूर्ख, बुरे दिन के लिए एक पैसा भी नहीं रखते। जानते ही नही। कौड़ी कफन को नहीं। इन्हें खूब जानता हूँ, इनकी दशा देखकर मेरा दिल टूट गया है। शुरू-शुरू में तो सब काबू में न आते थे लेकिन अब सबों ने हिम्मत हार दी।

मिसेज़ राबर्ट — तुम यह आशा कैसे कर सकते हो, डेविड, ये भी तो आदमी हैं।

राबर्ट — कैसे आशा करूँ? जो कुछ मैं कर सकता हूँ उसकी आशा दूसरों से भी कर सकता हूँ। मैं तो चाहे भूखों मर जाऊँ

सिर कभी न झुकाऊँगा। जो काम एक आदमी कर सकता है, वह दूसरा आदमी भी कर सकता है।

मिसेज़ रावर्ट — और औरतें कहाँ जायेंगी?

रावर्ट — यह औरतों का काम नहीं है।

मिसेज़ रावर्ट — (द्वेष के भाव से चमककर) नहीं, औरतें मरा करें, तुम्हें उनकी क्या परवाह। जान दे देना ही उनका काम है।

रावर्ट — (आँख हटाकर) मरने की कौन बात है, कौन नहीं मरेगा जब तक हम इनको मजा न चखा देंगे।

दोनों की आँखें फिर मिल जाती हैं, और वह फिर अपनी आँख (हटा लेता है।)

इतने दिनों से इसी अवसर पर इन्तजार कर रहा हूँ कि इन डाकुओं को नीचा दिखाऊँ। और सब के सब अपना सा मुँह लिए घर लौट जायँ। मैं उनकी सूरत देख चुका हूँ। विश्वास मानो सब घुटने टेकने को तैयार हैं।

(खूंटी के पास जाकर अपना कोट उतार लेता है।)

मिसेज़ रावर्ट — (उसके पीछे आँखें लगाए हुए नर्मी से) अपना ओवरकोट ले लो डेविड, बाहर बड़ी ठण्ड होगी।

राबर्ट — (उसके पास आकर आँखें चुराए हुए) नहीं-नहीं, चुपचाप लेटी रहो, मैं बहुत जल्द आऊँगा।

मिसेज़ राबर्ट — (व्यथित होकर किन्तु कोमल भाव से) तुम इंसे लेते ही क्यों न जाओ।

(वह कोट उठाती है, लेकिन राबर्ट उसे फिर उड़ा देता है। वह उससे आँखें मिलाना चाहता है लेकिन नहीं मिला सकता। मिसेज़ राबर्ट कोट में लिपटी हुई पड़ी रहती है। उसकी आँखों में जो राबर्ट के पीदे लगी हुई हैं, द्वेष और प्रेम दोनों मिले हुए हैं। वह फिर अपनी घड़ी देखता है, और जाने के लिए घूमता है। ड्योढ़ी में उसकी जैन टामस से मुठभेड हो जाती है। यह एक दस साल का लड़का है जिसके कपड़े बहुत ढीले हैं और हाथ में एक छोटी-सी सीटी लिए हुए है।)

मिसेज़ राबर्ट — कहो जैन, कैसे चले?

जैन — दादा आ रहे हैं, बहन मेज भी आ रही है।

(वह वहीं पर बैठ जाता है, फिर अपनी सीटी घुमाने लगता है और तीन ऊटपटांग स्वर बजाता है। तब कोयल की बोली की नकल करता है। दरवाजा खटकता है और बूढा टामस अन्दर आता है।)

टामस — मैडम को परनाम करता हूँ। अब तो आप कुछ अच्छी हैं।

मिसेज़ राबर्ट — हाँ मिस्टर टामस, धन्यवाद।

टामस — (शंकित होकर) राबर्ट अन्दर हैं?

मिसेज़ राबर्ट — अभी वह जलसे में गये हैं मिस्टर टामस।

टामस — (मानो उसके दिल का बोझ हल्का हो जाता है। गपशप करने की इच्छा से) यह बहुत बुरा हुआ मैडम। मैं उनसे यह कहने आया था कि हमें लंदन वालों से समझौता कर लेना चाहिए। ये दुःख की बात है, कि वह जलसे में चले गए। वहाँ दीवारों से सर टकराना पड़ेगा। देख लेना।

मिसेज़ राबर्ट — (कुछ उठकर) वह समझौता तो नहीं करेंगे, मिस्टर टामस।

टामस — तुम्हें रंज नहीं करना चाहिए, मैडम। यह तुम्हारे लिए बुरा है। मेरी बात मानो, अब उनका साथ देने वाला कोई नहीं है। बस इंजीनियर लोग और जॉर्ज राउस उनके साथ हैं।

(गम्भीरता से)

इस हड़ताल में अब धरम नहीं है, मेरी बात मानो। मुझे आकाशवाणी हुई है. और मैंने उससे शंका समाधान किया है।

(जैन सीटी बजाता है।)

हिश! दूसरे क्या कहते हैं इसकी मुझे परवा नहीं है। मैं तो यही कहता हूँ कि धरम इस हड़ताल को बन्द कर देना चाहता है। मेरी समझ में तो यही आता है। और यह मेरी राय है, कि हमारा हित इसी में है। अगर मेरी राय न होती, तो मैं न कहता। लेकिन यह मेरी राय है, मेरी बात मानो।

मिसेज़ राबर्ट — (अपने उद्वेग को छिपाने की चेष्टा करके) अगर आप लोग दब गए तो न जाने राबर्ट का क्या हाल होगा।

टामस — यह उनके लिए लज्जा की बात नहीं है। आदमी जो कुछ कर सकता है, वह उन्होंने किया। लेकिन वह मानव सुभाव को पलट देना चाहते हैं। बिल्कुल सीधी सी बात है। कोई दूसरा होता तो वह भी यही करता। लेकिन जब धरम मना कर रहा है तो उन्हें उसकी बात माननी चाहिए।

(जैन कोयल की नकल करता है।)

क्या चें-चें लगा रक्खी है।

(द्वार के पास जाकर।)

यह देखो मेरी बेटी आ गई। तुम्हारा जी बहलायेगी। अच्छा अब परनाम करता हूँ, मैडम। रंज मत करना। कुढ़ना बुरा है। मेरी बात मानो।

(मेज अन्दर आती है और खुले हुए द्वार पर खड़ी होकर सड़क की ओर देखती है।)

मेज — दादा, आपको देर हो जायगी। जलसा शुरू हो रहा है।

(उसकी आस्तीन पकड़ लेती है।)

ईश्वर के लिए दादा अबकी बार और उनका साथ दो।

टामस — (अपनी आस्तीन छुड़ाकर रोब से) क्या बकती है, बेटी। मैं वहीं करूँगा जो उचित है।

(वह चला जाता है, मेज जो अभी ड्योढ़ी के बीच में थी, धीरे-धीरे अन्दर आती है, मानो उसके पीछे कोई और आ रहा है।)

राउस — (दालान में आकर) मेज।

(मेज मिसेज़ राबर्ट की तरफ पीछे करके खड़ी हो जाती है और सिर उठाकर हाथ पीछे किए हुए उसकी तरफ देखती है।)

राउस — (जिसके चेहरे से क्रोध और घबराहट झलक रही है) मेज, मैं जलसे में जा रहा हूँ।

(मेज, वहीं खड़ी अनादर भाव से मुस्कराती है।)

मेरी बात सुनती हो?

(दोनों सांय-सांय जल्द-जल्द बातें करते हैं।)

मेज — हाँ सुनती हूँ। जाओ और हिम्मत हो तो अपनी माँ को मार डालो।

(राउस उसकी दोनों बांहें पकड़ लेता है। वह सिर को पीछे किए हुए स्थिर खड़ी रहती है। वह उसे छोड़ देता है और चुपचाप खड़ा हो जाता है।)

राउस — मैंने राबर्ट का साथ देने की कसम खाई है। तुम चाहती हो, कि मैं अपने कौल से फिर जाऊँ।

मेज — (मन्द स्वर में उसकी हँसी उड़ाकर) खूब प्रेम करते हो।

राउस — मेरी बात सुनो, मेज।

मेज — (मुस्कराकर) मैंने सुना है कि प्रेमी वही करते हैं जो उनकी प्रेमिका कहती है।

(जैन कोयल की बोली बोलता है।)

लेकिन मालूम होता है, यह भ्रम है।

राउस — तुम चाहती हो कि मैं उन्हें दगा दूँ।

मेज — (अपनी आँखें आधी बन्द करके) मेरी खातिर से दो।

राउस — (हाथ से माथा पीटकर) चलो! यह मैं नहीं कर सकता।

मेज — (जल्दी से) मेरी खातिर से करो।

राउस — (दाँतों को दबाकर) मेरे साथ कुलटाओं की चाल मत चलो, मेज।

मेज — (जैन की तरफ जल्दी से अपना हाथ बढ़ाकर) मैं बच्चों को पेट भरने के लिए यह कर रही हूँ।

राउस — (क्रोध से भरी हुई कनबतियों में) मेज, ओ मेज!

मेज — (उसका मुँह चिढ़ाकर) लेकिन तुम मेरे लिए अपना वचन नहीं तोड़ सकते।

राउस — (रुंधे हुए कंठ से) नहीं मेज, तोड़ सकता हूँ। खुदा की कसम!

(वह घूमता है और कदम बढ़ाता चला जाता है। मेज के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कराहट आ जाती है, वह खड़ी उसके पीछे ताकती है। फिर अंदर आती है।)

मेज — राबर्ट को तो मैंने मार लिया।

(वह देखती है कि मिसेज़ राबर्ट फिर कुरसी पर लेट गई है।)

मेज — (उसके पास जाकर और उसके हाथों को छूकर) अरे! तुम तो पत्थर की तरह ठंडी हो रही हो। एक घूँट ब्रांडी पी लो। जैन, दौड़ 'लायन' की दुकान पर। कहना मैंने मिसेज़ राबर्ट के लिये मँगवाई है।

मिसेज़ राबर्ट — (क्षीण स्वर में) मैं अभी उठ बैठूँगी मेज, जैन को चाय तो दे दो।

मेज — (जैन को एक टुकड़ा रोटी देकर) ले, नटखट कहीं के। सीटी बन्द कर।

(आग के पास जाकर।)

आग तो ठंडी हुई जाती है।

मिसेज़ राबर्ट — (कुछ मुस्कराकर) उससे होता ही क्या है!

जैन सीटी बजाने लगता है।

मेज — मत-मत — नहीं मानेगा — आऊँ।

(जैन सीटी बंद कर देता है।)

मिसेज़ राबर्ट — (मुस्कराकर) उसे खेलने क्यों नहीं देती, मेज!

मेज — (आग के पास घुटनियों के बल बैठी हुई कान लगाए हुए) बस टुकुर-टुकुर ताका करो। यही स्त्री का काम है। मुझसे

तो यह नहीं हो सकता। सुनते-सुनते जी ऊब गया। बस बैठी मुँह ताका करो । सुनती हो जलसे में सबों का शोर। मुझे तो सुनाई दे रहा है।

(वह कुहनियों के बल झुक जाती है और ठुड्डी हाथों पर रख लेती है। उसके पीछे मिसेज़ राबर्ट आगे झुकी हुई खड़ी है। हड़तालियों के जलसे की आवाजें सुनकर उसकी घबराहट और मनोव्यथा बढती जाती है।)

(परदा गिरता है।)

दूसरा दृश्य

[चार बज चुके हैं। झुटपटासे का समय है। एक खुले हुए कीचड़ से भरे मैदान में मजदूर जमा हैं। आगे कांटेदार तारों का बाड़ा है जिसके उस पार एक नहर की ऊँची पटरी है। नहर में एक नौका बंधी हुई है। दूरी पर दलदल है और बर्फ से ढंकी हुई पहाडियाँ हैं। कारखाने की ऊँची दीवार नहर से इस मैदान

में होती हुई जाती है। दीवार के कोने में पीपों और तख्तों का एक भद्दा-सा मंच है। उस पर हार्निस खड़ा है। इस भीड़ से कुछ दूर हटकर राबर्ट दीवार का तकिया लगाए खड़ा है। ऊँची पटरी पर दो मल्लाह निश्चिन्त लेटे हुए सिगरेट पी रहे हैं।]

हार्निस — (हाथ फैलाकर) बस, मैंने तुम लोगों से साफ-साफ कह दिया। मैं अगर कल तक बोलता रहूँ तब भी इससे ज्यादा और कुछ नहीं कह सकता।

जागो — (साँवला रंग, चेहरा पीला, स्पेनियों की-सी सूरत, छोटी खसखसी दाढ़ी) महाशय, आपसे एक बात पूछता हूँ। वह लोग हममें से किसी को फोड़ सकते हैं?

बल्जिन — (धमकाकर) मुँह धो रक्खें।

(मज़दूरों के गिरोह में लोग बक-झक करने लगते हैं।)

ब्राउन — (गोल चेहरा) पाएंगे कहाँ?

इवेंस — (ठिगना, चंचल, दिलजला, सूरत से लड़ाका) घर के भेदियों की कभी कमी नहीं रहती। ऐसे आदमी हमेशा रहेंगे जो पहले अपनी जान की खैर मानते हैं।

(फिर मज़दूरों के गिरोह में हलचल मच जाती है। कुछ लोग खिसकने लगते हैं। बूढ़ा टामस गिरोह में मिल जाता है और सामने खड़ा होता है।)

हार्निस — (हाथ उठाकर) ऐसे गुर्गे उन लोगों को नहीं मिल सकते। लेकिन इससे आपका कोई लाभ नहीं। आप लोग जरा न्याय से काम लीजिए। तुम्हारी माँगों का नतीजा यह होता कि हमें एक साथ दर्जन हड़तालों का सामना करना पड़ता। और हम इसके लिये तैयार न थे। 'पंचायत' का उद्देश्य' है 'न्याय' किसी एक के लिए नहीं, सबके लिये। किसी ईमानदार आदमी से पूछो — वह साफ कह देगा तुमसे भूल हुई। मैं यह नहीं कहता कि तुम्हें जितना पाने का हक़ है, तुम उससे ज्यादा माँग रहे हो, लेकिन इस समय तुम जरूर बहुत आगे जा रहे हो। तुमने अपने लिए गड्ढा खोद लिया है। अब सवाल यह है कि तुम वहीं पड़े रहोगे या जोर लगाकर बाहर निकलोगे।

लुइस — (सजीला आदमी, काली मूँछे) आपने खूब कहा महाशय, दोनों में कौन-सी बात पसंद करते हो?

(गिरोह के लोग फिर खिसकने लगते हैं, और राउस जल्दी से आकर टामस के पास खड़ा हो जाता है।)

हार्निस — अपनी माँगों को काट-छाँटकर ठीक कर लो, फिर हम तुम्हारे लिये जान देने को तैयार हैं। लेकिन अगर तुम्हें इनकार है तो फिर वह आशा मत रक्खो कि भैं यहाँ आकर अपना समय नष्ट करूँगा। मैं उन आदमियों में नहीं हूँ जो अंट-संट बका करते हैं। शायद यह बात आप लोगों को मालूम होगी। मेरा विश्वास है कि तुम लोग अपनी धुन के पक्के हो। अगर यह ठीक है तो तुम लोग काम पर आने का निश्चय करोगे चाहे कोई तुम्हें कितनी ही उल्टी सलाह दे।

(राबर्ट पर आँखें गड्डा देता है।)

फिर हम देखेंगे कि कैसे तुम्हारी शर्तें नहीं पूरी होतीं। बोलो क्या मंजूर है? हमसे मिलकर विजय पाना चाहते हो, या इसी तरह भूखों मरना?

मज़दूरों में देर तक कांव-कांव होती है।

जागो — (गुर्राकर) वही बातें कीजिए जिनका आपको ज्ञान है।

हार्निस — (ऊँचे स्वर से) ज्ञान?

(उद्‌गार को रोककर।)

मित्रवर, मुझसे कोई बात छिपी नहीं है। जो कुछ तुम पर बीत रही है, वह मुझ पर बीत चुकी है, उस वक्त बीत चुकी है जब....

(एक लौंडे की तरफ इशारा करके।)

मैं उस लौंडे से बड़ा न था। तब पंचायतें वह न थीं जो आज हैं। ये कैसे इतनी बलवान हो गईं? इसी मेल ने उन्हें इतना बलवान बना दिया है। विश्वास मानो, सब कुछ सह चुका हूँ। मेरी आत्मा पर अब तक उसकी निशानी बनी हुई है। तुम पर जो कुछ पड़ी है वह मैं सब जानता हूँ। लेकिन पूरा एक टुकड़े से बड़ा होता है, और तुम केवल एक टुकड़ा हो। अगर तुम हमारा साथ दोगे तो हम भी तुम्हारा साथ देंगे।

(अपनी आँखों से उनकी टोलियों का अनुमान करके वह कान लगाए खड़ा रहता है। आदमियों में और ठाँय-ठाँय होने लगती है। उनकी छोटी-छोटी टोलियाँ बन जाती हैं, ग्रीन, बल्जिन और लुइस बातें करते हैं।

लुइस — यूनियन का यह आदमी बहुत सोच-समझकर बातें करता है।

ग्रीन — (धीरे से) हाँ! अगर किसी ने मेरी बातों पर कान दिया होता तो मैं गत दो महीनों से यही कहता चला आता हूँ।

(मल्लाह हँसते दिखाई देते हैं।)

लुइस — (उनकी ओर उंगली उठाकर) बाड़े के उस पार उन दोनों गधों को देखो।

बल्जिन — (उदास क्रोध से) अगर इन सबों ने खिल-खिल किया तो दाँत तोड़कर पेट में डाल दूँगा।

जागो — (यकायक) आप कहते हैं कि भट्ठीवालों को काफी मजूरी मिलती है?

हार्निस — मैंने यह नहीं कहा कि उन्हें काफी मजूरी मिलती है, मैंने यह कहा कि उन्हें उतनी ही मजूरी मिलती है जितनी ऐसे ही कामों के लिए दूसरे कारखानों में मिलती है।

इवेंस — यह झूठी बात है।

(हलचल मच जाता है।)

हारपर के कारखाने का नाम तो आपने सुना होगा?

हार्निस — (शीतल व्यंग्य से) दोस्त, झूठ का व्यापार तुम्हारे घर होता होगा। हारपर के यहाँ ओसरी देर तक रहती है, हिसाब-लगाने से मजूरी एक ही पड़ती है।

हेनरी राउस — (अपने भाई जॉर्ज की हूबहू नकल, हाँ, रंग साँवला है) सनीचर को ओवर टाइम के लिए आप दूनी मजूरी का समर्थन करेंगे?

हार्निस — हाँ करेंगे।

जागो — आपने हमारे चन्दों का क्या किया?

हार्निस — (रुखाई से) हम बता चुके हैं कि हम उनका क्या करेंगे?

इवेंस — बस, करेंगे, जब सुनिए करेंगे। आप हमारे साथियों को तोड़ना चाहते हैं।

(फिर हलचल)

बल्जिन — (चिल्लाकर) क्या झगड़ा मचा रहे हो?

(इवेन्स क्रोध से इधर-उधर ताकता है।)

हार्निस — (ऊँचे स्वर से) जिनके आँखें हैं, उन्हें मालूम है कि पंचायतें न चोर हैं न दगाबाज, मुझे जो कुछ कहना था कह चुका। अब तुम अपना लेखा-डेवढ़ा समझ लो। जब मेरी ज़रूरत हो घर से बुला लेना।

(वह कूदकर नीचे आता है, लोग रास्ता छोड़ देते हैं, वह उनके बीच से होता हुआ निकल जाता है। एक मल्लाह अपने पाइप को हिला-हिलाकर उसकी ओर मखौल के भाव से देख रहा है। मज़दूरों की टोलियाँ बन जाती हैं और बहुत-सी आँखें राबर्ट की ओर उठती हैं जो दीवार के सहारे अकेला खड़ा है।)

इवेंस — वह चाहता है कि तुम थूककर चाटो। बस यही इसकी मंशा है। वह चाहता है कि तुम हमारी बातों को दुलख दो। थूककर तो न चाटेंगे चाहे भूखों मर जायँ।

बल्जिन — थूककर चाटने की बात कौन कर रहा है? जरा जबान संभालकर बोलो-समझ गए।

लोहार — (एक युवक, जिसके बाल काले और बांहें लम्बी हैं) औरतें क्या करेंगी?

इवेंस — जो हम झेल सकते हैं, वह औरतें भी झेल सकती हैं, क्या इसमें कोई सन्देह है?

लोहार — घर में स्त्री नहीं है न?

इवेंस — चाहता भी नहीं।

टामस — (ऊँचे स्वर से) भाइयो, हमें यह अखतियार दो कि लन्दन से समझौता कर सकें।

डेवीज — (साँवला, सुस्त और उदास) मंच पर चढ़ जाओ। अगर तुम्हें कुछ कहना है तो मंच पर चढ़कर कहो।

('टामस' का शोर मच जाता है। लोग उसे ढकेलकर मंच की तरफ लाते हैं। वह जोर लगाकर उस पर चढ़ता है और टोपी

उतारकर लोगों के चुप हो जाने का इन्तजार करता है। सब चुप हो जाते हैं।)

लाल बालों वाला युवक — हाँ बूढ़े दादा, टामस!

(कोई बैठे हुए गले से हँसता है। दोनों मल्लाह बातें करते हैं। फिर सन्नाटा छा जाता है और टामस बोलने लगता है।)

टामस — हम सब एक साथ डूब रहे हैं और प्रकृति ने हमें इस गहराई में डाल दिया है।

हेनरी राउस — लन्दन ने डाला है, लन्दन ने।

इवेंस — पंचायत ने डाला है।

टामस — न लन्दन ने डाला है, न पंचायत ने डाला है, यह प्रकृति का काम है। प्रकृति के सामने सिर झुकाने में किसी का भी अपमान नहीं हो सकता। क्योंकि प्रकृति बहुत बड़ी चीज है, आदमी की इसके सामने कोई गिनती नहीं। मैंने जितना जमाना देखा है, उतना यहाँ और किसी ने न देखा होगा। मेरी बात मानो, प्रकृति से लड़ना बहुत बुरी बात है। दूसरों को कष्ट में डालना बुरी बात है जब इस से किसी का उपकार न हो।

(कोई हँसता है। टामस झल्लाकर बोलता है।)

तुम हँस किस बात पर रहे हो? मैं कहता हूँ यह बुरी बात है। हम एक सिद्धान्त के लिए लड़ रहे हैं। किसी को यहाँ यह कहने का साहस नहीं हो सकता कि मैं सिद्धान्त का भक्त नहीं हूँ। लेकिन जब प्रकृति कहती है 'बस, इसके आगे क़दम मत उठाओ' तो कान में तेल डालकर बैठना अच्छी बात नहीं।

(राबर्ट हँस पड़ता है। कुछ लोग धीमे स्वर में उसका समर्थन करते हैं।)

इस प्रकृति का रुख देखकर चलना चाहिए। आदमी का धरम है कि वह सच्चा, ईमानदार और दयालु बने। धरम तुम्हें यही उपदेश देता है।

(राबर्ट से क्रोध के साथ।)

और मेरी बात सुन डेविड राबर्ट, धरम कहता है कि प्रकृति के सामने ताल ठोंके बिना तुम यह सब कुछ कर सकते हो।

जागो — और पंचायत?

टामस — मैं पंचायत का कुछ भरोसा नहीं करता। उन लोगों ने हमारी कुछ परवाह नहीं की। हमसे कहते थे 'जो हम कहें वह करो।' मैं बीस साल से भट्ठी वालों का जमादार हूँ।

(जोश के साथ।)

मैं पंचायत से पूछता हूँ 'क्या तुम मेरी तरह दावे के साथ कह सकते हो कि भट्ठी वाले जो काम करते हैं उसकी ठीक मजदूरी क्या है?' पच्चीस साल से मैं पंचायत को बराबर चन्दा देता आता हूँ और...

(कुछ बिगड़कर।)

उसका कुछ नतीजा नहीं। यह बेईमानी नहीं तो और क्या है, चाहे मिस्टर हार्निस लाख बातें बनावें।

(लोग बड़बड़ाते हैं।)

इवेंस — सुनो, सुनो!

हेनरी राउस — कहते चलो, कहते चलो! तो फिर इसे धता क्यों नहीं बताते।

टामस — बेरी बात सुनो, अगर कोई आदमी हमारा विश्वास नहीं करता तो क्या मैं उसका विश्वास कर सकता हूँ?

जागो — बिलकुल ठीक।

टामस — समझ लो कि वह सब बेईमान हैं, और अपने पैरों पर खड़े हो।

(लोग बड़बड़ाते हैं।)

लोहार — यही तो हम लोग कर रहे हैं, यह कुछ और?

टामस — (और जोश में आकर) मुझे सिखाया गया था कि अपने पैरों पर खड़े हो। मुझे सिखाया गया था कि अगर तुम्हारे पास कोई चीज खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं तो उधर आँख उठाकर मत देखो। दूसरों के धन पर मौज करना कोई अच्छी बात नहीं। हम सच्ची लड़ाई लड़ें, और अगर हार गए तो इसमें हमारा कोई दोष नहीं। हमें यह अख्तियार दे दो कि हम लन्दन से अपने बूते पर समझौता कर लें। अगर इसमें सफल न हों तो हमें चाहिए कि अपनी हार मर्दों की तरह सहें, यह नहीं कि कुत्ते की मौत मरें, या दूसरे की दुम के पीछे लगे रहें कि वे हमारा उद्धार कर देंगे।

इवेंस — (दबी आवाज से) यह कौन चाहता है?

टामस — (गर्दन उठाकर) कौन बोलता है? अगर मैं किसी से भिड़ूँ और वह मुझे दे पटके तो मैं किसी की गुहार न लगाऊँगा, धूल झाड़कर फिर उठूँगा। अगर वह मुझे सफाई के साथ पटक देगा तो धूल झाड़ता हुआ अपनी राह लूँगा। ठीक है या नहीं?

(सब लोग हँसते हैं।)

जागो — पंचायत की जय!

हेनरी राउस — पंचायत की जय!

(और लोग शोर में मिल जाते हैं।)

इवेंस — थूककर चाटने वाले!

(बल्जिन और लोहार इवेंस को घूँसा दिखाते हैं।)

टामस — (सिर हिलाकर) मैं बूढा आदमी हूँ, यह समझ लो।

(सब चुप हो जाते हैं, फिर बकबक होने लगता है।)

लुइस — बूढा उल्लू, पंचायत का विरोधी।

बल्जिन — मेरा बस चले तो इन भट्ठी वालों का सिर तोड़ के रख दूँ।

ग्रीन — अगर लोगों ने पहले मेरी बातों पर कान दिया होता....

टामस — (माथा पोंछकर) अब मैं उस बात पर आ रहा ६ जो मैं कहने जा रहा था....

डेवीस — (दबी जबान से) अब उसका समय भी है।

टामस — (धार्मिक भाव से) धर्म कहता है — 'यह लड़ाई बन्द कर दो।'

जागो — झूठी बात है! धर्म कहता है — लड़ाई छिड़ी रहे।

टामस — (गर्व से) सच! मुझे ईश्वर ने कान दिए हैं।

लाल बालों वाला युवक — (हँसता है) हाँ, बहुत बड़े-बड़े।

जागो — तब तुम्हारे कानों ने तुम्हें धोखा दिया।

टामस — (झल्लाकर) या तुम सच्चे हो, या मैं सच्चा हूँ। तुम दोनों तरफ नहीं जा सकते।

लाल बालों वाला युवक — लेकिन धर्म तो जा सकता है।

('शैवर' हँसता है। गिरोह में दबी जबान से बातें होने लगती हैं।)

टामस — (शैवर' की ओर आँखें जमाकर) आह! तुम सबके सब अपने पैरों में कुल्हाड़ी मार रहे हो। इसलिए मैं तुमको जताए देता हूँ कि अगर तुम धर्म की जड़ काटोगे तो मैं तुम्हारा साथ न दूँगा, और न कोई दूसरा ईश्वर भक्त आदमी साथ दे सकता है।

(वह मंच से उतर जाता है। जागो मंच की ओर जाता है। 'उसे मत जाने दो' की आवाजें सुनाई देती हैं।)

जागो — उसे मत जाने दो? कहते शर्म भी नहीं आती।

(वह मंच पर चढ़ जाता है।)

मुझे तुम लोगों से बहुत कुछ नहीं कहना है। इस मामले को सीधे-सादे ढंग से देखो, इतनी दूर तो तुम मजे से चले आए, अब तुम सफर से मुँह मोड़ रहे हो। क्या यह भलमंसी है? अब तक हम सब एक नाव में थे। अब तुम दो नावों पर बैठना चाहते हो। हम इंजीनियरों ने अब तक तुम्हारा साथ दिया। अब तुम हमें दगा दे रहे हो। अगर हमें यह पहले से मालूम होता तो हम तुम्हारे साथ चलते ही क्यों? बस मुझे इतना ही कहना है। बूढे टामस ने बाइबल की दुहाई दी है, पर बाइबल का आशय ठीक नहीं समझा। अगर तुम लंदन या हार्निस की शरण जाते हो तो इसका यह आशय है कि तुम अपनी चमड़ी बचाने के लिए हमें गच्चा दे रहे हो-मगर तुम धोखा खाओगे भाइयो, यह भले आदमियों का काम नहीं है।

(वह मंच से उतर पड़ता है। उसके छोटे से भाषण के समय मज़दूरों में व्यग्र अशान्ति रहती है। राउस आगे बढ़कर मंच पर कूद कर चढ़ जाता है। चेहरा क्रोध से तिलमिलाया हुआ है। मज़दूरों के दल में अप्रसन्नता की भनभनाहट है।)

राउस — (बहुत उत्तेजित होकर) भाइयो, मैं कोरा बक्की नहीं हूँ, मैं जो कहता हूँ वह मेरे हृदय से निकल रहा है। आदमी का स्वभाव देखिए। क्या यह हो सकता है कि किसी की माता भूखों

तड़प रही हो और वह टुकुर-टुकुर देखा करे? क्या अब हमसे — ऐसा हो सकता है?

राबर्ट — (आगे बढ़कर) राउस!

राउस — (उसे रोष से देखकर) सिम हार्निस ने जो कुछ कहा वाजिब कहा। मैंने अपनी राय बदल दी है।

इवेंस — अरे! तो क्या तुम उधर मिल गए?

(लोग चकित होकर ताकने लगते हैं।)

लुइस — (अन्योक्ति के भाव से) क्यों भाई, यह क्यों पलट गया?

राउस — (आपे से बाहर होकर) उसने वाजिब कहा। उसने कहा 'तुम हमारा साथ दो, और हम तुम्हारा साथ देंगे। इतने दिनों से हम इसी मामले में ठोकरें खा रहे हैं। और यह किसका दोष है?

(राबर्ट की तरफ उंगली दिखाता है।)

उस आदमी का! वह कहता — था "नहीं, लुटेरों से लड़ो, उनका गला घोंट दो।" लेकिन उनका गला नहीं घुटा, हमारा और हमारे घरवालों का गला घुट गया। यह सच्ची बात है। भाइयो, मैं बाणी का बहादुर नहीं हूँ. मुझमें जो रक्त है और मांस है वह बोल रहा है। मेरा हृदय बोल रहा है।

(कठोर, पर कुछ लज्जित भाव से राबर्ट को देखकर।)

वह महाशय अभी फिर बोलेंगे, लेकिन मेरी बात मानो, उनकी बातों पर कान मत दो।

(लोग सांसें भरने लगते हैं।)

उस आदमी की वाणी में आग भरी हुई है।

(राबर्ट हँसता हुआ नज़र आता है।)

सिम हार्निस ठीक कहता है। पंचायत के बिना हम हैं क्या — मुट्ठी भर सूखी पत्तियाँ — या धुएँ की एक फूँक। मैं बाणी का बहादुर नहीं हूँ, लेकिन मेरी बात मानो, इस झगड़े को बंद करो। बाल-बच्चों को भूखों मरने से यह कहीं अच्छा है।

(समर्थन की आवाजें विरोध की आवाजों को दबा देती हैं।)

इवेंस — तुमने यह चोला क्यों बदला जी?

राउस — (क्रोधातुर भाव से) सिम हार्निस समझ-बूझकर बोलता है। हमें अखतियार दो कि लंदन वालों से समझौता कर लें। मैं बोलना नहीं जानता, लेकिन कहता हूँ इस सत्यानाशी विपत्ति का अन्त कर दो।

(वह अपने मफलर को लपेटता है, सिर को पीछे की ओर झटककर मंच से उतर पड़ता है। मज़दूर दल तालियाँ बजाता हुआ आगे बढ़ता है। आवाजें आती हैं — "बस, इतना बहुत है,

यूनियन की जय।" "हार्निस की जय!" उसी वक्त राबर्ट मंच पर आता है। सब चुप हो जाते हैं।)

लोहार — हम तुम्हारी बात नहीं सुनना चाहते। मत बको।

हेनरी राउस — नीचे आओ।

(यों हांक लगाते हुए समूह मंच की ओर चलता है।)

इवेंस — (झल्लाकर) बोलने दो! बोलने दो! राबर्ट! राबर्ट'

बल्जिन — (दबी जबान से) अच्छा हो कि यह खिसक जाय। कहीं मैं उसकी खोपड़ी न तोड़ डालूँ।

(राबर्ट समूह के सामने खड़ा होकर उसे अपनी आँखों से तौलता है; यहाँ तक कि धीरे-धीरे लोग चुप हो जाते हैं। वह बोलना शुरू करता है। दोनों में से एक मल्लाह उठकर खड़ा हो जाता है।)

राबर्ट — तो तुम लोग मेरी बात नहीं सुनना चाहते? तुम राउस और उस बूढे आदमी की बात सुनोगे। मेरी बात न सुनोगे! तुम यूनियन के साइमन हार्निस की बात सुनोगे। जिसने तुम्हारे साथ इतना सुन्दर व्यवहार किया है; शायद तुम लंदन वाले आदमियों की बात भी सुनोगे। मेरी बात न सुनोगे। अच्छा! तुम सांसें खींच रहे हो! क्यों, तुम यही तो चाहते हो कि तुम्हारी गर्दन उनके पैरों के नीचे हो?

(बल्जिन को मंच की ओर आते देखकर शांत करुणा से।)

क्यों जान बल्जिन, तुम मेरे दाँत तोड़ना चाहते हो? मुझे बोलने दो, फिर शौक से तोड़ो, अगर तुम्हें इसमें आनन्द आए।

(बल्जिन चुपचाप और झल्लाया हुआ खड़ा हो जाता है।)

क्या मैं झूठा हूँ, कायर हूँ, दगाबाज हूँ? मुझे .विश्वास है कि अगर ये बातें मुझमें होतीं तो तुम शौक से मेरी बात सुनते।

(भनभनाहट बन्द हो जाती है और सन्नाटा छा जाता है।)

यहाँ कोई ऐसा आदमी है जिसे हड़ताल से उतना धक्का पहुँचा हो जितना मुझे पहुँच रहा है? तुममें कोई ऐसा है जिसने यह झगड़ा शुरू होने के बाद से आठ सौ पौण्ड की चपत खाई हो? अगर कोई है तो सामने आवे। टामस ने कितना बल खाया है — दस पौण्ड, पाँच पौण्ड या कितना? तुमने अभी उनकी बातें सुनी हैं। आपने फरमाया है "कोई यह नहीं कह सकता कि मैं नियम का पक्का नहीं हूँ।"

(तीक्ष्ण व्यंग के साथ।)

"लेकिन जब प्रकृति कहता है, बस! तो हमें उसकी आज्ञा माननी चाहिए।" मैं तुमसे कहता हूँ क्या आदमी प्रकृति से यह नहीं कह सकता, "अगर तेरा काबू हो तो हमें यहाँ से जौ भर हटा दे?"

(अहंकार के भाव से।)

उनका सिद्धान्त उनका पेट है। मगर टामस साहब कहते हैं — "आदमी निष्कपट, सच्चा, न्यायी और दयालु होकर भी प्रकृति की आज्ञा-पालन कर सकता है।" मैं तुमसे कहता हूँ प्रकृति न निष्कपट है, न सच्ची, न्यायी न दयालू। तुम लोग जो पहाड़ी के ऊपर रहते हो और बर्फीली रात को अंधेरे में थके-मांदे घर जाते हो — क्या तुम्हें क़दम-क़दम पर दांतों पसीना नहीं आता? क्या तुम इस दयालु प्रकृति की कोमल दयालुता के भरोसे आराम से लेटते हुए जाते हो? जरा एक बार आजमा कर देखो और तुम्हें मालूम हो जायगा कि प्रकृति कितनी दयालु है।

(घूँसा तानकर।)

प्रकृति की जो यह सेवा करता है वही मर्द है। टामस साहब फरमाते हैं — घुटने टेक दो, सिर झुका दो, यह व्यर्थ का झगड़ा मिटा दो। तब तुम्हारा शत्रु एक टुकड़ा तुम्हारे सामने फेंक देगा।

जागो — कभी नहीं।

टामस — मैंने यह नहीं कहा।

राबर्ट — (चुभती हुई आवाज में) मित्रवर, तुमने चाहे यह न कहा हो पर तुम्हारा मतलब यही था। और धर्म के विषय में तुमने क्या कहा? तुमने कहा — "धर्म इसे मना करता है।" "प्रकृति भी इसे मना करती है।" अगर धर्म और प्रकृति में इतनी एकता है तो मुझे यह बात आज ही मालूम हुई है। उस युवक ने —

(राउस की ओर इशारा करके)

कहा है कि मेरी बाणी में नरक की आग भरी हुई है। अगर ऐसा होता तो मैं उस सारी आग को इस घुटना टेकने वाले प्रस्ताव को जलाने और झुलसाने में लगा देता। घुटना टेकना कायरों और नमक-हरामों का काम है।

हेनरी राउस — (जॉर्ज राउस को बढ़ते देखकर) जरा इसकी खबर लो, जॉर्ज। इसकी बातें न सुनो।

राबर्ट — (उंगली दिखाकर) वहीं खड़े रहो, जॉर्ज राउस। यह निजी झगड़े चुकाने का मौका नहीं है।

(राउस ठहर जाता है।)

लेकिन बोलने वालों में से एक रहा जाता है, मि. साइमन हार्निस — मि. हार्निस या पंचायत, किसी ने भी हमारे साथ बड़ा उपकार नहीं किया है। उन्होंने कहा अपने साथियों को तिलांजलि दे दो,

नहीं तो हम तुम्हें तिलांजलि दे देंगे। और यही उन्होंने किया, हमें मंझधार में छोड़ दिया।

इवेंस — बेशक छोड़ दिया।

राबर्ट — साइमन हार्निस साहब बड़े चतुर आदमी हैं, लेकिन मौका निकल गया।

(दृढ़ विश्वास से)

मगर साइमन हार्निस साहब जो चाहे कहें, टामस साहब जो चाहे कहें, राउस साहब जो चाहे कहें मैदान हमारे हाथ है।

(समूह और समीप आ जाता है और उत्सुक होकर उसकी ओर देखता है।)

तुमसे पेट की तकलीफ नहीं सही जाती। तुम भूल गए कि यह लड़ाई किस लिए छिड़ी। मैं तुमसे कितनी ही बार, बतला चुका हूँ; आज एक बात और बताए देता हूँ। यह इस देश के रक्त और मांस और रक्त चूसने वालों की लड़ाई है-एक तरफ वह लोग हैं, जो मुँह से निकलने वाली हरेक सांस और हाथ से चलने वाली हरेक चोट के साथ अपनी देह घुलाते हैं, दूसरी तरफ़ वह जन्तु है जो उनका मांस खाकर मोटा हो रहा है और दयालु प्रकृति के नियमानुसार दिन-दिन फूलता चला जाता है। यह जन्तु पूंजी है!

यह वह चीज है जो आदमियों के माथे का पसीना और उनके मस्तिष्क की पीडा अपने दामों मोल लेती है। क्या मुझसे यह बात छिपी है? क्या मेरे मस्तिष्क का रत्न सात सौ पौण्ड में नहीं खरीद लिया गया और उससे घर बैठे एक लाख पौण्ड नफा नहीं हुआ? यह वह चीज है जो तुमसे अधिक से अधिक लेना, और तुम्हें कम से कम देना चाहती है। यह पूंजी है! यह वह चीज है जो तुमसे कहती है — "प्यारो, हमें तुम्हारी दशा पर बड़ा दुख है, हम जानते हैं तुम बड़े कष्ट में हो", लेकिन तुम्हारे उद्धार के लिए अपने नफे की एक कौड़ी भी नहीं छोड़ती। यह पूंजी है। मुझसे कोई बतलाए उनमें से कौन गरीबों की मदद के लिए इनकम टैक्स पर एक पाई भी बढ़ाने पर राजी होगा? यह पूंजी है। एक सुफेद चेहरा और पत्थर का दिल रखने वाला देव! तुमने उसे पछाड़ु लिया है। क्या इस अन्त के समय तुम इस नश्वर देह के कष्ट से मैदान छोड़ दोगे? आज सबेरे जब मैं लन्दन के उन महानुभावों से मिलने गया तो मैंने उनके हृदय तक बैठकर देखा। उनमें से एक का नाम स्केंटलबरी है — मांस का एक लोंदा जो हमें खाकर परचा है। वह दूसरे हिस्सेदारों की तरह, जो बिना हाथ-पाँव हिलाए आनन्द से सालाना नफा लेते चले जाते हैं, बैठा हुआ था — एक बड़ा मोटा बैल जो उसी वक्त चौंकता है जब उसके रातिब में बाधा पड़ती है। मैंने उसकी आँखें देखीं

और मुझे मालूम हुआ कि उसके दिल में डर समाया हुआ है। अपनी, अपने नफे की, अपनी मेहनताने की और हिस्सेदारों की शंका उसे मारे डालती थी। एक को छोड़कर और सब घबराए हुए हैं, उन बालकों की भाँति जो रात को जंगल में भटक गए हों और पत्ती के जरा से खड़कने पर चौंक पड़ते हों। मैं तुमसे आज्ञा माँगता हूँ।

(वह जरा दम लेकर हाथ फैलाता है यहाँ तक कि बिल्कुल सन्नाटा छा जाता है।)

कि मुझे उन महाशयों से यह कहने का पूरा अख्तियार दे दो "कि आप लोग लन्दन सिधारें, मज़दूरों को आपसे कुछ नहीं कहना है।"

(कुछ भनभनाहट होती है।)

मुझे यह अख्तियार दो और मैं कसम खाकर कहता हूँ कि एक सप्ताह में तुम्हारी सब मांगें पूरी हो जायँगी।

इवेंस, जागो आदि — हाँ, इनको पूरा अख्तियार दो, पूरा अख्तियार!!

शाबाश शाबाश!!

राबर्ट — यह लड़ाई हम इस छोटी-सी चार दिन की जिन्दगी के लिए नहीं लड रहे हैं।

(भनभनाहट बन्द हो जाती है।)

अपने लिये, अपनी इस छोटी-सी नश्वर देह के लिए नहीं, उन लोगों के लिए जो हमारे बाद हमेशा आते रहेंगे।

(हार्दिक व्यथा से।)

भाइयो, अगर उनका कुछ भी खयाल है तो उसके सिर पर एक पत्थर और मत लुढ़काओ, आकाश पर भयंकर अन्धकार मत फैलाओ कि वे सागर की उद्दाम तरंगों में समा जायँ। मैं उनके लिए बी से बड़ी आफतें झेलने को तैयार हूँ, हम सब इसके लिये तैयार हैं। इसमें किसे इनकार हो सकता है।

(दाँत पीसकर)

अगर हम इस उजले मुँह और लाल ओंठ वाले दैत्य की गर्दन मरोड़ सके, जो आदि से हमारा और हमारे बाल-बच्चों का जीवन रक्त चूस रहा है!

(शान्त होकर लेकिन अत्यन्त गम्भीरता और विह्वलता के साथ।)

अगर हम में इतना जीवट नहीं है कि इस दैत्य कों छाती से छाती और आँख से आँख मिलाकर इतनी दूर खदेडें कि वह हमारे पैरों पर गिर पड़े, तो वह सदैव इसी भांति हमारा रक्त

चूसता चला जायगा। और हम हमेशा इसी तरह कुत्तों से भी अधम बने पड़े रहेंगे।

(सम्पूर्ण निश्शब्दता। राबर्ट धीरे-धीरे देह को हिलाता खड़ा रहता है। उसकी आँखें आदमियों के चेहरों को उत्तेजित कर रही हैं।)

इवेंस और जागो — (यकायक)....

(समूह कुछ खिसकता है। मेज पटरी के नीचे-नीचे आकर मंच के निकट खड़ी हो जाती है और राबर्ट की ओर देखकर कुछ कहना चाहती है। यकायक संदेहमय सन्नाटा छा जाता है।)

राबर्ट — बूढे महाशय कहते हैं, 'प्रकृति के पैरों को चूमो।' मैं कहता हूँ प्रकृति को ठोकर मारो, देखें वह हमारा क्या बिगाड़ सकती है।

(मेज को देखता है। उसकी भवें सिकुड़ जाती हैं। वह आँखें हटा लेता है।)

मेज — (मंच के पास आकर धीमी आवाज से) तुम्हारी स्त्री मर रही है।

(राबर्ट उसकी ओर घूरता है मानो उत्थान के शिखर पर से नीचे गिर पड़ा हो।)

राबर्ट — (कुछ बोलने की चेष्टा करके) मैं तुमसे कहता हूँ — उन्हें जवाब दो — उन्हें जवाब दो —

(समूह की भनभनाहट में उसकी आवाज दब जाती है।)

टामस — (आगे बढ़कर) क्या तुमने उसकी बात नहीं सुनी?

राबर्ट — क्या बात है?

टामस — तुम्हारी स्त्री मर गई है जी।

(राबर्ट हिचकता है, तब सिर हिलाकर नीचे कूद पड़ता है, और पटरी के नीचे-नीचे चला जाता है। लोग उसके लिए रास्ता छोड़ देते हैं। खड़ा हुआ मल्लाह अपनी लालटेन खोलता है और उसे जलाने लगता है। अंधेरा हुआ जाता है।)

मेज — उन्होंने व्यर्थ इतनी जल्दी की। एनी राबर्ट तो मर गई।

(तब उस सन्नाटे में जोश के साथ)

क्या तुम सब के सब अन्धे हो गए हो? अभी और कितनी औरतों का खून करना चाहते हो?

(समूह उसके पास से हट जाता है। लोग छोटी-छोटी टुकड़ियों में घबराए हुए जमा हो जाते हैं। मेज जल्दी से पटरी के नीचे चली जाती है। लोग चुपचाप उसके पीछे ताकते रहते हैं।)

लुइस — तुम, सब इसी अग्निकुंड में जलोगे।

बल्जिन — (गुर्राकर) मैं तुम्हारे दाँत तोड़ दूँगा।

ग्रीन — अगर तुमने मेरी बात मानी होती...।

टामस — उसे धर्म से विमुख होने का यह दण्ड मिला है। मैंने उससे कह दिया था कि यही होने वाला है।

इवेंस — इसीलिए तो हमें और भी उसका साथ देना चाहिए।

(ताली बजती है।)

क्या इस विपत्ति में तुम उसका साथ छोड़ दोगे? उसकी स्त्री मर गई है, क्या इस दशा में तुम उससे दगा करोगे?

(समूह एक साथ तालियाँ भी बजाता है और कुड़कुड़ाता भी है।)

राउस — (मंच के सामने आकर) उसकी स्त्री मर गई। क्या अब भी तुम्हें कुछ नहीं सूझता? तुम लोगों के घर में भी स्त्रियाँ हैं, उनकी रक्षा कैसे होगी? बहुत दिन न बीतेंगे कि तुम लोगों पर भी यही विपत्ति आवेगी।

लुईस — ठीक-ठीक!

हेनरी राउस — तुमने सच कहा, जॉर्ज, बिल्कुल सच!

(लोग दबी जबान से हामी भरते हैं।)

राउस — हम लोग अन्धे नहीं हैं अन्धा राबर्ट है! तुम लोग कब तक उसका मुँह ताकते रहोगे?

हेनरी राउस,

बल्जिन, डेविस — उसे धता बताना चाहिए।

(और लोग भी यही हांक लगाते हैं।)

इवेंस — (झल्लाकर) गिरे हुए आदमी को ठोकर मारते तुम्हें शर्म नहीं आती?

हेनरी राउस — जबान बन्द करो।

(बल्जिन को घूँसा तानते देखकर इवेंस हाथ फैला देता है। मल्लाह जिसने लालटेन जला ली है, उसे सिर के ऊपर उठाता है।)

राउस — (मंच पर कूदकर) उसी की खूनी जिद ने तो उसकी यह हालत की। क्या तुम अब भी उस आदमी के पीछे-पीटे चलोगे जिसे खुद नहीं मालूम कि मैं कहाँ जा रहा हूँ?

इवेंस — उसकी स्त्री मर गई है।

राउस — तो यह उसकी अपनी ही करनी का फल तो है। मैं कहता हूँ अब भी उसका साथ छोड़ दो, नहीं तो वह इसी तरह तुम्हारी स्त्रियों और माताओं की जान ले लेगा।

डेविस — उसका बुरा हो!

हेनरी राउस — अब उसकी कौन सुनता है!

ब्राउन — बहुत सुन चुके।

लोहार — हद से ज्यादा।

(सब लोग यही रट लगाने लगते हैं सिर्फ इवेंस, जागो और ग्रीन चुप रहते हैं। ग्रीन लोहार से बहस करता दिखाई देता है।)

राउस — (चिल्लाकर) भाइयो, हम पंचायत के साथ मेल कर लेंगे।

तालियां बजती हैं।

इवेंस — (झल्लाकर) अरे दगाबाजो।

बल्जिन — (गुस्से में भरा हुआ उसके सामने जाकर) तू किसे दगाबाज कह रहा है, गधे?

(इवेंस घूँसा उठाता है, वार बचाता है, और घूँसा चलाता है। दोनों लड़ने लगते हैं। दोनों मल्लाह लालटेन उठाए तमाशा देख रहे हैं। बूढा टामस आगे बढ़ता है, और उनमें बीच-बचाव करता है।)

टामस — तुम्हें यों झगड़ा करने में शर्म नहीं आती?

(लोहार, ब्राउन, लुइस और लाल बालों वाला युवक इवेंस और बल्जिन को अलग कर देते हैं। स्टेज पर बहुत हलकी रोशनी है।)

(पर्दा गिरता है।)

अंक 3

पहला दृश्य

[पाँच बज गए हैं। अन्डरवुड के दीवानखाने में, जो सुरुचि के साथ सजा हुआ है, एनिड सोफा पर बैठी हुई बच्चे का फ्राक सी रही है। एडगार एक छोटी-सी लम्बी टांग की मेज पर कमरे के बीच में बैठा हुआ एक चीनी की सुन्दूकची को घुमा रहा है। उसकी आँखें दुहरे दरवाजों की तरफ़ लगी हुई हैं जो दीवानखाने में खुलता है।]

एडगार — (चीनी की डिबिया को रखकर और अपनी घड़ी को एक नज़र देखकर) ठीक पाँच बजे हैं। फ्राक के सिवा और सब वहाँ आकर बैठे हुए हैं। वह कहां हैं?

एनिड — वे एक शर्तनामे के विषय में गैस ग्वायन के मकान तक गए हैं। क्या तुम्हें उनकी जरूरत होगी?

एडगार — उनसे क्या काम निकलेगा। यह तो डाइरेक्टरों का काम है।

(इकहरे दरवाजे की तरफ़ इशारा करके जिस पर पर्दा पड़ा हुआ है।)

दादा अपने कमरे में हैं?

एनिड — हाँ!

एडगार — मैं चाहता हूँ कि वे वहीं बैठे रहें।

(एनिड आँखें उठाती है।)

यह बड़ा बेहूदा काम है, बहन!

(उस छोटी सन्दूकची को फिर उठा लेता है, और उसे बार-बार घुमाता है।)

एनिड — मैं आज तीसरे पहर राबर्ट के घर गई थी।

एडगार — यह तो अच्छी बात न थी।

एनिड — वह अपनी स्त्री को मारे डालता है

एडगार — तुम्हारा मतलब है कि हम लोग मारे डालते हैं।

एनिड — (चौंककर) राबर्ट को मान जाना चाहिए।

एडगार — मजदूरों के पक्ष में भी बहुत कुछ कहा जा सकता है।

एनिड — मुझे अब उन पर उसकी आधी दया भी नहीं आती। जितनी वहाँ जाने के पहिले आती थी। वे हम लोगों के विरुद्ध जाति-भेद फैलाते हैं। बेचारी एनी की दशा खराब थी — आग बुझी जाती थी। और खाने को उसके लायक कुछ न था।

(एडगार इस सिरे से उस सिरे तक टहलने लगता है।)

लेकिन फिर भी राबर्ट का दम भर रही थी। जब हम यह सारी दुर्दशा आँखों से देखते हैं, और अनुभव करते हैं कि हम कुछ कर नहीं सकते, तो आँखें बन्द कर लेनी पड़ती हैं।

एडगार — अगर बन्द हो सकें!

एनिड — जब मैं वहाँ गई तो मैं सोलहों आना उनके पक्ष में थी। लेकिन ज्यों ही मैं वहाँ पहुँची, तो मेरे मन में कुछ और ही भाव आने लगे। लोग कहते हैं कि मजदूरों पर दया करनी

चाहिए। वे नहीं जानते इसे व्यवहार में लाना कितना कठिन है। मुझे तो निराशा होती है।

एडगार — शायद!

एनिड — मजदूरों को इस दशा में पड़े देखकर बड़ा दुःख होता है। मुझे तो अब भी आशा है कि दादा कुछ रियायत करेंगे।

एडगार — वह कुछ न करेंगे।

(निराश होकर।)

यह उनका धर्म हो गया है। इसका सत्यानाश हो! मैं जानता हूँ जो कुछ होने वाला है। उन्हें बहुमत से हारना पड़ेगा।

एनिड — डाइरेक्टरों की इतनी हिम्मत नहीं है।

एडगार — है क्यों नहीं, सबों के होश उड़े हुए हैं।

एनिड — (क्रोध से) वह मानने वाले नहीं हैं।

एडगार — (कन्धा हिलाकर) बहिन, अगर तुम्हें राएं कम मिलेंगी तो मानना ही पड़ेगा।

एनिड — ओह!

(घबराकर खड़ी हो जाती है।)

लेकिन क्या वह इस्तीफा दे देंगे?

एडगार — अवश्य। यह तो उनके सिद्धान्तों की जड़ ही काट देता है।

एनिड — लेकिन एडगार, इस कम्पनी पर उन्होंने अपना तन, मन सब अर्पण कर दिया। उनके लिए तो कुछ रह ही न जायगा। भयंकर समस्या खड़ी हो जायगी।

(एडगार अपने कन्धे हिलाता है।)

देखो टेड, वह बहुत बूढे हो गए हैं। उन सबों को मना करना।

एडगार — (अपने भावों को छिपाने के लिए उबल पड़ता है) इस हडताल में मैं सोलहों आना मजदूरों के पक्ष में हूँ।

एनिड — वह तीस साल से इस कम्पनी के सभापति हैं। सब उन्हीं का किया हुआ है और सोचो उन्हें कैसी-कैसी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ी हैं। उन्हीं ने उनका बेड़ा पार लगाया। टेड तुम उन्हें....

एडगार — तुम चाहती क्या हो? तुमने अभी कहा कि तुम्हें आशा है, दादा कुछ रियायत करेंगे। अब तुम चाहती हो कि रियायत न करने में मैं उनका साथ दूँ। यह खेल नहीं है, एनिड।

एनिड — (तेज होकर) तो मेरे लिए भी दादा के हाथों से उन सब अख्तियारों के निकल जाने का भग खेल नहीं है, जो उनके जीवन

के आधार हैं। अगर वह राजी न हुए, और उन्हें हार माननी पड़ी, तो उनकी कमर ही टूट जाएगी।

एडगार — तुम्हीं ने तो कहा है कि आदमियों को इस दशा में देखकर बड़ा दुःख होता है।

एनिड — लेकिन यह भी तो सोचो, टेड, कि दादा से यह चोट सही न जायगी। तुम्हें किसी तरह उन लोगों को रोकना चाहिए। और सब उनसे डरते हैं। अगर तुम उनकी तरफ हो जाओ तो कोई उनका कुछ नहीं कर सकता।

एडगार — (माथे पर हाथ रखकर) अपने धर्म के विरुद्ध, तुम्हारे धर्म के विरुद्ध। ज्यों ही अपनी बात आ जाती है....

एनिड — यह अपनी बात नहीं है, दादा की बात है।

एडगार — हम हों या हमारा परिवार एक ही बात है। अपनी बात आई, और खेल बिगड़ा।

एनिड — (चिढ़कर) तुम दिल्लगी कर रहे हो और मैं सच कहती हूँ।

एडगार — मुझे उनसे उतना ही प्रेम है, जितना तुमको है, मगर यह बिलकुल दूसरी बात है।

एनिड — मजदूरों की क्या दशा होगी, यह हम कुछ नहीं जानते। यह सब अनुमान है। लेकिन दादा का कोई ठिकाना नहीं। क्या तुम्हारा यह मतलब है कि वह तुम्हें मजदूरों से....

एडगार — हाँ, उनसे कहीं प्रिय हैं।

एनिड — तब तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आती।

एडगार — शायद!

एनिड — अगर अपनी खातिर करना पड़ता तो और बात थी। लेकिन अपने बाप के लिए मैं इसे शर्म की बात नहीं समझती। मालूम होता है तुम इसका अर्थ नहीं समझ रहे हो।

एडगार — खूब समझ रहा हूँ।

एनिड — उनको बचाना तुम्हारा मुख्य धर्म है।

एडगार — कह नहीं सकता।

एनिड — (मिन्नत करके) टेड, जीवन से उनका यही एक सम्बन्ध रह गया है। यह उनके प्राण ही लेकर छोड़ेगा।

एडगार — (उद्गार को रोककर) हाँ, है तो ऐसा ही।

एनिड — वचन दो।

एडगार — मुझसे जो कुछ हो सकेगा करूँगा।

(वह दुहरे दरवाजों की ओर घूमता है।)

(पर्देदार दरवाजा खुलता हे, और ऐंथ्वनी अन्दर आता है। एडगार दुहरे दरवाजों को खोलकर चला जाता है। स्केंटलबरी की धीमी आवाज यह कहते हुए सुनाई देती है, 'पाँच बज गए। यह झगड़ा खत्म न होगा। हमें उस होटल में फिर भोजन करना पड़ेगा।' दरवाजे बन्द हो जाते हैं ऐंथ्वनी आगे बढ़ता है।)

ऐंथ्वनी — मैंने सुना तुम राबर्ट के घर गई थीं।

एनिड — जी हाँ!

ऐंथ्वनी — तुम जानती हो कि इस खाई को पार करने की चेष्टा करना कितना कठिन है।

(एनिड फ्राक को छोटी मेज पर रख देती है, और उसके सामने ताकती है।)

जैसे कोई चलनी को बालू से भरे।

एनिड — ऐसा न कहिए दादा।

ऐंथ्वनी — तुम समझती हो कि अपने दस्तानेदार हाथों से तुम देश की विपत्ति को दूर कर सकती हो।

(वह आगे बढ़ जाता है।)

एनिड — दादा!

ऐंथ्वनी दुहरे दरवाजे पर रुक जाता है।

(मुझे तुम्हारी ही चिन्ता है।)

ऐंथ्वनी — (और नम्र होकर) बेटी, मैं अपनी रक्षा आप कर सकता हूँ।

एनिड — तुमने सोचा है, अगर वहाँ....

(उंगली दिखाती है।)

तुम्हारी हार हो गई तो क्या होगा?

ऐंथ्वनी — मेरी हार हो क्यों?

एनिड — दादा, उन लोगों को इसका अवसर न दीजिए। आपका जी अच्छा नहीं है। आपके वहाँ जाने की जरूरत ही क्या है।

ऐंथ्वनी — (उदास मुस्कराहट के साथ) मैदान छोड़कर भाग जाऊँ।

एनिड — लेकिन उन लोगों का बहुमत हो जायगा।

ऐंथ्वनी — (दरवाजे पर हाथ रखकर) यही तो देखना है।

एनिड — मै आपके पैरों पड़ती हूँ, दादा।

(ऐंथ्वनी उसकी ओर प्यार से देखता है।)

वहाँ न जाइएगा।

(ऐंथ्वनी सिर हिलाता है। वह दरवाजा खेलता है। आवाजों की भिनभिनाहट सुनाई देती है।)

स्केंटलबरी — उस साढे छः बजे वाली गाड़ी पर भोजन मिल जाता है न?

टेंच — जी नहीं। मैं तो समझता हूँ नहीं मिलता।

बाइल्डर — मैं तो सब कुछ कह डालूँगा। इस दुविधे से जी भर गया।

एडगार — (चौंककर) क्या?

यह आवाजें तुरन्त बन्द हो जाती हैं। ऐंथ्वनी दरवाजे को बंद करता हुआ उनके बीच से निकल जाता है। एनिड भय के भाव के साथ लपककर दरवाजे के पांस आ जाती है। वह मुठिये को पकड लेती है और उसे घुमाने लगती है। तब वह आतिशखाने के पास जाती है, और उसके जंगलों को पैंरों से खटखटाती है। एकाएक वह घंटी बाजती है। फ्रास्ट उस दरवाजे से आता है जो बड़े कमरे में खुलता है।

फ्रास्ट — हाजिर हूँ।

एनिड — देखो फ्रास्ट, मजदूर आज आयें तो उन्हें यहाँ लाना। हाल में बड़ी ठंडक है।

फ्रास्ट — मुरगीखाने में न ले जाऊँ, हुजूर।

एनिड — नहीं। मैं उनका अनादर नहीं करना चाहती। जरा-सी बात में बुरा मान जाते हैं।

फ्रास्ट — जी हाँ, हुजूर!

(रुककर।)

मिस्टर ऐंथ्वनी ने आज दिन भर कुछ नहीं खाया।

एनिड — मुझे मालूम है।

फ्रास्ट — बस, दो गिलास व्हिस्की और सोडा पिया।

एनिड — सच' तुम्हें उनको ये चीजें न देनी चाहिए थीं।

फ्रास्ट — (गम्भीरता से) हुजूर, मिस्टर ऐंथ्वनी का मिजाज समझ में नहीं आता। उन्हें यह नहीं मालूम होता कि अब वह जवान नहीं हैं, इन चीजों से उन्हें हानि होगी। जो कुछ जी में आता है वहीं करते हैं।

एनिड — हम सब भी तो यही चाहते हैं।

फ्रास्ट — हाँ, हुजूर!

(धीरे से।)

हडताल के बारे में मैं कुछ कहना चाहता हूँ। क्षमा कीजिएगा। मैं समझता हूँ कि और लोग मिस्टर ऐंथ्वनी की बात मान जायँ और पीछे से मजदूरों की मांगें पूरी कर दें तो झगड़ा मिट जाय। मुझे मालूम है कि कभी-कभी उनके साथ यह चाल ठीक पड़ती है।

(एनिड सिर हिलाती है।)

अगर उनकी बात काटी जाती है तो वह झल्ला उठते हैं।

(इस भाव से मानो उसने कोई नई बात खोज पाई हो।)

मैंने अपनी ही दशा में देखा है, कि जब मुझे क्रोध आ जाता है तो पीछे उस पर पछताता हू।

एनिड — (मुस्कराकर) तुम्हें कभी क्रोध आता है, फ्रास्ट?

फ्रास्ट — हाँ, हुजूर! कभी-कभी बहुत क्रोध आता है।

एनिड — मैंने नहीं देखा।

फ्रास्ट — (शान्त भाव से) नहीं हुजूर, आता है।

(एनिड द्वार के पीछे की तरफ़ पैरों से खेलती है। दर्द भरी आवाज में कहता है।)

आप तो जानती हैं, मैं मिस्टर ऐंथ्वनी के साथ उसी वक्त से हूँ जब मैं 5 साल का था। इस बुढापे में कोई उन्हें छेड़ता है तो मुझे दुःख होता है। मैंने मिस्टर वेंकलीन से इस विषय में बातचीत की थी।

(धीमे स्वर में।)

वह डाइरेक्टरों में सबसे समझदार मालूम होते हैं। लेकिन उन्होंने मुझसे कहा, 'यह तो ठीक है, फ्रास्ट, लेकिन यह हड़ताल बड़े जोखिम की बात है।' मैंने कहा — 'बेशक दोनों तरफ के लिए जोखिम की बात है। लेकिन मालिक की कुछ खातिरदारी तो कीजिए। बस जरा पुचारा दे दीजिए। यह समझिए कि अगर किसी के सामने पत्थर की दीवार आ जाय तो वह उससे सिर नहीं टकराता, उसके ऊपर से होकर निकल जाता है। इस पर वह बोले, 'तुम अपने मालिक को यह सलाह क्यों नहीं देते।'

(फ्रास्ट अपने नहों की ओर ताकता है।)

बस इतनी बात हुई, हुजूर! मैंने आज मिस्टर ऐंथ्वनी से कहा, 'जरा-सी बात के लिए आप क्यों जान खपाते हैं? तो मुझसे बोले, 'बकबक मत करो, फ्रास्ट, जो तुम्हारा काम है वह करो, या एक महीने की नोटिस लो। इन बातों के लिए क्षमा कीजिएगा, हुजूर!

एनिड — (दुहरे दरवाजों के पास जाकर और कान लगाकर) क्यों, फ्रास्ट, तुम राबर्ट को जानते हो?

फ्रास्ट — हाँ हुजूर, उसकी बातों से तो कुछ नहीं मालूम होता, लेकिन उसकी सूरत देखकर हम कह सकते हैं कि वह कैसा आदमी है।

एनिड — (रुककर) हाँ!

फ्रास्ट — वह इन मामूली सीधे-सादे साम्यवादियों में नहीं है। वह गुस्सेवर है, उसके अन्दर आग भरी हुई है। आदमी को अख्तियार है कि वह जो राय चाहे रक्खे। लेकिन जब वह जिद पकड लेता है, तब वह उपद्रव करने लगता है!

एंनिड — मैं समझती हूँ दादा का भी राबर्ट के विषय में यही ख़याल है।

फ्रास्ट — इसी से तो मिस्टर ऐंथ्वनी उससे चिढ़ते हैं।

(एनिड उसकी और चुभती हुई निगाह डालती है। उसे चिन्तित देखकर खड़ी-खड़ी अपने ओंठ काटने लगती है और दुहरे दरवाजों की ओर ताकती है।)

दोनों आदमियों में खींचातानी हो रही है। मुझे रॉबर्ट से जरा भी सहानुभूति नहीं है। मैंने सुना है कि औरों की तरह वह भी

मामूली मज़दूर है। अगर उसने कोई नई चीज निकाली है तो दूसरों से उस की दशा अच्छी भी तो है। मेरे भाई ने एक नए किस्म की कल बना डाली। किसी ने उसे पुरस्कार नहीं दिया। लेकिन फिर भी उसका प्रचार चारों तरफ़ हो रहा है।।

(एनिड दुहरे दरवाजों के और समीप आ जाती है।)

एक किस्म का आदमी होता है, जो सारे संसार से इसलिए जला करता है कि विधाता ने उसे अमीर क्यों न बनाया। मैं तो यह कहता हूँ कि शरीफ अपने से छोटे आदमियों को उसी तरह अपने बराबर समझता है जैसे वह खुद छोटा होता तो समझता।

एनिड — (कुछ अधीर होकर) हाँ मैं जानती हूँ, फ्रास्ट। तुम जरा अन्दर जाकर पूछो कि आप लोग चाय पीना चाहते हैं? कहना मैंने भेजा है।

फ्रास्ट — बहुत अच्छा, हुजूर।

(वह दरवाजे खोलता है और अन्दर जाता है। जोशीली, बल्कि गुस्से से भरी हुई बातचीत की क्षीण आवाज सुनाई देती है।)

वाइल्डर — मैं आपसे सहमत नहीं हूँ।

वेंकलिन — रोज ही तो यह विपत्ति सिर पर सवार रहती है।

एडगार — (अधीर होकर) लेकिन प्रस्ताव क्या है?

स्केंटलबरी — हाँ, आपके पिता जी क्या कहते हैं? क्या चाय लाए हो? मेरे लिए मत लाना।

बकलिन — मेरी समझ में सभापषति ने यह कहा है-

फ्रास्ट फिर दरवाजे को बन्द करता हुआ अन्दर आता है।

एनिड — (दरवाजे से हटकर) क्या वे अब चाय न पिएंगे?

(वह छोटी मेज के पास जाती है और बच्चे के फ्राक की तरफ ताकती हुई चुपचाप खड़ी रहती है। एक टहलनी हाल से अन्दर आती है।)

टहलनी — मिस टामस आई हैं, हुजूर।

एनिड — (सिर उठाकर) टामस? कौन मिस टामस? क्या वह?

टहलनी — हाँ, हुजूर।

एनिड — (ऊपरी मन से) अच्छा! वह कहां है?।

टहलनी — ड्योढ़ी में।

एनिड — कोई ज़रूरत नहीं

(कुछ हिचकिचाती है।)

फ्रास्ट — क्या उसे जवाब दे दूँ, हुजूर?

एनिड — मैं बाहर आती हूँ। नहीं उसे अन्दर बुला लो एलिन।

(टहलनी और फ्रास्ट बाहर जाते हैं। एनिड अपने होंठ सिकोड़ कर छोटी मेज पर बैठ जाती है, और बच्चे का फ्राक सीने से लगाती है। टहलनी मेज टामस को अन्दर लाती है, और चली जाती है। मेज दरवाजे के पास खड़ी हो जाती है।)

एनिड — चली आओ, क्या बात है? किसलिए आई हो?

मेज — मिसेज़ राबर्ट के पास से एक संदेशा लाई हूँ।

एनिड — संदेशा? क्या?

मेज — उसने आपसे कहा है कि उसकी माँ की खबर लेते रहिएगा।

एनिड — यह बात मेरी समझ में आई नहीं।

मेज — (रुखाई से) संदेशा तो यही है।

एनिड — लेकिन-क्या बात है! क्यों?

मेज — एनी राबर्ट मर गई है।

(दोनों चुप हो जाती हैं।)

एनिड — (घबराकर) लेकिन अभी एक ही घंटा हुआ मैं उसके पास से चली आती हूँ।

मेज — ठंड और भूख से मर गई।

एनिड — (उठकर) हटो, मुझे तो विश्वास नहीं आता। बेचारी का दिल — तुम मेरी तरफ इस तरह क्यों देख रही हो? मैंने तो उसे मदद देनी चाही थी।

मेज — (अपने क्रोध को दबाकर) मैंने समझा शायद आप जानना चाहती हैं।

एनिड — (उत्तेजित होकर) तुम मुझ पर अन्याय कर रही हो। क्या तुम देखती नहीं हो कि मैं तुम लोगों की मदद करना चाहती हूँ?

मेज — जब तक मुझे कोई नहीं सताता, मैं उसे नही सताती।

एनिड — (रूखेपन से) मैंने तुम्हारे साथ क्या बुराई की है? तुम मुझसे इस तरह क्यों बोल रही हो?

मेज — (वेदना से विह्वल होकर) तुम अपना विलास छोड़कर हमारी टोह लेने जाती हो। तुम चाहती हो कि हम लोग एक सप्ताह भूखों मरें।

एनिड — (अपनी बात पर अड़कर) बेसिर पैर की बातें न करो।

मेज — मैंने उसे मरते देखा। उसके हाथ ठिठुरकर काले हो गए थे।

एनिड — (शोक विकल होकर) ओफ्! फिर उसने क्यों मुझसे मदद नहीं ली? इस व्यर्थ के अभिमान से क्या फायदा।

मेज — देह को गर्म रखने के लिए कुछ नहीं है तो अभिमान ही सही।

एनिड — (झल्लाकर) मैं तुम्हारी बातें नहीं सुनना चाहती। तुम क्या जानती हो मुझे कितना दुःख हो रहा है? अगर मैं तुमसे अच्छी दशा में हूँ तो इसमें मेरा क्या अपराध है?

मेज — हम आपकी दौलत नहीं चाहते।

एनिड — तुम न कुछ समझती हो और न समझना चाहती हो। यहाँ से चली जाओ।

मेज — (कटुता से) आप मीठी-मीठी बातें भले ही करें, लेकिन आप ही ने उसकी जान ली। आप और आपके बाप ने।

एनिड — (क्रोध और आवेश से) क्यों कोसती हो? मेरे पिता तो इस मनहूस हडताल के कारण आप ही बेहाल हो रहे हैं।

मेज — (कठोर गर्व के साथ) तब उनसे कह दो मिसेज़ राबर्ट मर गई। इससे उन्हें फायदा होगा।

एनिड — चली जाओ।

मेज — जब कोई हमारे पीछे पड़ता है तो हम भी उसके पीछे पड़ जाते हैं।

(वह यकायक तेजी से एनिड की तरफ़ बढती है, उसकी आँखें छोटी मेज पर रक्खे हुए बच्चे के फ्राक पर जमी हुई हैं। एनिड फ्राक को उठा लेती है, मानो वह बच्चा ही हो। दोनो आँखें मिलाए एक गज के अन्तर पर खड़ी हो जाती ।)

मेज — (कुछ मुस्कराकर फ्राक की तरफ इशारा करते हुए) अच्छा यह बात है। यह उसके बच्चे का फ्राक है। यह बहुत अच्छा है कि आपको उसकी माँ की रक्षा करनी पड़ेगी। उसके बच्चों की नहीं। बुढ़िया बहुत दिनों तक आपको कष्ट न देगी।

एनिड — चली जाओ।

मेज — मैं आपसे उसका संदेशा कह चुकी।

(वह फिरकर हाल में चली जाती है। जब तक चली नहीं जाती एनिड निश्चल खड़ी रहती है, फिर झुककर उस फ्राक के ऊपर अपना सर झुका लेती है जिसे वह अभी तक लिए हुए है। दुहरे दरवाजे खुलते हैं और ऐंथ्वनी मन्द गति से आते हैं। वह अपनी लड़की के सामने से होकर जाते हैं और एक आराम कुर्सी पर बैठ जाते हैं। उनका चेहरा लाल है।)

एनिड — (अपने आवेश को छिपाकर) क्या बात है दादा?

(ऐंथ्वनी सिर हिला देते हैं पर कुछ बोलते नहीं।)

क्या बात है?

(ऐंथ्वनी जवाब नहीं देते। एनिड दुहरे दरवाजों के पास जाती है। वहाँ एडगार आता हुआ उससे मिल जाता है। दोनों आहिस्ता-आहिस्ता बातें करने लगते हैं।)

क्या बात है, टेड?

एडगार — वही बेहूदा वाइल्डर। व्यक्तिगत आक्षेप करने लगा। साफ गालियाँ दे रहा था।

एनिड — उसने क्या कहा?

एडगार — कहता था दादा इतने बुड्ढे और दुर्बल हो गए हैं कि उन्हें कुछ सूझता ही नहीं। दादा अभी उसके जैसे छः आदमियों के बराबर हैं।

एनिड — और क्या।

(दोनों ऐंथ्वनी की ओर देखते हैं। दरवाजे खुल जाते हैं। वेंकलिन स्केंटलबरी के साथ आता है।)

स्केंटलबरी — (एक स्वर में) मुझे यह बात पसंद नहीं है।

वेंकलिन — (आगे बढ़कर) प्रधान जी, वाइल्डर ने आपसे माफी माँगी है। कोई आदमी इसके सिवा और क्या कर सकता है?

(वाइल्डर, जिसके पीछे-पीछे टेंच है, अन्दर आता है और ऐंथ्वनी के पास जाता है।)

वाइल्डर — (बेदिली से) मैं अपने शब्दों को वापस लेता हूँ' महाशय। मुझे खेद है।

(ऐंथ्वनी सिर हिलाता है।)

एनिड — क्यों मिस्टर वेंकलिन, तुमने कुछ निश्चय नहीं किया?

(वेंकलिन सिर हिलाता है।)

वेंकलिन — प्रधान जी, हम सब यहाँ हैं। अब आप क्या कहते हैं? हम इस मामले पर विचार करें या दूसरे कमरे में चले जायँ।

स्केंटलबरी — हाँ-हाँ, हमें विचार करना चाहिए। कुछ न कुछ निश्चय करना जरूरी है।

(वह छोटी कुर्सी से घूमकर सबसे बड़ी कुर्सी पर बैठ जाता है और आराम की सांस लेता है। वाइल्डर और वेंकलिन भी बैठते हैं और टेंच एक सीधे तकिए की कुर्सी खींचकर प्रधान के पास रजिस्टर और कलम लेके बैठ जाता है।)

एनिड — (धीरे से) मैं तुमसे कुछ कहना चाहती हूँ, टेड।

(दोनों दुहरे दरवाजों से बाहर चले जाते हैं।)

वेंकलिन — सच्ची बात यह है, प्रधान जी, अब इस भ्रम से अपने को तसकीन देना कि हमारा कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता उचित नहीं है। अगर आम जलसे के पहिले इस हड़ताल का अन्त नहीं हो जाता तो हिस्सेदार लोग हमारी बुरी गति बनायेंगे।

स्केंटलबरी — (चौंककर) क्या! क्या बात है?

वेंकलिन — यह तो होगा ही।

ऐंथ्वनी — बनाने दो।

वाइल्डर — तो हम अपनी जगह पर रह चुके।

वेंकलिन — (ऐंथ्वनी से) मुझे उसी नीति के लिए बलिदान हो जाने में कोई भय नहीं है जिस पर मुझे विश्वास हो। लेकिन किसी दूसरे के सिद्धान्तों के लिए जलना मुझे मंजूर नहीं।

स्केंटलबरी — बात तो सच्ची है, प्रधान जी, आपको इसकी फिक्र करनी चाहिए।

ऐंथ्वनी — दूसरे कारखाने वालों के हित के विचार से हमें दृढ़ रहना चाहिए।

वेंकलिन — उसकी भी एक सीमा है।

ऐंथ्वनी — शुरू में तो आप लोग जोश में भरे हुए थे।

स्केंटलबरी — (रोनी सूरत बनाकर) हमने समझा था मजदूर लोग दब जायँगे, लेकिन यह खयाल गलत निकला।

ऐंथ्वनी — दबेंगे।

वाइल्डर — (उठकर कमरे में इस सिरे से उस सिरे तक हटलता हुआ) व्यवसायी आदमी हूँ, और मजदूरों को भूखों मार डालने के सन्तोष के लिए अपने नाम में बट्टा नहीं लगाना चाहता।

(आँखों में आँसू भरकर)

यह मुझसे नहीं होगा। ऐसी दशा में हम हिस्सेदारों को कैसे मुँह दिखा सकेंगे।

स्केंटलबरी — हियर-हियर हियर!!

वाइल्डर — (अपने को धिक्कारकर) अगर कोई मुझसे यह आशा रक्खे कि मैं उनसे यह कहूँगा मैंने तुम्हें पचास हजार पौण्ड की चपत दी, और चाहे इतना ही घाटा और हो जाय, तो भी अपनी टेक न छोड़ूँगा तो —

(ऐंथ्वनी की ओर देखकर)

मुझसे यह न होगा। यह उचित नहीं है। मैं आपका विरोध नहीं करना चाहता —

वेंकलिन — (नम्रता से) देखिए, प्रधान जी, हम लोग बिलकुल स्वाधीन नहीं है। हम सब एक कल के पुर्जे हैं। हमारा काम केवल इतना है कि जितना लाभ कम्पनी को हो सके उतना होने दें। अगर आप मुझ पर आक्षेप लगायें कि तुम्हारा कोई सिद्धान्त नहीं है तो मैं कहूँगा कि हम केवल प्रतिनिधि हैं। बुद्धि कहती है कि अगर यह हड़ताल चलती रही तो हमें जितनी हानि होगी वह मजूरी की बचत से न पूरी होगी। वास्तव में प्रधान जी, जिन अच्छी से अच्छी शर्तों पर हो सके यह झगड़ा बन्द कर देना चाहिए।

ऐंथ्वनी — ऐसा नहीं हो सकता!

(सबके सब सन्नाटे में आ जाते हैं।)

वाइल्डर — तो इधर भी हड़ताल ही समझिए।

(निराशा से अपने हाथों को पटककर)

मेरा स्पेन का जाना हो चुका!

वेंकलिन — (व्यंग्य मिले हुए स्वर में) प्रधान जी, आपने अपनी विजय का फल देख लिया?

वाइल्डर — (आकस्मिक आवेश के साथ) मेरी स्त्री बीमार है।

स्केंटलबरी — यह तो आपने बुरी सुनाई।

वाइल्डर — अगर मैं उसे इस भयंकर शीत से न निकाल ले गया तो ईश्वर ही जाने क्या होगा।

(एडगार दुहरे दरवाजे से अन्दर आता है, वह बहुत गम्भीर दिखाई देता है।)

एडगार — (अपने बाप से) आपने सुना मिसेज़ राबर्ट मर गई।

(सब उसकी तरफ ताकने लगते हैं मानो इस समाचार की गुरुता पर विचार करते हों।)

एनिड आज शाम को उसके घर गई थी। वहाँ न कोयला था, न खाना था और न कोई और चीज थी। बस हद हो गई।

(सन्नाटा हो जाता है। सब एक दूसरे से आँखें चुराते हैं। केवल ऐंथ्वनी बेटे की तरफ़ घूरकर देखता है।)

स्केंटलबरी — क्या आपका खयाल है, हम लोग उस गरीबिन की कुछ मदद कर सकते थे?

वाइल्डर — (उत्तेजित होकर) औरत बीमार थी। कोई नहीं कह सकता कि उसकी जिम्मेदारी हमारे ऊपर है। कम-से-कम मुझ पर नहीं है।

एडगार — (गर्म होकर) मैं कहता हूँ कि हम सब जिम्मेदार हैं।

ऐंथ्वनी — लड़ाई, लड़ाई है!

एडगार — औरतों से नहीं।

वेंकलिन — बहुधा औरतों के ही माथे जाती है।

एडगार — अगर यह हमको मालूम है, तो हमारी जिम्मेदारी और भी बढ जाती है।

ऐंथ्वनी — यह आततताइयों के समझने की बात नहीं है।

एडगार — आप मुझे जो चाहे कहें, इससे ऊब गया हूँ। हमें मामले को इतना तूल देने का कोई अधिकार न था।

वाइल्डर — मुझे यह बात रत्ती भर भी पसंद नहीं। वह आंधी खोपड़ी वाला साम्यवादी पत्र इस मामले को तोड़-मरोड़कर अपना मतलब गांठेगा। देख लेना, कोई ऊट-पटांग कहानी गढ़कर यह दिखायेगा कि औरत भूखों मर गई। मेरा इसमें कोई दोष नहीं।

एडगार — आप इससे किनारे नहीं रह सकते। हममें से कोई नहीं रह सकता।

स्कॆंटलबरी — (कुर्सी के बाजू पर घूँसा मारकर) लेकिन मैं तो इसका विरोध करता हूँ।

एडगार — आप जितना विरोध चाहें करें, आप सच को झूठ नहीं कर सकते।

ऐंथ्वनी — बस! अब मत बाँधो

एडगार — (क्रोध से उनके सामने खड़े होकर) जी नहीं, मैं आपस वहीं कहता हूँ जो मेरे दिल में है। अगर हम यह सोचें कि मज़दूरों को कष्ट नहीं हो रहा है, तो यह झूठ है। और अगर उन्हें कष्ट हो रहा है, तो यह मानी हुई बात है कि औरतों को ज्यादा कष्ट हो रहा है और बच्चों की दशा तो कुछ कहीं नहीं जा सकती। मानव स्वभाव का इतना ज्ञान हमको है।

(स्कैंटलबरी कुर्सी से खड़ा हो जाता है।)

मैं यह नहीं कहता कि उन्हें सताने का हमारा इरादा था। मैं यह नहीं कहता, लेकिन मैं यह जरूर कहता हूँ कि हमारा सच की ओर से आँखें बन्द कर लेना बेजा था। हमने इन आदमियों को नौकर रक्खा है, और इस अपराध से नहीं बच सकते। मर्दों की तो मुझे ज्यादा परवाह नहीं है, लेकिन मैं औरतों को इस तरह मारना नहीं चाहता। इससे तो यह कहीं अच्छा है कि मैं बोर्ड से इस्तीफा दे दूँ।

(ऐंथ्वनी के सिवा और सब खड़े हो जाते हैं। ऐंथ्वनी कुर्सी की बांह पकड़े पुत्र की ओर ताकता हुआ बैठा रहता है।)

स्कैंटलबरी — भाई जान, आप जिन शब्दों में अपने भाव प्रकट कर रहे हैं वह मुझे पसंद नहीं है।

वेंकलिन — आप हद से आगे बढ़े जा रहे हैं।

वाइल्डर — मेरा भी ऐसा ही विचार है।

एडगार — (आपे से बाहर होकर) इन बातों की ओर आँखें मीच लेने से काम न चलेगा। अगर आप लोग औरतों का खून अपनी गरदन पर लेना चाहते हों तो लें। मैं नहीं लेना चाहता।

स्केंटलबरी — बस-बस, भाई जान।

वाइल्डर — 'हमारी' गर्दन कहिए 'मेरी' गर्दन नहीं। मैं अपनी गर्दन पर यह पाप नहीं लेना चाहता।

एडगार — हम लोग बोर्ड में पाँच मेम्बर हैं, अगर हम चार इसके विरुद्ध थे तो हमने क्यों इस मामले को इतनी दूर जाने दिया? इसका कारण आप लोग खूब जानते हैं। हमें आशा थी कि हम मर्दों को भूखों मार डालेंगे, लेकिन हुआ यह कि हम औरतों की जान लेने लगे।

स्केंटलबरी — (उन्मत होकर) मैं इसे नहीं मानता, किसी तरह नहीं। मेरे हृदय में दया है, हम सभी सज्जन हैं।

एडगार — (श्लेषक भाव से) हमारी सज्जनता में कोई बाधा नहीं है। यह हमारी कल्पना का दोष है, मि. स्केंटलबरी।

स्केंटलबरी — वाहियात! मेरी कल्पना तुम्हारी कल्पना से घट कर नहीं है।

एडगार — जैसी होनी चाहिए वैसी नहीं है।

वाइल्डर — मैंने पहले ही कहा था।

एडगार — तो फिर क्यों नहीं रोका?

वाइल्डर — तो क्या बात रह जाती?

(ऐंथ्वनी की ओर देखता है।)

एडगार — अगर आप और मैं और हम सबने जो कह रहे हैं कि हमारी कल्पना इतनी अच्छी है-

स्केंटलबरी — (घबड़ाकर) मैंने यह नहीं कहा।

एडगार — (अनसुनी करके) इसकी जड काट दी होती तो यह मामला कब का ठंडा हो गया होता और यह दुखिया इस तरह एड़ियाँ रगड़-रगड़ कर न मरती। कौन कह सकता है कि अभी एक दर्जन और औरतें इसी तरह फाकें नहीं कर रही हैं।

स्केंटलबरी — भाई साहब, खुदा के लिए इस शब्द का इस....इस....बोर्ड के जलसे में प्रयोग न कीजिए।
यह....यह....भयंकर है।

एडगार — कोई वजह नहीं कि मैं इसका प्रयोग न करूँ।

स्केंटलबरी — तो मैं तुम्हारी बातें न सुनूँगा मैं कान ही न दूँगा। मुझे दुःख होता है।

(अपने कान बन्द कर लेता है।)

वेंकलिन — हममें से कोई समझौते के विरुद्ध नहीं है, सिवाय तुम्हारे पिता के।

एडगार — मुझे विश्वास है कि अगर हिस्सेदारों को मालूम हो जाय कि....

वेंकलिन — मेरा खयाल है कि आपको उनकी कल्पना में भी यही दोष मिलेगा। अगर किसी स्त्री का दिल कमजोर है तो क्या इसलिए....

एडगार — ऐसे उपद्रवों में सभी के दिल. कमजोर हो जाले हैं, यह बच्चा भी जानता है। अगर हमने डकैतों की चाल न चली होती तो इस तरह उसके प्राण न जाते, और यह तबाही न नज़र आती जो चारों तरफ फैली हुई है। जिसे जरा-सी भी बुद्धि है, वह समझ सकता है।

(अब तक एडगार बोलता है ऐंथ्वनी उसकी तरफ देखता रहता है। वह अब उठना चाहता है लेकिन एडगार को फिर बोलते देखकर रुक जाता है।)

मैं मजदूरों की, अपनी, या किसी दूसरे की सफाई नहीं दे रहा हूँ।

वेंकलिन — शायद आपको सफाई देनी पड़े। अदालत की निष्पक्ष जूरी शायद हमारे ऊपर कुछ भद्दे आक्षेप करे। हमें अपनी आबरू की रक्षा भी तो करनी है।

स्केंटलबरी — (कानों को बन्द किए हुए) अदालत की जूरी! नहीं, नहीं, यह वैसा मामला नहीं है।

एडगार — मुझसे अब और कायरता न होगी।

वेंकलिन — कायरता कड़ा शब्द है, मि. एडगार ऐंथ्वनी। अगर यह घटना हो जाने पर हम आदमियों की मांगें पूरी कर दें तो वह अलबत्ता हमारी कायरता-सी मालूम होगी। हमें बहुत सावधान रहना चाहिए।

वाइल्डर — बेशक। हमें अफवाहों के सिवा, इस मामले की कोई खबर नहीं है। सबसे सुगम उपाय यह है कि सारी बात मि. हार्निस पर छोड़ दें कि -वह हमारी तरफ से तय कर दें। यह सीधा रास्ता है, और उसी पर हमें आ जाना चाहिए था।

स्केंटलबरी — (गर्व से) ठीक!

(एडगार की तरफ़ फिरकर)

और आपके विषय में मैं इतना ही कहता हूँ कि जिन शब्दों में आपने इस मामले को बयान किया है, वह मुझे बिलकुल पसन्द नहीं है। आपको उन शब्दों को वापस लेना चाहिए। आप हमारी राय को जानते हुए भी यहाँ फाके और कायरता की चर्चा करते हैं। आपके बाप के सिवा हम सब लोगों की यह राय है कि मेल ही सबसे अच्छी नीति है। आपका कथन बिल्कुल अनुचित और अविचार से भरा हुआ है। और मैं इसके सिवा और कुछ न कहूँगा। कि मुझे इससे कष्ट हुआ है-

(वह अपना हाथ अपने प्रस्ताव-पत्र के बीच में रखता है।)

एडगार — (दुराग्रह से) मैं एक शब्द भी वापस न लूँगा।

(वह कुछ और कहने जा रहा है लेकिन स्केंटलबरी फिर कानों पर हाथ रख लेता है। साहस टेंच याददाश्त के रजिस्टर को उठाकर घुमाने लगता है। फिर सबको यह ज्ञान हो जाता है कि हम कोई अस्वाभाविक काम कर रहे हैं और सब एक-एक करके बैठ जाते हैं। केवल एडगार खड़ा रहता है।)

वाइल्डर — (इस भाव से मानो कोई आक्षेप मिटाने की चेष्टा कर रहा है) मैं मिस्टर एडगार ऐंथ्वनी की बातों की परवाह नहीं करता। पुलिस की जूरी। यह विचार ही लचर है। मैं प्रधान जी के प्रस्ताव में यह संशोधन करना चाहता हूँ कि यह झगड़ा तुरन्त

फैसले के लिए मिस्टर साइमन हार्निस के सुपुर्द कर दिया जाय। उन्हीं शर्तों पर जो आज उन्होंने बतलाई थीं। कोई समर्थन करता है?

(टेंच रजिंस्टर में लिखता है।)

वेंकलिन — मैं समर्थन करता हूँ।

वाइल्डर — तो मैं प्रधान से निवेदन करूँगा कि वह इसे बोर्ड के सामने रक्खें।

ऐंथ्वमी — (लम्बी सांस लेकर धीरे-धीरे) हमारे ऊपर चोटें की गई हैं।

(वाइल्डर और स्केंटलबरी की ओर व्यंग्य भरे हुए तिरस्कार से देखकर।)

मैं इसे अपनी गर्दन पर लेता हूँ। मेरी अवस्था छियत्तर वर्ष की है। बत्तीस साल हुए इस कम्पनी का जन्म हुआ था। उसके जन्म ही से मैं इसका प्रधान हूँ। मैंने इसके अच्छे दिन भी देखे और बुरे दिन भी। इसके साथ मेरा सम्बन्ध उस साल शुरू हुआ जब यह युवक पैदा हुआ था।

(एडगार सिर झुकाता है ऐंथ्वनी अपनी कुर्सी को पकड़कर फिर कहना शुरू करता है।)

मैं पचास साल से मजदूरों के साथ व्यवहार कर रहा हूँ। मैंने हमेशा उन्हें ठोकर मारी है। खुद कभी ठोकर नहीं खाई। मैं इस कम्पनी के मजदूरों से चार बार भिड़ चुका हूँ और चारों ही बार मैंने उन्हें नीचा दिखाया है। लोग कहते हैं मुझमें पहला-सा दम दावा नहीं है।

(वाइल्डर की ओर ताकता है।)

कुछ भी हो, मुझमें अब भी अपनी तोपों के पास डटे रहने की हिम्मत है ।

(उसका स्वर और ऊँचा हो जाता है, दुहरे दरवाजे खुलते हैं और एनिड आती है। अंडरवुड उसको रोकता हुआ पीछे-पीछे आता है।)

मजदूरों के साथ हमने न्याय का व्यवहार किया है। उनको ठीक मज़दूरी दी गई है। हम हमेशा उनकी शिकायतें सुनने के लिए तैयार रहे हैं। कहा जाता है कि जमाना बदल गया; जमाना बदल गया हो, लेकिन मैं नहीं बदला। और न बदलूँगा। कहा जाता है कि स्वामी और सेवक बराबर हैं। लचर बात है। एक घर में केवल एक स्वामी हो सकता है। जहां दो आदमी होंगे तो उनमें जो अधिक योग्य होगा उसी की चलेगी। कहा जाता है कि पूंजी और श्रम के स्वार्थ में कोई अन्तर नहीं है। लचर बात! उनके

स्वार्थों में धुओं का अन्तर है। कहा जाता है कि बोर्ड कल का सिर्फ एक पुर्जा है। लचर बात। हमीं कल हैं। कि इसका मस्तिश्क हैं और इसकी नसें हैं। यह हमारा काम है हमी इसको चलायें और बिना किसी डर या रियायत के इसका निश्चय करें कि हमें क्या करना है। मज़दूरों से डरें। हिस्सेदारों से डरें। अपने ही साया से डरें। इसके पहिले मैं मर जाना चाहता हूँ।

(वह दम लेता है और अपने पुत्र से आँखें मिलाकर फिर कहता है।)

मजदूरों के साथ निबटारा करने का सिर्फ एक रास्ता है और वह है दमन। आजकल की अधकचरी बातों और अधकचरे व्यवहारों ही ने हमें इस दशा में डाल दिया है। दया और नर्मी, जिसे यह युवक अपनी समाज-नीति कहता है, इसकी जड़ है। यह नहीं हो सकता कि तुम चने भी चबाओ और शहनाई भी बजाओ। यह अधकचरी भावुकता, इसे चाहे साम्यवाद कहो कुछ और कोरी गप है। स्वामी स्वामी है, और सेवक सेवक है। तुम उनकी एक बात मानो और वह छः और माँगेंगे।

(रुखाई से मुस्कराकर।)

वे ओलियर ट्विस्ट (चार्ल्स डिकेंस के एक उपन्यास का पात्र) की भांति कभी संतुष्ट नहीं होते। अगर मैं उनकी जगह पर होत —

तो मैं भी वैसा ही करता। लेकिन मैं उनकी जगह पर नहीं हूँ। मेरी बातों को गिरह बांध लो। अगर तुम उनसे यहाँ दबे, वहाँ दबे, तो एक दिन तुम्हें मालूम होगा कि तुम्हारे पैरों के नीचे जमीन खिसक गई है, और तुम दिवालिएपन के दलदल में फंस गए हो। और तुम्हारे साथ वह लोग भी दलदल में डूब रहे होंगे जिनके सामने तुमने घुटने टेके हैं। मुझ पर यह इल्जाम लगाया जाता है कि मैं स्वेच्छाचारी शासक हूँ, जिसे अपनी टेक के सिवा और किसी बात की चिंता नहीं है — लेकिन मैं इस देश का भविष्य सोचता हूँ जिस पर अव्यवस्था की काली बाढ़ का संकट आने वाला है। जिस पर जन शासन का संकट आने वाला है, और न जाने कौन-कौन से संकट आने वाले हैं। अगर मैं अपने आचरण से इस विपत्ति को अपने देश पर लाऊं तो मैं अपने भाइयों को मुँह न दिखा सकूँगा।

(ऐंथ्वनी सामने की ओर शून्य में ताकता है और पूरा सन्नाटा छाया हुआ है। फ्रास्ट बड़े कमरे से आता है और ऐंथ्वनी के सिवा और सब लोग उसकी ओर चिंतित हो होकर ताकते हैं।)

फ्रास्ट — (ऐंथ्वनी से) हुजूर, मजदूर लोग यहाँ आ गए।

(ऐंथ्वनी उसे चले जाने का इशारा करता है।)

क्या उन लोगों को यहाँ लाऊँ?

ऐंथ्वनी — ठहरो!

(फ्रास्ट चला जाता है ऐंथ्वनी घूमकर अपने पुत्र की ओर ताकता है।)

अब मैं उस आक्षेप पर आता हूँ जो मेरे ऊपर किया गया है।

(एडगार घृणा का संकेत करता है और सिर कुछ झुकाकर चुपचाप खड़ा रहता है।)

एक औरत मर गई है। मुझसे कहा जाता है कि उसका खून मेरी गर्दन पर है। मुझसे कहा जाता है कि और भी कितनी ही औरतों बच्चों को भूखों मरने और एड़ियाँ रगड़ने का अपराध भी मेरी गर्दन पर है।

एडगार — मैंने हमारी, गर्दन पर कहा था।

ऐंथ्वनी — एक ही बात है।

(उसका स्वर ऊँचा होता जाता है। और मनोद्वेग उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है।)

मुझे यह नई बात मालूम हुई कि अगर मेरा द्वन्द्वी एक सच्ची लड़ाई में, जिसका कारण मैं नहीं हूँ, नीचा देखे तो यह मेरा दोष है। अगर मैं कुश्ती खा जाऊँ, और यह सम्भव है, तो मैं शिकायत न करूँगा। यह मेरा जिम्मा होगा। और यह उसका है। मैं चाहूँ

भी तो इन मजदूरों को उनकी स्त्रियों और बच्चों से अलग नहीं कर सकता। सच्ची लड़ाई सच्ची लड़ाई है। उन्हें चाहिए कि लड़ाई छेड़ने के पहले उसका नतीजा सोच लिया करें।

एडगार — (धीमे स्वर में) लेकिन क्या यह सच्ची लड़ाई है, पिताजी? उनको देखिए और हमको देखिए। उनके पास केवल यही एक हथियार है।

ऐंथ्वनी — (कठोरता से) और तुम इतने निर्लज्ज हो कि उन्हें यह हथियार चलाना सिखाते हो। आजकल यह रिवाज सा चल पड़ा है कि लोग अपने शत्रुओं का पक्ष लेते हैं। मैंने अभी वह कला नहीं सीखी है। यह मेरा दोष है कि उन्होंने अपनी पंचायत से भी लड़ाई ठान ली?

एडगार — दया भी तो कोई चीज है।

ऐंथ्वनी — और न्याय का पद उससे भी ऊँचा है।

एडगार — मगर एक आदमी के लिए जो न्याय है, वह दूसरे के लिए अन्याय है।

ऐंथ्वनी — (अपने उद्गार को दबाकर) तुम मुझ पर अन्याय का दोष लगाते हो जिसमें पशुता है, निर्दयता है-

(एडगार घृणासूचक संकेत करता है। सब के सब डर जाते हैं।)

वेंकलिन — ठहरिए, ठहरिए, प्रधान जी।

ऐंथ्वनी — (कठोर स्वर में) यह मेरे ही पुत्र के शब्द हैं। यह उस युग के शब्द हैं, जिसे मैं नहीं समझता। यह दुर्बल संतानों के शब्द हैं।

(सब लोग भुनभुनाने लगते हैं। ऐंथ्वनी प्रबल प्रयत्न से अपने ऊपर काबू पाता है।)

एडगार — (धीरे से) ये बातें मैंने अपने विषय में भी तो कहीं थीं, दादा।

(दोनों एक दूसरे की ओर देर तक ताकते हैं। और ऐंथ्वनी अपना हाथ एक ऐसे संकेत से फैलाता है मानो उन व्यक्तियों को हटा देना चाहता हो। तब अपने माथे पर हाथ् रख लेता है और इस तरह हिलता है मानो उसे चक्कर आ गया हो। लोग उसकी तरफ बढते हैं लेकिन वह उन्हें पीछे हटा देता है।)

ऐंथ्वनी — इसके पहिले कि मैं इस संशोधित प्रस्ताव को बोर्ड के सामने रक्खूँ, मैं एक शब्द और कहना चाहता हूँ। वह एक-एक के चेहरे की ओर देखता है। अगर आप उसे स्वीकार करते हैं तो उसका यह आशय होगा कि हमने जो कुछ करने की ठानी थी वह हम पूरा न कर सकेंगे। इसका यह आशय है कि पूंजी के साथ हमारा जो कर्तव्य है, उसे हम पूरा न कर सकेंगे, इसका

यह आशय है कि हमेशा ऐसे ही हमले होते रहेंगे और हमको हमेशा दबना पड़ेगा। धोखे में न आइए। यदि अब की बार आप मैदान छोड़कर भागे तो फिर आपके क़दम कभी नहीं जमेंगे। आपको कुत्तो की तरह अपने ही आदमियों के कोड़ों के सामने भागना पड़ेगा। अगर आपको यही मंजूर है तो आप इस संशोधन को स्वीकार करें।

(वह फिर एक-एक के चेहरे की ओर देखता है। और अन्त में एडगार की तरफ़ आँखें जमा देता है। सब आँखें जमीन की ओर किए बैठे हैं। ऐंथ्वनी संकेत करता है और टेंच उसके हाथ में कार्यवाही का रजिस्टर देता है। वह पढ़ता है।)

मि. वाइल्डर ने प्रस्ताव किया और मिस्टर वेंकलिन ने उसका समर्थन किया। "मजदूरों की मांगें तुरंत मिस्टर साइमन हार्निस के हाथों में दे दी जायँ कि आज सुबह उन्होंने जो शर्तें बताई थीं उनके अनुसार मामले को तय कर दें।"

(यकायक जोर से।)

जो लोग पक्ष में हैं हाथ उठावें।

(एक मिनट तक कोई नहीं हिलता। तब ज्यों ही ऐंथ्वनी फिर बोलना चाहता है वाइल्डर और वेंकलिन जल्दी से हाथ उठा देते

हैं। तब स्केंटलबरी और सबसे पीछे एडगार हाथ उठाते हैं। एडगार अब भी सिर नहीं उठाता।)

जो लोग इसके विपक्ष में हों?

(ऐंथ्वनी अपना ही हाथ उठा देता है।)

(स्पष्ट स्वर में।)

संशोधन स्वीकार हो गया। मैं बोर्ड से इस्तीफा देता हूँ।

(एनिड लम्बी सांस लेती है और सन्नाटा छा जाता है। ऐंथ्वनी स्थिर बैठा हुआ है। उसका सिर धीरे-धीरे झुक रहा है। यकायक वह सांस लेता है मानो उसका सारा जीवन उसके भीतर उमड़ पड़ा हो।)

पचास साल। सज्जनो आपने मेरे मुँह में कालिख लगा दी। मजदूरों को लाओ।

(वह सामने ताकता हुआ स्थिर बैठा रहता है। सभासद गण जल्दी से एकत्र हो जाते हैं। टेंच सहमी हुई आवाज से बड़े कमरे में आवाज देता है। अंडरवुड जबरदस्ती एनिड को कमरे से खींच ले जाता है।)

वाइल्डर — (घबराकर) उनसे क्या कहना होगा? अभी तक हार्निस क्यों नहीं आया? क्या उसके आने के पहिले हमें आदमियों से मिलना चाहिए? मैं नहीं.

टेंच — आप लोग अन्दर जायें।

(टामस, ग्रीन, बल्जिन और राउस अन्दर आते हैं और छोटी मेज के सामने एक कतार में खड़े हो जाते हैं। टेंच बैठ जाता है और लिखता है। सब आँखें ऐंथ्वनी की ओर लगी हुई हैं जो बिल्कुल शान्त हैं।)

वेंकलिन — (छोटी मेज के पास आकर सशंक मैत्री के साथ) देखो टामस, अब क्या करना है? तुम्हारी सभा ने क्या तय किया?

राउस — सिम हार्निस के पास हमारा जवाब है। वह आप से बतलायेंगे। हम उनकी राह देख रहे हैं। वह हमारी तरफ़ से जवाब देंगे।

वेंकलिन — यही बात है, टामस?

टामस — (रुखाई से) जी हाँ! राबर्ट न आयेंगे। उनकी बीबी मर गई है।

स्केंटलबरी — हाँ, हाँ, हम सुन चुके। गरीब औरत!

फ्रास्ट — (बड़े कमरे से आकर) मिस्टर हार्निस आए हैं।

(हार्निस के आने पर वह चला जाता है।ः

(हार्निस के साथ में कागज का एक टुकड़ा है। वह डाइरेक्टरों को सलाम करता है, मज़दूरों की तरफ देखकर सिर हिलाता है और कमर के बीच में छोटी मेज के पीछे खड़ा हो जाता हैं।)

हार्निस — सज्जनो!

(सब को सलाम करता है।)

(टेंच उस कागज को लिए जिस पर वह लिख रहा है, आ जाता है और सब धीमे स्वर में बातें करने लगते हैं।)

वाइल्डर — हम तुम्हारी राय देख रहे थे, हार्निस। आशा है, कि हम कुछ तय...

फ्रास्ट — (बड़े कमरे से आकर) राबर्ट आए हैं।

(वह चला जाता है।)

(राबर्ट जल्दी से अन्दर आता है और ऐंथ्वनी की ओर ताकता हुआ खड़ा हो जाता है। उसका चेहरा उदास और मुरझाया हुआ है।)

राबर्ट — मिस्टर ऐंथ्वनी, मुझे खेद है कि मुझे जरा देर हो गई। मैं ठीक वक्त पर यहाँ आ जाता लेकिन एक बात हो गई इसलिए न आ सका।

(मजदूरों से।)

कोई बातचीत हुई?

टामस — नहीं! लेकिन तुम क्यों आए, भले आदमी?

राबर्ट — आप लोगों ने आज हमें अपनी अवस्था पर फिर विचार करने के लिए आदेश दिया था। हमने उस पर विचार कर लिया है। हम यहाँ मज़दूरों का जवाब देने के लिए आए हैं।

(ऐंथ्वनी से।)

आप लंदन जायँ, आप से हमें कुछ नहीं कहना है। हम अपनी शर्तों में जौ भर भी कमी न करेंगे। और न हम काम पर आयेंगे जब तक हमारी सब शर्तें न मान ली जायेंगी।

(ऐंथ्वनी उसकी ओर ताकता है, लेकिन बोलता नहीं। मजदूरों में हलचल होती है जैसे सब घबरा गए हों।)

हार्निस — राबर्ट!

राबर्ट — (उसकी ओर क्रोध से देखकर फिर ऐंथ्वनी से) अब तो आप साफ-साफ समझ गए। क्या यह साफ और सीधा जवाब नहीं है। आपका यह सोचना गलत था कि हम घुटने टेक देंगे। आप देह पर विजय पा सकते हैं लेकिन आत्मा पर विजय नहीं पा

सकते। आप लंदन लौट जायें, आदमियों को आप से कुछ नहीं कहना है।

(दुर्विधे से जरा रुककर वह स्थिर ऐंथ्वनी की ओर एक क़दम बढ़ाता है।)

एडगार — राबर्ट, हम सब तुम्हारे लिए दुःखी हैं। लेकिन...

राबर्ट — महाशय, अपना दुःख आप अपने पास रक्खें। मगर अपने बाप को बोलने दीजिए।

हार्निस — (कागज का टुकड़ा हाथ में लिए हुए छोटी मेज के पीछे से बोलता है।)

राबर्ट! राबर्ट!!

(ऐंथ्वनी से, आवेश के साथ)

आप क्यों नहीं जवाब देते?

हार्निस — राबर्ट!

राबर्ट — (तेजी से मुड़कर) क्या बात है?

हार्निस — (गम्भीरता से) तुम बिना प्रमाण के बातें कर रहे हो। तुम्हारे हाथ में अब फैसला नहीं रहा।

(वह टेंच को इशारा करता है। टेंच डाइरेक्टरों को इशारा करता है। वे उसके शर्तनामे पर हस्ताक्षर कर देते हैं।)

इस कागज को देखो।

(कागज को ऊपर उठाकर)

इंजीनियरों और भट्ठीवालों की शर्तों के सिवा और सब शर्तें मंजूर की गईं। शनीचर के दिन समय के ऊपर काम करने के लिए दूनी मज़दूरी। रात की टोलियाँ बदस्तूर। यह शर्तें मंजूर कर ली गई हैं। मज़दूर लोग कल से काम करने जायेंगे। हडताल समाप्त हो गई।

राबर्ट — (कागज को पढ़कर आदमियों पर बिगड़ता है। वे उसके पास से हट जाते हैं। केवल राउस अपनी जगह पर खड़ा रहता है। भीषण शान्ति के साथ) तुम लोगों ने मुझे दगा दी। तुम्हारे लिए मैंने, मौत की परवाह न की। तुम मुझे चरका देने के लिए इसी अवसर का इंतजार कर रहे थे।

(मज़दूर लोग एक साथ जवाब देते हैं।)

राउस — यह झूठ है।

टामस — कहाँ तक तुम्हारा साथ देते?

ग्रीन — अगर तुमने मेरी बात मानी होती।

बल्जिन — (दबी जबान से) जबान बन्द करो।

राबर्ट — तुम इसी अवसर का इन्तजार कर रहे थे।

हार्निस — (डाइरेक्टरों का शर्तनामा लेकर और उसे टेंच को देकर) बस मसाला तय हो गया। मित्रों, अब तुम लोग जा सकते हों।

(मज़दूर लोग धीरे-धीरे चले जाते हैं।)

वाइल्डर — (नीची और उखड़ी हुई आवाज में) अब तो यहाँ हमारे ठहरने की ज़रूरत नहीं मालूम होती।

(दरवाजे तक जाता है।)

मैं उस गाड़ी के लिए अब भी कोशिश करूँगा। तुम आते हो, स्केंटलबरी?

स्कटलबरी — (वेंकलिन के साथ उसके पीछे जाता हुआ) हाँ-हाँ, जरा ठहरो।

(राबर्ट को बोलते हुए सुनकर वह ठहर जाता है।)

राबर्ट — (ऐंथ्वनी से) लेकिन आपने तो उन शर्तों पर दस्तखत ही नहीं किया। वह लोग अपने प्रधान के बिना कोई शर्त नहीं कर सकते। आप उन शर्तों पर कभी दसखत न कीजिएगा।

(ऐंथ्वनी चुपचाप उसकी ओर ताकता है।)

खुदा के लिए! यह न कहिए कि आपने दसखत कर दिया।

(आवेशमय करुणा से।)

मुझे इसका विश्वास था।

हार्निस — (डाइरेक्टरों का शर्तनामा दिखाकर) बोर्ड ने हस्ताक्षर कर दिया।

(राबर्ट हस्ताक्षरों को बेदिली के साथ देखता है, उसके हाथ से कागज छीन लेता है और अपनी आँखें बन्द कर लेता है।)

स्केंटलबरी — (हाथ की आड़ करके टेंच से) प्रधान जी की खबर रखना। उनकी तबियत अच्छी नहीं है। उन्होंने आज भोजन भी नहीं किया। अगर स्त्रियों और बच्चों के लिए कोई फण्ड खोला जाय, तो मेरी तरफ से बीस पाउंड लिख देना।

(वह अपनी भारी देह को संभालता हुआ जल्दी से बड़े कमरे में चला जाता है और वेंकलिन, जो राबर्ट और ऐंथ्वनी को चेहरा मरोड़-मरोड़कर देख रहा है, पीछे-पीछे जाता है। एडगार सोफा पर बैठा हुआ ज़मीन की तरफ़ ताकता रहता है। टेंच दफ्तर में लौट कर कार्यवाही का रजिस्टर लिखता है। हार्निस छोटी मेज के पास खड़ा राबर्ट को गम्भीर भाव से देखता रहता है।)

राबर्ट — तो अब आप इस कम्पनी के प्रधान नहीं हैं।

(पागलों की तरह हँसकर।)

हा हा-हा! उन सबों ने आपको निकाल बाहर किया। अपने प्रधान को भी निकाल बाहर किया-हा — हा हा!

भीषण धैर्य के साथ।

तो हम दोनों निकाल दिए गए, मिस्टर ऐंथ्वनी।

एनिड दुहरे दरवाजे से लपकी हुई अपने बाप के पास आती है और उसके पास झुक जाती है।

हार्निस — (राबर्ट के पास आकर और उसकी आस्तीन पकड कर) तुम्हें शर्म नहीं आती, राबर्ट? चुपके से घर जाओ, भले आदमी, घर जाओ।

राबर्ट — (हाथ छुड़ाकर) घर!

(दोनों साथ-साथ जाते हैं।)

एनिड — (धीमी आवाज़ में अपने बाप से) दादा, अपने कमरे में आइए, अपने कमरे में आइए।

(ऐंथ्वनी जोर लगाकर उठता है। वह राबर्ट की तरफ फिरता है जो उसकी तरफ़ ताक रहा है। दोनों कई सेकेंड तक एक दूसरे

को टकटकी लगाए देखते रहते हैं ऐंथ्वनी। हाथ उठाता है जैसे सलाम करना चाहता हो। लेकिन हाथ गिर पड़ता है। राबर्ट के मुख पर शत्रु भाव की जगह आश्चर्य अंकित हो जाता है। दोनों अपने सिर सम्मान के भाव से झुका लेते हैं। ऐंथ्वनी धीरे-धीरे अपने पर्देदार दरवाजे की तरफ़ जाता है। एकाएक वह लड़खड़ाता है जैसे गिरने-गिरने हो रहा हो। फिर संभल जाता है। एनिड और एडगार जो कमरे में से दौड़ कर आये हैं उसको सहारा देते हैं। राबर्ट कई सेकेंड तक ऐंथ्वनी को ध्यान से देखता हुआ खड़ा रहता है, तब बड़े कमरे में चला जाता है।)

टेंच — (हार्निस के पास आकर) मेरे सिर से एक बड़ा बोझ उतर गया, मिस्टर हार्निस। लेकिन कितना दर्दनाक माजरा था।

(माथे से पसीना पोंछता है। हार्निस जो शांत और दृढ़ है, टेंच की ओर देखकर मुस्कराता है।)

कितनी झांव-झांव हुई। उसका यह कहने से क्या मतलब था कि हम दोनों निकाल दिए गए? माना उस बेचारे की बीवी मर गई, लेकिन उसे प्रधान से इस तरह न बोलना चाहिए था।

हार्निस — एक औरत तो मर ही गई उस पर हमारे दोनों रत्नों को नीचा देखना पडा।

(यकायक अन्डरवुड आता है।)

टेंच — (हार्निस की ओर देखकर यकायक उद्विग्न होकर) आपने देखा यह तो वही शर्तें है, जो आपने और मैंने लिखी थीं और हडताल शुरू होने से पहले दोनों पक्षों को दिखाई थीं। फिर यह झगडा किस लिए हुआ?

हार्निस — (धीमे स्वर में) यही तो दिल्लगी है।

(अंडरवुड दरवाजे ही पर खड़ा-खड़ा हाँ का संकेत करता है।)

(परदा गिरता है।)

***

प्रेमचंद

सृष्टि का आरंभ

(बर्नार्ड शॉ की एक ओजपूर्ण रचना)

[हिन्दीकोश]

सृष्टि का आरम्भ

(अदन की वाटिका, तीसरे पहर का समय। एक बड़ा साँप अपना सिर फूलों की एक क्यारी में छिपाये हुए और अपने शरीर को एक वृक्ष की शाखाओं में लपेटे हुए पड़ा है। वृक्ष भलीभाँति चढ़ चुका है, क्योंकि सृष्टि के दिन हमारे अनुमान से कहीं अधिक बड़े थे। सर्प उस व्यक्ति को नहीं दिखाई दे सकता जिसको उसकी विद्यमानता का ज्ञान नहीं है, क्योंकि उसके हरे और भूरे रंग के मेल से धोखा होता है। उसके निकट ही फूलों की क्यारी से एक ऊँची चट्टान दिखाई दे रही है। यह चट्टान और वृक्ष दोनों एक हरियाली के किनारे पर हैं, जिसमें एक हरिण का बच्चा मरा और सूखा हुआ पड़ा है और उसकी गर्दन टूट गई है। आदम अपने एक हाथ के सहारे चट्टान पर झुका हुआ मृत शरीर को भयभीत होकर देख रहा है, उसने अपनी बाईं ओर सर्प को नहीं देखा है। वह दाहिनी ओर मुड़ता है और घबराकर पुकारता है।)

आदम — हौआ, हौआ!

हौआ — क्या है, आदम?

आदम — यहाँ आओ, शीघ्र कुछ हो गया है!

हौआ — (दौड़कर) क्या, कहाँ? (आदम हरिण के बच्चे की ओर संकेत करता है) ओह! (वह उसके पास जाती है और आदम को भी उसके साथ जाने का साहस होता है) उसकी आँखों को क्या हो गया?

आदम — केवल आँखें नहीं, यह देखो (उसको ठुकराता है।)

हौआ — अरे यह न करो, यह जागता क्यों नहीं?

आदम — मालूम नहीं, सो नहीं रहा है।

हौआ — सो नहीं रहा है?

आदम — देखा तो!

हौआ — (हरिण के बच्चे को हिलाने और उलटने की चेष्टा करते हुए) यह तो कठोर और ठंडा हो गया है!

आदम — कोई वस्तु इसको जगा नहीं सकती?

हौआ — इसमें तो विचित्र गंध है, ओह! (अपना हाथ झाड़ती है और उसके पास से हट जाती है) क्या तुमने इसको इसी दशा में पाया था?

आदम — नहीं, अभी खेल रहा था कि ठोकर खाकर लड़खड़ाता हुआ गिर पड़ा, फिर वह हिला तक नहीं और इसकी गर्दन में कोई दोष हो गया है। (गर्दन उठाकर हौआ को दिखाने के लिए झुकता है।)

हौआ — मत छुओ, इसके पास से हट जाओ। (दोनों पीछे हट जाते हैं और थोड़ी दूर से उस लोथ पर बढ़ती हुए घृणा से विचार करते हैं।)

हौआ — आदम!

आदम — हाँ।

हौआ — मान लो कि तुम ठोकर खाकर गिर पड़ो, तो क्या तुम भी इस तरह चले जाओगे?

आदम — ओह! (थर्रा जाता है और चट्टान पर बैठ जाता है।)

हौआ — (उसके पार्श्व में बैठकर और उसके घुटनों को पकड़कर) तुमको इसका ध्यान रखना चाहिए, प्रतिज्ञा करो कि ध्यान रखोगे।

आदम — ध्यान रखने से लाभ क्या? हमको यहाँ सदैव रहना है, देखती हो, सदैव के क्या अर्थ हैं। एक-न-एक दिन मैं भी ठोकर खा जाऊँगा और गिर पडूँगा। मुमकिन है कल ही, और संभव है

इतने दिनों बाद जितनी की इस बाग में पत्तियाँ हैं अथवा नदी के किनारे बालू के कण हैं। तात्पर्य यह कि मैं भूल जाऊँगा और ठोकर खा जाऊँगा।

हौआ — मैं भी।

आदम — (भीत होकर) नहीं नहीं! मैं अकेला रह जाऊँगा और सदा के लिए। तुम कभी अपने को इस विपत्ति में न डालना। तुम चला न करो, चुपचाप बैठी रहा करो; मैं तुम्हारी रक्षा करुंगा और जिस वस्तु की तुमको आवश्यकता होगी, स्वयं लाकर दूँगा।

हौआ — (काँपते हुए उसकी ओर से मुँह फेरकर और अपनी कुहनियों को पकड़कर) मैं इस तरह जल्द घबरा जाऊँगी। इसके सिवाय तुम्हारा यह परिणाम हुआ, तो फिर मैं अकेली रह जाऊँगी। उस समय बेकार बैठी न रह सकूँगी और अंत में मेरा भी वही परिणाम होगा।

आदम — और फिर?

हौआ — फिर हम नहीं होंगे, केवल पशु, पक्षी और सर्प होंगे।

आदम — यह न होना चाहिए।

हौआ — हाँ, न होना चाहिए; किन्तु हो सकता है।

आदम — नहीं, कहता हूँ कि नहीं होना चाहिए। मैं जानता हूँ कि ऐसा नहीं होगा।

हौआ — हम दोनों जानते हैं, लेकिन कैसे जानते हैं?

आदम — बाग में एक 'शब्द' है, जो मुझको बातें बताया करता है।

हौआ — बाग तो शब्दों से पूर्ण है, जो मेरे सिर में नए-नए विचार लाते रहते हैं।

आदम — मेरे लिए केवल एक शब्द है जो मुझसे इतना निकट है मानो मेरे भीतर से आ रहा हो।

हौआ — आश्चर्य है कि मैं तो प्रत्येक वस्तु में शब्द सुनती हूँ और तुम केवल एक शब्द अपने भीतर सुनते हो। मगर कुछ बातें ऐसी भी हैं जो शब्दों के द्वारा नहीं किन्तु मेरे भीतर से आती हैं। और यह विचार कि 'मेरा कभी नाश नहीं' मेरे भीतर से आया है।

आदम — लेकिन हम नष्ट हो जायेंगे। इस हरिण के बालक की भाँति हम भी गिरेंगे और....(उठाकर घबराहट में इधर-उधर टहलने लगता है) मैं इस विद्या का तेज नहीं सह सकता। मुझे

इसकी आवश्यकता नहीं। मैं तुमसे कहता हूँ कि ऐसा नहीं होना चाहिए। फिर भी यह नहीं जानता कि किस प्रकार रोकूँ।

हौआ — मैं भी यही अनुभव करती हूँ। आश्चर्य की बात है कि तुम इस प्रकार कह रहे हो। तुमको किसी दशा में कल नहीं! तुम सदैव विचार बदलते रहते हो।

आदम — (डाँटकर) यह क्यों कहती हो? मैंने अपना विचार कब बदला है?

हौआ — तुम कहते हो कि तुम्हारा नाश न होना चाहिए। लेकिन तुम्हीं इसकी शिकायत किया करते थे कि हमको यहाँ सदैव रहना है। किसी-किसी समय तुम घंटों मौन धारण किये हुए विचारा करते हो और मन ही मन में मुझ पर क्रोधित रहते हो। जब मैं पूछती हूँ कि मैंने क्या किया है, तो तुम कहते हो कि तुम्हारे विषय में नहीं किन्तु अपने यहाँ सदैव रहने की विपत्ति पर ध्यान कर रहा था। परन्तु मैं समझती हूँ कि जिस वस्तु को तुम विपत्ति कहते हो, वह, यहाँ सदैव मेरे साथ रहना है।

आदम — तुम यह क्यों विचारती हो? नहीं, तुम भूल करती हो। (वह फिर मुग्ध होकर बैठ जाता है।) मूल विपत्ति तो सदैव अपने साथ रहना है। मैं तुमको चाहता हूँ, परन्तु अपने को नहीं चाहता। मैं कुछ और होना चाहता हूँ। इससे अच्छा मैं चाहता हूँ

कि मेरा बारंबार फिर से आरम्भ होता रहे। जिस प्रकार सर्प केंचुल बदलता रहता है, उसी प्रकार मैं भी अपने को बदलता रहूँ। मैं अपने से ऊब गया हूँ। परन्तु मुझको किसी न किसी प्रकार सहन करना है। एक दिन या कई दिन के लिए ही क्यों किंतु सदैव के लिए यह एक भयभीत कर देने वाला विचार है। इसी पर मौन होकर विचार किया करता हूँ और खेद करता हूँ। क्या तुमने कभी इस पर विचार नहीं किया?

हौआ — मैं अपने विषय में विचार नहीं करती। इससे क्या लाभ? मैं जो हूँ, सो हूँ। कोई वस्तु इसको बदल नहीं सकती। मैं तुम्हारे सम्बन्ध में विचार करती रहती हूँ।

आदम — यह ठीक नहीं, तुम सदैव मेरी खोज में लगी रहती हो। तुमको सदैव यह जानने की चिन्ता रहती है कि मैं क्या करता रहता हूँ। यह तो एक बार ज्ञात होता ही। इसकी जगह कि अपने को मेरे साथ लगाए रखो, तुमको यह यत्न करना चाहिए कि तुम्हारा एक अपना निजी अस्तित्व पृथक हो।

हौआ — मुझको तुम्हारा ध्यान रखना है। तुम सुस्त हो, मलिन रहते हो; अपना ध्यान नहीं रखते। प्रतिक्षण स्वप्न देखते रहते हो। यदि मैं अपने को तुम्हारे साथ लगाए न रखूँ, तो तुम दूषित भोजन करने लगोगे और घृणा के योग्य हो जाओगे। इस पर मेरे

इतने देखते रहने पर भी तुम किसी दिन मस्तक के बल गिर पड़ोगे और मृतक हो जाओगे।

आदम — मृतक? यह कौन-सा शब्द है?

हौआ — (हरिण के बच्चे की ओर संकेत करके) इसकी भाँति मैं इसको मृतक कहती हूँ।

आदम — (उठकर बच्चे के पास जाते हुए) इसमें कोई अप्रिय बात मालूम होती है।

हौआ — (आदम के पास जाते हुए) यह तो श्वेत छोटे कीड़ों के रूप में बदल रहा है।

आदम — इसको नदी में फेंक आओ। यह असह्य हो रहा है।

हौआ — मैं इसको स्पर्श करने का साहस नहीं कर सकती।

आदम — तो मैं ही फेंक आऊँ, यद्यपि मुझे इससे घृणा हो रही है। यह हवा में विषमय कर रहा है। (खुरों को अपने हाथ में लेकर शव को यथासंभव अपने शरीर से दूर लटकाये हुए उस ओर जाता है जिस ओर से हवा आई थी।)

हौआ — (उसकी ओर एक क्षण भर देखती रहती है, फिर घृणा की एक झिझक के साथ चट्टान पर बैठ जाती है और कुछ विचारने लगती है। सर्प का शरीर मनोहर नए रंगों से चमकता

हुआ देख पड़ता है। वह पुष्पों की क्यारी से धीरे से अपना सिर उठाता है और हौआ के कान में एक अद्भुत मनोमुग्धकर किन्तु सुरीली ध्वनि में कहता है।)

सर्प — हौआ!

हौआ — कौन है?

सर्प — मैं हूँ! तुमको अपना सुन्दर नवीन फण दिखाने आया हूँ। देखो (सुन्दर बेल में अपना फण फैला देता है।)

हौआ — आहा! किन्तु मुझको बोलना किसने सिखाया?

सर्प — तुमने और आदम ने! मैं घास में छिपकर तुम्हारी बातें सुना करता हूँ।

हौआ — यह तेरी बड़ी बुद्धिमानी है।

सर्प — मैं इस मैदान के पशुओं में सबसे अधिक चतुर हूँ।

हौआ — तेरा फण बहुत सुन्दर है (फण को थपथपाती है और सर्प को प्यार करती है) अच्छे सर्प! क्या तू अपनी देवी माता हौआ को चाहता है?

सर्प — मैं उसको पूजता हूँ (हौआ की गर्दन को अपनी दोहरी जीभ से चाटता है।)

हौआ — (उसको प्यार करती हुई) हौआ के प्रिय सर्प! अब हौआ कभी अकेली न रहेगी। क्योंकि उसका सर्प बातें कर सकता है।

सर्प — बहुत-सी वस्तुओं के विषय में मैं बातें कर सकता हूँ। मैं बड़ा बुद्धिमान हूँ। यह मैं ही था, जिसने तुम्हारे कान में धीरे से वह शब्द कह दिया था जो तुमको नहीं ज्ञात था — मृतक, मृत्यु, मरना।

हौआ — (काँपकर) इसकी याद क्यों दिलाता है? मैं तेरा सुन्दर फण देखकर उसको भूल गई थी। तुमको अभागी वस्तुओं की याद नहीं दिलाना चाहिए।

सर्प — मृत्यु भाग्यहीन वस्तु नहीं, यदि तुमने उस पर विजय पाना सीख लिया है।

हौआ — मैं मृत्यु पर विजय कैसे पा सकती हूँ?

सर्प — एक दूसरी वस्तु के द्वारा, जिसको उत्पत्ति कहते हैं।

हौआ — (उच्चारण की चेष्टा करते हुए) उ....त्....प....त्ति।

सर्प — हाँ, उत्पत्ति।

हौआ — उत्पत्ति क्या है?

सर्प — सर्प कभी मरता नहीं, तुम किसी दिन देखोगी कि मैं इस सुन्दर केंचुल से एक नया सर्प बनकर, और इससे अधिक सुन्दर केंचुल लेकर बाहर निकल आऊँगा। यही उत्पत्ति है।

हौआ — मैं ऐसा देख चुकी हूँ। बड़े आश्चर्य की बात है।

सर्प — मैं बड़ा चतुर हूँ, जब तुम और आदम बातें करते हो तो मैं तुमको 'क्यों' कहते हुए सुनता हूँ। प्रति समय क्यों तुम नेत्रों से वस्तुओं को देखती हो और कहती हो 'क्यों'? मैं स्वप्न में देखता हूँ और कहता हूँ 'क्यों नहीं?' मैंने 'मृतक' शब्द को अपने आप बनाया है, जिसका तात्पर्य मेरी पुरानी केंचुल है, जिसको मैंने अपनी नवीनता के समय उतारकर फेंक दिया। इस नवीन को मैं उत्पन्न होना कहता हूँ।

हौआ — 'उत्पत्ति' एक सुन्दर शब्द है।

सर्प — क्यों नहीं? मेरी भाँति बारबार उत्पन्न होओ और सदैव नवीन और सुन्दर बनी रहो?

हौआ — मैं? इसलिए कि ऐसा होता नहीं, और क्यों नहीं।

सर्प — किन्तु वह 'तो कैसे' हुआ 'क्यों नहीं?' तो नहीं हुआ। बताओ 'क्यों नहीं?'

हौआ — पर मैं इसको पसंद नहीं करूँगी। फिर से नया बन जाना अच्छी बात है। किन्तु मेरा पुराना चोला पृथ्वी पर बिल्कुल मेरी भाँति पड़ा रहेगा और आदम उसको पीछे हटते हुए देखेगा और —

सर्प — नहीं, इसकी आवश्यकता नहीं, एक दूसरी उत्पत्ति भी है।

हौआ — दूसरी उत्पत्ति!

सर्प — सुनो, तुमको एक भारी गुप्त-भेद बताता हूँ। मैं बड़ा बुद्धिमान हूँ। मैं विचारता रहता हूँ। मैं संकल्प का पक्का हूँ और जिस वस्तु की मुझको आवश्यकता होती है, उसको प्राप्त कर लेता हूँ। मैं अपने संकल्प से काम लेता रहा हूँ और मैंने विचित्र-विचित्र वस्तुएँ खाई हैं; पत्थर सेब, जिनको खाते हुए तुम भयभीत होती हो।

हौआ — तुम्हारा यह साहस!

सर्प — मुझे प्रत्येक बात का साहस हुआ और अन्त में मुझे ऐसा ढंग ज्ञात हो गया जिससे अपने जीवन का भाग अपने शरीर के भीतर सुरक्षित रख सकूँ।

हौआ — जीवन किसे कहते हैं?

सर्प — वह वस्तु जो मृतक और सजीव हरिण के बालक में अन्तर करती हो।

हौआ — कैसे सुन्दर शब्द हैं और कैसी आश्चर्यजनक वस्तु है। 'जीवन' सब शब्दों में सबसे प्रिय शब्द है।

सर्प — हाँ जीवन ही पर विचार और चिन्ता करने से मैंने करामात दिखाने की शक्ति प्राप्त की है।

हौआ — करामात? फिर एक नवीन शब्द?

सर्प — करामात उस असंभव बात को कहते हैं, जो साधारणतः नहीं हो सकती, परन्तु हो जाती है।

हौआ — मुझे कोई करामात बताओ, तो तुमने की हो।

सर्प — मैंने अपने जीवन का एक भाग अपने शरीर में एकत्रित किया और उसको एक घर में बन्द किया जो उन पत्थरों से बना था जिनको मैंने खाया था।

हौआ — उससे क्या लाभ हुआ?

सर्प — मैंने उस छोटे से घर को धूप दिखाई और सूर्य की उष्णता में रख दिया। वह फट गया और उससे एक छोटा सर्प निकल आया, जो प्रतिदिन बढ़ता गया, यहाँ तक कि मेरे बराबर हो गया। यही थी दूसरी उत्पत्ति।

हौआ — ओहो! यह तो असीम आश्चर्यजनक है। यह तो मेरे भीतर भी चेष्टा कर रही है, और मुझको घायल किए डालती है।

सर्प — उसने मुझे लगभग फाड़ डाला था, किन्तु इस पर भी मैं जीवित हूँ और फिर अपने चोले को फाड़कर अपने को इसी प्रकार उत्पन्न कर सकता हूँ। अदन में लगभग इतने सर्प हो जायेंगे, जितने कि मेरे शरीर पर चट्टे हैं। उस समय मृत्यु कुछ न कर सकेगी। यह सर्प और वह सर्प मरते रहेंगे, परन्तु सर्प शेष ही रहेगा।

हौआ — परन्तु सर्प के अतिरिक्त हम सब कभी न कभी मर जायेंगे और तब कुछ और शेष न रहेगा, सर्वत्र सर्प ही सर्प रह जायेंगे।

सर्प — यह न होना चाहिए। हौआ मैं तुमको पूजता हूँ, मेरे पूजन करने के लिए कोई न कोई वस्तु होनी चाहिए, जो तुम्हारी भाँति मुझसे नितांत भिन्न हो। कोई वस्तु सर्प से उत्तम अवश्य होनी चाहिए।

हौआ — हाँ, यह न होना चाहिए, आदम का नाश न हो। तुम बड़े बुद्धिमान हो। बताओ क्या करूँ?

सर्प — सोचो, संकल्प करो, मिट्टी खाओ, श्वेत पाषाण को चाटो; इस सेब को खाओ जिससे तुम भयभीत होती हो, सूर्य तुमको जीवन देगा।

हौआ — सूर्य पर मुझको भरोसा नहीं। मैं स्वयं ही जीवन दूँगी। मैं अपने शरीर को चीर कर दूसरा आदम निकालूँगी। चाहे ऐसा करने में मेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े क्यों न हो जायँ!

सर्प — अवश्य साहस करो। प्रत्येक बात संभव है, प्रत्येक बात सुनो। मैं बूढ़ा हूँ। आदम और हौआ से भी बूढ़ा हूँ। मुझे अब तक 'ललस' [1] याद है, जो आदम और हौआ से पहले थी। जिस प्रकार मैं तुमको प्रिय हूँ, इसी प्रकार उसको भी था। वह अकेली थी, उसके संग कोई पुरुष न था। जिस प्रकार हरिण के बच्चे को गिरा हुआ देखकर तुमने मृत्यु देख ली, इसी प्रकार उसने भी देख लिया था, तब उसको ध्यान हुआ कि नये सिरे से उत्पन्न होने का और मेरी भाँति अपने को बदलने का कोई उपाय निकालना

---

[^1] साधारणतया यह किंवदंति प्रसिद्ध है कि 'ललस' आदम की पहली स्त्री थी। पति की अवज्ञा के दंड में वह अदम की वाटिका से निकाल दी गई। कहा जाता है कि वह अब भी संसार में विद्यमान है, परन्तु दिखाई नहीं पड़ती। वह हौआ की संतान की शत्रु है। अस्तु जमोगा का रोग इसी से होना माना जाता है, किन्तु बर्नार्ड शॉ ललस को आदम और हौआ दोनों की माता समझते हैं।

चाहिए। उसका संकल्प बलवान् था। वह प्रयत्न करती रही और जितनी इस वाटिका के वृक्ष में पत्तियाँ हैं, उनसे भी अधिक महीनों तक वह संकल्प करती रही। उसकी पीड़ा भयानक थी। उसके क्रन्दन ने अदन का निद्रा से शून्य कर दिया था। उसने कहा — अब ऐसा न होना चाहिए। नये सिरे से जीवन का भार असह्य है। उनके लिए यह क्लेश अत्यन्त अधिक है और जब उसने अपना शरीर बदला, तो एक ललस न थीं, वरन दो थीं; एक तुम्हारी भाँति, दूसरी आदम की भाँति। एक हौआ थी, दूसरा आदम।

हौआ — पर उसने अपने को दो में क्यों विभाजित किया और क्यों हमको एक दूसरे से विभिन्न बनाया?

सर्प — कहता तो हूँ कि यह परिश्रम एक के सहन करने से बहुत अधिक है। इसमें दो को सम्मिलित रहना चाहिए।

हौआ — क्या तुम्हारा यह तात्पर्य है कि मेरे साथ आदम को भी इस कष्ट में सम्मिलित होना पड़ेगा? नहीं, वह नहीं सम्मिलित होगा। वह इस परिश्रम को सहन नहीं कर सकता और न शरीर पर कोई कष्ट उठा सकता है।

सर्प — इसकी आवश्यकता नहीं, इसके लिए कोई परिश्रम न होगा। वह स्वयं सम्मिलित होने के लिए तुमसे प्रार्थना करेगा। वह अपनी इच्छा के द्वारा तुम्हारे वश में होगा।

हौआ — तब तो मैं जरूर करूँगी, लेकिन कैसे? ललस ने इस चमत्कार को कैसे किया था?

सर्प — उसने ध्यान किया।

हौआ — 'ध्यान किया' क्या वस्तु है?

सर्प — उसने मुझसे एक ऐसी घटना की चित्ताकर्षक कथा का वर्णन किया, जो एक ऐसी ललस पर कभी नहीं बीती और कभी नहीं थी। ललस को उस समय तक यह नहीं ज्ञात था कि 'ध्यान', उत्पन्न करने का आरम्भ होता है। तुम भी, जिस वस्तु की तुमको इच्छा हो, उसका ध्यान करो, उसका संकल्प करो, और अन्त में जिस वस्तु का संकल्प करोगी उसे उत्पन्न कर लोगी।

हौआ — केवल 'नास्ति' से मैं किस प्रकार कोई वस्तु पैदा कर सकती हूँ?

सर्प — प्रत्येक वस्तु 'नास्ति' ही से उत्पन्न हुई होगी। अपने पुट्ठों पर माँस को देखो, यह सदैव वहाँ नहीं था। जब मैंने प्रथम बार तुमको देखा तो तुम वृक्ष पर नहीं चढ़ सकती थीं, परन्तु तुम संकल्प और प्रयत्न करती रहो, और तुम्हारे संकल्प ने केवल 'नास्ति' से तुम्हारी बाहुओं पर माँस का यह लोथड़ा पैदा कर दिया था। यहाँ तक कि तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो गई और तुम एक हाथ

के बल अपने को खींचकर वृक्ष की उस डाल पर बैठ जाने के योग्य हो गई जो तुम्हारे सिर से ऊँची थी।

हौआ — वह तो अभ्यास था।

सर्प — अभ्यास से वस्तुएँ घिस जाती हैं, बढ़ती नहीं। तुम्हारे केश हवा में तरंगें ले रहे हैं जैसे खिंचकर बढ़ जाने का प्रयत्न कर रहे हों, परंतु अभ्यास करने पर भी वह बढ़ नहीं पाते केवल इसीलिए कि तुमने संकल्प नहीं किया है। जब ललस ने कुछ ध्यान किया था, उसको मौन भाषा में (क्योंकि उस समय तक शब्द नहीं थे) मुझसे वर्णन किया, तो मैंने उसे सम्मति दी कि उसने इच्छा करो, फिर संकल्प करो, और हमको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जिस वस्तु की उसने इच्छा की थी, और संकल्प किया था, वह उसके संकल्प की गति से अपने आप उसके भीतर उत्पन्न हो गई। तब मैंने भी संकल्प किया कि अपने को बदल कर एक के बदले दो बना लूँ। और बहुत दिनों बाद यह चमत्कार प्रकट हुआ। मैं अपने पुराने चोले से बाहर निकला। इस रूप में एक दूसरा सर्प मुझसे लिपटा हुआ था। और अब उत्पन्न करने के लिए दो ध्यान हैं, दो इच्छाएँ हैं, और दो संकल्प हैं।

हौआ — इच्छा करना, ध्यान करना, संकल्प करना, उत्पन्न करना, यह तो बड़ी लम्बी कहानी है। मुझे इसके लिए कोई एक शब्द बता। तू तो शब्दों का पारदर्शी है।

सर्प — जनना, इससे दोनों तात्पर्य हैं। ध्यान करके आरम्भ करना और उत्पत्ति पर समाप्त कर देना।

हौआ — मुझको इस कहानी के लिए कोई एक शब्द बता जिसका ललस ने ध्यान किया और जिसको तुझसे मौन भाषा में वर्णन किया। वही कहानी जो ऐसी अद्भुत थी कि सत्य नहीं हो सकती थी और फिर भी सत्य हो गई।

सर्प — एक शेर।

हौआ — ललस मेरी कौन थी? अब इसके लिए कोई शब्द बता।

सर्प — वह तुम्हारी माता थी।

हौआ — और आदम की भी?

सर्प — हाँ।

हौआ — (उठकर) मैं जाती हूँ और आदम से जनने के लिए कहती हूँ।

सर्प — (ठट्ठा मारकर हँसता है)!

हौआ — (व्याकुल होकर और चौंककर) कैसी घृणा पैदा करने वाला शब्द है! तुमको हो क्या हो गया है? इससे पहले किसी के मुँह से ऐसा शब्द नहीं निकला।

सर्प — आदम नहीं जन सकता।

हौआ — क्यों?

सर्प — ललस ने इसको ऐसा ध्यान नहीं किया। वह ध्यान कर सकता है, इच्छा कर सकता है, संकल्प कर सकता है। वह अपने जीवन को समेट कर एक नई रचना के लिए सुरक्षित रख सकता है। वह सब कुछ उत्पन्न कर सकता है, सिवाय एक वस्तु के, और वह एक वस्तु उसकी अपनी वस्तु है।

हौआ — ललस ने उसको वंचित क्यों रखा?

सर्प — इसलिए कि यदि वह ऐसा कर सकता, तो उसको हौआ की आवश्यकता न होती।

हौआ — ठीक है, तो जनना मुझको होगा।

सर्प — हाँ इसी के द्वारा उसका तुमसे सम्बन्ध है।

हौआ — और मेरा उससे।

सर्प — हाँ! उस समय तक, जब तक कि तुम दूसरा आदम न उत्पन्न कर लो।

हौआ — मुझे इसका तो ध्यान ही न था। तू बहुत बड़ा है। किन्तु यदि में दूसरी हौआ पैदा करूँ, तो सम्भव है कि वह इसकी ओर झुक जाय और मेरे बिना रह सके। मैं तो कोई हौआ उत्पन्न नहीं करूँगी, केवल आदम ही आदम उत्पन्न करूँगी।

सर्प — हौआ के बिना आदम अपने जीवन को नित नया न कर सकेंगे। कभी न कभी तुम हरिण के बच्चे की तरह मर जाओगी और फिर नए आदम बिना हौआ के उत्पन्न करने में असमर्थ रहेंगे। तुम ऐसे परिणाम का ध्यान तो कर सकती हो, किन्तु इसकी कामना नहीं कर सकतीं; इसलिए संकल्प नहीं कर सकतीं, अतएव केवल आदम ही आदम उत्पन्न नहीं कर सकतीं।

हौआ — यदि हरिण के बालक की भाँति मुझको मर जाना है, तो जो शेष है, वह भी क्यों न मर जाय? मुझे इसकी चिन्ता नहीं।

सर्प — जीवन को रुकना नहीं चाहिए। यह सबसे पहली बात है। यह कहना अज्ञानता है कि तुमको चिन्ता नहीं। तुमको अवश्य चिन्ता है। यही चिन्ता है जो तुम्हारे ध्यान को उत्तेजित करेगी, तुम्हारी इच्छा को भड़काएगी, तुम्हारे संकल्प को अटल बनायेगी और अन्त में केवल नास्ति से उत्पत्ति करेगी।

हौआ — (सोचते हुए) केवल नास्ति जैसी तो कोई वस्तु नहीं हो सकती। बाग भरा हुआ है। रिक्त नहीं है।

सर्प — मैंने इस पर भली भाँति ध्यान नहीं किया था, यह एक बलवान विचार है। हाँ, केवल नास्ति जैसी कोई वस्तु नहीं। निस्सन्देह ऐसी वस्तुएँ हैं जिनको हम देखते नहीं। गिरगिट भी हवा खाता है।

हौआ — मैंने एक और बात विचारी है। मैं उसको आदम से कहूँगी (पुकारते हुए) आदम! आओ! आओ!

आदम का शब्द — ओ! ओ!

हौआ — इससे वह प्रसन्न होगा और उसके कुम्हलाए हुए पीड़ित चित्त की चिकित्सा हो जायगी।

सर्प — उससे अभी कुछ न कहो, मैंने तुमको भारी भेद नहीं बताया है।

हौआ — अब और क्या बताना है? यह चमत्कार मेरा कार्य है।

सर्प — नहीं, उसको भी इच्छा और संकल्प करना है। परन्तु उसको अपनी इच्छा और संकल्प तुमको दे देना होगा।

हौआ — कैसे?

सर्प — यही तो बड़ा गुप्त भेद है। चुप, वह आ रहा है।

आदम — (लौटते हुए) क्या वाटिका में हमारे शब्द और उस 'शब्द' के अतिरिक्त कोई और शब्द भी है? मैंने एक नवीन शब्द सुना था।

हौआ — (उठती है और दौड़कर उसके निकट जाती है) तनिक विचार करो आदम! हमारे सर्प ने हमारी बातें सुन-सुनकर बोलना सीख लिया है।

आदम — (प्रसन्न होकर) सचमुच? (वह उसके निकट से होकर पत्थर के पास जाता है और सर्प को प्यार करता है।)

सर्प — (प्यार से उत्तर देता है) हाँ, सचमुच, प्रिय आदम!

हौआ — मुझको इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बातें कहनी हैं। आदम अब हमको सदैव रहने की आवश्यकता नहीं।

आदम — (आवेश में सर्प का सर छोड़ देता है) क्या! हौआ इस विषय में मुझसे खेल न करो। ईश्वर करे, किसी दिन हमारी समाप्ति हो जाती और इस भाँति कि मानो नहीं हुआ। ईश्वर करे मैं सदैव रहने की विपत्ति से छुटकारा पाऊँ। ईश्वर करे इस वाटिका का संवारना किसी दूसरे माली के सुपुर्द हो जाय। और जो संरक्षक उस 'शब्द' की ओर से नियुक्त किया गया है, वह स्वतंत्र हो जाय। ईश्वर करे कि स्वप्न और शान्ति जो प्रतिदिन मुझको यह सब कुछ सहन करने के योग्य बनाए हुए है कुछ

काल में अक्षय निद्रा और शान्ति हो जाय। बस किसी-न-किसी प्रकार से समाप्ति होनी चाहिए। मुझमें इतनी शक्ति नहीं कि 'सदैवता' को सहन कर सकूँ।

सर्प — तुमको आगामी ग्रीष्म तक भी रहने की आवश्यकता नहीं और फिर भी कोई समाप्ति नहीं होगी।

आदम — यह नहीं हो सकता।

सर्प — हो सकता है।

हौआ — और होगा।

सर्प — हो चुका है। मुझको मार डालो और कल वाटिका में तुम दूसरा सर्प देखोगे, तुम्हारे हाथ में जितनी उँगलियाँ हैं उनसे भी अधिक सर्प तुमको मिलेंगे।

हौआ — मैं दूसरा आदम और हौआ उत्पन्न करूँगी।

आदम — मैंने कह दिया कि कहानियाँ न गढ़ो। यह नहीं हो सकता।

सर्प — मुझे स्मरण है, जब तुम आप ही एक ऐसी वस्तु थे, जो नहीं हो सकती थी, किंतु फिर भी तुम हो।

आदम — (आश्चर्यपूर्ण होकर) यह तो सच होगा। (पत्थर पर बैठ जाता है।)

सर्प — मैं उस भेद को हौआ से कह दूँगी और वह तुमको बता देगी।

आदम — (शीघ्रता से सर्प की ओर मुड़ता है और उस दशा में उसका पैर किसी तीक्ष्ण वस्तु पर पड़ जाता है) ओह!

हौआ — क्या हुआ?

आदम — काँटा है, प्रत्येक स्थान पर काँटे हैं। वाटिका को सुहावनी बनाने के लिए इनको सदैव साफ करते-करते थक गया।

सर्प — काँटे शीघ्र नहीं बढ़ते। अभी बहुत समय तक वाटिका उनसे भर नहीं सकेगी। उस समय तक नहीं भर सकेगी जब तक कि तुम अपना बोझ उतारकर सदैव के लिए सोने न चले जाओगे। तुम इसके वास्ते क्यों दुःखित हो? नवीन आदम को अपने लिए अपना स्थान आप ही साफ करने दो!

आदम — यह सत्य है, तू अपना भेद हमको बता दे। देखो हौआ! सदैव के लिए यदि रहना न पड़े, तो कैसा उत्तम हो।

हौआ — (व्याकुलता के साथ भूमि पर बैठकर घास उखाड़ते हुए) पुरुष की यही दशा है। यह जानते हुए कि हमको सदैव के लिए नहीं रहना है, इस प्रकार बातें करने लगे मानो आज ही हमारी

समाप्ति होने वाली है! तुमको इन भयानक वस्तुओं को साफ करना है। नहीं तो जब कभी अज्ञानता में हम पैर उठायेंगे, तो घायल हो जायँगे।

आदम — हाँ, साफ तो अवश्य करना है, परन्तु थोड़ा ही। कल मैं इन सबको साफ कर डालूँगा।

सर्प — (ठट्ठा मारकर हँसता है)!!!

आदम — यह अद्भुत कोलाहल है, मुझे सुहावना लगता है।

हौआ — मुझको तो अच्छा नहीं लगता। तू किसलिए चिल्लाता है?

सर्प — आदम ने एक नई वस्तु निकाली है अर्थात् 'कल'। अब जब कि शेष रहने का बोझ तुम्हारे सिर से उठ गया है, तुम नित नई वस्तुएँ निकाला करोगे।

आदम — शेष रहना? यह क्या है?

सर्प — यह मेरा शब्द है जिससे तात्पर्य सदैव के लिए जीवित रहना है।

हौआ — सर्प ने 'होने' के लिए एक सुन्दर शब्द बनाया है, 'जीवन'।

आदम — मेरे लिए कोई ऐसा सुन्दर शब्द बता दे जिससे 'कल' काम करना अभिप्रेरित हो, क्योंकि सम्भवतः यह एक भारी और पवित्र आविष्कार है।

सर्प — टालना।

आदम — अत्यन्त प्रिय शब्द है। ईश्वर करे मैं भी सर्प की-सी बोली पाए होता।

सर्प — यह भी हो सकता है, प्रत्येक बात सम्भव है।

आदम — (अचानक भय से चौंक पड़ता है) अरे!

हौआ — मेरी शान्ति! जीवन से मेरा छुटकारा!

सर्प — 'मृत्यु'! इसके लिए यह शब्द है।

आदम — टालने से क्या भय है।

हौआ — क्या भय है?

आदम — यदि मृत्यु को कल पर टाल दूँ, तो मैं कभी नहीं मरूँगा। 'कल' कोई दिन नहीं, और न हो सकता है।

सर्प — मैं बड़ा बुद्धिमान हूँ; परन्तु मनुष्य विचार में मुझसे भी अधिक गम्भीर है। स्त्री जानती है 'केवल नास्ति' कोई वस्तु

नहीं। पुरुष जानता है कि 'कल' कोई दिन नहीं। मैं इनको पूजता हूँ, ठीक करता हूँ।

आदम — यदि मृत्यु को पाना है, तो मुझको कोई सच्चा दिन नियत करना चाहिए, कल नहीं। मुझको कब मरना चाहिए?

हौआ — जब मैं दूसरा आदम उत्पन्न कर लूँ, तो तुम मर जाना। मगर नहीं, तुम्हारा जब जी चाहे मर जाओ। (वह उठती है और आदम के पीछे से निरपेक्ष भाव से टहलती हुई वृक्ष के पास जाती है और उसके सहारे खड़ी होकर सर्प की गर्दन को थपथपाती है।)

आदम — फिर भी कोई शीघ्रता नहीं है।

हौआ — विदित होता है, कि तुम इसको 'कल' पर टालोगे।

आदम — और तुम? क्या तुम दूसरी हौआ उत्पन्न करते ही मर जाओगी?

हौआ — मैं क्यों मरूँ? क्या तुम मुझसे छुटकारा पाना चाहते हो? अभी तुम चाहते थे कि मैं चुपचाप बैठी रहूँ और चला न करूँ, जिससे कहीं हरिण के बच्चे की भाँति ठोकर खाकर मर न जाऊँ और अब तुमको मेरी परवाह नहीं।

आदम — अब इसमें इतनी हानि नहीं है।

हौआ — (सर्प से क्रोध में) यह मृत्यु जिसको वाटिका में ले आया है, एक विपत्ति है। वह चाहता है कि मैं मर जाऊँ।

सर्प — (आदम से) क्या तुम चाहते हो कि वह मर जाय?

आदम — नहीं, मरना मुझको है, हौआ को मुझसे पहले नहीं मरना चाहिए; मैं अकेला रह जाऊँगा।

हौआ — तुम दूसरी हौआ पाओगे।

आदम — यह तो ठीक है। परन्तु असम्भव है कि वह ठीक तुम्हारी जैसी न हो। और हो नहीं सकती, इसको तो मैं भलीभाँति अनुभव कर रहा हूँ। उसकी वह स्मृतियाँ न होंगी। वह क्या होगी, मैं उसके लिए एक शब्द चाहता हूँ।

सर्प — अजनबी।

आदम — हाँ यह एक अच्छा और ठोस शब्द है। 'अजनबी।'

हौआ — जब नवीन आदम और नवीन हौआ होंगी, तो हम अजनबियों की वाटिका में होंगे। हमको एक दूसरे की आवश्यकता है। (तुरन्त आदम के पीछे आ जाती है और उसके मुख को अपनी ओर उठाती है) आदम, इस बात को कभी न भूलना। कदापि न भूलना।

आदम — मैं क्यों भूलूँगा? मैंने तो इसको सोचा है।

हौआ — मैंने भी एक बात सोची है। हरिण का बच्चा ठोकर खाकर गिर पड़ा और मर गया, परन्तु तुम चुपचाप मेरे पीछे आ सकते हो और (वह अचानक उसके कंधों को धक्का देती है और उसको मुँह के बल ढकेल देती है) मुझको इस प्रकार ढकेल सकते हो कि मैं मर जाऊँ। यदि मेरे पास यह तर्क न होता कि तुम मेरी मृत्यु की चेष्टा नहीं करोगे, तो मैं सोचने का साहस न करती।

आदम — (मारे भय के वृक्ष पर चढ़ने लगता है) तुम्हारी मृत्यु की चेष्टा! कैसा भयानक विचार है!

सर्प — मार डालना, मार डालना, मार डालना, यह शब्द है।

हौआ — नवीन आदम और हौआ हमको मार डालेंगे। मैं उनको नहीं उत्पन्न करूँगी। (वह चट्टान पर बैठ जाती है और आदम को नीचे खींचकर अपने पार्श्व में कर लेती है और अपने दाहिने हाथ से उसको पकड़े रहती है।)

सर्प — तुमको उत्पन्न करना होगा; क्योंकि यदि नहीं उत्पन्न करोगी, तो समाप्ति हो जायगी।

आदम — नहीं, वह हमको मार डालेंगे। वह हमारी भाँति अनुभव करेंगे। कोई वस्तु उसको रोकेगी। वाटिका का 'शब्द' जिस तरह

हमको बताता है, उसी तरह उनको भी बताएगा कि मार डालना नहीं चाहिए।

सर्प — बाग का 'शब्द' तुम्हारा अपना शब्द है।

आदम — है भी और नहीं भी। वह मुझसे बड़ा है और मैं उसका एक भाग हूँ।

हौआ — वाटिका का 'शब्द' मुझे तो तुमको मार डालने से नहीं रोकता। फिर भी मैं यह नहीं चाहती कि तुम मुझसे पहले मरो। इसके लिए मुझे किसी शब्द की आवश्यकता नहीं।

आदम — (उसकी गर्दन में बाहें डालकर और प्रभावित होकर) नहीं, नहीं, बिना किसी शब्द के भी यह एक खुली हुई बात है, कोई न कोई ऐसी वस्तु है जो हमको एक दूसरे से संबन्धित किये हुए है, जिसके लिए कोई शब्द नहीं है।

सर्प — प्रेम! प्रेम! प्रेम!

आदम — यह तो एक इतनी बड़ी वस्तु के लिए बहुत छोटा-सा शब्द है।

सर्प — (ठट्ठा मारकर हँसता है।)

हौआ — (अधीरता से सर्प की ओर मुड़कर) फिर वही हृदय खुरचने वाला शब्द! इसको बन्द कर। तू क्यों ऐसा करता है?

सर्प — संभव है, 'प्रेम' लगभग अत्यंत छोटी सी वस्तु के लिए बहुत बड़ा शब्द हो जाय, परन्तु जब तक यह छोटा है, उस समय तक वह अत्यंत मधुर होगा।

आदम — (ध्यान करते हुए) तू मुझे हैरान कर रहा है, मेरी पुरानी विपत्ति यद्यपि भारी थी परंतु सीधीसादी थी। जिन अद्‌भुत वस्तुओं का तू वादा कर रहा है, वह मुझे मृत्यु जैसी दिव्य विभूति देने से पहले मेरे अस्तित्व को उलझा सकती है। मैं अविनाशी जीवन के भार से व्याकुल था, परन्तु मेरा चित्त मलिन नहीं था। यदि मुझको यह ज्ञात नहीं था कि मैं हौआ से प्रेम करता हूँ, तो यह भी ज्ञात न था कि संभव है वह मेरा प्रेम छोड़ दे और किसी दूसरे आदम से प्रेम करने लगे। क्या तू इस विद्या के लिए कोई शब्द बता सकता है?

सर्प — ईर्ष्या! ईर्ष्या! ईर्ष्या!

आदम — कैसा भयानक शब्द है?

हौआ — (आदम को हिलाते हुए) बहुत सोचना नहीं चाहिए। तुम बहुत सोचा करते हो!

आदम — (क्रोध में) सोचने से विरत कैसे रह सकता हूँ, जब मुझे सन्देह हो गया है। संदेह से प्रत्येक वस्तु अच्छी है। जीवन

संदिग्ध हो गया है, प्रेम सन्दिग्ध है, क्या इस नवीन विपत्ति के लिए तेरे पास कोई शब्द है?

सर्प — भय, भय, भय।

आदम — इसकी चिकित्सा भी तेरे पास है?

सर्प — आशा, आशा, आशा।

आदम — आशा क्या है?

सर्प — जब तुमको स्थिरता का ज्ञान नहीं, तुमको यह ज्ञान भी नहीं कि स्थिर बीते हुए से अधिक रुचिकर नहीं होगा। इसी को आशा कहते हैं।

आदम — इससे मुझे धीरज नहीं होता। मेरे भीतर भय आशा की अपेक्षा अधिक बलवान है। मुझे निश्चय की आवश्यकता है। (धमकाता हुआ उठता है।) यह वस्तु मुझे दे, नहीं तो जब तुझको सोता हुआ पाऊँगा, तो मार डालूँगा।

हौआ — (सर्प के आसपास अपनी बाहें डालकर) मेरा सुन्दर सर्प, अरे नहीं! यह भयानक विचार तुम्हारे चित्त में कैसे आ सकता है?

आदम — भय मुझसे प्रत्येक कार्य करा सकता है। सर्प ही ने मुझको भय दिया, अब उससे कह दो कि मुझको विश्वास दे नहीं तो मेरी ओर से भय लेकर जावे।

सर्प — भविष्य को अपने संकल्प से बाँध लो और प्रतिज्ञा कर लो।

आदम — प्रतिज्ञा क्या?

सर्प — अपनी मृत्यु के लिए एक दिन नियत करो और उस दिन मर जाने का संकल्प कर लो। फिर मृत्यु संदिग्ध न रहेगी, वरन निश्चित हो जायगी। फिर हौआ यह संकल्प कर ले कि वह तुम्हारे मर जाने तक तुमसे प्रेम करेगी। इस प्रकार प्रेम संदिग्ध नहीं रहेगा।

आदम — हाँ, यह तो बड़ी अच्छी बात है। इससे भविष्य बँध जायगा।

हौआ — (अप्रसन्न होकर सर्प की ओर से मुँह फेरकर) परन्तु इससे आशा विनष्ट हो जायगी।

आदम — (क्रोध से) चुप रहो, आशा निकृष्ट वस्तु है, प्रसन्नता बुरी वस्तु है; विश्वास मंगलमय वस्तु है।

सर्प — 'बुरी' किसको कहते हैं? तुमने एक नया शब्द निकाला है।

आदम — जिस वस्तु से मैं डरता हूँ, वह बुरी वस्तु है। अच्छा हौआ! सुनो, और साँप तू भी सुन, जिससे तुम दोनों मेरी प्रतिज्ञा को

याद रखो। मैं चारों ऋतुओं के एक सहस्र चक्र तक जीवित रहूँगा।

सर्प — वर्ष, वर्ष।

आदम — मैं एक सहस्र वर्ष तक जीवित रहूँगा, उसके बाद नहीं रहूँगा। मैं मर जाऊँगा और शांति प्राप्त करूँगा और उस समय तक हौआ के सिवाय किसी दूसरी स्त्री से प्रेम नहीं करुंगा।

हौआ — और यदि आदम अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहेगा, तो मैं भी उसकी मृत्यु तक किसी दूसरे पुरुष से प्रेम नहीं करूँगी।

सर्प — तुम दोनों ने विवाह का आविष्कार किया है। आदम तुम्हारा पति है, जो किसी दूसरी स्त्री के लिए नहीं हो सकता, और तुम उसकी पत्नी हो, जो किसी दूसरे पुरुष के लिए नहीं हो सकती।

आदम — (स्वभावतः हौआ की ओर हाथ बढ़ाते हुए) पति और पत्नी!

हौआ — (अपना हाथ उसके हाथ में देते हुए) पत्नी और पति!

सर्प — (ठट्टा मारकर हँसता है!)

हौआ — (आदम को अपने से अलग करके) मैंने यह कह दिया कि यह मनहूस कोलाहल न कर।

आदम — उसकी बात न सुन। कोलाहल मुझे भला लगता है। इससे मेरा हृदय हल्का होता है। तू बड़ा प्रसन्नचित्त सर्प है, पर तूने अभी कोई प्रतिज्ञा नहीं की। तू क्या प्रतिज्ञा करता है?

सर्प — मैं कोई प्रतिज्ञा नहीं करता। मैं अवसर से लाभ उठाता हूँ।

आदम — अवसर? इसका क्या अर्थ?

सर्प — इसका अर्थ यह है कि मुझको विश्वास से इतना ही भय है जितना तुमको संदेह से, अर्थात् सिवाय संदेह के कोई वस्तु विश्वसनीय नहीं। यदि मैं भविष्य को बाँध लूँ, तो अपने संकल्प को बाँध लूँगा, और जब संकल्प को बाँध लूँगा तो उत्पत्ति में रुकावट आरम्भ हो जायगी।

हौआ — उत्पत्ति में रुकावट न होनी चाहिए। मैंने कह दिया कि मैं उत्पन्न करूँगी, यदि ऐसा करने में मुझे अपने को खण्ड-खण्ड भी कर देना पड़े!

आदम — तुम दोनों चुप रहो, मैं भविष्य को अवश्य बाँधूँगा। मैं भय से अवश्य स्वतंत्र होऊँगा (हौआ से) हम अपनी-अपनी प्रतिज्ञा कर चुके, यदि तुमको उत्पन्न करना है, तो तुम इस प्रतिज्ञा की सीमा के भीतर उत्पन्न करो। अब सर्प की बातें अधिक न सुनो। (हौआ के केश पकड़कर खींचता है।)

हौआ — छोड़ मूर्ख! अभी इसने मुझको अपना भेद नहीं बताया है।

आदम — (उसको छोड़कर) हाँ ठीक है, मूर्ख किसको कहते हैं?

हौआ — मैं नहीं जानती, यह शब्द आप-से-आप आ गया। जब तुम भूल जाते हो और विचारने लगते हो और भय से पराजित हो जाते हो, उस समय तुम जो कुछ होते हो, वही मूर्ख है। आओ सर्प की बातें सुनें।

आदम — नहीं, मुझे भय लगता है, जब वह बोलता है, तो ऐसा प्रतीत होता है कि भूमि मेरे पैरों के नीचे बैठ रही है। क्या तुम उसकी बातें सुनने के लिए ठहरोगी?

(सर्प ठट्ठा मारकर हँसता है।)

आदम — (खिलकर) इस शब्द से भय दूर हो जाता है। क्या कौतूहल है, सर्प और स्त्री आपस में भेद की बातें करने जा रहे हैं। (हँसता है और धीरे-धीरे चला जाता है। यह इसकी पहली हँसी थी।)

हौआ — अब भेद बता, भेद! (चट्टान पर बैठ जाती है और सर्प के कंठ में भुजाएँ डाल देती है। सर्प होंठ के नीचे कुछ कहने लगता है। हौआ का मुख अत्यंत रोचकता से चमकने लगता है।

उसकी रोचकता बढ़ती जाती है। यहाँ तक कि फिर उसके स्थान पर अत्यधिक घृणा के चिह्न प्रकट हो जाते हैं और वह अपना मुख अपने हाथों से छिपा लेती है।)

कुछ शताब्दियों के पश्चात्। प्रातःकाल।

(ईराक — अरब में भूमि का एक हरा-भरा खण्ड और वह भी लट्ठों से बना हुआ एक भवन है जो एक बाई वाटिका पर जाकर समाप्त होता है। आदम मध्य वाटिका में भूमि खोद रहा है, उसके दक्षिण ओर हौआ द्वार के पास एक वृक्ष की छाँह में तिपाई पर बैठी हुई सूत कात रही है। उसका चरखा जिसको वह हाथ से चला रही है, एक बड़ चक्र की भाँति है, जो भारी लकड़ी का बना हुआ है। वाटिका की दूसरी ओर काँटों की भीति है, जिसमें टट्टी से बन्द एक मार्ग है।

दोनों किफायत और बेपरवाही के साथ मोटे कपड़ों और पत्तों को पहिने हैं। दोनों अपना बाल्यकाल और निर्मलता खो चुके हैं। आदम की दाढी बढ़ी हुई है और उसके केश बेढंगे कटे हुए हैं। परन्तु दोनों स्वस्थ हैं और तरुण अवस्था में हैं। आदम एक

कृषक की भाँति थका हुआ दृष्टि आता है। हौआ अपेक्षाकृत प्रसन्न है। वह बैठी कात रही है और कुछ विचार कर रही है।)

एक पुरुष का शब्द — अहा, माता!¦

हौआ — (दृष्टि उठाकर सम्मुख टट्टी की ओर देखती है) काबील आ रहा है।

(आदम घृणा प्रदर्शित करता है और बिना सिर उठाये हुए धरती खोदने में लगा रहता है।)

(काबील टट्टी को ठोकर मारकर मार्ग से अलग कर देता है और लम्बे-लम्बे पगों से वाटिका में प्रवेश करता है। बातचीत और रूप-रंग से वह एक हठीला सिपाही ज्ञात होता है। वह एक लम्बे बल्लम और चर्म की एक चौडी ढाल से सुसज्जित है। ढाल पर पीतल मढा हुआ है। उसकी लोहे की टोपी सिंह के सिर से बनाई गई है, जिसमें बैल की सींगें लगी हुई हैं। वह लाल कवच पहने हुए हैं और एक पदक लगाए हुए है। पदक सिंह-चर्म पर टंका हुआ है जिसमें सिंह के नख लटक रहे हैं। पगों में खड़ाऊँ हैं जिन पर पीतल का काम बना हुआ है। उसकी टांगें पीतल के आवरण से सुरक्षित हैं। उसकी सिपाहियों जैसी खड़ी मूँछे तैल से चमक रही हैं। माता-पिता के साथ उसका बर्ताव ऐसा है, जिससे

उसकी उद्दण्डता और अवज्ञा का पता चलता है। वह जानता है कि उसके ढंग पसन्द नहीं किए जाते और न वह क्षमा किया गया है।)

काबील — (आदम से) अभी तक धरती खोदना समाप्त नहीं हुआ? तुम सदा धरती खोदते रहोगे और सदा उसी पुरानी नाली में लगे रहोगे, कोई उन्नति नहीं, कोई नया विचार नहीं, कोई कीर्ति नहीं! यदि मैं भी इसी भूमि खोदने में लगा रहता जैसा कि तुमने मुझे सिखाया था, तो आज मैं कुछ न होता।

आदम — तुम भाला और ढाल लिए हुए इस समय क्या हो, जब कि तुम्हारे भाई का रक्त धरती के भीतर से, तुम्हारे विरुद्ध क्रन्दन कर रहा है!

काबील — मैं पहला वध करनेवाला हूँ, तुम केवल पहले मनुष्य हो! प्रत्येक व्यक्ति पहला मनुष्य हो सकता है। यह ऐसा ही सहज है जैसा कि पहली गोभी होना। किन्तु पहला हत्यारा होने के लिए, साहसी मनुष्य की आवश्यकता है।

आदम — यहाँ से चले जाओ, हमारा पीछा छोड़ दो। हमको अलग रखने के लिए संसार बहुत विस्तृत है।

हौआ — तुम उसको क्यों भगाते हो? वह मेरा है। मैंने उसको अपने शरीर से बनाया था! मैं अपनी बनाई हुई वस्तु को कभी-कभी देखना चाहती हूँ!

आदम — तुमने तो हाबील को भी बनाया था। इसने हाबील को मार डाला; पर इस पर भी क्या तुम उसको देखने की कामना कर सकती हो?

काबील — मैंने हाबील को मार डाला, तो यह किसका अपराध था? मार डालने का आविष्कार किसने किया था? मैंने? नहीं, उसी ने अविष्कार किया था। मैं तो तुम्हारी शिक्षा पर चल रहा था। मैं तो धरती खोदा करता था? और कूड़ा-करकट साफ किया करता था। मैं पृथ्वी का फल खाता था और तुम्हारी तरह परिश्रम से जीवन-निर्वाह करता था। मैं मूर्ख था, किन्तु हाबील नए विचार और साहस का मनुष्य था। वह खोजी था और वस्तुतः उन्नति करने वाला था। उसने रक्त का अनुसंधान किया और हत्या का आविष्कार किया! उसने यह ज्ञात किया कि सूर्य की उसने अग्नि ओस की बूंदों के द्वारा नीचे लाई जा सकती है। अग्नि को सदैव प्रकाशमान रखने के लिए एक बलि का स्थान निर्माण किया। जितने पशुओं को मारता था, उनके मांस को बलि-स्थान में अग्नि से पकाता था। वह अपने को मांस खा-खाकर जीवित रखता था। उसको अपना आहार प्राप्त करने के लिए केवल इसकी

आवश्यकता थी कि अपना दिन आखेट जैसे स्वास्थ्यदायक और गौरवपूर्ण कार्य में व्यय करे और फिर एक घंटा अग्नि के साथ खेल करे। तुमने उससे कुछ भी नहीं सीखा। तुम परिश्रम करते रहे और मुझसे भी यही काम कराते रहे। मैं हाबील के हर्ष और स्वाधीनता पर ईर्ष्या करता था। मैं अपने को इसलिए तुच्छ समझता था कि तुम्हारा अनुकरण करने के स्थान पर उसका अनुकरण नहीं करता था। ऐसा वह भाग्यवान् था कि अपने भोजन में उस 'शब्द', को भी सम्मिलित रखता था, जिसने उसको अनेक नई बातें बताई थीं। वह कहता था-वह 'शब्द उस अग्नि का 'शब्द' है, जो मेरा भोजन पकाती है और जो अग्नि भोजन पका सकती है, वह खा भी सकती है। यह सच था कि मैंने अग्नि को बलि-स्थान में भोजन को समाप्त कर देते हुए स्वयं देखा, तब मैंने भी एक बलि-स्थान बनाया और उस पर भोजन की भेंट चढाई। अन्न, मूल और फल सब, व्यर्थ कुछ न हुआ। हाबील मुझ पर हँसता था और तब एक बड़ी बात मैंने सोची — 'क्यों न हाबील को मार डालें,जिस तरह वह पशुओं को मारा करता है!' मैंने वार किया और वह मर गया, जिस प्रकार पशु मरा करते थे। इसके बात मैंने तुम्हारी मूर्खता और परिश्रम के जीवन को छोड़ दिया और उसकी तरह निर्वाह करने लगा — शिकार, रक्त बहाना।

शिकार के द्वारा क्या मैं तुमसे श्रेष्ठ, तुमसे अधिक बलिष्ठ, तुमसे अधिक प्रसन्न और तुमसे अधिक स्वाधीन नहीं हूँ?

आदम — तुम अधिक बलिष्ठ नहीं हो, तुम ठिगने हो। तुम्हारा जीवन दृढ़ नहीं हो सकता। तुमने पशुओं को अपने से भयभीत कर दिया है। सर्प ने अपने को तुम से बचाने के लिए विष उत्पन्न कर लिया है। मैं स्वयं तुमसे डरता हूँ। यदि तुम अपनी माता की ओर एक पग और बढ़े तो मैं अपनी कुदाल से तुमको उसी तरह मार कर गिरा दूँगा, जिस तरह तुमने हाबील को मार कर गिरा दिया था।

हौआ — वह मुझको मारेगा नहीं, वह मुझसे प्रेम करता है।

आदम — वह हाबील से भी प्रेम करता था; परन्तु उसको उसने मार डाला।

काबील — मैं स्त्रियों को मारना नहीं चाहता, मैं अपनी माँ को नहीं मारूँगा और उसी के विचार से तुमको भी नहीं मारूँगा। यद्यपि बिना तुम्हारे कुदाल की धार में आए हुए इस भाले को तुम्हारे पार कर सकता हूँ। मुझे यह ध्यान न होता, तो मैं तुम्हें मार डालने की चेष्टा किए बिना न रहता यद्यपि डरता हूँ कि कहीं तुम न मुझे मार डालो। मैंने सिंह और वन शूकर से संग्राम किया है, यह देखने के लिए कि कौन किसको मार डालता है।

मैंने मनुष्य के साथ भी युद्ध किया है। यह है तो भयानक काम पर इससे अधिक आनंद भी किसी और काम में नहीं। मैं इसको लड़ाई कहता हं। जो कभी लड़ा नहीं है, जीवन का आनंद वह नहीं जानता। यही आवश्यकता मुझको माँ के पास ले आई है।

आदम — अब तुमको एक दूसरे से क्या प्रयोजन? वह उत्पन्न करने वाली है और तुम विनाश करने वाले हो।

काबील — -मैं विनाश कैसे कर सकता हुं जब तक वह उत्पन्न न करे? मैं चाहता हूँ कि वह और पुरुष उत्पन्न करती रहे, और हाँ, स्त्रियाँ भी जिससे वह सब अपनी-अपनी बारी से और अधिक पुरुष उत्पन्न करें, असंख्य पुरुषों की , जितनी कि सहस्र वृक्षों में पत्तियाँ होंगी उनसे भी अधिक पुरुषों की एक बड़ी भारी रचना का ध्यान मेरे मस्तिष्क में है। मैं उनको दो बडे भागों मैं विभाजित करूँगा। एक का सेनापति मैं होऊँगा, दूसरे का वह व्यक्ति जिससे मैं सबसे अधिक भय करूँ और जिसको सबसे पहले मार डालना चाहूँ। तनिक विचार तो करो, मनुष्य का यह सारा दल आपस में लड़ता-मरता रहेगा। जय की पुकार, उत्तेजना के शब्द, निराशा का गान, दुःख की विनय, नि—संदेह इन्हीं में जीवन होगा। ऐसा जीवन जो पूर्ण-रूप से कार्य में लाया गया हो। एक प्रज्वलित आग का और आंधी का जीवन, जिसने उसको न देखा होगा, न सुना होगा, न अनुभव किया होगा और न परीक्षा की होगी। वह इस आदम

के सम्मुख, जिसने यह सब कुछ किया होगा, अपने को अपदार्थ और मूर्ख समझेगा।

हौआ — और मैं! मैं केवल एक सुगम द्वार होऊँगी पुरुषों को उत्पन्न करने का, जिससे तुम उनको मार डालो!

आदम — या वह तुमको मार डालें!

काबील — माता! पुरुषों का उत्पन्न करना तुम्हारा अधिकार है, तुम्हारा काम है। तुम्हारे कष्ट से तुम्हारा गौरव है और तुम्हारी विजय है। तुम मेरे पिता को जैसा कि तुम कह रही हो, इसके लिए केवल अपना एक द्वारा बना लेती हो। उसको तुम्हारे लिए भूमि खोदनी पड़ती है, परिश्रम करना पड़ता है, चलना पड़ता है, बिल्कुल उस बैल की भांति जो भूमि खोदने में उसे सहायता देता है, या उस गधे की भांति जो उसका बोझा लादता है। कोई स्त्री मुझसे मेरे पिता का जीवन नहीं व्यतीत करा सकती, मैं शिकार करूँगा, लड़ूँगा और अपनी नस-नस की शक्ति व्यय करूँगा। जब अपने प्राण संकट में डाल कर जंगली सुअर मारकर लाऊँगा, तो मैं अपनी स्त्री के सम्मुख लाकर डाल दूँगा कि वह उसको पकावे। और उसके परिश्रम के बदले में उसको भी एक कौर दे दूँगा। उसको कोई दूसरा भोजन नहीं मिलेगा। इससे वह मेरी चेरी हो जाएगी। और जो मुझको मार डालेगा, वह उस स्त्री को

लूट के माल की तरह ले जायगा। पुरुष स्त्री का स्वामी होगा, न कि उसका बालक और मजदूर!

(आदम अपनी कुदाल फेंक देता है और ध्यान से हौआ को देखने लगता है।)

हौआ — आदम। क्या तुम परीक्षा में पड गए? क्या हमारे आपस की प्रीति से तुमको यह बात उत्तम मालूम होती है?

काबील — -प्रीति का हाल वह क्या जाने? जब वह लड चुकेगा तब भय और मृत्यु का सामना कर लेगा। जब वह अपनी शक्ति का अंतिम आवेश व्यय करके आन्दोलन कर चुकेगा, उस समय उसको ज्ञात होगा कि वास्तव में स्त्री के आलिंगन में प्रेम से शांति प्राप्त करना किसको कहते हैं। उस स्त्री से पूछो जिसको तुमने उत्पन्न किया है और जो मेरी पत्नी है। क्या वह मेरी अगली चाल पसंद करेगी, जब कि मैं आदम का अनुसरण करता था, कृषि और मजदूरी करता था।

हौआ — (क्रोध में चरखा छोड़कर) तुम्हारा मुँह कि तुम यहाँ आकर लुआ [^1] पर अभिमान करो जो किसी काम की नहीं और जो बेहद बुरी लड़की और सबसे निकम्मी पत्नी है! तुम उसके स्वामी हो। तुम तो आदम के बैल या अपने रक्षक श्वान से भी

[^1] बार्टन ने अपने नाटक में काबील की स्त्री का नाम आदा बताया था।

कहीं अधिक उसके दास हो। निःसंदेह जब तुम अपने प्राण संकट में डालकर जंगली सुअर का शिकार करोगे, तो उसके परिश्रम के बदले में एक और उसके सम्मुख भी डाल दोगे। अहाहा! दुर्भाग्य! क्या तुम यह समझते हो कि मैं उससे या उससे अधिक तुमसे परिचित नहीं हूँ? क्या तुम्हारा प्राण उस समय भी संकट में होता है जब तुम गिलहरी या नीली लोमड़ी को मारते हो, जिससे वह उनको अपने शरीर से लटकाकर स्त्री से पशु बन जाय? जब तुम बेबस और बहीन पक्षियों को जाल में फँसाते हो तो केवल इसलिए कि लुआ को साधारण और हलाल खाद्य खाने में कष्ट होता है। तो उस समय कैसे सूरमा मालूम होते हो? तुम सिंह को मारने के लिए अवश्य अपनी जान संकट में डालते हो, किन्तु उसका चर्म किसको मिलता है। जिसके लिए तुमने भय का सामना किया! लुआ उसको अपना बिछौना बनाने के लिए ले लेती है और उसका सड़ा हुआ मांस तुम्हारे आगे फेंक देती है जिसको तुम खा भी नहीं सकते। तुम लड़ते हो, इस कारण कि समझते हो कि वह इससे तुम्हारा आदर करती है। और तुमको चाहती है। मूर्ख! वह तुमको इस प्रयोजन से लड़ाती है कि तुम उसको सुख भोग के सामान ओर मारे हुए लोगों का माल लाकर देते हो, और वह लोग जो तुमसे डरते हैं, उसको सोना-चाँदी और धन देते रहते हैं। तुम कहते हो कि मैं आदम को केवल एक माध्यम

बनाए हुए हूँ 'मैं तो चरखा चलाती हूँ और घर की देख-भाल करती हूँ, संतान उत्पन्न करती हूँ और उनका पालन करती हैं। मैं तो एक स्त्री हूँ और पुरुषों को लुभाने और उनका शिकार करने के लिए कोई पालतू पशु नहीं हुं! तुम क्या हो? एक दुर्भाग्य-दास, जो मुँह पर मुलम्मा किए हो! या पशुओं के बालों की एक गठरी हो! जब मैंने उत्पन्न किया था तो तुम एक मनुष्य के बालक थे और लुआ एक मनुष्य की बालिका। तुम लोगों ने अब अपने को क्या बना डाला है?

काबील — (बल्लम को ढाल में पहनाकर मूँछों को ऐंठता हुआ) मनुष्य से उत्तमतर भी कोई वस्तु है — 'शूर', और वही है मनुष्य-शिरोमणि।

हौआ — -नर-शिरोमणि! तुम तो नराधम हो। तुम्हारा अन्य पुरुषों के साथ वही संबंध है जो सफेद लोमड़ी का शशक के साथ है, और लुआ का तुम्हारे साथ वह संबंध है, जो जोंक का सफेद लोमड़ी के साथ है। तुम अपने पिता को तुच्छ समझते हो, परंतु जब वह मरेगा, तो संसार उसके जीवन के कारण अधिक पूर्ण हो चुका होगा। जब तुम मरोगे तो लोग कहेंगे वह बड़ा लड़ाका था, संसार के लिए यह उत्तम होता कि वह उत्पन्न न हुआ होता, और लुआ के विषय में वह कुछ न कहेंगे, वरन् जब उसको स्मरण करेंगे, तो उसके नाम पर थूक देंगे।

काबील — वह संग रखने के लिए तुमसे अच्छी स्त्री है और यदि वह भी मुझको उसी प्रकार बुरा कहती जिस प्रकार तुम कह रही हो या जिस प्रकार आदम को बुरा कहा करती हो, तो मैं मारते-मारते उसको नीला कर देता। मैंने ऐसा किया भी है और तुम कहती हो कि मैं दास हूँ।

हौआ — -इस कारण कि उसने दूसरे पुरुष पर दृष्टि डाली थी और तुम उसके पैरों पर गिरे और रो-रोकर क्षमा मांगने लगे और पहले से दस गुना उसके दास हो गये और वह जब भली-भाँति कराह चुकी और उसकी पीडा कम हुई, तो उसने तुमको क्षमा कर दिया। क्यों सच है कि नहीं?

काबील — वह मुझसे पहले से अधिक प्रेम करने लगी। यही स्त्री का वास्तविक स्वभाव है।

हौआ — (माता की भांति उस पर करुणा करके) प्रेम! तुम इसको प्रेम कहते हो! इसको स्त्री का स्वभाव कहते हो। मेरे पुत्र! इसका नाम न पुरुष है, न स्त्री, न इसको प्रेम कहते हैं, न जीवन! तुम्हारी अस्थियों में वास्तविक बल नहीं और न तुम्हारे शरीर में खून है।

काबील — हा हा! (अपने बल्लम को पकड़कर पूरे बल से घुमाता है)

हौआ — -हाँ, तुमको आप ही अपने बल का अनुमान करने के लिए छड़ी घुमाने की आवश्यकता होती है। तुम जीवन का, बिना कड़वा किये हुए और बिना खौलाये हुए उसके स्वाद का अनुभव नहीं कर सकते। तुम लुआ का प्रेम, जब तक उसका मुख रंगा हुआ न हो, अनुभव नहीं कर सकते। तुम उसके शरीर की गरमी नहीं अनुभव कर सकते, जब तक कि वह गिलहरी के बालों से ढंकी न हो। तुम सिवा दुःख के कुछ नहीं अनुभव कर सकते और न सिवा मिथ्या के किसी वस्तु का विश्वास कर सकते हो। तुम जीवन के उन दृश्यों के देखने के लिए मस्तक भी नहीं उठाओगे, जो तुम्हारे चारों ओर हैं, किन्तु कोई लड़ाई या मृत्यु देखने के लिए दस मील दौड़ते चले जाओगे।

आदम — बस! बहुत कहा जा चुका। लड़के को छोड़ दो।

काबील — लडका! हा हा!

हौआ — (आदम से) तुम शायद यह विचार रहे हो कि संभव है, इसका जीविकोपाय तुम्हारे जीविकोपाय से उत्तम हो। तुम अभी तक परीक्षा करने में लगे हुए हो। क्या तुम भी मेरे साथ वह बर्ताव करोगे, जो वह अपनी स्त्री के साथ करता है? क्या तुम भी सिंह और भालू का शिकार करना चाहते हो, जिससे मेरे सोने के लिए चमड़ों की बहुतायात हो जाय? क्या मैं भी अपना मुख रंगा

करूँ और अपनी बाहुओं को नरम और कोमल बनाकर खराब कर डालूँ? क्या में भी पिढ़की, लटेर और बकरी के बच्चों का मांस खाने लगूँ जिनका दूध तुम मेरे लिए चुराकर ले आया करोगे?

आदम — -तुम्हारे साथ बसर करना यों ही एक परीक्षा है। जैसी हो, वैसी रहो, मैं भी जैसा हूँ, वैसा रहूँगा।

काबील — -तुममें से कोई जीवन को नहीं जानता। तुम सीधे-सादे ग्रामीण मनुष्य हो। तुम उन बैलों, गधों और कुत्तों के दास हो, जिनको तुमने अपनी आवश्यकताओं के लिए पाल रखा है। मैं तुमको उभारकर उससे अधिक ऊंचाई पर ला सकता हूँ। मैंने एक उपाय सोचा है। क्यों न हम अपनी सेवा के लिए पुरुष और स्त्रियों को पालें, क्यों न बाल्यावस्था ही से उनका इस रीति से पालन करें कि उनको किसी दूसरे प्रकार के जीवन का ज्ञान न होने पावे, जिसमें वह स्वीकार कर लें कि हम देवता हैं और वह यहाँ केवल इसलिए हैं कि हमारे जीवन को गौरवशाली बनाये रहें?

आदम — -(प्रभावित होकर) यह तो निःसंदेह एक बहुत बड़ा विचार है।

हौआ — (घृणा पूर्वक) बहुत बड़ा विचार है!

आदम — हाँ, जैसा कि साँप कहा करता था, 'क्यों नहीं?'

हौआ — क्योंकि ऐसे नीचों को मैं अपने घर में नही रहने दूँगी , क्योंकि ऐसे पशुओं से मुझको घृणा है, जिनके दो शिर हों या जिनके अंग सूखे हों, या जो कुरूप, हठी, और प्रकृति-विरुद्ध हों। मैंने पहले ही काबील से कह दिया कि वह पुरुष नहीं है और न 'लुआ' स्त्री है, दोनों राक्षस हैं, और अब तुम उनसे भी अधिक प्रकृति के विरुद्ध राक्षस उत्पन्न करना चाहते हो, जिसमें तुम केवल सुस्त और बेकार हो जाओ और तुम्हारे पाले हुए' मानवी पशु' परिश्रम को एक झुलसने वाली व्याधि समझें। अच्छा स्वप्न है, क्या कहना? (काबील से) तुम्हारा पिता तो केवल साधारण ही मूर्ख है, किन्तु तुम्हारे रोम-रोम में मूर्खता व्याप्त है; और तुम्हारी स्त्री तुमसे भी अधिक मूर्खा है।

आदस — मैं क्यों मूर्ख हूँ? मैं तुमसे अधिक मूर्ख कैसे हो सकता हूँ?

हौआ — -तुमने कहा था कि वध कभी नहीं होगा, इसलिए कि 'शब्द' हमारी संतान को इससे रोकेगा। उसने काबील को क्यों नहीं रोका!

काबील — उसने मना तो किया था, किन्तु मैं कोई बच्चा नहीं हुं कि एक शब्द से डर जाऊँ। 'शब्द' ने समझा था कि मैं अपने

भाई का रक्षक होने के सिवा और कुछ नहीं हूँ। उसको ज्ञात हो गया कि मैं 'मैं' हूँ और हाबील को भी वही होना चाहिए और अपनी देखभाल आप करना चाहिए। जिस प्रकार कि मैं उसका रक्षक था उससे अधिक वह मेरा रक्षा नहीं था, फिर उसने तुमको क्यों न मार डाला? यदि मुझको कोई रोकने वाला नहीं था, तो उसको भी कोई रोकने वाला न था। व्यक्तिगत सामना था और मैं जीत गया मैं पहला विजेता था।

आदम — जब तुमने यह सब सोचा था तो 'शब्द' ने तुमसे क्या कहा था?

काबील — क्यों? उसने मुझको अधिकार दे दिया और कहा कि मेरा यह कृत्य मुझ पर एक धब्बा है, एक जला हुआ धब्बा, जिसमें कोई मुझको वध न कर सके, जैसा कि हाबील अपनी भोडों पर लगा देता था। मैं यहाँ ठीकमठीक खड़ा हुं और जिन कायरों ने कभी वध नहीं किया, जो अपने भाइयों के रक्षक बनने से सन्तुष्ट है, वह तिरस्कृत समझ कर छोड़ दिए जाते हैं और शशकों की तरह मार डाले जाते हैं। जो काबील के ज्ञान पर चलेगा, वह संसार पर शासन करेगा, और वह यदि हारकर गिर जायगा, तो उसका सात गुना बदला लिया जायगा। 'शब्द' ने यह कह दिया है,, अतः तुमको और दूसरों को मुझसे विद्रोह करते समय सावधान रहना चाहिए।

आदम — डींग मारना और ढिठाई छोड़ो और सच-सच बताओ, क्या 'शब्द' यह नहीं कहता कि यदि कोई दूसरा तुमको तुम्हारे भाई के वध के लिए मार डालने का साहस नहीं कर सकता, तो तुम स्वयं अपने को मार डालो?

काबील — नहीं।

आदम — -यदि तुम झूठ नहीं बोलते, तो फिर ईश्वरीय न्याय कोई वस्तु नहीं।

काबील — मैं झूठ नहीं बोलता, ईश्वरीय न्याय अवश्य एक वस्तु है। क्योकि 'शब्द' मुझसे कहता है कि मैं अपने को प्रत्येक व्यक्ति के आगे उपस्थित करूँ, जिसमें यदि वह मुझे मार डाल सके, तो मार डाले। बिना जोखिम के मैं महत्त्वशाली नहीं हो सकता। हाबील का खून बहाना मैं इसी रूप में दे रहा हूँ। जोखिम और भय पग-पग पर मेरे पीछे हैं। बिना इसके साहस का है। कोई अर्थ नहीं होता और साहस ही वह वस्तु है, जो रक्त गरमाकर लाल और तेजपूर्ण बना देता

आदम — (अपनी कुदाल उठाकर फिर खोदने की तैयारी करता है) अच्छा अब चले जाओ। तुम्हारा यह तेजपूर्ण-जीवन एक सहस्र वर्ष तक नहीं रहेगा और मुझे एक सहस्र वर्ष तक रहना है। तुम सब यदि परस्पर, या हिंस्र पशुओं के साथ लड़ने से नहीं मरोगे, तो

उस व्याधि से मर जाओगे, जो स्वयं तुम्हारे भीतर विद्यमान है। तुम्हारा शरीर मनुष्य क शरीर के सदृश नहीं, वरन् उस 'छ्तरफेन'... के सदृश परिपालित होता है जो वृक्षों पर अंकुरित होता है। श्वास लेने के स्थान पर तुम छींकते हो और खाँसते हो और अंततः मुरझाकर नष्ट हो जाते हो। तुम्हारी आंते सड़ जाती हैं, तुम्हारे सिर के केश झड़ जाते हैं, तुम्हारे दाँत मैले हो जाते हैं और गिर जाते हैं और तुम समय से पहले मर जाते हो; इसलिए नहीं कि तुम मरना नहीं चाहते हो, बल्कि इसलिए कि तुमको मरना पड़ता है। मैं खेती करूँगा और जीवित रहूँगा।

काबील — और तुम्हारा यह सहस्र वर्ष का जीवन तुम्हारे किस काम का है, तुम पुरानी घास हो, सौ वर्ष तक धरती खोदते रहने से, क्या अब तुम कुछ बढ़िया खोदने लगे हो? मैं उतने समय तक नहीं जीवित रहा हूँ, जितने समय तक तुम जी चुके हो। किंतु खेती की कला से संबंध रखने वाली जितनी बातें हो सकती थीं, उनको मैं जानता हूँ और अब उसको छोड़कर उससे उत्तम कलाओं के जानने में तत्पर हूँ। मैं लड़ना और शिकार करना अर्थात् मार डालने की विद्या जानता हूँ। तुमको अपने सहस्र वर्ष का निश्चय कैसे हो सकता है? मैं अभी तुम दोनों को मार डाल सकता हूँ, और तुम दो भेंड़ों से अधिक अपनी रक्षा नहीं कर सकते। मैं तुमको छोड़ देता हूँ, परन्तु दूसरे तुमको मार डाल

सकते हैं। क्यों न वीरता के साथ जीवन निर्वाह करो और शीघ्र मरकर दूसरों के लिए स्थान रिक्त कर दो? मैं स्वयं जो तुम दोनों की अपेक्षा कहीं अधिक विद्याओं को जानता हूँ, अपने आपसे विरक्त हो जाऊँ, यदि लड़ना या शिकार खेलना न हो। ऐसे सहस्र वर्ष बिताने से पहिले ही मैं अपने को मार डालूँ, जैसा कि प्राय— 'शब्द' की ओर से आन्दोलन हुआ करता है।

आदम — -छोटे, अभी तुम कह रहे थे कि 'शब्द' हाबील की जान के बदले तुम्हारी जान का सामना नहीं करता।

काबील — 'शब्द' इस प्रकार सम्मुख नहीं होता, जिस प्रकार तुमसे हुआ करता है। मैं एक युवा पुरुष हूँ और तुम एक बूढे बच्चे। कोई बच्चे और युवा से एक-सी बातें नहीं करता और युवा सुनकर चुपचाप काँपने नहीं लगता वरन् उत्तर देता है और वह 'शब्द' से अपना मान कराता है और अन्ततः जो चाहता है उससे कहलाने लगता है।

आदम — इस बडे बोल पर तुम्हारी जीभ नष्ट हो!

हौआ — अपनी जीभ को वश में रखो और मेरे बच्चे को कोसो मत! ललस की यह भूल थी कि उसने उत्पन्न करने की प्रीति को स्त्री और पुरुष के बीच में असमान भागों में विभाजित किया। काबील! यदि हाबील के उत्पन्न करने की पीडा तुमको सहन

करनी पड़ती या उसके मर जाने पर दूसरा मनुष्य उत्पन्न करना पड़ता, तो तुम उसका वध न करते, वरन् उसकी जान को बचाने के लिए अपनी जान संकट में डालते। यही कारण है कि ऐसी निर्मूल बातचीत, जिसने अभी आदम को भी लुभा लिया था, जब कि वह अपनी कुदाल फेंककर थोड़ी देर के लिए तुम्हारी ओर आकर्षित हो गया था। मुझको एक व्यतीत हो जाने वाली वायु ज्ञात हुई, जो किसी शव पर से बह गई हो यही कारण है कि उत्पन्न करनेवाली स्त्री और नाश करने वाले पुरुष के मध्य शत्रुता है। मैं तुमको जानती हूँ। तुम सुखाभिलाषी और इन्द्रियों के दास हो। जीवन को उत्पन्न करना परिश्रम और कठिनता का काम है, जिसके लिए अधिक समय की आवश्यकता है। दूसरों के उत्पन्न किये हुए जीवन को चुरा ले जाना सुगम है और थोड़ी देर का काम है। जब तक तुम कृषि करते रहे, तुम संसार को जीवित और उत्पन्न करने के योग्य बनाए हुए थे, जिस प्रकार मैं जीवित हं और उत्पन्न करती हूँ। ललस ने तुमको इसीलिए स्त्रियों के परिश्रम से स्वतंत्र रखा था, चोरी और वध के लिए नहीं।

काबील — शैतान उसका कृतज्ञ हो, मैं अपने पावों तले की मिट्टी के साथ पति का खेल खेलने से अधिक उत्तम अपने समय का सुव्यय निकाल सकता हूँ।

आदम — 'शैतान'! यह कौन-सा नया शब्द है?

काबील — सुनो, जब कभी तुमने 'शब्द' की चर्चा की, जो तुमको बातें बताया करते हैं, तो मैंने कभी चित्त लगाकर तुम्हारी बात नहीं सुनी है। दो शब्द होंगे, एक तो वह जो तुमको बुरा कहता है और तुच्छ समझता है दूसरा वह जो मेरा मान करता है और मुझ पर भरोसा रखता है। मैं तुम्हारे शब्द को 'शैतान का शब्द' कहता हूँ और अपने शब्द को 'ईश्वर का शब्द।'

आदम — मेरा शब्द जीवन का शब्द है और तुम्हारा शब्द मृत्यु का!

काबील — अच्छा तो यही सही, क्योंकि वह मुझसे कहता है कि मृत्यु वास्तव में मृत्यु नहीं है, वरन् दूसरे जीवन का एक द्वार है- ऐसा जीवन जो अधिक शक्तिशाली और तेजपूर्ण है, जो केवल आत्मा का जीवन है, जिसमें मिट्टी के ढेले और बसूले या भूख और थकान नहीं।

हौआ — इंद्रिय-विलास और आलस्य का जीवन, काबील ' मैं भली प्रकार जानती हूँ।

काबील — इंद्रिय-विलास का जीवन! हाँ क्यों नहीं, ऐसा जीवन जिसमें कोई अपने भाई की रक्षा नहीं करता, इसलिए कि उसका भाई अपनी रक्षा स्वयं कर सकता है; परन्तु क्या मैं आलसी हूँ,

तुम्हारे परिश्रम के जीवन को छोड़कर क्या मुझे उन संकटों और विपत्तियों का सामना करना नहीं “डा है जिनका तुमको कोई अनुभव नहीं? तीर हाथ में बसूले से हलका जान पड़ता है, किंतु जो शक्ति तीर को लड़ने वाले के हृदय में उतार देती है, और जो शक्ति बसूले को अक्षत और स्थूल मिट्टी के भीतर प्रविष्ट कर देती है, इन दोनों में अग्नि और जल का सम्बन्ध है। मेरी शक्ति इसकी शक्ति के समान है। इसलिए कि मेरा मन पवित्र है।

आदम — यह क्या शब्द है? पवित्र का क्या अर्थ?

काबील — जो मिट्टी से विमुख होकर ऊपर सूर्य और स्वच्छ आकाश की ओर आकर्षित हों।

आदम — बच्चे! आकाश तो शून्य है, किंतु भूमि फलों से पूर्ण है; भूमि हमको भोजन देती है और हमको वह शक्ति प्रदान करती है जिससे हमने तुमको और समस्त मनुष्य जाति को उत्पन्न किया। आज उस मिट्टी से सम्बन्ध-रहित हो जाओ जिसको तुम.तुच्छ समझते हो, तो तुम बुरी तरह नष्ट हो जाओगे।

काबील — मुझको मिट्टी से घृणा है, मुझको भोजन से घृणा है। तुम कहते हो कि भूमि हमको शक्ति प्रदान करती है; किन्तु क्या यही भूमि विष्टा होकर हमको रोगों का शिकार नहीं बनाती? मुझको उस उत्पन्न करने से घृणा है जिस पर तुमको और माता

को गर्व है और जो हमको पिछड़ाकर पशुओं के तुल्य कर देता है परिणाम भी यदि यही होता है जैसा कि आरंभ रहा है, तो मनुष्य जाति का मिट जाना अच्छा। यदि मुझको भालू की भाँति उदर भरना है, यदि लुआ को भालू की भाँति पिल्ले जनना है, तो मैं मनुष्य के बदले भालू ही होना पसन्द करूँगा, क्योंकि भालू अपने से लजाता नहीं, उसको अपने से उत्तम वस्तु का ज्ञान नहीं होता। यदि तुम भालू की भाँति तृप्त हो तो मैं नहीं हूँ। तुम उस स्त्री के साथ रहो, जो तुमको बच्चे दे। मैं उस स्त्री के पास जाऊँगा, जो मुझे 'स्वप्न' दे। तुम अपने भोजन के लिए भूमि टटोलते रहो, मैं अपना भोजन अपने तीर के द्वारा या तो आकाश से ले आऊँगा या उस समय उसको गिरा दूँगा, जब कि वह अपने जीवन के बल से भूमि पर चलती-फिरती होगी। यदि मेरे लिए बस यही दो उपाय हैं कि भोजन प्राप्त करूँ या मर जाऊँ, तो अपने भोजन को भूमि से जहाँ तक संभव होगा, दूरी पर से प्राप्त करूँगा। बैल, इसके पहले कि वह मुझे मिले, घास से बढ़कर भोजन प्राप्त करेगा। और चूंकि , मनुष्य बैल से अधिक चुना हुआ है, इसलिए किसी दिन मैं अपने शत्रु को बैल खाने के लिए दूँगा और फिर उसको मारकर आप ही खा जाऊँगा।

आदम — राक्षस! सुनती हो हौआ?

हौआ — तो अपने मुँह को स्वच्छ निर्मल आकाश की ओर आकर्षित करने से यही तात्पर्य है! मनुष्य-भक्षण! बच्चों को खजाना! इसका तो बिल्कुल यही परिणाम होगा कि जो मेमनों और बकरी के बच्चों का हुआ था, जब कि हाबील ने भेड़ और बकरी से प्रारंभ किया था। अंततः तुम बेचारे मूर्ख ही रहे। क्या तुम समझते हो कि मैंने इन बातों पर विचार नहीं किया, जिसको बच्चा जनने की पीडा सहनी पड़ती है और जिसको भोजन तैयार करने का परिश्रम करना होता है? मुझे भी अपने बच्चे के संबन्ध में-यह विचार था कि शायद मेरा शूर और वीर पुत्र किसी उत्तम वस्तु का ध्यान करे और उसकी इच्छा करे और संभव है उसका संकल्प भी करे — यहाँ तक कि उसको उत्पन्न कर ले, और परिणाम यह हुआ कि वह भालू होना और बच्चों को खा जाना चाहता है। रीछ भी आदमी को न खाए, यदि उसको शहद मिलता रहे।

काबील — मैं रीछ होना नहीं चाहता और न बच्चों को खाना चाहता हूँ। मैं आप ही नहीं जानता कि मैं क्या चाहता हूँ। सिवाय इसके कि इस बुड्ढे कृषक से कुछ अच्छा होना चाहता हूँ जिसको ललस ने इसलिए बनाया था कि मुझको उत्पन्न करने में तुम्हारी सहायता करे और जिसको तुम अब तुच्छ समझती हो, इसलिए कि वह तुम्हारी आवश्यकता पूरी कर चुका है।

आदम — -(क्रोध से उत्तेजित होकर) जी चाहता है कि तुमको अभी दिखा दूँ कि मेरा कुदाल तुम्हारे बल्लभ' के होते हुए तुम्हारे अवज्ञा-पूर्ण शिर के दो टुकड़े कर सकता है!

काबील — अवज्ञा-पूर्ण! हा हा! (अपने बल्लम को घुमाकर) आओ सबके बुड्ढे बाप! परीक्षा कर लो। लड़ाई का तनिक स्वाद चख लो।

हौआ — बस, बस, मूर्खो! बैठ जाओ और चुप होकर मेरी बात सुनो। (आदम उदास होकर अपने शस्त्रों को हिलाकर बसूला फेंक देता है। काबील भी हँसता हुआ बल्लभ और ढाल को भूमि पर डाल देता है , दोनों बैठ जाते हैं) मैं नहीं कह सकती कि तुममें से कौन तनिक भी मुझको तृप्त रहा है, तुम अपनी खेती से या वह अपनी गंदी हिंसा से। मैं समझती हूँ कि ललस ने तुमको जीवन के उन सुगम उपायों से किसी के लिए भी स्वतंत्र नहीं किया था। (आदम से) तुम वृक्षों की जड खोदते हो और भूमि के भीतर से अन्न निकालते हो , आकाश से कोई ईश्वर-प्रद भोजन क्यों नहीं उतारते? वह अपने भोजन के लिए चोरी और वध करता है। मृत्यु के पश्चात् आयु पर व्यर्थ कविता करता है और अपने भयानक जीवन को सुन्दर शब्दों में और अपने रोएंदार शरीर को अच्छे वस्त्रों में, जिससे लोग चोर और हत्यारा समझकर कोसने के बदले उसकी मान- प्रतिष्ठा करें, छिपाये हुए है। आदम के

सिवा तुम सब मनुष्य मेरी संतान और मेरी संतान की संतान हो। तुम लोग मेरे पास आते हो और अपनी प्रदर्शिनी करना चाहते हो, परन्तु तुम्हारी सारी बुद्धि और योग्यता तुम्हारी माता हौआ के सम्मुख लुप्त हो जाती है। किसान आते हैं, लड़ने-मरने वाले आते हैं, किन्तु दोनों से मैं एक समान ऊब जाती हूँ, क्योंकि वह या तो पिछली फसल के समान ही होती है, और पिछली लड़ाई केवल पहली लड़ाई की शत्रुता होती है। मैं यह सब हजारों बार सुन चुकी हूँ। कुछ लोग आकर अपने सबसे छोटे बच्चे की चर्चा करते हैं, कि मेरे सबसे समझदार और प्यारे बच्चे ने 'कल' कहा है, या यह कि वह और बच्चों से अधिक अनोखा और हंसमुख है; और मुझको आश्चर्य, प्रसन्नता और रुचि को प्रकट करना पड़ता है, यद्यपि पिछला लड़का बिल्कुल पहले लड़के के समान ही होता है और वह कोई ऐसी नई बात नहीं कहता, जिसको तुम्हारे और हाबील के मुँह से सुनकर मैंने और आदम ने आनन्द न उठाया हो, इसलिए कि तुम दोनों संसार के सबसे पहले बच्चे थे और हमको उस आश्चर्य और आनन्द से पूर्ण करते थे जिसको जब तक संसार की स्थिति रहेगी, फिर कोई दो व्यक्ति अनुभव नहीं कर सकते। जब मैं उत्पन्न करने के योग्य न रहूँगी, तो अपने पुराने बाग में, जो कूड़ा-करकट का ढेर हो रहा है, चली जाऊँगी, इस विचार से कि कदाचित् बात करने के लिए फिर सर्प मिल

जाय, किन्तु सर्प को तुमने हमारा शत्रु बना दिया है उसने वारा छोड़ दिया है, या मर गया है। मैं अब उसको कभी नहीं देखती। इसलिए मुझको लौट आना पड़ता है और आदम की उन्हीं बातों को सुनना पड़ता है, जो दस हजार बार सुन चुकी हूँ, या परपोते की सेवा-सुश्रूषा करनी पड़ती है, जो अब युवा हो चुका है और अपने बड़प्पन से मुझको भयभीत करना चाहता है। आह! कैसा शिथिल कर देने वाला जीवन है और अभी इसी प्रकार लगभग सात सौ वर्ष काटने होंगे!

काबील — -दीन माता! देखती हो, जीवन कितना विशाल है! मनुष्य प्रत्येक वस्तु से थक जाता है। आकाश के नीचे कोई नई वस्तु नहीं।

आदम — (हौआ से घृणा-पूर्ण भाव में) यदि तुमको शिकायत करने के अतिरिक्त कोई काम नहीं है,तो तुम क्यों जी रही हो?

हौआ — इसलिए कि अभी आशा शेष है।

काबील — किस बात की?

हौआ — -तुम्हारे और मेरे स्वप्न के सत्य सिद्ध होने की नई और उत्तम वस्तुओं के उत्पन्न होने की। मेरी सन्तान और सन्तान की सन्तान कृषक हैं, न कि लड़ाके। उनमें से कुछ लोग खेती करेंगे, न कि लड़ाई। वह तुम दोनों से अधिक उपयोगी हैं। वह दुर्बल

हैं, भीरु हैं, और प्रदर्शन के इच्छुक हैं। फिर भी वह मैले-कुचैले रहते हैं और बाल कटाने का कष्ट भी सहन नहीं करते। वह ऋण लेते हैं और कभी परिशोध नहीं करते। इस पर भी उनको जिस वस्तु की आवश्यकता होती है, लोग उनको दे देते हैं। इसलिए कि वह सुन्दर शब्दों में सुन्दर झूठ बोलते हैं। वह अपने स्वप्न को स्मरण रख सकते हैं। वह बिना सोए हुए स्वप्न देख सकते हैं। उनकी संकल्प शक्ति ऐसी नहीं कि वह स्वप्न देखने के स्थान में सृजन कर सकें; किन्तु सर्प ने कहा था कि वह लोग जो दृढ़ विश्वास रखते हैं, प्रत्येक स्वप्न को अपने संकल्प से उत्पन्न कर सकते हैं। कुछ लोग ऐसे हैं, जो बांसुरी के कुछ टुकड़े काटकर उनको फूँकते हैं, जिसने वायु में 'शब्द' के मनोहर स्वर उत्पन्न होते हैं और कुछ तो इन भात-भांति के स्वरों को परस्पर मिला देते हैं, और तीन- तीन टुकड़ों से एक ही समय शब्द निकलते हैं और मेरे प्राणों को उभारकर उन वस्तुओं तक पहुंचा देते हैं, जिनके लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। और कुछ मिट्टी के पशु बनाते हैं ओर पत्थर पर आकृतियाँ ठोंक देते हैं और मुझसे कहते हैं कि इन आकृतियों की स्त्रियाँ उत्पन्न करो। मैंने उत्तम आकृतियों पर विचार किया है और फिर संकल्प किया है और लड़की उत्पन्न भी की है, जो अब बढ़कर उन आकृतियों से मिल गई है, और कुछ लोग, हैं, जो बिना उंगलियों पर गिने हुए

संख्या सोच लेते हैं, और रात्रि के समय आकाश की ओर देखा करते हैं। यह लोग तारों के नाम रखते हैं और पूर्व ही से यह बता सकते हैं कि सूर्य कब काले तवे से ढक जायगा। तू बाल को देखो जिसने इस चर्खे को बना कर मेरे श्रमों को बहुत कुछ घटा दिया है, फिर हनूक को देखो जो पहाड़ियों पर फिरा करता है और बराबर 'शब्द' की बातें सुना करता है; उसने अपनी इच्छा को उस 'शब्द' की इच्छा पूरी करने के लिए छोड़ दिया है। स्वयं उसमें बहुत कुछ 'शब्द' की महिमा आ गई है। जब यह लोग आते हैं, तो सदैव कोई-न-कोई नई बात या नई आशा अवश्य होती है और जीवित रहने के लिए बहाना मिल जाता है। वह कभी मरना नहीं चाहते; क्योंकि वह सदैव सीखते रहते हैं और कोई-न-कोई नई वस्तु या विद्या उत्पन्न करते रहते हैं। और यदि उत्पन्न नहीं करते , तो कम-से-कम उनके स्वप्न देखते रहते हैं। और इसके बाद भी काबील तुम अपनी लड़ाई और नाशकारिता पर मूर्खों की भांति इतराते हुए आते हो और मुझसे कहते हो कि 'यह सब अत्यन्त प्रभावशाली है, मैं शूर हूँ और मृत्यु या मृत्यु के भय के अतिरिक्त कोई दूसरी वस्तु जीवन को प्रिय नहीं बना सकी।' बस दुष्ट बालक! यहाँ से चले जाओ और तुम आदम! अपना काम देखो और इसकी बातें सुनने में अपना समय न नष्ट करो।

काबील — मैं कदाचित् बहुत बुद्धिमान तो नहीं हूँ किन्तु....

हौआ — (बात काटकर) हाँ कदाचित् नहीं हो, परन्तु इस पर अभिमान न करो। यह कोई प्रशंसा योग्य बात नहीं है।

काबील — तो भी माता! मेरे भीतर एक निर्विवाद शक्ति है जो मुझको बताती है कि मृत्यु जीवन में अपना भाग अवश्य लेती है। अच्छा, मुझे यह बताओ कि मृत्यु का आविष्कार किसने किया?

(आदम चौंक पड़ता है, हौआ अपना चरखा छोड़ देती है। दोनों अत्यन्त विस्मय का प्रदर्शन करते हैं।)

काबील — -तुम दोनों को क्या हो गया है?

आदम — लड़के, तुमने हमसे एक भयानक प्रश्न किया है।

होआ — तुमने वध आविष्कार किया, बस इतना कह देना पर्याप्त समझो।

काबील — वध मृत्यु नहीं है। तुम मेरा अभिप्राय समझते हो? जिनको मैं वध करता हूँ, यदि उनको मैं छोड़ दूँ, तो भी वह मर जायेंगे। यदि मैं वध न किया जाऊँ, तो भी मर जाऊँगा। मुझको इसमें किसने फँसाया? मैं पूछता हूँ कि मृत्यु का किसने आविष्कार किया?

आदम — लड़के! बुद्धि की बात करो, क्या तुम सदैव का जीवन सहन कर सकते थे? तुम्हारा विचार है कि तुम सहन कर सकते थे। चूंकि जानते हो कि अपने विचार की परीक्षा नहीं कर सकते, परन्तु मैं जानता हूँ कि अनंत और अशेषता के रूप में बैठकर अपने भाग्य को झींखना क्या अर्थ रखता है। तनिक विचार तो करो, कभी छुटकारा न होता और तुम नदी के तट पर बालू के जितने कण हैं, उनसे अधिक दिनों तक आदम ही आदम रहते और फिर भी परिणाम से उतनी दूर रहते, जितना कि पहले थे! मेरे भीतर बहुत कुछ है, जिससे कि मुझे घृणा है और जिसे मैं निकालकर फेंक देना चाहता हूँ। अपने माता-पिता के कृतज्ञ बनो जिन्होंने तुमको इस योग्य बनाया कि अपना बोझ नए और अच्छे मनुष्यों को सौंप दो और इस प्रकार तुम्हारे लिए प्रत्येक स्थिर-शांति को उपस्थित किया, क्योंकि हमीं ने मृत्यु का भी आविष्कार किया था।

काबील — -(उठकर) तुमने अच्छ किया, मैं भी सदैव जीवित रहना नहीं चाहता, किन्तु यदि मृत्यु को तुमने आविष्कार किया, तो मुझे दोष न लगाओ, क्योंकि मैं मृत्यु का प्रबन्धक है।

आदम — -मैं तुमको लांछन नहीं लगाता। विश्वास मानकर चले जाओ, मुझे खेती के लिए और अपनी माँ को चरखा कातने के लिए छोड़ दो।

काबील — -तुमको इसलिए छोड़ देता हूँ, किंतु मैंने तुम लोगों को एक उत्तम मार्ग दिखा दिया है। (हाल और भाला उठा लेता है) मैं अपने शूर-वीर मित्रों और उनकी सुंदरी स्त्रियों के पास चला जाऊँगा। (कांटों की दीवार की ओर जाता है) जब आदम धरती खोदा करता था और हौआ चरखा चलाया करती थी, उस समय सभ्य मनुष्य कहाँ थे? (ठहाका लगाता हुआ जाता है और फिर चुप होकर दूर से पुकारता है) माता! बिदा।

आदम — (बड़बड़ाते हुए) पामर स्वान! टट्टी को फिर बंद कर सकता था। (वह स्वयं टट्टी को मार्ग में खड़ी कर देता है) उसकी और उसी प्रकार के लोगों की बदौलत मृत्यु जीवन पर विजय पाती जाती है। इसी.समय देखों मेरे बहुत से पोते और नाती जीवन को पूर्ण-रूप से जानने के पहले ही मर जाते हैं। कुछ परवाह नहीं; (अपने हाथ पर थूकता है और अपनी कुदाल उठा लेता हैं) खेती सीखने के लिए जीवन अभी यथेष्ट विशाल है, यद्यपि यह लोग संक्षिप्त बना रहे हैं '

होआ — (सोचते हुए) हाँ खेती के लिए और लड़ने के लिए। किंतु क्या दूसरे अत्यंत आवश्यक कामों के लिए भी जीवन यथेष्ट विशाल है? क्या यह लोग इतने समय तक जीवित रहेगें कि 'मन' खा सकें?

आदम — 'मन' क्या है?

हौआ — वह आहार जो आकाश से लाया जाय, जो वायु से बना हो और मलिन रीति से धरती खोद कर न निकाला गया हो। क्या लोग अपनी अल्पायु में समस्त तारों की गति जान लेंगे? हनूक को तो 'शब्द' का अर्थान्तर सीखने में दो सौ बरस लग गए। जब वह केवल अस्सी बरस का बच्चा था, तो उसके शब्द को समझने के बाल-प्रयत्न काबील के प्रलयकारी क्रोध से अधिक भयानक थे। जब उनकी परमायु अल्प हो जायगी तो लोग खेती करेंगे, लड़ेंगे मारेंगे और मरेंगे और उनके बच्चे हनूक उनसे कहेंगे कि 'शब्द' की इच्छा यही है कि वह सदैव या तो खेती करते रहें या लड़ते रहें और मारते-मरते रहें।

आदम — यदि वे स्वयं आलसी हैं और उनका संकल्प यही है कि मर जायँ तो में उनको रोक नहीं सकता। में एक सहस्र वर्ष तक जीता रहूँगा। यदि उनको यह स्वीकार नहीं, तो वह मर जायँ और धिक्कार में फँसे रहें।

हौआ — धिक्कार? यह क्या है?

आदम — -यह उन लोगों की दशा है, जो मृत्यु को जीवन से अच्छा कहते हैं। तुम चरखा चलाए जाओ, बेकार न बैठी रहो, जब कि मैं तुम्हारे लिए रोम-रोम की शक्ति व्यय कर रहा हूँ।

हौआ — (धीरे से चरखा घुमाते हुए) यदि मूर्ख न होते तो हम दोनों के लिए खेती और चरखे से उत्तम जीवन का कोई द्वार निकाल लेते!

आदम — अपना काम करो, अन्यथा बिना रोटी के रहना पड़ेगा।

हौआ — मनुष्य केवल रोटी से जीवित नहीं रहेगा, और भी कोई वस्तु है। हम अभी नहीं जानते कि वह क्या है; किन्तु किसी दिन हमको ज्ञात हो जायगा ओर तब हम अकेले उससे जीवन निर्वाह करेंगे और फिर न खेती रह जायगी, न चरखा न लड़ना होगा, न मारना।

(वह विवश होकर चरखा चलाती है, आदम अधीरता के साथ भूमि खोदता है।)

***